॥ ॐ श्रीपरमगुरुभ्योनमः ॥

॥ अथ पंमित श्रीकांतिविजयजी कृत ॥
॥ श्रीमहाबल मलयसुंदरीनो रास प्रारंभ ॥

॥ दोहा ॥

॥ स्वस्तिश्री सुख संपदा, पूरण परम उदार ॥ आ
दीसर आनंद निधी, प्रणमु प्रेम अपार ॥ १ ॥ फणि
मणि मंमित नील तनु, करुणारस भरपूर ॥ पारस
जलधर पल्लवो, बोध बीज अंकूर ॥ २ ॥ शासन ना
यक साहिबो, गिरुउ गुण विलसंत ॥ हरिलंछन हियडे
धरुं, महावीर भगवंत ॥ ३ ॥ गणधर मुख मंमप व
से, अविहड महिमा जेह ॥ अंतर तिमिर विनासिनी,
समरुं सरसति तेह ॥ ४ ॥ चउमंगल वरत्यां हवे,
प्रगट्यो वचन प्रकाश ॥ निजइछा पूर्वक पणे, भाखुं
चारू भास ॥ ५ ॥ धर्म सहित कौतुक कथा, कवि
ता कहेतो सार ॥ निज जीहा पावन करे, विकसे
मति परिचार ॥ ६ ॥ ॐकार धुर संठव्यो, चउवेदा
चोसाल ॥ तिम पुरुषारथ धुर धर्यो, धर्म एक सु र
साल ॥ ७ ॥ दुरगति पडता जीवने, धारणथी ते

में ॥ नाणादिक त्रण रत्नमय, कहीयें ताहि सुमर्म ॥
॥ ८ ॥ नाणादिक जिन उपदिस्या, निर्मलता गुण
हेतु ॥ पण विशेष नाणज कह्यो, सोधितणो संकेतु
॥ ए ॥ अकल पदारथ सोधिये, परमारथथी नाण ॥
निरुपाधिक लोचन नवुं, त्रीजुं नाण प्रमाण ॥ १० ॥
निःकारण बंधव समो, नवजल तरण उपाय ॥ ख
लता डुरगति खाडमें, आलंबन निरपाय ॥ ११ ॥
अंतर तिमिरने नेदवा, नाण दीप निरबाध ॥ नरता
दिक नृप नाणथी, नवजल तस्या अगाध ॥ १२ ॥
नाण विपदथी उद्धरे, नाण दीये सवि थोक ॥ मल
यसुंदरी जिम सुख लही, चित्तधरी एक सलोक ॥ १३ ॥
किम आपदथी उतरी, किम पामी सुख गाय ॥ तास
चरित्र चौपै कहुं, सुणजो सहु चित्त लाय ॥ १४ ॥
आलश निद्रा परिहरी, ठंमी विकथा मित्र ॥ सुणतां
मलयानी कथा, करजो करण पवित्र ॥ १५ ॥
॥ ढाल पहेली ॥ अजितजिणंदसुं प्रीतडी ॥ ए देशी ॥
॥ जंबूद्वीप सोहामणो, सोहे सोहे हो सवि
द्वीप विचाल के, लवण समुद्रें वींटीउं, लाख लोय
हो वरतुल जिम थालके ॥ जं० ॥ १ ॥ तेमांहे क्षेत्र
अठे, खटखंमे हो मंमित सुविशाल ॥ नव नव

संपद चूनिका, ते साधे हो चक्री छोगाल ॥ जं०॥२॥ दक्षण नाग चंद्रावती, नगरी तिहां हो राजे निकलं क ॥ अलकापुरि ऊपर गई,लंकावली हो सायर जस संक ॥ जं० ॥ ३ ॥ विस्तर चहुटा चिहुंदिसें, चोरा सी हो चावा जिहां खास ॥ सायर तजी जल दूय णें, जाणे लखमी हो तिहां कीधो निवास ॥ जं० ॥ ॥ ४ ॥ फटिक रतनमय सौधनी, रुचि उज्जल हो प सरे अभिराम ॥ अंधारें पख पण नहीं, तिणे रहेवा हो क्षण तिमिरनो ठाम ॥ जं० ॥ ५ ॥ जिहां कणें वर चंद्रकांतनां. पडिबिंबे हो तिहां चंद्र मरीच ॥ अ स्खल जल परनालना, वरसालो हो परगट करे सी च ॥ जं० ॥ ६ ॥ गयणंगणतल पूरती, अटारी हो ऊंची कैलाश ॥ गोखें गोखें रहे गोरडी,जाणे अपछर हो करे रंग विलास ॥ जं० ॥ ७ ॥ मरकत विद्रुम कांचने,के रचिया हो मंदरना जाल ॥ दिसिदिसि तेज जलामले, होवे दिन दिन हो सुर धनुष अकाल ॥ ॥ जं० ॥ ८ ॥ कुंकुम मृगमद वासीया, जलपूरें हो दगगें प्रनाल ॥ नमर नमे रसीया परें, रस लंपट हो करता ढक चाल ॥ जं० ॥ ए ॥ गढविंटी चिहुं दिसि [illegible] हो सुखीए सविलोग ॥ –

आलंबन लहे बहु, पामे पामे हो नव नवला जोग ॥ जं० ॥ १० ॥ कंटक कंटक तरु रह्या, दो जीहा हो विषहर कहेवाय ॥ खल दाखीजे खेतमां, मंमदीजे हो सुर मंदिर गाय ॥ जं० ॥ ११ ॥ करछेदन नृप जे ग्रहे, तिम कुसुमे हो बंधन उपचार ॥ कुटिल पणो केसें वय्यो, नव दीसे हो कोइ लोक मजार ॥ जं० ॥ ॥ १२ ॥ निर्मल सरवर जल जखां, के दर्प्पण हो दि सिनां मनुहार ॥ जोगी जमर जीले घणा, घण महके हो कमलोनो सार ॥जं० १३॥ वनवाडी आरामनी, छबि नीली हो अडती चिहुं उर ॥ स्वर्गपुरी जीतण ज णी, कसी जीडयो हो बखतर हुउ जोर ॥जं०॥१४॥ अतुलबली बली नृप समो, रिपुमृगने हो त्रासन जे सींह ॥ दाता ताता साहसी, न्याये धोरी हो गुण वंत अबीह ॥ जं० ॥ १५ ॥ सबल प्रतापें तापव्या, रिपु वसीया हो सीतल गिरि कूंज ॥ वनफल जखी निजर पीयें, मुनिवृत्तें हो जीवे दुःख पूंज ॥ जं० ॥ ॥ १६ ॥ लखमी करकमलें वसी, मुख एहने हो स रसती विलसंत ॥ विण आदर रहवो किशो, जस कीरति हो गइ कोपी दिगंत ॥ जं० ॥ १७ ॥ हेलें धनुष नमाडतां, शिर नमिया हो अरिनां तत

काल ॥ वीरधवल नामे तिहां, करे राजा हो निज राज संभाल ॥ जं० ॥ १७ ॥ देशावर नृप चेटणा, बहु आवे हो हय गय रथ कोडि ॥ चतुरंगी सेनाधणी, नवि आवे हो तेहनी कोइ जोडि ॥ जं० ॥ १८ ॥ कोमल चंपक दल जिसी, घर राणी हो रतिने अनुहार ॥ चंपकमाला तेहने, शीलादिक हो गुण मणि जंमार ॥ ॥ जं० ॥ २० ॥ बीजी कनवती अछे, सोहागिण हो नृप प्रेम निधान ॥ विलसे रंगे रायसुं, सुखलीणी हो वे चढते मान ॥ जं० ॥ २१ ॥ पुर वर्णनी परगडी, इम कांते हो कही पहेली ढाल ॥ सुणो श्रोता जीजी करी, आगल छे हो अतिवात रसाल ॥ जं० ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वीरधवल पाले प्रजा, निज संतति परें तेह ॥ दुःख दोहग दूरें करे, दिनदिन धरतो नेह ॥ १ ॥ एक दिन चिंतातुर थइ, बेठो तेह नृपाल ॥ अतिहिं आमण दूमणो, नीची दृष्टि निहाल ॥ २ ॥ आदर नवि दे केहने, दिलगिरी दिल मांह ॥ छोडी छपलें नवनवी, रागरंगनी चाह ॥ ३ ॥ वदनकमल जाखुं थयुं, दुरबल थयुं शरीर ॥ चिंता डायणी आगलें, धीरज कुंण सहे धीर ॥ ४ ॥ चिंता डायणि

मनवसी, क्षण क्षण पंजर खाय ॥ तिलतिल करी जे संचीउ, ते तोले तोले जाय ॥ ५ ॥ संतापें ता प्यो घणु, नसुणे केहनी वात ॥ अन्न उदक रुची परिहरि, जोगीसरज्युं ध्यात ॥ ६ ॥ चंपक माला पे खीउं, इणे अवसर नरनाह ॥ आइ तुरत पणे ति हां, सभ्रम नर चित्तचाह ॥ ७ ॥ राय आगल उनी रही, धरती राग विशेष ॥ करजोडी बोली प्रिया, इ णीपरें अवर उवेख ॥ ८ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ करजोडी मंत्रि कहे ॥ एदेशी ॥

॥ करजोडी राणी कहे, अरज सुणो महाराज हो प्रीतम ॥ पूछुं छुं ठंदे रह्या, कहेतां मत करो लाज हो ॥ प्री० ॥ कर० ॥ १ ॥ बोलो नहीं मन मेलवी, खोलो नहीं सद्भाव हो ॥ प्री० ॥ आवतां आव कहो नहीं, जातां कहो नहीं जाव हो ॥ प्री० ॥ कर० ॥ २ ॥ यइनेग अण उलखू, नधरो कांइ सने ह हो ॥ प्री० ॥ वरी जाउं लखवार हूं, मुजरो ल्यो गुण गेह हो ॥ प्री० ॥ कर० ॥ ३ ॥ दासी हुं पा पढुं, थें महारा सिररा मोड हो ॥ प्री० ॥ थें जी वणी उरथी, कुंण करे तुमची होड हो ॥ प्री० ॥ कर० ॥ ४ ॥ किम सरसे बोल्या विना, प्रगटे छे अ

म ताप हो ॥ प्री० ॥ मौन लीउं केणे कारणे, चिं
तातुर थइ आप हो ॥ प्री० कर० ॥ ५ ॥ केणे तु
म कथन कीउं नहीं, कुणे डहव्या माहाराय हो ॥
प्री० ॥ के कांता कोइ दिल वसी, चिंतो तास उपा
य हो ॥ प्री० ॥ कर० ॥ ६ ॥ के कोइ अरिअण
जागीउं, चिंता पेठी तास हो ॥ प्री० ॥ के जोगी
जंगम मळ्यो, कीधा तेणे उदास हो ॥ प्री० ॥ क
र० ॥ ७ ॥ के कोइ बाधा उपनी, अंगे जीवन प्रा
ण हो ॥ प्री० ॥ के इणे वेळा सांभळ्यो, अरिअण
वयरी पुराण हो ॥ प्री० ॥ कर० ॥ ८ ॥ कवण अ
ठे ते राजीउं, जे बांधे तुमसुं तेग हो ॥ प्री० ॥ पं
चायण गिरि गाजते, मृग नासें करे वेग हो ॥ प्री०
॥ कर० ॥ ए ॥ के केणे डरजने नाखीउं, अणहूंतो
अम दोष हो ॥ प्री० ॥ के किणहिक अपहरि
लीउं, नवलो लखमी कोश हो ॥ प्री० ॥ कर०
॥ १० ॥ के मनमान्यो सांभळ्यो, परदेशी कोइ मित्त
हो ॥ प्री० ॥ सुरत समयनुं बोलडुं, के खटक्यो को
इ चित्त हो ॥ प्री० ॥ कर० ॥ ११ ॥ के मारग सं
वेगनो, जेदाणु सरवंग हो ॥ प्री० ॥ मनमेलु साचुं
कहो, आशय एह अभंग हो ॥ प्री० ॥ कर०

१२ ॥ यद्यपि नजांजे अम थकी, चिंता मोटी कां
य हो ॥ प्री० ॥ तो पण एकांगे रही, समतायें विं
हचाय हो ॥ प्री० ॥ कर० ॥ १३ ॥ एम सुण्या ध
रणी धवे, हृदयें स्त्रीना बोल हो ॥ प्री० ॥ सरिसा
मन जेदन जला, मधुरा अमृतनें तोल हो ॥ प्री०
॥ करे० ॥ १४ ॥ कहेसे हवे राणी प्रतें, ए थइ वी
जी ढाल हो ॥ प्री० ॥ कांति कहे धन तेत्रिया, जे
लहे पति चित्त चाल हो ॥ प्री० ॥ कर० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वयण सुणी उद्वेग नर, बोल्यो तव जूपाल ॥ चिं
ता कारण चित्तधरी, सुण सुंदरी सुकुमाल ॥ १ ॥
जे तें पूछ्या विविध परें, नहीं तेहनी मुज चिंत ॥
शुद्ध स्वजावे सर्वथा, तिण वातें निश्चित ॥ २ ॥
ए मुज चिंता उपनी, अकस्मात बलवंत ॥ मूल
थकी मांमी कहूं, सुपरें सवि विरतंत ॥ ३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ धिगधिग विषय विटंबना ॥ एदेशी ॥

॥ इणपुरमां व्यवहारिया, निवसे छे गुणवंतो रे ॥
लोजनंदी लोजाकरा, बे जाइ धनवंतो रे ॥ १ ॥ धि
गधिग लोज विटंबना, लोजे लद्धण जाय रे ॥ लोजे
नर पीडा लहे, लोजे डुरगति थाय रे ॥ धि० ॥ २ ॥

बांधव नेह धरे घणु, मांहो मांहें त्रेहो रे ॥ नेद न पामे ए कदा, खीर नीर परें तेहो रे ॥ धि० ॥ ३ ॥ लोनाकरने सुत थयो, नाम दीउं गुणवर्म्मा रे ॥ लोननंदी परण्यो फरी, पण सुत नही पूरव कर्म्मो रे ॥ धि० ॥ ४ ॥ एक दिवस वेग मली, हाटें बेहु जेवारो रे ॥ परदेशी एक पंथीयो, आयो तेथ तिवारो रे ॥ धि० ॥ ५ ॥ जड् प्रकृति जनो रह्यो, तेहने को न पिछाणे रे ॥ दीठो शेठें एकलो, उत्तम पुरुष प्रमाणे रे ॥ धि० ॥ ६ बोलाव्यो गोरव पणे, आगत स्वागत कीधो रे ॥ आदरसुं आगल जलो, आसण वेसण दीधो रे ॥ धि० ॥ ७ ॥ पूछे शेठ किहां रहो, किम आव्या इण गामे रे ॥ जात किसी छे तुमतणी, नीकलिया किणे कामे रे ॥ धि० ॥ ८ ॥ कहे पंथी क्षत्रि अछुं, परदेशी असहायो रे ॥ देश देशावर देखतो, फरतो हुंतो इहां आयो रे ॥ ए ॥ शेठें निजघर तेडीउं, नोजन जगत नलेरी रे ॥ कीधी वली केइ दिन लगें, राख्यो जातो वेरी रे ॥ धि० ॥ १० ॥ विश्वासें हलि मलि रह्यो, अंतर कांइ न राखे रे ॥ देश विदेश तणी गणी, वात नली न ली नाखे रे ॥ धि० ११ ॥ अन्य दिवस कहे

यो, ए तुंबी मुज लीजे रे ॥ पाछी देजो शेठजी, जिण दिन फरी मागीजे रे ॥ चि० ॥ १२ ॥ मुखमुद्रा गाढी करी, शेठ तणे कर दीधी रे ॥ ऊंची बांधी तुंबडी, हाट मांहे तेणे सीधी रे ॥ चि० ॥ १३ बे नाइने तेणे कह्यो, करजो एहनी संभाल रे॥ ते कहे हुं जीव न समो, एहछे तुमचो माल रे ॥ चि०॥ १४ ॥ चतुर विदेशी चूकीउ, रोप्यो अनरथ मूल रे ॥ कांति विजय कहे ढाल ए, त्रीजी थइ अनुकूल रे ॥ चि० ॥ १५ ॥

॥ दोहा शोरठी ॥

॥ तुंबी लागो ताप, अवर वस्तुनो आकरो ॥ वाध्यो रसनो व्याप, जरवा लागी जटकसुं ॥ १ ॥ दोहा ॥ तुंबीमांथी रस गली, हेठ वंधायें वंद ॥ लोह कोश नीचें पडी, सिंचाणी निरमंद ॥ २ ॥ लोह दिशा लघु ढांकीने, हेमहूउ द्युतिमंत ॥ हाट कोण जलिमलि रह्यो, मोड्यो तिमिर तदंत ॥ ३ ॥ दृष्टिपड्यो दो सेठने, सोवन साचे रंग ॥ चमत्कार चित्त पामीउ, जाण्यो रस नो संग ॥ ४ ॥ अतिलोभें आंधा हूआ, तुंबी ले निस्संक ॥ गुपति पणें मूकी गृहें, नगण्यो काल कलंक ॥ ॥ ५ ॥ मायावी मन हरखीया, लोभें वाह्या लुंभ ॥ कुलवट वहेती मूकीने, कीधो कारज लुंभ ॥ ६ ॥ अ

ति ञ्जक पंथी थयो, साचो चालण संच ॥ तुंबी मागी ते कन्हें, विनय वचन परपंच ॥ ७ ॥ मायावी मृडु वचनसुं, बोल्या बे डुरबुद्धि ॥ व्यग्रपणे तुज तुंबिनी, कीधी कांइ न सुद्धि ॥ ८ ॥ वद्धित चंदेर आफले, ग म गाम प्रचंम ॥ काढयो बंधण तुंबिका, पडी थइ शतखंम ॥ ए ॥ कोइक दिन तसु कटकडा, दीठा पडया अनेक ॥ श्रम दिलमें अति डुःख हुउं, चिंतायें अतिरेक ॥ १० ॥ समसगरां करी साचव्युं, कृतिम करे डुःखचार ॥ अपर तुंबीना खंम ले, देखाडया तेणी वार ॥ ॥ ११ ॥ वैदेशिक विलखो थयो, खोइ सघली आथ ॥ हाहा दैव किशुं कीयो, नूमि पडया बे हाथ ॥ १२ ॥ दक्ष पणे जाएयो तेणे, ए नहीं तेहनां खंम ॥ जिम तिम तुंबी उलवी, समकाढे ठे लंम ॥ १३ ॥ किहां जाउं केहने कहुं, किशो करुं हुं सूज ॥ दगो दिउं डुष्टे बुरो, लीधो तुंब अमूल ॥ १४ ॥ कहुं कदाचित रायने, तोपण रस ले तेह ॥ चिंति चुंपे चित्तमें, इम बोलें गुण गेह ॥ १५ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ विंठियानी देशी ॥

॥ मोरी तुंबी दीउ शेवजी, हुंतो कहुंतुं गोद बिगाय रे ॥ काम न कीजें कांइ तेहवो, जेणे मान

त्तम जाय रे ॥ मो० ॥ १ ॥ अरे परदेशीनुं ऊलवी, एह जीवन लीधो मुज्ज रे ॥ जण विससीआ नीसा सडो, दुःख होसे सही तुज्ज रे ॥ मो० ॥ २ ॥ वली तुम सरिखा जो इम करे, जन निंदित मागं काम रे ॥ तो संतति विना नू लोकमां, सत्य रहेवानो कुंण गाम रे ॥ मो० ॥ ३ ॥ जलनिधि रहे मर्यादमां, धरणि शिर शेष वहंत रे ॥ अति सूर तपे नहीं आकाशे, ते म हिमा ढे सत्यवंत रे ॥ मो० ॥ ४ ॥ सत्यें सुर सानि ध करे, होय सत्यें पुरुष प्रमाण रे ॥ जग उत्तम स त्य राखण जणी, निज प्राण करे कुरबाण रे ॥ मो० ॥ ५ ॥ कांइ हांसुं न कीजें हेलथी, ए घर खोयानुं ग म रे ॥ पछतावो होसें तुम मने, इणवातें खोसो मा म रे ॥ मो० ॥ ६ ॥ इम जूगं सम खातां थकां, ना वी तुमची किहां लाज रे ॥ नर उत्तम हाम वहे न ही, करतां नूमां एहज काम रे ॥ मो० ॥ ७ ॥ हवे लोल वसें लहेता नथी, एह वावोगो विष वेलि रे ॥ तुम अनरथ फल देसें घणा, हुं कहुं छुं लज्जा मेलि रे ॥ मो० ॥ ८ ॥ विहुं शेठ कहे सुण पंथिया, कांइ सुद्धि गईछे तुज्ज रे ॥ जग वाडि न चोरे चीलडां, दिल बूज विचारि अबूज रे ॥ मो० ॥ ए ॥ इम जूगो दोष

चढावीने, तुं खोवे का निज नाम रे ॥ किहां सुणिया शाह शिरोमणी, ए करतां नूंडा काम रे ॥ मो०॥१०॥ फिट लाजे नहीं कां बोलतो, श्रणहुंति एम गमार रे ॥ जो होंस होये राउल जणी, तो जइयें आव ए वार रे ॥ मो० ॥ ११ ॥ अति कागे उत्तर इम दी उं, शेठें करी कपट तिवार रे ॥ ते पंथिक निरास प णो ग्रही, कोप्यो अति जोर तिवार रे ॥ मो० ॥१२॥ कांइ साची सीखामण द्युं हवे, इम बोल्यो तेंणीवार रे ॥ एक विद्या ठोडी थंजणी, ते थंन्या घरने वार रे ॥ ॥ मो० ॥ १३ ॥ तव संधे संधे बंधित थया, न खिसे त्यांथी तिल मात रे ॥ विहुं चित्र लिखित परें थिर रह्या, मन मांहे घणु अकुलात रे ॥ मो०॥ १४ ॥ तेह ऊठी चल्यो परदेशियो, डःखजाल बंधाणा बेह रे ॥ इहां चोथी ढाल सोहामणी, इम कांतिविजय कही एह रे ॥ मो० ॥ १५ ॥

॥ दोहा शोरठी ॥

॥ सोचें सूधा शेठ, बेहु जना बारणे ॥ दैवें दीधी वेठ, पेट मसली पीडा करी ॥ १ ॥ आव्या लोक अ नेक, थंज जिशा थिर देखीने ॥ ठेतरिया ठग ठे ... बोले अचरिज जना ॥ २ ॥ सुणतां लोक

शेव कहे संकट पड्या ॥ करुणा करी को जाण, अ
मने छोडे इहां थकी ॥ ३ ॥ अमे नजाण्यो एह, आ
पद पडसे आकरी ॥ दुःखजर दाधी देह, प्राण हुआ
छे प्राहूणा ॥ ४ ॥ कीजें कवण उपाय, मरतांने मा
खा दिवें ॥ जो किम तूट्यो जाय, तो काम नकीजें
एहवो ॥ ५ ॥ लोक हसें लख कोडि, कै रोवें कै कूकु
ए ॥ देता दह दिसि दोड, कौतुक निरखे कइ जणा ॥
॥ ६ ॥ हुउ ते हाहाकार, पुर मांहे प्रबल पणे ॥ वा
त तणो विस्तार, जाण्यो सघले जुगतिसुं ॥ ७ ॥
दोहा ॥ गुणवर्म्मा इणे अवसरें, ग्रामांतरथी गेह ॥
आयो वात कुटुंबथी, जाणी सघली तेह ॥ ८ ॥ पि
ता पिताबांधव बेहु, हारें थंन्या देखि ॥ लाज्यो
मनमांहे घणो, दुःख पाम्यो सविशेष ॥ ए ॥ कु
मर कहे सुणो तातजी, मकरो चिंता कांय ॥ त्रिधि
सुं तुम छोडण जणी, करसुं कोडि उपाय ॥ १० ॥
चिंतातुर तव कुमरते, सोधे नवनव बुद्धि ॥ कार न
आवी कांइ तिणें, जोवे तांत्रिक सिद्ध ॥ ११ ॥
॥ ढाल पांचमी ॥ अबला किम उवेखीयें रे ॥ एदेशी ॥
॥ कुमर हवे उनमत थयो रे, सोधे नव नव गाय
रे ॥ मांत्रिक तांत्रिक मेलवा रे, मांडे कोडि उपाय रे।

तातनें ठोडवा, करता दीन नकाय रे ॥ पुरमांहे फरे, जोवे सुगति वनाय रे ॥ बंभण तोडवा, पण नावे को य दाय रे ॥ तातनने ठोडवा ॥ १ ॥ गाम नगर पुर क ब्बडे रे, जमतो नासे रे आम ॥ जे अम तातने वो डवे रे, तो मुंह माग्या द्युं दाम रे ॥ ता० ॥ २ ॥ व चन सुणी उठ्या तिसे रे, विविध वैद्यना पुत्र ॥ सिद्ध बुद्ध ओषधी धरा रे, जणता निज निज सूत्र रे ॥ता० ॥३॥ केइ जंगम केइ जोगीया रे, केइ तापस अवधूत ॥ जाप जपंता आविया रे, चाढी शील विजूत रे ॥ ता० ॥ ४ ॥ के कापिल के कापडी रे, के सन्यासी जक्ति ॥ कै बांजण वली वेदीआ रे, के ध्याता शिव शक्ति रे ॥ ता० ॥ ५ ॥ ब्रह्मचारी केता मिल्या रे, केताइक श्रीपा त ॥ केइ निरंजन पंथना रे, केइक चरक कहात रे ॥ ता० ॥ ६ ॥ केइ दिगंबर दोडीया रे, जरडाने जगवंत ॥ केइ त्रिदंमी मुंम्यिा रे, आगल कीध महंत रे ॥ ता० ॥ ७ ॥ राउल रंगे उमटया रे, दोडया केइ दरवेश ॥ जगने फंदे पाडवा रे, करता नवनव वेश रे ॥ ता० ॥ ८ ॥ इष्टधरा अजिचारका रे, जतन करावे को डि ॥ आवी विध विध उपचरे रे,करता होडा होडि रे ॥ ता० ॥ ए ॥ एक कहे आहुति दियो रे, बलियो·

कहंत ॥ इष्ट मनावो कोइ कहे रे, मंगलको विरचंत रे ॥ ता० ॥ १० ॥ एक कहे धूणावीयें रे, एक कहे दीजे मंत्र ॥ एक कहे शिर मूंमीने रे, करियें तंत्र अचंन रे ॥ ता० ॥ ११ ॥ एक कहे जल गंटीयें रे, मंत्री एहने अंग ॥ एक कहे ए यंत्रथी रे, थासे पहेला चंग रे ॥ ता० ॥ १२ ॥ एक कहे ग्रह पूजिने रे, करसुं साजा आंहिं ॥ एम अनेक शब्दें करी रे, कोलाहल हूउ त्यां हिं रे ॥ ता० ॥ १३ ॥ उद्यम सवि निःफल थयां रे, कोइ न आव्यो तंत ॥ रणनी खबर नूमिका रे, जिम जलधर वरसंत रे ॥ १४ ॥ जिम जिम युगति उपचख्या रे, तिम तिम वाधे पीड ॥ सायर जल उंमा जिहां रे, तिहां वडवानल नीड रे ॥ ता० ॥ १५ ॥ डर्क न परे मंत्रादिकें रे, कीधा तेह निरास ॥ उठी गया निज निज थले रें, साथ मनोरथ तास रे ॥ ता० ॥ १६ ॥ कुमर इस्यो मन चिंतवे रे, उठी जेहथी आग ॥ समसे तेहथी तेहने रे, आणु उद्यम लाग रे ॥ ता० ॥ १७ ॥ उपलक्क सार्थे लीउ रे, तव नर एक सखाय ॥ चाल्यो नर सोधण नणी रे, कुमर करी चित्त गाय रे ॥ ता० ॥ १८ ॥ शेठ रह्या बांध्या तिहां रे, करशे कुमर सहाय ॥ ढाल कही ए पांचमी रे, कांतिविजय सुख दायरे ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वनगिरि गुहिर पुर नगर, निशदिन तेह नमं
त ॥ पग पग पूछे पंथमें, पण खबर न कोइ कहं
त ॥ १ ॥ विकटपंथ श्रमथी पडयो, मांदो तेह स
हाय ॥ मूकी कोइक नगरमां, कुमर चल्यो असहा
य ॥ २ ॥ पुर अटवी उल्लंघतो, पोहोतो एकण दे
श ॥ निर मानुष मोटो तिहां, (मनुष्यनी वस्तिविना
नो) दीठो नगर विशेष ॥ ३ ॥ उंचा मंदिर जलहले
जाणे गिरि कैलास ॥ ठाम ठाम सुंनी पडी, मणिमा
णिकनी राशि ॥ ४ ॥ धानपूंज पंखी चणे, वस्त्र उ
डाडे वाय ॥ श्रीफल फोडीने वांनरां, खांत करीनें
खाय ॥ ५ ढूटा ध्वज धरणी पडयां, ढोल्या मदिरा
माट ॥ फूल पगर ठावें नखां, सुंना दीसे हाट ॥६॥
कुमर तव विस्मित पणे, कीधो नगर प्रवेश ॥ दीठो
नर तिहां एक अति, सुंदर तरुणे वेश ॥ ७ ॥ बोल्यो
तरुणो कुमरनें, कुणछे तुं महाभाग ॥ आव्यो कि
हांथी किहां रहे, साचो कहे अम आग ॥ ८ ॥ कु
मर कहे सुण मोहनां, हुं पंथी असहाय ॥ पंथकरी
थाको घणु, आव्यो छुं इणे ठाय ॥ ए ॥ तुं कुंण
दीसे एकलो, वेठो छे किण काम ॥ ऋद्धिनरी सुं

किसें, कुण नगरीनुं नाम ॥ १० ॥ ततक्षण नर बोल्युं इस्युं, सुण बांधव गुणवंत ॥ मूलथकी कहुं मां मीने, सकल परें विरतंत ॥ ११ ॥

॥ ढाल ७मी ॥ कपूर होये अतिऊजलुंरे ॥ ए देशी ॥

॥ कुशवर्द्धन पुर ए नलुं रे, स्वर्ग पुरी उपमान ॥ राजासूरें शोनतो रे, दिन दिन चढते वान ॥ सुगुण नर सांनल मोरी वात ॥ १ ॥ पुत्र हुआ बे सूरनें रे, जयचंद्रने विजयचंद्र, ॥ बे बांधव वाला घणुं रे, कुवलयने जेम चंद ॥ सु० ॥ २ ॥ मुज बांधव जय चंद्रने रे, ताते दीधुं राज ॥ लाडे लाड्यो हुं रहुं रे, न लहुं काज अकाज ॥ सु० ॥ ३ ॥ स्वर्गे तात स धारियो रे, मुजमन वेगी चिंत ॥ सघला दिन नहिं सारिखा रे, जग सहु एम कहंत ॥ सु० ॥ ४ ॥ बां धव आणा किम वहूं रे, आणी एम अंदेश ॥ अ निमाने हुं नीसस्यो रे, जोवा देशविदेश ॥ सु० ॥ ५ ॥ जोतो जोतो नवनवा रे, देश विदेश चरित्त ॥ एक दि वस चंद्रावती रे, पुरी वन मांहि पहुत्त ॥ सु० ॥ ६ ॥ सोम्य सुरूप सोहामणो रे, कोइक विद्या सिद्ध ॥ दीगो नर में ततखणें रे, प्रणपति विनयें कीध ॥ सु० ॥ ७ ॥ पीडा तनु तस आकरी रे, रोग विकट अतिसार ॥ दी

ए अंग लागे नहीं रे, उवण सक्ति लगार ॥ सु० ॥
मुज मन करुणा उपनी रे, कीधा बहु उपचार ॥ थ
डा दिन मांहे थयो रे, रोग सकल परिहार ॥ सु०
॥९॥ प्रसन्न थई मुज पुठीउ रे, नामादिक सवि तेण ।
विद्या वे दीधी वली रे, नक्ति विमोहे एण ॥ सु० ॥
॥१०॥ थंनकरी एक वशिकरी रे, बीजी सुधी पाठ ॥
विगत बताई जूजूई रे, जोडी जाचा वाठ ॥ सु० ॥११॥
रस तुंबी दीधी वली रे, सेवा साची जाण ॥ चतुर तु
रत इम बोलीउ रे, मुज उपर हित आण ॥सु०॥१२॥
गाढी खप करतां लह्यो रे, अति डर्लन रस एह ॥
लोह थकी कांचन करे रे, तिलनर फरश्यो जेह ॥
सु० ॥ १३ ॥ ते आप्यो ठे तुजने रे, करजे कोडी ज
तन्न ॥सु०॥१४॥ मात पिता जिम बालने रे, देई सीख
सुजाण ॥ श्रीपरवत नेटण नणी रे, तेह गयो गुण
खाण ॥ सु० १५ ॥ तिहांथी हुं चाल्यो वली रे, जो
ा देश विशेष ॥ कौतुक रंगे नवनवां रे,अचरज दीठ
लेख ॥सु०॥१६॥ फिरि आव्यो चंड़ावती रे, केतेक
वस अटंत ॥ जोग मले नवितव्यनुं रे, विधिना
ह पटंत ॥ सु० ॥ १७ ॥ पुरनां कौतुक निरखतो

किसें, कुण नगरीनुं नाम ॥ १० ॥ ततक्षण नर बोल्युं इस्युं, सुण बांधव गुणवंत ॥ मूलथकी कहुं मां मीने, सकल परें विरतंत ॥ ११ ॥

॥ ढाल ७मी ॥ कपूर होये अतिऊजलुंरे ॥ ए देशी ॥

॥ कुशवर्द्धन पुर ए नलुं रे, स्वर्ग पुरी उपमान ॥ राजासूरें शोनतो रे, दिन दिन चढते वान ॥ सुगुण नर सांजल मोरी वात ॥ १ ॥ पुत्र हुआ बे सूरनें रे, जयचंदने विजयचंद, ॥ बे बांधव वाला घणुं रे, कुवलयने जेम चंद ॥ सु० ॥ २ ॥ मुज बांधव जय चंदने रे, ताते दीधुं राज ॥ लाडे लाल्यो हुं रहुं रे, न लहुं काज अकाज ॥ सु० ॥ ३ ॥ स्वर्गें तात स धारियो रे, मुजमन वेगी चिंत ॥ सघला दिन नहिं सारिखा रे, जग सहु एम कहंत ॥ सु० ॥ ४ ॥ बां धव आणा किम वहूं रे, आणी एम अंदेश ॥ अ निमाने हुं नीसर्यो रे, जोवा देशविदेश ॥ सु० ॥ ५ ॥ जोतो जोतो नवनवा रे, देश विदेश चरित्त ॥ एक दि वस चंडावती रे. पुरी वन मांहि पहुत्त ॥ सु० ॥ ६ ॥ सौम्य सुरूप सोहामणो रे, कोइक विद्या सिद्ध ॥ दीगे नर में ततखणें रे, प्रणपति विनयें कीध ॥ सु० ॥ ७ ॥ पीडा तनु तस आकरी रे, रोग विकट अतिसार ॥ दी

ण श्रंग लागे नहीं रे, उठण शक्ति लगार ॥ सु० ॥७॥ मुज मन करुणा उपनी रे, कीधा बहु उपचार ॥ थो डा दिन मांहे थयो रे, रोग सकल परिहार ॥ सु० ॥ ॥८॥ प्रसन्न थई मुज पुत्रीउ रे, नामादिक लखि तेण ॥ विद्या बे दीधी वली रे, भक्ति विमोहे एण ॥ सु० ॥ ॥१०॥ थंभकरी एक वशिकरी रे, बीजी सूनी पाव ॥ विगत बताई जूजुई रे, जोडी जाना दाव ॥ सु० ॥ ११ ॥ रस तुंबी दीधी वली रे, सेवा साची जाण ॥ चतुर तु रत इम बोलीउं रे, मुज उपर हित आण ॥सु०॥ १२॥ गाढी खप करतां लह्यो रे, अति दुर्लभ रस एह ॥ लोह थकी कांचन करे रे, तिलनर फरश्यो जेह ॥ सु० ॥ १३ ॥ ते आप्यो ने तुजने रे, करजे कोडी ज तन्न ॥ फिरि फिरि जहेतां दोहिलो रे, जेहवो दिव्य र तन्न ॥सु०॥ १४॥ मात पिता जिम बालने रे, देई सीख सुजाण ॥ श्रीपरवत भेटण भणी रे, तेह गयो गुण खाण ॥ सु० १५ ॥ तिहांथी हुं चाल्यो वली रे, जो वा देश विशेष ॥ कौतुक रंगे नवनवां रे, अचरज दीठ अलेख ॥सु०॥१६॥ फिरि आव्यो चंद्रावती रे, केतेक दिवस अटंत ॥ जोग मले भवितव्यतुं रे, विधिना जेह घटंत ॥ सु० ॥ १७ ॥ पुरनां कौतुक निर-

गें प्रगट करुं नहीं, आतम गत अवदात ॥ २ ॥ इम निश्चयकरी चित्तसुं, पूछे वली ससनेह ॥ पछी ययोसुं साहेवा, हितकरी सर्व कहेह ॥ ३ ॥ कुमर कहे हुं डुःख जखो, फरियो नगर अशेष ॥ विस्मय सहित कुटुंबनी, व्यापि चिंत विशेष ॥ ४ ॥ शून्यपुरी सव निरखतो, नृपकुल पोहोतो जाम ॥ राजभुवन रमणि य द्युति, उपरें चढीउं ताम ॥ ५ ॥ दीन वदन विछा य तनु, करती चिंत अपार ॥ वेठी दीठी एकली, तिहां वड वांधव नार ॥ ६ ॥ में बोलावी हेजसुं, आ वी साहमी धाय ॥ नयणे श्रावण जडी लगी, हीयडे डुःख न समाय ॥ ७ ॥ मधुर लपा मुज आगलें, मू के वेसण पीठ ॥ वात विगत पूछण भणी, हुं तस नि कट वईठ ॥ ८ ॥ रीति कीसी एह नगरीनी, डुरवस्थि त किम आम ॥ ईम पूछयो में ततखिणें, बोली वा त विराम ॥ ९ ॥

ढाल सातमी॥ मोरासाहेवहोश्रीशीतलनाथके ॥एदेशी॥

॥ मोरा देवर हो सुण डुःखनी वात के, कहेतां हइ डुं थरहरे ॥ वाल्हाने हो आगें अवदात के, कह्या विण कहो किम सरे ॥ १ ॥ एक दिवसें हो ईण उद्यान के, तापस कोइक आवीयो ॥ रक्तांवर

तो शिव ध्यान के, मास दिवस तप नावीयो ॥ २ ॥ तस सांनलि हो महिमा निरपाय के, लोक सकल आवी नमे ॥ केइ चरचे हो नक्तें करी पाय के, केशर चंदन कुंकुमे ॥ ३ ॥ केताएक हो सेवे तस पास के, अर्हनिशि शिष्य जेम तेहनां ॥ केताएक हो स्तुति मांमी खास के, ॥ लोक ते गहेला नेहना ॥ ४ ॥ आमंत्रे हो केइ नोजन हेत के, पण नावे तेहने घरें ॥ तुज बांधव हो एकदिन सुचि चेत के,पारण काजे तुंहतरे. ॥ ५ ॥ ते तापस हो मानी नृप वयण के, आव्यो पारण कारणे ॥ नृप बोले हो इम विकसित नयण के, अंब फल्यो अम वारणे ॥ ६ ॥ ते वेगो हो जिमण जेणी वार के, मुजने इम नृपें कह्यो ॥ जो नाखे हो तुं पवन प्रचार के, ए तापस पुण्य लह्यो ॥ ७ ॥ में जुगतें हो वींज्यो रूपी वाय के, गगें आगें वेसकें ॥ जाणंती हो करुणानिधि आज के प्रसन्न करुं दिन पसेकें ॥ ८ ॥ ते पापी हो मुज रूप निहाल के. पाखंडी चित्तमां चल्यो ॥ चाहंतो हो सुख संगम ध्यान के, कामाकुल मन टल वल्यो ॥ ९ ॥ निज मानक हो पोहोंनो हृद मांग के, मान वम्यो मन आकरो ॥ संकल्पें हो मननानो योग के, योग

सकल मूक्यो परो ॥ १० ॥ निशि आव्यो हो कर
ई गोह के, नांखी मंदिर उपरें ॥ करी संचो हो चढी
ने तव जोह के, चोर परें गृह संचरे ॥ ११ ॥ सुज
पासें हो आव्यो ततकाल के, प्रारथना मांमी घणी
॥ वीवरावे हो करतो चकचाल के, शक्ति देखाडे आ
पणी ॥ १२ ॥ प्रतिबोध्यो हो में हढता काज के, पा
प तणा फल दाखीने, ते बोले हो विरमुं नहीं आज
के, काम सिखाविण चाखीनें ॥ १३ ॥ इंम मसलत
हो करतां सवि तेह के, नृप सुणी आव्यो वारणे ॥ सु
नि दीठो हो उलखीयो तेह के, घर तेड्यो जे पारणे
॥ १४ ॥ फिट पापी हो थूरत शिरदार के, काम करे
एहवा ॥ तुज प्रगट्यो हो ए पाप अपार के, फल
ामीम हवे तेहवा ॥ १५ ॥ एम कहीने हो बंधाव्यो
म के, राजायें सेवक कने ॥ अपराधें हो गोधाने जे
के, जीके जुडे तेहने ॥ १६ ॥ परभातें हो फेर्यो
मांहि के, सेरी सेरी कूटता, खर चाड्यो हो दुःख
त्यांहि के, चट चट आमिष चूंटता ॥ १७ ॥ निं
हो राजायें जोर के, पुरजन वरग हसी जनो ॥
नो हो नमित चिहुं तर के, मलमूत्रे सिंची जनो
॥ आक्रोम्यां हो मनि लोक विडंब के, चार मा

तो शिव ध्यान के, मास दिवस तप भावीयो ॥ १ ॥ तस सांभलि हो महिमा निरपाय के, लोक सकल आवी नमे ॥ केइ चरचे हो भक्तें करी पाय के, केशर चंदन कुंकुमे ॥ २ ॥ केताएक हो सेवे तस पास के, अर्हनिशि शिष्य जेम तेहनां ॥ केताएक हो स्तुति मांडी खास के, ॥ लोक ते गहेला नेहना ॥ ४ ॥ आमंत्रे हो केइ भोजन हेत के, पण नावे तेहने घरें ॥ तुज बांधव हो एकदिन सुचि चेत के, पारण काजे तेहतरे, ॥ ५ ॥ ते तापस हो मानी नृप वयण के, आव्यो पारण कारणे ॥ नृप बोले हो इम विकसित नयण के, अंब फल्यो अम बारणे ॥ ६ ॥ ते वेगो हो जिमण जेणी वार के, मुजने इम नृपें कह्यो ॥ जो नावे हो तुं पवन प्रचार के, ए तापस पुण्ये लह्यो ॥ ७ ॥ में सुगतें हो वींज्यो रूपी वाय के, रागें आगें वेगकें ॥ जाणंती हो करुणानिधि आज के, प्रलय करं दिन पमेकें ॥ ८ ॥ ते पापी हो मुज रूप निहाल के, पावको चित्तमां चड्यो ॥ चाहंतो हो मुज संगम ध्यान के, कामाकुल मन टल वल्यो ॥ ९ ॥ निज बालक हो पोतानो दृढ योग के, ज्ञान वल्यो मन आकरो ॥ संकल्पे हो मलवानो योग के, योग

सकल मूक्यो दरो ॥ १० ॥ निशि श्राव्यो हो कर ने ई गोह के, खोली मंदिर प्रवरें ॥ करी संचो हो पडी ने तव जोड के, चोर परें गृह संचरे ॥ ११ ॥ सुत पासें हो श्राव्यो तत्काल के, श्ररचना मांगी घणी ॥ वीनवावे हो करतो चकचाल के, सखि देखाडे श्रापणी ॥ १२ ॥ प्रतिबोध्यो हो में इहता काज के, पाप तणा फल दाखीने , ते बोले हो विरमुं नहीं श्राज के, काम सिद्धाविण चाखीनें ॥ १३ ॥ इंम मसलत हो करतां सवि तेह के, नृप सुणी श्राव्यो बारणे ॥ मुनि दीठो हो ठेलवीयो तेह के, घर तेडयो जे पारणे ॥ १४ ॥ फिट पापी हो धूरत शिरदार के, काम करे तूं एहवा ॥ तुज प्रगटयो हो ए पाप श्रपार के, फल पामीश हवे तेहवा ॥ १५ ॥ एम कहीने हो बंधाव्यो तेम के, राजायें सेवक कने ॥ श्रपराधें हो गोधाने जेम के, जीकें जूडे तेहने ॥ १६ ॥ परनातें हो फेरयो पुरमांहि के, सेरी सेरी कूटता, खर चाढयो हो दुःख पामे त्यांहि के, चट चट श्रामिष चूंटता ॥ १७ ॥ निंदितो हो राजायें जोर के, पुरजन वरग हसी जतो ॥ ताडीतो हो नमित चिहुं उर के, मलमूत्रें सिंची जतो ॥ १८ ॥ श्राकोस्यो हो सविलोक विडंब के, च

रें ते मारीउं ॥ वलपुख्यो हो योगिणना तुंब कें, नूपें काम इस्यो कीयो ॥ १ए ॥ ते रूपनो हो राक्षस अव सान के, निज आतम विद्या करी ॥ संजारी हो पूर व अपमान के, वैर जाग्यो मत उंसरी ॥ २० ॥ अ ति नीपण हो विरुउ विकराल के, कोपाकुल गलगा जतो ॥ वलगाडया हो कंठे विष व्याल के, गिरिवर वन तरु नाजतो ॥ २१ ॥ मुख वमतो हो विश्वानर जाल के, पिंगल लोचन हव नख्यो ॥ कर लीधो हो तीखो करवाल के, जाणे गिरि कोइ संचख्यो ॥ २२ ॥ घस मसतो हो आव्यो ततकाल के, राजाने इणीपरें कहे ॥ मुज मारक हो पापी नूपाल के, किम सातायें तुं रहे ॥ २३ ॥ तुज बांधव हो सरणे गयो तास के, तोपण जटकसुं मारियो, पापीयडे हो आवी एक शा तके, नृपनो वैर उतारियो ॥ २४ ॥ नय देखी हो पु र सविलोक के, जीव लेई नासी गया ॥ केइ मा सा हो करता घणु शोक के, पण नावी पापी दया ॥ २५ ॥ पुरुषनो हो देखी नयनूत के, नासंती मु जने ग्रही ॥ इम बोल्यो हो धरी राग प्रतीत के, नइ वही ॥२६॥ मुजसायें हो नोगव सुखनोग वीहे तुं कामनी ॥ रहे मंदिर हो ए सरिखो

योग के,नाग्ये लहीयें नामनी ॥२७॥ एमकहि हूं हो राखी तेणे जूंग के, आप वसे सुख लंपटें, निशि आवे हो मंदिरमां रंग के, दिवसें किहां किण ते अटें ॥ २८ ॥ देवरजी हो अम एहवा हवाल के, जे जाणो ते करो हवे ॥ इम कांतें हो कही सातमी ढाल के, वात कही विजया सवे ॥ २९ ॥

॥ दोहा ॥

कुमर निसासो नांखीने, पूछे मर्म्म विचार ॥ किम जीतीने एहने, वालुं राज्य उदार ॥ १ ॥ मर्म्म कहे विजया हवे, सांजल शुनट पुरोग ॥ राज चिंत तुज शिर अछे, तिणे दाखुंतुं योग ॥ २ ॥ सूतां राक्षसनां चरण, घृतशुं जो मरदाय ॥ मृतक समो अति निंद वश, तो निश्चेतन थाय ॥ ३ ॥ नर मरदें निद्रित हुवे, स्त्री फरसे नवि थाय ॥ जो नर नेद लहे वली, नांखे शिस उडाय ॥ ४ ॥ बांधव नारी सुख थकी, सांजली सर्व सरूप ॥ करवा कोइ सहाय नर, चाल्यो हुं अनिरूप ॥ ५ ॥ तेटले मुजनें तुं मल्यो, नाग्य योग गुणवंत ॥ तें पूछी मुज वात ते, में नाखी सहु तंत ॥६॥ कुमर चतुरनर देखीने, करवा आतम काम ॥ वली गुणवर्म्माने इसी, अरज करे तेणे ठाम ॥ ७ ॥

रें ते मारीउ ॥ बलपुस्यो हो योगिणना तुंब कें, नूपें
काम इस्यो कीयो ॥ १८ ॥ ते ऊपनो हो राक्षस अव
सान के, निज आतम विद्या करी ॥ संनारी हो पूर
व अपमान के, वैर जाग्यो मत उसरी ॥ २० ॥ अ
ति नीषण हो विरुउ विकराल के, कोपाकुल गलगा
जतो ॥ बलगाडद्या हो कंठे विष व्याल के, गिरिवर
वन तरु नाजतो ॥ २१ ॥ मुख वमतो हो विश्वानर
जाल के, पिंगल लोचन हग नस्यो ॥ कर लीधो हो
तीखो करवाल के, जाणे गिरि कोइ संचस्यो ॥ २२ ॥
घस मसतो हो आव्यो ततकाल के, राजाने इणीपरें
कहे ॥ मुज मारक हो पापी नूपाल के, किम सातायें
तुं रहे ॥ २३ ॥ तुज बांधव हो सरणे गयो तास के,
तोपण जटकसुं मारियो, पापीयडे हो आवी एक शा
सके, नृपनो वैर उतारियो ॥ २४ ॥ नय देखी हो पु
रना सविलोक के, जीव लेई नासी गया ॥ केइ मा
स्या हो करता घणु शोक के, पण नावी पापी दया
॥ २५ ॥ पुरुषनो हो देखी नयनूत के, नासंती सु
जने ग्रही ॥ इम बोल्यो हो धरी राग प्रतीत के, नइ
जावे किहां वही ॥ २६ ॥ मुजसाथें हो नोगव सुखनोग
... तीहे तुं कामनी ॥ रहे मंदिर हो ए सरिखो

योग के,नाख्ये लक्षीयें नामनी ॥१७॥ एमकहि हुं हो
राखी तेणे जूंग के, आप वसे सुख लंपटें, निशि आ
वे हो मंदिरमां रंग के, दिवसें किहां किण ते अटें
॥ १८ ॥ देवरजी हो अम एहवा ह्यान के, जे जा
णो ते करो हवे ॥ इम कातें हो कही सातमी ढाल
के, वात कही विजया सवे ॥१९॥

॥ दोहा ॥

कुमर निसासो नांखीने, पूछे मर्म्म विचार ॥ कि
जीतीने एहने, वाळुं राज्य उदार ॥ १ ॥ मर्म्म
हे विजया हवे, सांभळ छुनट पुरोग ॥ राज चिंत
ज शिर अठे, तिणे दाखुं योग ॥ २ ॥ सूतां राज
तां चरण, घृतशुं जो मरदाय ॥ मृतक समो अति
द वश, तो निश्चेतन थाय ॥ ३ ॥ नर मरदें निद्रि
हवे, स्त्री फरसे नवि थाय ॥ जो नर भेद लहे व
नांखे शिस उडाय ॥ ४ ॥ बांधव नारी सुख प
सांभळी सर्व सरूप ॥ करवा कोइ सहाय नर, चा
हुं अनिरूप ॥ ५ ॥ तेटले मुजनें तुं मल्यो, भाग्य
गुणवंत ॥ तें पूछी मुज वात ते, में भाखी सहु
६॥ कुमर चतुरनर देखीने, करवा आतम काम ॥
गुणवर्म्माने इसी, अरज करे तेणे ठाम ॥ ७ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ धणरा ढोला ॥ ए देशी ॥
॥ कुमर कहे करजोडीने रे, सांभल सुगुण सुजाण ॥ मनरा मान्या ॥ तुज दरिशण करतां हूउं रे, मानव जन्म प्रमाण ॥ १ ॥ म० ॥ अतिभाग हो सकल दुःख भाग, भयत्राग महारा राज अति काग, घाग अ रियण मान ॥ म० ॥ ए आंकणी ॥ हियडुं हेजें गहगहे रे, उत्तम नरने संग ॥ म० ॥ अणचिंत्या साजन मले रे, ते आजसमां गंग ॥ म० ॥ २ ॥ स ज्जन सहेजे परकजूरे, दुखीआं द्ये आधार ॥ म० ॥ बलिहारी ल्युं लखगमें रे, घडिया जेणे किरतार ॥ म० ॥ ३ ॥ विधि सघली दूषण धरी रे, चूको सघ ली सृष्ट ॥ म० ॥ पण साजन घडतां करी रे, चतुरा ई उत्कृष्ट ॥ म० ॥ ४ ॥ स्वारथ तजी पर कारजें रे, समरथ सुगुण हुवंत ॥ म० ॥ चंद्रधवल जस शासतूं रें, दिन दिन ते प्रसवंत ॥ म० ॥ ५ ॥ परजन सु खीया देखीने रे, संत लहे संतोष ॥ म० ॥ दूहव्या ले माणसें रे, पणनाणे मन रोष ॥ म० ॥ ६ ॥ तटनी घण धेनुका रे, संत शशी दिणकार ॥ म० ॥ मित्त कह्या विण स्वारथें रे, करता जग उपगार ॥ ॥ कर साहज तुं माहारो रे, थासे सु

जस अनंत ॥ म० ॥ डुरवस्थित पुर देखतां रे, कि
म तुज डुःख न वहंत ॥ म० ॥ ७ ॥ शेठ कुमर चिं
ते इस्यो रे, कवण करेवो काज ॥ म०॥ पण उपकार
कखा पठी रे, ए करसे प्रतिकार ॥ म० ॥ ए ॥ अंगि
कखो शिर चाढीने रे, विजय वचन निरधार ॥ म० ॥
विनय सहित हवे शेठने रें, बोल्यो विजय कुमार ॥
म० ॥ १० ॥ राक्षसनां पग मरदजो रे, घृतसुं हो
साहस धार ॥ म० ॥ सहस जपन करि मंत्रनो रे,
पंचावीस तेणीवार ॥ म० ॥ ११ ॥ राक्षसने हुं व
श करी रे, करसुं चिंत्या काम ॥ म० ॥ इम विचारी
मेलवी रें, सामग्री पर ताम ॥ म० ॥ १२ ॥ गुप्त प
णे आवी रह्या रे, मंदिरमां एकंत ॥ म० ॥ गुणव
र्म्मायें पहेरियो रे, त्रिजया वेश सुतंत ॥ म० १३ ॥
रयणी पडी रवि आथम्यो रे, प्रगटयो घण अंधार ॥
म० ॥ राक्षस रमतो आवियो रे, रंगे रमे तिणिवार
॥ म० ॥ १४ ॥ रयणीचर कहे नरतणी रे, आज अ
ठे सी वास ॥ मननी मानी ॥ हणतां जे रह्यो जी
वतो रे, करशुं तास विनास ॥ मननी० ॥ १५ ॥ त्रि
या बोले हो चतुर हुंडुं नारी, पणुं वासें महाराज
परचारी, अवर नही कोई पास ॥ म० ॥ १६ ॥

वगणतो उन्नट पणे रे, सूतो सेजें तुरंग ॥ म० ॥
कुमर वहु मिस आवीने रे, मरदे पय निरत्नंग ॥ म०
॥ १७ ॥ विजय कुमर विधिसुं जपे रे,थंन्नन मंत्र वि
शेष ॥ म० ॥ ते पण नरनां गंधथी रे, ऊठे करी अ
देश ॥ म० १८ ॥ जिमजिम ऊठे सेजथी रे, राक्स
मारण हेत ॥म०॥ तिम तिम फरस तणे सुखें रे,लो
टि पडे गत चेत ॥ म०॥ १९ ॥ मंत्र जाप पूरण थयो
रे, मूक्यो मरदन जाम ॥ म० ॥ कुमर विहुने मा
रवा रे, ऊठ्यो राक्स ताम ॥ म० ॥ २० ॥ थंन्यो
अनोपम मंत्रथी रे, सक्तिथइ विछिन्न ॥ म० ॥ दास
थयो करजोडीने रे, नाखें एम वचन्न ॥ म० ॥ २१॥
रेरे साहस मंऊणी रे, कुमर सुणो एक वात ॥म०॥
मुज महिमा मंत्रे हस्यो रे, जिम घन दक्षण वात
॥ म० ॥ २२ ॥ किंकर हुं कीधो खरो रे, मंत्र श
क्तिसुं आज ॥ म० ॥ सेवक साचो जाणीने रे, द्यो सा
हिव कोइ काज ॥ म० ॥ २३ ॥ कुमर कहे सुण तें
करी रे, मुज नगरी निरलोक ॥ म० ॥ गत मंगल वि
धवा जिसी रे, दीसे आज सशोक ॥ म० ॥ २४ ॥ म
णि माणिक कण कंचणे रे, पूरण नरी घर हाट ॥
म० ॥ रचि तोरण स्वस्तिक जलें रे, सुरनित कर स

वि वाट ॥ म० ॥ २५ ॥ तहत्ति करी क्षणमें करी रे, न
गरी नवले रूप ॥ म० ॥ लोक गया वहदिशि जिके
रे, ते तेडया सवि नृप ॥ म० ॥ २६ ॥ विजय कुम
र मन्नि मंत्रवी रे, थाप्यो राज सनूर ॥ म० ॥ अन
मी अरियण नामिया रे, वाध्यो जस महि मूर ॥
म० ॥ २७ ॥ विजय नृपति करज़ो हवे रे, थंन्या व
णिक नो सूल ॥ म० ॥ कांतिविजय पूरी करी रे, आ
ठमी ढाल अमूल ॥ म० ॥ २८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ विजय कुमर पाले प्रजा, दिन दिन परम प्रमोद
॥ शेठ कुमर संगे चतुर, करतो रंग विनोद ॥ १ ॥ ए
क दिवस गुणवर्म्मेनें, नृप कहे सदनाव ॥ राजगयुं
जे में लह्युं, ते सवि तुज परनाव ॥ २ ॥ अतिडुक्क
र पणो आदरी, कीधुं मोटुं काज ॥ प्रत्युपकार करण
नणी, ल्ये थुं हुं तुज राज ॥३॥ अवसर निरखी बोली
उ, शेठ कुमर एम वाच ॥ में धरा फिरते निरखीउ, तुं
मणि बीजा काच ॥४॥ सुगुणा तेह सराहियें, जे ज
गमाहें कृतज्ञ ॥ प्रत्युपकार करे जिके, ते सघला धुरि
विज्ञ ॥ ५ ॥ राज्य वधो दिन दिन घणो, हुं सेवक तुं
स्वामि ॥ जो मानो मुज वीनती, तो सारो एक का

॥ ६ ॥ लोलाकर बांधव सहित, चंद्रपुरीनो शाह ॥ विद्या थंन्यो तात मुज, ते ठोडो नरनाह ॥ ७ ॥ अविनय सहियें साहेबा, करियें ए उपचार ॥ जां जीवुं तां तुम तणो, गणसुं ए उपकार ॥ ८ ॥ त्रिगतपणे वृत्तांत सवि, लाखे करी मनुहार ॥ करतां नृपने वीनती, रीज्यो चित उदार ॥ ए ॥

ढाल नवमी ॥ जीहो मथुरा नगरीनो राजीयो ॥ए देशी॥

॥ जीहो राय अचंजो पामीउ, जीहो बोल्यो शीस धुंणाय ॥ जीहो वषथी अमृत रूपनो, जीहो अकथ कथा कहेवाय ॥ १ ॥ कुमर वारी धन धन तुम अवतार ॥ जीहो आप सहित दुःख दोहिलो, जीहो कीधो मुज उपकार ॥ कुमर० ॥ ए आंकणी ॥ जीहो ते तेहवा तुं एहवो, जीहो उपकारक पवीत्र ॥ जीहो अद्भूत रचना देवनी, जीहो दीठी आज विचित्र ॥ कुमर० ॥ २ ॥ जीहो कारण गुण कारज ग्रहे, जीहो एहवुं शास्त्र प्रसिद्ध ॥ जीहो तात तणा दुरगुण विधि, जीहो पण तुज अंग न कीध ॥ कुम० ॥ ३ ॥ जीहो काम अछे ए केटलुं, जीहो करवो में निरधार ॥ जीहो पण कारण तुज हाथ छे,जीहो जेहथी न लागे वार ॥ कुम० ॥ ४ ॥ जीहो इणे पुर परिसर बाहेरें, जी

हो एक सिंगगिरि नाम ॥ जीहो देवाधिष्टित छे तिहां, जीहो कूई एक सुगाम ॥ कुम० ॥ ५ ॥ जीहो गुप्त रहे गिरि कूपिका, जीहो सुरसानिध दिन रयण ॥ जीहो क्षण मले क्षण ऊघडे, जीहो तस मुख जिम नर नयण ॥ कुम० ॥ ६ ॥ जीहो सिद्धोपध जल तेहनुं, जीहो पूर्वहि लहेरां खाय ॥ जीहो काम पडे विद्या निलो, जीहो कोइक लेवा जाय ॥ कुम० ॥ ७ ॥ जीहो उत्तर साधक शिर रहे, जीहो साधक पेसे त्यांहि ॥ जीहो जल लेइने नीकले, जीहो जो न मरे दिलमांहि ॥ कुम० ॥ ८ ॥ जीहो ते जलनो महिमा घणो, जीहो भांजे नीड निदान ॥ जीहो थंभ्यो नर छूटे सही, जीहो जो सुत गांठे आण ॥ कुम० ॥ ९ ॥ जीहो जेहने सुत नहीं आपणो, जीहो ते नर नवि छूटंत ॥ जीहो वार तीन गांठे सही, जीहो बंधन चट विघटंत ॥ कुम० ॥ १० ॥ जीहो कारण ए छूटा तणो, जीहो एहनो अन्य न कोय ॥ जीहो आरति कुमरें अनुमन्यो, जीहो दुःकर काज जोय ॥ कुम० ॥ ११ ॥ जीहो सामग्री सुरसहायसुं, जीहो कुमर गयो गिरि शृंग ॥ जीहो आप कूईमां उतरे, जीहो जिम पंकज मांहे भृंग ॥ कु० ॥१

जीहो निर्नय जल तूंबी भरी,जीहो वेगे मांची संच ॥ जीहो कूई बाहिर काढीउं, जीहो नूपें त्यांथी खंच॥ ॥ कुम० ॥ १३ ॥ जीहो अती साहसथी रीजीउं, जी हो तव कूईनो देव ॥ जीहो प्रसन्न प्रगट आवी रह्यो, जीहो आगल करवा सेव ॥ कुम० ॥ १४ ॥ जीहो अश्वरूप कीधो सुरें,जीहो वे वेगा तस पीठ ॥ जीहो आव्या पुर चंद्रावती, जीहो थंभ्या बेहु दीठ ॥ कुम० ॥१५॥जीहो कुमरें जलसुं सिंचीउं,जीहो लोचाकरनो अंस ॥ जीहो जटक बूटी अलगो रह्यो,जीहो पास थ की जिम हंस ॥कुम० ॥ १६ ॥ जीहो लोचनंदी बूटो नहीं, जीहो पाडे मुख पोकार ॥ जीहो पुत्रविना को ण तेहने, जीहो दुःखथी रोडण हार॥ कुम०॥१७ जीहो विजयचंद्रने वीनवी, जीहो गुणवर्म्म ते शेठ जीहो घरमांहे पेसण दीउं, जीहो बीजा शिर रहे वेठ ॥ कुम० ॥ १८ ॥ जीहो मंत्री पद मुद्रा नणी जीहो आमंत्रे नरपाल ॥ जीहो गुणवर्म्मा नवि अ दरे, जीहो जाणी पाप कराल ॥ कुम० ॥ १९ ॥ जी हो केतेक दिन पूठें नृपें, जीहो निजपुर कीध प्रय ण ॥ जीहो विरहव्यथा हीयडे वधी, जीहो कुमरर बांध्या प्राण ॥कुम०॥२०॥ जीहो करी सत्कार अनेक

पा, जीहो बंन्नी दीधी काढि, जीहो नृपति चली पा
ही होए, जीहो कुमर लीए शिर चाढि ॥कुम०॥२१॥
जीहो माया घोटक कपटें, जीहो वेली विजय नरिंद ॥
जीहो निजपुर पोहोतो वेगशुं, जीहो जिम विद्याधर
इंद ॥ कुम० ॥ २२ ॥ जीहो गुणवम्मार्यें आवीने, जी
हो रात्रि समय एकांत ॥ जीहो मुज आगें भेटण ध
र्यो, जीहो नाख्यो सविवृत्तांत ॥कुम०॥२३॥ जीहो
प्राण पियारी आगलें, जीहो राखीजें सुं गुज्झ ॥ प्रीयें
सुण चिंता कारण मुज्झ ॥ ए आंकणी ॥ जीहो काका
नो निज तातनो, जीहो पावण मोसा दोष ॥ जीहो
कुमरें खमाव्यो मुज्झने, जीहो विनय विविध परे पोष
॥ प्री० ॥ २४ ॥ जीहो राज्य गयुं वालुं फरी, जीहो
वाल्युं वैर डुरंत ॥ जीहो विजय कुमर निज तातने,
जीहो चाढी शोभ अनंत ॥ प्री० ॥ २५ ॥ जीहो मर
ण पणु पण आगमी, जीहो शोभ सुतें निज तात ॥
जीहो आपदमांथी उद्धस्यो, जीहो जूउं सुतनां अवदा
त ॥ प्री० ॥ २६ ॥ जीहो पुत्र पाखें कुण कामिनी,
जीहो धण कंचणनी रासि, जीहो सोच दिसा पामे स
दा, जीहो पुत्र रहित आवास ॥ प्री० ॥ २७ ॥ जीहो
धन्यते कृत पुण्यते, जीहो जेहने नवला पुत्र ॥ ज

लाज वधारे वंशनी, जीहो राखे घरनां सूत्र ॥ प्री० ॥ २७ ॥ जीहो लोननंदी संकट सह्यो, जीहो देखी सयल कुटुंब ॥ जीहो जो सुत होवे एहने, जीहो गे डावे अविलंब ॥प्री०॥ २९ ॥ जीहो हुं जगमां निरला गीयो, जीहो माहारे पोतें पोत ॥ जीहो पुत्र रहित सरज्यो किस्यो, जीहो वाल्यो चिंता पोत ॥ प्र० ॥ ३० ॥ जीहो कुंण पूजे गुरु देवने, जीहो कुंण उद्धरे धर्म ठाण ॥ जीहो कुंण धारे कुल आपणु, जीहो पुत्रविना हित आण ॥ प्री० ॥ ३१ ॥ जीहो वंसलता फरसी समो, जीहो सरज्यो कां जगदीश ॥ जीहो ए चिंता मुज नामिनी, जीहो बीजी राव न रीस ॥ प्री०॥ ३२ ॥ जीहो नवमी ढाल पूरी थई, जीहो राय कही ए वात ॥ जीहो कांति कहे पुण्यें हवे, जीहो घर संतति सुख सात ॥ प्री० ॥ ३३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चंपकमाला चित्तमां, डुःखपूरी दिलगीर ॥ इम बोली प्रीतम प्रत्यें, नयण जरंती नीर ॥ १ ॥ धन्य जनम तस लहीजीयें, जेहने आगल बाल ॥ हंसे रमे रोवे लुटें, चाले चाल मराल ॥ २ ॥ घूघर पग घम कावतो, करतो विविध टकोल ॥ माय तणो केडो ग्र

ही, बोले मण मण बोल ॥ ३ ॥ सुनग शिखा शिर फरहरें, धूलें धूसर देह ॥ लघुदंता आंकें पडे, हेजवि या करि वेह ॥ ४ ॥ सुतविण जेहा मालियां, प्रत्य क्ष खरा मसाण ॥ निजकुल कमल विकाशवा, पुत्र क ह्यो नव जाण ॥ ५ ॥ में पाम्यो नहीं एक पण, धि गधिग मुज अवतार ॥ पुत्र विहुणी दुःखणी, कां स रजी किरतार ॥ ६ ॥ पूरव पुण्य किया विना, क्यां थी संतति होय ॥ सुकृत करीजें दुःख तजी, ते नणी आपण दोय ॥ ७ ॥ चिंता दूरें गेडियो, हृदय थकी हे कंत ॥ पुत्र हेतें आराधशुं, देव कोई सतवंत ॥ ८ ॥ प्रसन्नथयो सुर पूरशे, वंछित नवलो एह ॥ सुरसेवा सा ची करी, निःफल न होवे केह ॥ ९ ॥ राय कहे सुण सुंदरी, मुजमन नावि वात ॥ शुनदिनथी आराधशुं, कोइक सुर विख्यात ॥ १० ॥

॥ ढाल दशमी ॥ राजाने परधान रे ॥ ए देशी ॥

॥ तिणे अवसर नृप नारि रे, वली बोले इश्युं, धर ति दिलमां दुःख घणुए ॥ वदनथयुं विछाय रे, चिंता उमटी, दीसे अंग दयामणुए ॥ १ ॥ थरहर थरके गात्र रे, विनय विव्हल थई, चटपट लागी आकरीए ॥ रति नाठी संताप रे, व्याप्यो पापीउ, चतुराइ

उलसरीए ॥ १ ॥ फरके जमणी आंख रे, प्रीतम मा
हरी, कुंण जाणे से कारणेए ॥ नावि कोइ अनर्थ रे,
फरि फरि सूचवे, मुज मन नरहे धारणेए ॥ २ ॥ था
शे कोइ उतपात रे, नूतादिक तणुं, दुःखदाई मुजने
सहीए ॥ अथवा विद्युत्पात रे, याशे मुज शिरे, के
उलका पडशे वहीए ॥ ४ ॥ के जासे सर्वस्व रे, जी
वन माहरो,कुशल होजो तुमने सदाए ॥ के थाशे मु
ज रोग रे, शोक अशुन कर, के पडशे कांइ आपदा
ए ॥ ५ ॥ प्राण तणो संदेह रे, होशे माहरे, निश्चय
लोचन एम कहेए ॥ हुं नवि जाणुं कांइ रे, नोली
नामिनी, दैवगति ज्ञानी लहेए ॥ ६ ॥ रति नावी मु
ज तेण रे, हइडुं कम कमे, अधृति थइंडुं काहिलीए
॥ वीरधवल नृपाल रे, वलतुं एम वदे, कां नामिनी
दुःखमां नलीए ॥ ७ ॥ चिंता मकरिस लगार रे, मु
ज वेगां फिरी, शंका शंकटनी कहेए ॥ रवि तपते अ
तितीव्र रे, तिमिर नरम समो, लोक मांहे केम थिति
लहेए ॥ ८ ॥ जो होसे तुज कांइ रे, बाधा अणजा
णी,विरह व्यथा दुःख कारणीए ॥ तो मुजने तुज सा
थें रे, शरण अगनी तणो, होशे सही सुण नामि
नीए ॥ ए ॥ इणीपरें धरणी नाहरे, आश्वासी प्रिया,

सिंहासन जई बेसियो ए ॥ फिरिफिरि फरके नयण रे, राणीनो वली, तिमतिम थरके तस हीयोए ॥ १० ॥ मंदिरमांथी उठी रे, वनिकामां गई, अरतिलहे तिण पण घडीए ॥ वनिकामांथी तेम रे, आवी मंदिरे, त्यां थी बाहिर वन जणीए ॥ ११ ॥ वनथी पुरमां आई रे, सहियर परवरी, देवकुलें जावे वलीए ॥ नलहे र ति लवलेश रे, क्लेश सहे घणु, जिम शूके जल मा छलीए ॥ १२ ॥ इम वोल्या मध्यान्ह रे, आवी निज घरें, सूती पण मन वाउलोए ॥ अल्प अल्प तव निंद रे, आवी तिणे समे, जेह थयो ते सांभलोए ॥ १३ ॥ वेगवती नामेण रे, दासी तेंतलें, हाथांसुं शिर कूटती ए ॥ आंशुधार प्रवाह रे, मारग सिंचती, केश चटा चट चूंटतीए ॥ १४ ॥ विलवंती दुःखपूर रे, आवी दोडी ने, राय कन्हे रोती घणुए ॥ हा हा शुं थयो तुज रे, सामणि माहरी, दीधुं देव विगोवणुए ॥ १५ ॥ फिटरे धीठा दैव रे, इम कही ढली पडी, निरखी च क्यो नृप चिंतवेए ॥ आपद दीसे कांय रे, राणीने पडी, हा हा सुं करवुं हवेए ॥ १६ ॥ थया व्याकु ल राय रे, दीनवदन थई, पूछे दासीने इस्युंए ॥ कह कहने कह रे, कहेने सुं थयुं, सुल अंतेउरनुं

ए ॥ १७ ॥ फाटे हीयडुं मुझ रे, धीरज सहुं नहीं, कहेतां वारम लावीयेंए ॥ वेगवती तव कही रे, रडती इंम कहे, हे सुंदुःख उदलावीयेंए ॥ १८ ॥ कहेवा सर खी वात रे, नहींहो साहेबा, कहेतां नवहे जीभडी ए, वीर शिरोमणी देव रे, हृदय कठण करो, वज्र वि षम छे वातडीए ॥ १९ ॥ चंपकमाला देव रे, प्रभु हृदयें सरी, दाहिण लोयण फुरकंतेए ॥ वेला गालण काज रे, चिंतातुर नमी, बाहिर अंतर जत ततेंए ॥ ॥ २० ॥ लहति अरति अपार रे, मंदिर आवीने, सूती एकांते जईए ॥ मुजने पान निमित्त रे, मूकी हुं पण, पान लई पाछी गईए ॥ २१ ॥ बोलावी नर हे ज रे, मुख बोले नहीं, दीठी काठ परें पडीए ॥ जीव रहित निश्चेष्ट रे, जांखी देहडी, मीचाणी दोय आं खडीए ॥ २२ ॥ के सोसी कुंण प्रेत रे, के साकिण ग्रसी, के कांइ सापणी डसी गईए ॥ अथवा उत्कृष्ट रोग रे, जीव लेई गयो, के निज हत्या करी मुईए ॥ ॥ २३ ॥ निरखी माठा सूल रे, पडियो ध्रासको, पण नकलाय ए सुं थयुंए ॥ आई दोडी एथ रे, शुद्धि स वे गई, जीवडलो उडी गयोए ॥ २४ ॥ वयणसुणी नृपाल रे, कडुआ विष जिस्यां, मूर्छागत धरणी ढ

लोए ॥ वींज्यो सीतल वाय रे, सींच्यो चंदने, कांई मूर्छाथी वलोए ॥ २५ ॥ जागो कुंवर अनेक रे, नेह विवस थयो, विलपण लागो एणीपरेंए ॥ रे हत्यारा दैव रे, कहेने किहां गयो, जीवन माहारुं अप हरिए ॥ २६ ॥ जोमुज देवा डुःक रे, समरथ तुं हूं ते, मुनेकां प्रथम न मारियोए ॥ करुणा हीणा डुष्ट रे, देईने दगो, विण हथियारे विदारियोए ॥ २७ ॥ जाहि जाहि जाहि रे, मत रहे जीवडा, मन मेलूं सीधारतांए ॥ हा हा हूं संताप रे, विरहानल त णु, सुंदरी विण तुज धारतांए ॥ २८ ॥ रे रे कुलनी देवीरे, अवसर आजने, कांइ उवेखो परियईए ॥ ते ऋषीनी आसीस रे, सुकृत फलें नरी, तेपण निःफल केम गईए ॥२९॥ हा गोरी गुणवंत रे, किम नकही मुज, मरण दिसा जाणी तरेए ॥ जो जाणत एरीत रे, पहेली ताहरी. तो राखत हइडा उपरेंए ॥ ३० ॥ हाहा हुं अज्ञान रे, मूढ शिरोमणि, जावि आपद सांसहीए ॥ दीनवदन विछाय रे, धुरतें मुजने, हुं नारी आपद कहीए ॥ ३१ ॥ निंदा करतो आप रे, नृपति विलपतो, परिजननें डुःखियां करेए ॥ क्षण हिमें गति मंद रे, क्षण धरणी ढले, क्षण आंसू न–

अक्त दीसे सर्वथाए ॥ के सुर मारी केण रे, के म
न पीडायें, साजी तनु केम अन्यथाए ॥ ४० ॥ मरशे
निश्चें राय रे, देवी मोहियो, राज्य नंग थाशे सहीए ॥
करवो कोण प्रकार रे, इम मंत्री सहू, अणबोल्या रह्या
कहीए ॥ ४१ ॥ मंत्री नाम सुबुद्धि रे, बोल्यो तत्क्षणे,
काल विलंब न कीजीयेंए ॥ तो होये कोइ उपाय रे,
जेहथी नृपने, मरण थकी राखीजीयेंए ॥ ४२ ॥ मंत्री
बोल्यो एक रे, वली एम चित्तधरी, कालक्षेप केणी प
रे हूवेए ॥ राजादेवी मोहें रे, घाश्यो परवशें, काज अ
काज नवी जुवे ए ॥४३॥ वली कहे मंत्री सुबुद्धि रे,
विषनी विक्रिया, ले देवीए जीवसेए ॥ मणिमंत्रोषध
योग रे, विष टलशें परहो, राणी अति सुख पामसे
ए ॥ ४४ ॥ जूठो कहीने एम रे, नृपने आश्वासी, क
रत अकाज निवारीयेंए ॥ गुप्तमंत्री करे सर्व रे, मंत्री
सर बोल्या, राजन विष उपचारियेंए ॥४५॥ कांइ क
रो महाराज रे, निपट अधीरता, नवलां मंगल वर
तशेए ॥ सांनली एम नरेश रे, विकश्वर लोचने, हर्ष
सुधा नाह्यो तिसेंए ॥ ४६ ॥ करशो कोडी उपाय रे,
नृपने नोलवी, मंत्रीसर मति आगला ए ॥ ५२

ढाल रसाल रे, कांतिविजय कहे, मोहें नडीया नलाए ॥ ४७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रे रे ल्यावो धाइने,विषधर औषध यंत्र ॥ त्रो मंत्रिक प्रतें, धारे विष मणिमंत्र ॥ १ ॥ नृप देशे मेलवी, सामग्री ततकाल ॥ आरंभे मांत्रिक या, उचित कह्या सवि चाल ॥२॥ एकांते देवी करे चिकित्सा तेम ॥ मांत्रिक मंत्रीसर सहित, नृप जेम एम ॥ ३ ॥ हमणां देवी करसे, करशे त्र विकाश ॥ हवणां कांइक बोलशे, वलशे वली सास ॥ ४ ॥ बोली एम नृप चिंततां, अर्द्धदिवस रात्र ॥ सचिवादि निरुपाय सवि, करे विचार प्र ॥ ५ ॥ नृपने केम उगारसुं, मरण दिशायी आ नेह मर्म्यो जाणे नहीं, करतो चतुर अकाज ॥ ६ राज्य देश गढ सुंदरी, सेना लोक हिरण्य ॥ स प्रमुख दिन आजथी, सकल थया अशरण्य ॥ ७ जन चिंता सायर पड्या, मंत्रीसर नयवाम ॥ एक क सामासुं जुवे, जिम मृग चूका ठाम ॥ ८ ॥ द कांता तिण समे, पूर्वपरें नृप आप ॥ आपूरयो दुःखसुं, इणिविध करे विलाप ॥ ९ ॥

॥ ढाल अगीआरमी ॥ रे रंगरता करहला रे, मो
पीउ विरलो लाण ॥ हुंतो ऊपर काढीने रे,
प्राण करुं कुरबाण ॥ सुरंगा करहा रे ॥ मो
पीउ पाछो वाल, मजीठा करहा रे ॥ ए देशी ॥
॥ रे गुणवंति गोरडी रे, कांइ रही रे रीसाय ॥ वि
ण वोल्यां मुज जीवडो रे, प्राहुणडा परें जाय ॥ प्रि
यारी बोलो हो, अइ प्रीतमशुं एक वार ॥ १ ॥ ह
वीजी बोलो हो ॥ विरस थइ कुण कारणे रे, एवडो
छेह दिखाय ॥ प्रि० ॥ ए आंकणी ॥ तुज नयटे गजगाम
नी रे, करवो मान अपार ॥ जीवतणी तुं ओषधी रे,
तुंहिज प्राणाधार ॥ प्रि० ॥ २ ॥ जक नलहे पल जी
वडो रे, तुज विरहें प्रजलाय ॥ हासुं नकीजें तेहवुं
रे, जिणे हासें घर जाय ॥ प्रि० ॥ ३ ॥ कठप्रिया
दिन बहु चढयो रे, लोक लगे व्यवसाय ॥ पण प्रीत
मने उवेखती रे, तुं बोले नहीं कांय ॥ प्रि० ॥ ४ ॥
तुं कहेती मुजने सदा रे, हृदय वसो छो मुज्ज ॥ ते
मुज आज वीसारतां रे, वात लही में तुज्ज ॥ प्रि० ॥
॥ ५ ॥ एक घडी मुज तुजविना रे, मुजने वरस स
मान ॥ तो दिन ए केम वोलसे रे, गोरी कहे गुण खा
ण ॥ प्रि० ॥ ६ ॥ केइ विलसे केइ हसे रे, सुखीयां

पुर नर नार ॥ आज अवस्था मुज नणी रे,
ए किरतार ॥ प्रि० ॥ ७ ॥ मो तनु दुःख दुर्बल
रे, जो तुं आंख उघाड ॥ ग्रीषम पवने आकरी रे,
म तरु नांख्या जाड ॥ प्रि० ॥ ८ तुं चतुरा च
रे, जीव रहणनी वाड ॥ पण इंण वेला पदमणी
हीयडुं नाख्युं जाड ॥ प्रि० ॥ ए ॥ हरिलंकी
बोलनें रे, निंद रयणरी छांडि ॥ कर करुणा मुज
मनी रे, मननी पूर रुहाडि ॥ प्रि० ॥ १० ॥
कारण कीधा घणा रे, सबल जुगति उपचार ॥
हा पण ऊठे नहीं रे, कीजें कवण प्रकार ॥ प्रि
११ ॥ निश्चे दीसे छे हवे रे, पोहोती तुं परलो
नहिंतो मुख बोले सही रे, वालम करते शोक ॥
॥१२॥ धिग प्रभुता धिग चातुरी रे, धिग जीवन
राज्य ॥ संकट मांहेथी तुजने रे, हुं राखी शक्यो
आज ॥ प्रि०॥१३ ॥ हे मुगधे हे कोपनें रे, हे
गई केथ ॥ तुज मुख निरखण उमह्यो रे, हुं पण
वुं तेथ ॥ प्रि० ॥ १४ ॥ हवे सूधे छोडी हवे रे,
पण निरधार ॥ सांसि सकी नहिं सोकने रे, फि
ट तुज आचार ॥ प्रि० ॥ १५ ॥ इम कहीने
ढल्यो रे, मूर्छावशें नृपाल ॥ शीतल जल सिंच्यो

उठयो वली करुणाल ॥ प्रि० ॥ १६ ॥ हा हा मैं
लिर सुणो रे, नूमि पडया मुज हाथ ॥ परलोकें
ातो प्रिया रे, जाइस हुं पण साथ ॥ १७ ॥ सलुं
॥ मंत्रि हो, ढील करो मत कांइ, सुरंगा मंत्रि हो ॥
आंकणी ॥ गोलानदीने कांठडे रे, हुं प्रजलीस संघा
॥ सलुं० ॥ सीघ्र करावो चय तिहां रे, काठें पूरो
र्ण ॥ अंग बालीने आपणो रे, निर्वृत्ति थाइस तूर्ण
स० ॥ १८ ॥ नयणे आवण जडीलगी रे, बोल्या
म प्रधान ॥ हाहाहा अनरथ किस्यो रे, मांकयो ए
ाजान ॥ १९ ॥ रंगीला राजन हो ॥ समजो हीयडा
ांहे, वशीला राजन हो ॥ मत करो आतम दाह,
हवीला राजनहो ॥ कहीयें गोव विगायने रे,साहेबजी
ढ मान ॥ रंगी० ॥ कमल जिस्यां रवि आथमे रे,जल
कै जिम मीन ॥ माय ताय विण बालज्युं रे, कांइ
ारो जगदीन ॥ रंगी० ॥ २० ॥ मत ल्यो रिपु एह रा
ज्यने रे, पामो प्रजा मत पीड ॥ वसुधा मत अशरण
हुउ रे, नपडो अममां नीड ॥ रंगी० ॥ २१ ॥ तुमस
रिखा महाराजवी रे, धीर पणुं मत ढांम ॥ तो
किहां रहेसे लोकमां रे, थानक ते देखाड ॥ रंगी० ॥
२२ ॥ मरण लही देवी प्रनो रे, ते तो कर्म निदान

॥ ए अवस्था ध्रुव कही रे, सवजाने अवशान ॥
गी० ॥ २३ ॥ राजा खेचर केशवा रे, चक्रधरा देवेंद्र ॥
कर्मवशी नवि छूटीआ रे, गणधर देव जिनेंद्र ॥ रंगी०
॥ २४ ॥ जीवित अथिर संसारमां रे, जाण अणी ज
ल बिंद ॥ संपद चपल खनावथी रे, जेहवी स्त्री सं
द ॥ रंगी० ॥ २५ ॥ सयण कह्यां सवि कारमां रे, जे
हवा सुपन जंजाल ॥ काया काच घटिजिसी रे, यौव
न संध्या काल ॥ रंगी० ॥ २६ ॥ जन्म जरा मरणे क
र्यो रे, ए संसार असार ॥ इम जाणीने साहेबा रे,
मतकरो [illegible] ॥ रंगी० ॥ २७ ॥ संजालो निज
[illegible] रे, टालो मननो शोक ॥ गालो अरियण मान
रे, पालो पीडित लोक ॥ रंगी० ॥ २८ ॥ राय कहे
[illegible] रे, साची तुमारी वात ॥ पण देवी मोहे म
रे, [illegible] न जात ॥ रंगी० ॥ २९ ॥ में पूर्वे
[illegible] रे, सायँ [illegible] बोल ॥ जो [illegible] तो
न [illegible] रे, [illegible] ॥ रंगी० ॥ ३० ॥
[illegible] रे, [illegible] ॥ ते [illegible]
[illegible] रे, [illegible] ॥ रंगी० ॥ ३१ ॥
[illegible] रे, [illegible] ॥
[illegible] ॥ रंगी० ॥ ३२

जिण सत्य कारण होमीउं रे, वचन पणे निजदेह ॥ मूउं पण जग जीवतो रे, शास्त्रें कह्यो नर तेह ॥ ॥ रंगी० ॥ ३३ ॥ क्षिप्र करोने सज्जता रे, म्हारी देवी साथ ॥ देशुं दुःखने जलांजली रे, ए निश्चय अम आथ ॥ रंगी० ॥ ३४ ॥ इम कहेतां नृप वारिउं रे, बहु परे सर्व प्रधान ॥ पण विरमे नहीं मरणथी रे, देवी मोह निदान ॥ रंगी० ॥ ३५ ॥ अनरथ करतां नवि चले रे, कोइ मंत्रीनुं मन्न ॥ ते जणी मौन लेई रह्या रे, रोता मंत्री रतन्न ॥ रंगी० ॥ ३६ ॥ पूरी ढाल इग्यारमी रे, कांतिविजय कहे एह ॥ मोह सु भट जीते जिके रे, होय नर सुखिया तेह॥रं०॥३७॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे नृपें मंत्रीशने, देखी करता ढील ॥ प्रेख्या पुरुष बीजा वली, करवा साज हगील ॥ १ ॥ तुरत मंगावी पालखी, रयण जडित मनुहार ॥ नवरावे कलेवर नारिनुं, कनक कलश जलधार ॥ २ ॥ कुंकुम चंदन मृगमदें, कर्पूरें करी लेप ॥ कुसुम सरसुं पूजि कें, कस्रो धूप उत्क्षेप ॥ ३ ॥ शिबिका मांहि थापिउं, ते राणीनुं देह ॥ चाले नृप गोलो तटें,शबिका आगें

करेह ॥ ४ ॥ पुरथी जब नृप नीकले, तब डुखिया सविलोक ॥ जूरे विलपे हूवकें,रोवे करता शोक॥५॥

॥ ढाल बारमी ॥ ढलंगडी ढलंगडी तो कीजे मुनिसुव्रत स्वामीनी रे ॥ ए देशी ॥

॥ परिजन परिजन डुःखियो सहु रोवे घणु रे, नृप विरहो न खमाय ॥ करुणें करुणें शब्दें बोले आवीने रे, वदन हूआ विलाय ॥ १ ॥ रायजिम रायजिम गेडो अमने साहेबा रे,विण शरणें गुणवंत ॥ तुमसुख तुम सुख दीठे सुख पामुं सदा रे, ठेह न द्यो क्षिति कंत ॥ रा० ॥ २ ॥ तुमविण तुमविण अमने कहो कुंण राखशे रे, शंकटथी महाराय ॥ मनना मनना मनोरथ हवे कुंण पूरसे रे, वहुला लाड लडाय ॥ रा० ॥ ३ ॥ न शक्यो नशक्यो देखी दैव अटारडो रे, अमचो सुख निरधार ॥ नहींतो नहींतो सम्रजु पण केम चूकीउ रे, मूके विण आधार ॥ रा० ॥ ४ ॥ तिणदिन तिण दिन बाल तरुण घरढा मली रे,करे घणा आक्रंद ॥ अन्न न अन्न न भावे नावी निंदडी रे, वाध्यो दिल डुःख दंद ॥ रा० ॥ ५ ॥ हणीया हणीया वज्रकें विष व्यापिया रे,घूमे पडिया केई ॥ हृदय हृदय सुंनाहत सर्वे स्वजनं रे, गहिला केइ फिरेई ॥ रा० ॥ ६ ॥ हावत

ह्रा वरस ह्रानिधि ह्रा कुळ दीवडा रे,कुळमंडण कुळ मोड ॥ ह्रानृप ह्रानृप श्रमने छंडी चडावीने रे, प्रतका ई विण गोड ॥ रा० ॥ ८ ॥ कुळनी कुळनी तृषा इंम विलपे घणुं रे, नाठी रति दिलगीर ॥ मनमें मनमें खूतो नेह नरिंदनो रे, जिम तीखेरो तीर ॥ रा० ॥ ७ ॥ धिगधिग धिगधिग श्रमची बुद्धिने रे, जे नावी कोइ काम ॥ सहज सहज सनेहो श्रमने छोडीने रे, जो जावे ठे श्राम ॥ रा० ॥ ए ॥ मुजरो मुजरो श्रमचो कुंण लेशे हवे रे, कुंण देसे सनमान ॥ श्रातम श्रातम निचिंतायें वाउला रे, इंम निंदे परधान ॥ रा० ॥ १० ॥ ह्राजिणे ह्राजिणे रूपें काम दरावीयो रे, चली हूउ निर्दंद ॥ सुंदर हो सुंदर हो प्रभु नारी कारणे रे, किम वालीश ते देह ॥ रा० ॥ ११ ॥ कदीहो कदीहो रूप मनोहर पेखशुं रे, परगट पूनम चंद ॥ इमकही इमकही नयणे जल ह्वे रे, पुरनारिनां वृंद ॥ रा० ॥ १२ ॥ जनक जनक तणीपरें पाल्या प्रेमथी रे, ए सघला पुर लोक ॥ रुलसे रुलसे देव विछोह्या बापडा रे, जिम दिणयर विण कोक ॥ रा० ॥ १३ ॥ नगरी नगरी दीसे श्राज दयामणी रे, जिम दवदाधुं वन्न ॥ इंमकेइ इंमकेइ संचरता नृप मारगें रे,नाखें दीन वचन्न

॥रा०॥१४॥ सींचिय सींचिय धण कंचण मणि माणि कें रे, मोहोटा कीधा आप ॥ तुमविण तुमविण तरु सम अमचो टालशे रे, कुण डुःख दव संताप ॥ रा० ॥ १५ ॥ याचक याचक लोक जणे नृप आगलें रे, आपणो डुःख देखाय ॥ जीवन जीवन जातां जगमां केह्नो रे, धीरज जीव धराय ॥ रा० ॥ १६ ॥ करुणा करुणा दाक्षिणताने सूरता रे, धीरज दान समान ॥ कविता कविता सत्य सुजग गंजीरता रे, निरुपम ज्ञान विज्ञान ॥ रा० ॥ १७ ॥ साहस साहस सत्य प्रचंम उदारता रे, उपगार करता धर्म ॥ ए सवि ए सवि गुण निरधारी आजथी रे, कीधा ते विण मर्म्म ॥ रा० ॥ १८ ॥ रंमित रंमित पंमित कीधा विण गुने रे, खंमित दैवे एण ॥ मंमित मंमित विद्यायें तुम सारिखा रे, पडिया शंकट जेण ॥ रा० ॥ १९ ॥ चोपद चोपद जल पीवे नहीं तिणे समे रे, ठोडे पंखी चूण ॥ तो नर तो नर देखी जातो राजवी रे, डुःख पामे नहीं कूंण ॥ रा० ॥ २० ॥ ममकर ममकर अणघटतुं ईम राजीया रे, हाहा धींगड धीर ॥ ईमपुर ईमपुर वासी वचन उवेखतो रे, पोहोतो गोला तीर ॥ रा० ॥ २१ ॥ ते शब ते शब तीरें तव उतरावीने रे, मंमावे चय

त्यांहि ॥ देतो देतो दान याचकने अतरे रे, न्हावा
लागो मांहि ॥ रा० ॥ २१ ॥ जूधव जूधव नाहें त्यां
जल जेतले रे, रडते लोक समग्र ॥ जलने जलने पू
रें, तव एक तांणियुं रे, आव्यो काठ अदग्र ॥ रा० ॥
२३ ॥ निरखी निरखी मंत्रीसर तव बोलीया रे; रे रे
तारक जादु ॥ लाकड लाकड जलमां सनमुख आव
तुं रे, वेगें काढी ल्यादु ॥ रा०॥ २४ ॥ एह ठे एह ठे
योग्य चिताने ईम सुणी रे, धीवर पेसी त्यांहि ॥ बा
हिर बाहिर काढयो ताणी तत्क्षणे रें, जलकंमुं अव
गाहिं ॥ रा०॥ २५ ॥ बंधन बंधन बहुले बांध्यो नि
हुं परखें रे,त्रापा परें ते थंन ॥ दीसें दीसे स्थूल कठि
न आगें पडयो रे, जाणे वाह्ण थंन ॥ रा० ॥ २६
॥ आदेशें आदेशें नृपने सेवकें रे, काप्यो हुरिवें बंध
॥ जटक जटकसुं अर्द्ध जुदो वयडी पडयो रे, त्रूटीग
या सविसंध ॥ रा० ॥ २७ ॥ तेहमां तेहमां मृगमदें
केशर चंदने रे, अरची सुंदर अंग ॥ चरची चरची व
न सारादिक गंधशुं रे, माल ठवि बहुरंग ॥ रा० ॥
२८ ॥ कंठे कंठे लहके हार मनोहरू रे, निद्रित जो
बन चंग ॥ जलमां जलमां ठानि रति आवी रही रे,
केतरी आंणी अनंग ॥ रा० ॥ २९ ॥ चंपक ५

माला नृप मनमोहनी रे, दीठी दैव संयोग ॥ पेखवी
पेखवी नृपतिनो दिल जागीउ रे, जागो विरह वियो
ग ॥ रा० ॥ ३० ॥ अचरिज अचरिज पाम्या पुरजन
सवे तिहां रे, दूरगया जंजाल ॥ इंणी परे इंणीपरें का
तिविजयें कही बारमी रे,सुंदर ढाल रसाल॥रा०॥३१॥

॥ दोहा ॥

॥ लोक सकलवस्थित पणे, नृपने बोले आंम ॥
चंपकमाला जीवती, लही सुकृतथी स्वाम ॥ १ ॥ पा
लखीयें पोढाडीने, राणी आणी गेह ॥ खरी एहके ते
ह छे, के कोइ छल छे एह ॥ २ ॥ नृपति कहे सेवक
प्रतें, निरखो शिबिका मांहिं ॥ तेह देह तिमहिंज अ
छे, के विध धरिउ आंहिं ॥ ३ ॥ जब सेवक जइ नि
रखीउ, आवी शिबिका पास ॥ तवते शब हड हड
हसत, उडी गयो आकाश ॥ ४ ॥ हैहै हुं वंच्यो ख
रो, छेतरतां नृप छेल ॥ नारि कारण जे नर मरे, ते
जग साचा वेल ॥ ५ ॥ इंम कहेतो चलतो नजें, ज
लत्कार मय देह ॥ दंत मसत करतल घसत, थयो
उलका सम तेह ॥ ६ ॥ थरहरता सेवक सवे, आव्या
नृपने पास ॥ वीतक व्यतिकर नृपनें, दाख्यो शकल
प्रकाश ॥ ७ ॥ राय कहे ए वातनो, कोइ न लहे वि

याम ॥ तेमाटे पूछे हवे, राणीने इण ठाम ॥ ८ ॥
॥ ढाल तेरमी ॥ सोनानी आंगीहे, सुंदर मारा
साहेबाने अंग, बिच बिच रतन जडाय;
कोडी सूरज करुं वारणेजी ॥ ए देशी ॥
॥ मृगा नयणी राणी हे, सुंदरहवे नयण उघाड ॥
कगो राणी आलश छोडी,कबको प्रीतम अलजो करे
जी ॥ १ ॥ प्रिया मोरी बोलो हे हसित मुखें मीठडा
बोल, कहो राणी चीतक वात ॥ धुरथी जाणीजे
जिण परेंजी ॥ २ ॥ वयणा ते सुणी हे, राणी कहे
निद्रा छांड ॥ कहो पीउ कनाछो केंम, जीना वशन
ए पहेरीनेंजी ॥ ३ ॥ लखगमे कना हे, निकट चय
पाखलें लोक ॥ कहो पीउ शिबिका मांहें, ठवीय ला
व्या छो केहनेजी ॥ ४ ॥ नृपति कहे माहरी हे, सुंद
र पछे कहेंसुं वात, कहो तुमचो विरतंत, जिम श्रम
मन सांसो टलेजी ॥ ५ ॥ क्यां गइ क्यां रही हे, नव
ल किहां पाम्यो हार, कहो किम पेठो काठ,किणे वा
ही गोला जलेंजी ॥ ६ ॥ पदमणी प्रेमे हे, कहे एणें
वडनी छांहिं ॥ चालो पीउ थाउं सुख, संभलावुं श्र
म वातडीजी ॥ ७ ॥ नृपति तव आव्यो हे,सकल ज
न विंटयो तेय ॥ श्रमें भरी कोमल काय, तडकें त

थइ रातडीजी ॥ ८ ॥ राणी कहे वाणी हे, प्रीतम प
ण जाणो ठो तेह ॥ दाहिण मुज फुरक्यो जे नयण,
सूचक अशुन निमित्तनोजी ॥ ए ॥ नमी वन वाडी
हे, आवी फरी मंदिर माहि ॥ दासी गइ लेवा पान,
वेगवती चंचल तनुंजी ॥ १० ॥ निद्रान्नर तेणें हे,
सूती जव सेज हुं आय ॥ डुष्ट कोइ आयो पास, तुरत
उपाडी लेई गयोजी ॥ ११ ॥ सूंने गिरि टूंके हे, मूकी
मुज नागो धीव ॥ नयें घण थरकित गात, सकल दि
श जोउं सुंथयोजी ॥ १२ ॥ दीसे नही कोइ हे, पा
ठल मुख आगल पास ॥ सुण्युं कोइ विषम आक्रं
द, विरुआ वनचरना घणाजी ॥ १३ ॥ वाघ सिंह
धडूके ह, सबल दीये चित्ता फाल ॥ रमे रीठ देतां दो
ट, किहां कणे मृग करे खेलणाजी ॥ १४ ॥ जाउं कि
ण आगें हे, सुणे कोण डुःखनी वात ॥ चिंता चयसुं
लगी चित्त, क्षणएक डुःख पूरें नरीजी ॥ १५ ॥ सा
हस धरी साचो हे, चाली दिशि एक निहाल ॥ किहां
पिउ किहां वन केणि, वैरी अकारण अपहरिजी॥१६।
चढीगिरि टुंके हे, करूं निज आतम घात ॥ चित चि
ती एहवुं त्यांहिं, चाली लड थडते पगेंजी ॥ १७ ।
दीठों तस सिंगे हे, वारू एक नवल प्रासाद ॥ ऊंच

अति जलहल ज्योति, जलके अंबर तत्त लगेंजी ॥
१८ ॥ शयन प्रभु राजे हे, मोहन जिहां जगनो ना
थ ॥ देखी मणि मूरत खास, अंतर आतम उलस्यो
जी ॥ १९ ॥ कीधी स्तुति मोटी हे, ललित पद अर्थ
गंभीर ॥ लागो जिनसुं एकतान, दुःख सयल मनथी
खिस्योजी ॥२०॥ कीर्ति कही रुडी हे, सरस ए तेरमो
ढाल ॥ मीठी जिम साकर द्राख, सुणतां काने अमृ
त वस्योजी ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ विधिविवेक पूर्वक पणें, कीधी में जिन सेव ॥
नगति निरखी हरखित थई, बोली शासन देव ॥१॥
हुं शासन रखवालिका, चकेसरी मुज नाम ॥ आ
दि भुवन रक्षा करूं, मलयाचल शुन ठाम ॥ २ ॥ म
लय देवी मुज नाम छे, बीजुं ठाण गुणेण ॥ साहमी
धर्म जणी चरण, प्रणमुं हुं तिणे एण ॥ ३ ॥ कठिण
हीयुं करी कामनी, मनमां कांइ म बीह ॥ पडे अव
स्था माणसा, नटले सुख दुःख लीह ॥ ४ ॥ पूछ्युं
में कहे मावडी, किणे आणी मुज आंहिं ॥ कहियें स
वि निरत्तसुं, तवसा बोली त्यांहिं ॥ ५ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥ मेंदी रंग लागो ॥ ए देशी ॥
॥ वीरधवल तुज नाहने रे, वीरपाल हुउ बंधु ॥ व० ॥ सांभलो ॥ निर्गुण लोभी राज्यनो रे, कूड कपटनो सिंधु ॥ व० ॥ १ ॥ वड बांधव हणवा भणी रे, चिंते विविध उपाय ॥ व० ॥ अन्य दिवस वध कारणें रे, पेठो मंदिर आय ॥ व० ॥ २ ॥ खड्ग घाय मूके खरो रे, नृप साहामो अति धीठ ॥ व० ॥ एक घायें वड बांधवें रे, पाडयो धरणी पीठ ॥ व० ॥ ३ ॥ अनुभवें अंते मरी रे, एणे गिरि ए थयो भूत ॥ व० ॥ अतुल बली परिवारमें रे, दीठो माहरे दूत ॥ व० ॥ ४ ॥ गत भवें ते पापीउ रे, संभारे निज वयर ॥ व० ॥ छल जोतो नर नाहनां रे, विचरे वनगिरि नयर ॥ व० ॥ ५ ॥ पुण्यबलें नसके करी रे, नृपने कांइ विरूप ॥ व० ॥ चिंते नृपने नारिशुं रे, प्रेम निबड छे अनूप ॥ व० ॥ ६ ॥ जो मारुं नृप नारिने रे, तो मरसे नृप आप ॥ व० ॥ खल जासे सीतल जलें रे, टलसे सर्व संताप ॥ व० ॥ ७ ॥ राणी छल ताके रसी रे, लागो रहे नित पूठ ॥ व० ॥ सूती सेजें तुं एकली रे, क ...। तेणे उठ ॥ व० ॥ ८ ॥ डुंगगिरि टुंकें मूकीने रे, आप थयो विसराल ॥ व० ॥ पूरव पुण्यें भेटीया

रे, तें श्रीरुषन कृपाल ॥ व० ॥ ९ ॥ तूठी हुं जिन म
क्रिणी रे, आपुं तुं वर माग ॥ व० ॥ इनइा दर्शन दे
वनो रे, दीठो ए सोजाग ॥ व० ॥ १० ॥ देवीने में
वीनव्युं रे, जो तूठी मुज माय ॥ व० ॥ संतति नहीं
महारे किस्यो रे, कीजें तास उपाय ॥ व० ॥ ११ ॥
चंपकमालाने कहे रे, निसुणी वाणी एम ॥ व० ॥
चक्केसरी देवी वली रे, बोली धरी अति प्रेम ॥ व०
॥ १२ ॥ पुत्र पुत्रीने जोडले रे, थाशें तुज संतान
॥ व० ॥ गर्न रोध तहारे थयो रे, तेतो नूत निदान
॥ व० ॥ १३ ॥ हवे डुःख देतां वारशुं रे, निज सेव
कने नूत ॥ व० ॥ शिक्षा देशुं आकरी रे, खल न करे
करतूत ॥ व० ॥ १४ ॥ नृप कहे मति तुज रूअडी रे,
माग्यो वारू एह ॥ व० ॥ चिंता माहारी उद्धरे रे,
तुज विण कुण गुण गेह ॥ व० ॥ १५ ॥ प्रिया कहे खिति
कंतनें रे, परम कृपापर जुंज ॥ प्रीतम सांजलो ॥ हार
दीधो ए देवीयें रे, नामें लक्ष्मी पूंज ॥ प्री० ॥ १६ ॥
सप्रनाव सुर संक्रम्यो रे, हार रयणबहु मूल ॥ प्री० ॥ स
यल मनोरथ पूरसे रे, करशे जग अनुकूल ॥ प्री० ॥
॥ १७ ॥ एहयकी सपराक्रमी रे, होशे तुज संतान
॥ प्री० ॥ अतुल विघन जाशे परां रे, वधशे जगमां

मान ॥ प्री० १८ ॥ पूछ्यो वली देवी कहे रे, नृत त
णो संबंध ॥ प्री० ॥ चंद्रावतीयें ते गयोरे, तुज गवि
गिरिने खंध ॥ प्री० ॥ १९ ॥ तुज गामें तुज सारिखो
रे, करी रह्यो मृतक सरूप ॥ प्री० ॥ मरण लही द
यिता गणी रे, घणु दुःख पाम्यो नृप ॥ प्री० ॥ २०॥
सात पोहोरने अंतरें रे, मलशे ताहरो कंत ॥ प्री० ॥
तिण वेला एक खेंचरी रे, नन्नपंथथी आवंत ॥ प्री०
॥ २१ ॥ अदृश्य नाव देवी लहे रे, खगनारी हुई संग
॥ प्री० ॥ एकाकी मुज देखीनें रे, पूछ्युं वचन विन
ग ॥ प्री० ॥ २२ ॥ तस आगल में माहरो रे, नाख्यो
सवि विरतंत ॥ प्री० ॥ सुणी विस्मित बोली तिका रे,
मुज दुःखथी निससंत ॥ प्री० ॥ २३ ॥ चिंता ममकर
नामिनी रे, करछुं अति उपकार ॥ प्री० ॥ चंद्रावतीयें
मूकछुं रे, जिहां तुज प्राणधार ॥ प्री० ॥ २४ ॥ इम
आसासें खेंचरी रे, वचन अमृत सुरसाल ॥ प्री० ॥
कांतिविजय इम चौदमी रे, नाखी निरूपम ढाल ॥ २५

॥ दोहा ॥

॥ रूप निरखी हरखी तिका, कहे सांनल गुण
खाण ॥ विद्या साधन कारणे, हुं आवी इणे वाण ॥ १
स्त्री लंपट मुज पति इहां, आवे ठे मुज पूठ ॥ व

कुल रूप निहालशे, श्रीज खेमशे करु ॥ ४ ॥ लोक धरम माहरे हते, जनमां नपे दुःखदाय ॥ खोइश तुं कुल वडडी, परवश वात वताय ॥ ३ ॥ नवरस जोनी नाहलो, अवगणशे कुल लाज ॥ आवी तुरत लिम ताहरो, विषम सुधारुं काज ॥ ४ ॥ एम कही करतल महो, खग नारी दे धीर ॥ निकट नदी जल नर वहे, आवी तेहने तीर ॥ ५ ॥

॥ ढाल पंदरमी ॥ घोडीतो आई थां ॥
रा देशमां मारुजी ॥ ए देशी ॥

॥ गुहीर नदी जल उघले ॥ वारुजी ॥ उटके पवन नी गंट हो, मृगा नयणीरा नमर सुणो वातडी, मारुजी ॥ निरखी तट तरु मंमली ॥वा०॥ हीयडुं ना खे काट हो ॥ मृ० ॥ १ ॥ जाणुं हुं एह खेंचरी ॥ वा० ॥ हणसे सही इंणि वाट हो ॥ मृ० ॥ के तरु माले बांधशे ॥ वा० ॥ के जाशे खिति दाट हो ॥ मृ० ॥ २ ॥ के जलपूरें वाहशे ॥ वा० ॥ इंम मन मुज दुःख घाट हो ॥ मृ० ॥ तव निरखे ते खेंचरी ॥ वा० ॥ सुक कठिन एक काठ हो ॥ मृ० ॥ ३ ॥ विद्या वलें ते खेंचरी ॥वा०॥ कीधो फाडी दुभाग हो ॥ मृ० ॥ छिद्र करयो तस अंतरें ॥ वा० ॥ पुरुष

णे माग हो ॥ मृ० ॥ ४ ॥ मुज तनु चरच्यो चंद
॥ वा० ॥ करी मृगमद छिरकाव हो ॥ मृ० ॥ अग
प्रमुख शुन वस्तुयें ॥ वा० ॥ कीधी मुने गरकाव ह
॥ मृ० ॥ ५ ॥ काठ विवरमां मुजधरी ॥ वा० ॥ ढां
ऊपर फाल हो ॥मृ०॥ तदनंतर न लहुं किस्युं ॥वा
॥ गर्ज रही जेम बाल हो ॥ मृ० ॥ ६ ॥ नयणें दी
हवे नाथजी ॥वा०॥ पूरवपुण्य संयोग हो ॥मृ०॥ नृ
कहे तुज विरहण डुःखें ॥ वा० ॥ मेलवीउ ए योग ह
॥ मृ० ॥ ७ ॥ चयमांफी गोला तटें ॥ वा० ॥ वार
मिलिया लोग हो ॥ मृ० ॥ डुःख सुख लाने लोकम
॥ वा० ॥ नटले पूरवकृत जोग हो ॥ मृ० ॥ ८ ॥ मं
कहे तेणे खेंचरी ॥ वा० ॥ शोक सबल डुःख लालि ब
॥ मृ० ॥ काठ डुवल विवरें धरी ॥ वा० ॥ वहेती क
जल वाल हो ॥ मृ० ॥ ए ॥ मारे ते जो खेंचरी
वा० ॥ तो विद्या होये आल हो ॥ मृ० ॥ पोहोर
वस चढते मल्यां ॥ वा० ॥ सात पोहोर सवि का
हो ॥मृ०॥१०॥ नृपकहे मुज दयीता तणो ॥ वा०
हरण हूउ सुख हेत हो ॥ मृ०॥ कुलक्षयकारी नृत
॥ वा० ॥ बंध कस्यो संकेत हो ॥ मृ० ॥ ११ ॥ दे
जल मंदिर तलें ॥ वा० ॥ काठ धस्यो शुनगाम हो

मृ० ॥ इणे अवसर तिहांवली ॥ वा० ॥ ओल्यो वे
तालीक नाम हो ॥ मृ० ॥ १२ ॥ प्रबल प्रतापी वि
क्रमा ॥ वा० ॥ कमला ब्राह्मण जेह हो ॥ मृ० ॥
जय जय ते जग शिर थयो ॥ वा० ॥ प्रतपे दिन
कर एह हो ॥ मृ० ॥ १३ ॥ मंत्री भणे अवसर लही
॥ वा० पधारो पुरनाह हो ॥ मृ० ॥ ब्राह्मण लोय
ण पाणथी ॥ वा० ॥ वीतारो दुःख दाह हो ॥मृ०
॥ १४ ॥ तहत्ति करी नृप कहीयो ॥ वा० ॥ आवे
नयरी वाट हो ॥ मृ० ॥ शब्द पंच नादेंकरी ॥ वा० ॥
वीहिना दिसि गज थाट हो ॥मृ०॥१५॥ मांगलिआ
जय रव भणे ॥वा०॥ नाचे गणिका कोडि हो ॥मृ०॥
ये आसीश सोहामणी ॥ वा० ॥ गुणीजन होडा
होडि हो ॥ मृ० ॥ १६ ॥ लेतो सहुअ वधामणा ॥
वा० ॥ देतो दान उदार हो ॥ मृ० ॥ जोतो पुरनां व्य
वहारिया ॥ वा० ॥ सणगार्यां बाजार हो ॥ मृ० ॥
१७ ॥ नृपति लखनां भेटणां ॥ वा० ॥ ग्रहतो हय
गय थाट हो ॥ मृ० ॥ सुणतां याचकनी स्तुति घणी
॥ वा० ॥ करतो अरि मुख दाट हो ॥ मृ० ॥ १८ ॥
मंदिर पोहोतो महीपति ॥ वा० ॥ भेटे निज परिवा
र हो ॥ मृ० ॥ सचिव प्रमुख नमी नृपने ॥ वा० ॥

पोहोता निज निज गार हो ॥ मृ० ॥ १९ ॥ नाह्
करी नरपति गृहें ॥ वा० ॥ पूजे अरिहंत बिंब हो
मृ० ॥ भोजन विविध प्रकारनां ॥ वा० ॥ आरोगे
विलंब हो ॥ मृ० ॥ २० ॥ भूपति दयीता संगतें
वा० ॥ विलसे नवनव भोग हो ॥ मृ० ॥ पुण्यथकी
दिशा पाधरी ॥ वा० ॥ लहेसे सकल संयोग हो ॥
मृ० ॥ २१ ॥ गर्भधरे ते दिनथकी ॥ वा० ॥ पटरा
णी गजगेल हो ॥ मृ० ॥ कांति कहे ए पनरमी ॥
वा० ॥ ढाल सरस रस रेल हो ॥ मृ० ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ शुगल गर्भ जिमजिम वधे, तिम तिम नृप मनमो
द ॥ राणी भाग्य सोभाग्य भर, धारे विविध विनो
॥ १ ॥ तन रक्षा रूडी परें, नृप करावे तास ॥ क
कृतारथ दोहला, पूरे मननी आस ॥ २ ॥ दयित
सुख केते दिनें, केतक दल ठवी हुंत ॥ तनु डर्नल
णगार रस, अल्प अल्प भावंत ॥ ३ ॥ मुख परिम
रस लालचें, चिहुंदिशि भमर भमंत ॥ सहज सुर
कमालनी, पंकज कुल लाजंत ॥ ४ ॥ पूर्ण दिन
शुभ वासरें, शुभ मुहूर्त शुभ वार ॥ पुत्र पुत्रिका
प तिणे, प्रसव्यो शुभ उदार ॥ ५ ॥

॥ ढाल श्रेत्रमी ॥ गेंडुडानी ॥ एदेशी ॥

॥ पटराणी प्रसव्यो तिहां रे हांजी, सुत तनूजानो युगल अनूप ॥ एरूडोरे ॥ रतिपतिनो रंग, एरूडोरे ॥ सरसतीनो अंग, एरूडो रे ॥ जिम नंदन खितिथी हूवेरे हांजी, कल्पवृक्ष ले अंकूर रूप ॥ ए० ॥ १ ॥ वेगवती दासी धसी रे हांजी, दीये वधामणी नृपने आय ॥ ए० ॥ शिर न्हवरावे संतोषसुं रे हांजी, दास करम तस टाले राय ॥ ए० ॥ २ ॥ वेग करावो नयरमां रे हांजी, दशदिन नृप थितिपति काज ॥ ए० ॥ पुत्रागमननां हर्षथी रे हांजी, हूई अपूरव मन सुख साज ॥ ए० ॥ ३ ॥ नगर भुवन सवि चीतख्यां रे हांजी, वारण ठविया सोवन कुंन ॥ ए० ॥ ध्वज पट लहकाविया रे हांजी, रोप्या टोमें कदली थंन ॥ ए० ॥ ४ ॥ रयणथंन ऊना कस्वा रे हांजी, अति सुंदर पुर शोना हेत ॥ ए० ॥ तोरण दल सहकारनां रे हांजी, बांध्या नव मंगल शंकेत ॥ ए० ॥ ५ ॥ पुरजाकें हट सहेरमां रे हांजी, थापी सोवन दीरक उज ॥ ए० ॥ सेरी पंथी पूजावीने रे हांजी, कीधां सींचण चंदन घोल ॥ ए० ॥ ६ ॥ राज मारग त्रिक चाचरें रे हांजी, देवरावे मणि कंचन दान ॥ ए० ॥ बं

दि नवन सोधि विधि रे हांजी, मूक्यां सघला
वान ॥ ए० ॥ ७ ॥ वाज्यो पडह अमारनो रे
देश मांहे जय नंजण नाग ॥ ए० ॥ कुसुम पगर
तें नस्या रे हांजी, धूपघटा पसरी नन माग ॥
ए ॥ जनपद अकर कस्या हसें रे हांजी, ताडया
नि वाज्या घोर ॥ ए० ॥ नाच करी हाव नावथी
हांजी, वार वधू कुल चतुर चकोर ॥ ए० ॥ ए
अक्षत पात्र नरी रंगथी रे हांजी, नृपने वधावे आ
वी नार ॥ ए० ॥ विकशित रंग वधामणा रे हांजी
चतुर सचिव मलिया दरबार ॥ ए० ॥ १० ॥ नुवन
नुवन थापा दीया रे हांजी, सुरनी अगर कुंकुम घ
घोल ॥ए०॥ उत्सव महोत्सव मांमिया रे हांजी, शोना
नगरनी पोल ॥ ए० ॥ ११ ॥ मांगलिआ मंगल न
रे हांजी, बंनण नणे बहुला स्तुति पाठ ॥ ए०
मल्ल रमें बल माल्हता रे हांजी, नटुआ ठेके ठ
काठ ॥ ए० ॥ १२ ॥ जिन नुवन पूजा रचे रे
जी, सामी नक्ति करंत अनेक ॥ ए० ॥ अवसर
र खेंचे नही रे हांजी, कहियें साचो तास विवेक
ए० ॥ १३ ॥ अशुचिकर्म वीत्या पछी रे हांजी,
तोपें सुपरें कुटुंब ॥ ए० ॥ कर पंकज जोडी कहे

हांजी, ते आगल नृपति अविलंब ॥ ए० ॥ १४ ॥ मया करी मलया सुरी रे हांजी, आप्यां सुगने बे संतान ॥ ए० ॥ तस नामे हांजो दिन्हे रे हांजी, मलय सुंदरी अभिधान ॥ ए० ॥ १५ ॥ पंचधाइ पालीजता रे हांजी, कुमर कुमरी वधे ससनूर ॥ ए० ॥ दिनदिन नवल कला ग्रहे रे हांजी, बीज तणो जिम चंद्र अंकूर ॥ ए० ॥ १६ ॥ हसण लुण्ण चलणादि करे हांजी, जिम जिम साधे शैशव योग ॥ ए० ॥ तिम तिम नृप राणी लहे रे हांजी, हर्ष मनोहर फल संयोग ॥ ए० ॥ १७ ॥ निरुपम योवनने रसें रे हांजी, शिशुता रस मूके आसाद ॥ ए० ॥ कालें उचित कला ग्रहे रे हांजी, बुध संगें निज मति उनमाद ॥ ए० ॥ १८ ॥ किणदिन मदगज राजथी रे हांजी, खेल करे पण नृप सुत बांध ॥ ए० ॥ ख्यालकरे हयथी कदे रे हांजी, खड्ग रमें नाखें सरसांध ॥ ए० ॥ १९ ॥ कुमरी पण नमरी परे रे हांजी, वींटी परिकर अति अनुकूल ॥ ए० ॥ वनवाडी आराममां रे हांजी, रमण करे यौवन मद जूल ॥ ए० ॥ २० ॥ कांतिविजय बुध शोलमी रे हांजी, ढाल कही वत्सवनी एह ॥ ए० ॥ पुण्यथकी जय मा

लिका रे हांजी, वाधे दिनदिन वधते नेह ॥ ए॥
२१ ए० ॥ र० ॥ स० ॥ सर्वगाथा ॥ ५४२ ॥

॥ चोपाइ ॥ खंमखंम रस ठे नवनवा, सुणत
मीठा साकर लवा ॥ निर्मल मलयचरित्र जग जयो,
प्रथम खंम संपूर्ण थयो ॥ १ ॥

॥ इति श्रीज्ञानरत्नोपाख्यानापरनामनिमलयसुं
रिचरित्रे पंमितकांतिविजयगणिविरचिते प्राकृतप्रबं
मलयसुंदरीप्रशवनो नाम प्रथमः खंमः संपूर्णः ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय खंम प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ स्वस्तिश्री गुरु जिन गिरा, गणधरने करजोडी
बीजो खंम कहुं हवे, आलश निड़ा गोडी ॥ १ ॥
मीठी जो होय कथा, कथक वचन निर्दोष ॥ मी
सना सुणे वली, तो होये रसनो पोष ॥ २ ॥ कोक
कोरवे चातुरी, चित्रमां करे चकोर ॥ रस नंजण विक
करे, मापाल नहीं ते ढोर ॥३॥ तेहनणी मन थिर कर
मूकी सघलो धंध ॥ कहेतां श्रोता सांनलो, गर
कथा संबंध ॥४॥ लही हवे कुमरी जुगग, यौवन
सुरंग ॥ काळे काम समूहना, नगमें विविध तरंग॥

ढाल चोथी ॥ कन्यानाक यौवन आईनी पूर ॥ ए देशी ॥
॥ यौवन रस पूरें चढी रे, नवजोबने गात ॥
झलके करे कर्णिका रे, जाणु आलो पूनिमनी रात
रे ॥ कन्यानाक यौवन आईनी पूर, गली रूपे सूटी
लीधी रति मणी ॥ कन्यानाक यौवन आईनी पूर ॥ ए
आंकणी ॥ वेणि निहाली श्यामली रे, नागुं नागिण
घोल ॥ वदन कमल रस लालचें रे, मानु बेठी भमरनी
ढेल ॥ क० ॥ १ ॥ भालनलुं भाग्यें भर्युं रे, दीपे सबल
सुघाट ॥ पुण्य रेख लिखवा भणी रे, विधि मांमगो क
नकनो पाट ॥ क० ॥ ३ ॥ मीनडिया मृगनी जिस्यो रे,
लोचन तास वखाण ॥ तीखाई तिविना गढी रे, जिम
सर चाढ्या खुरसाण ॥ क० ॥ ४ ॥ सज्जन मन धारा
जिसी रे. नासा सरल सुहाय ॥ चांचें लाज्या सूडला
रे, ते लखि लखि वनफल खाय ॥ क० ॥ ५ ॥ अधर
धरे रंग रातडो रे, नवपल्लव सुकुमाल ॥ वडवातल
संगति मिलें रे, मानु पेठी विद्रुम जाल ॥ क० ॥६॥
बिहुं परवधारे अतिकला रे, तस मुख चंद्र हसाय ॥
निरखी खिसाणो चंद्रमा रे, नित्य उदय लहीं खिसी
जाय ॥ क० ॥ ७ ॥ सरल सुंहाली बाल्हडी रे, तेह सु
ढावे बाल ॥ अभिनव उपे जोडले रे, नमी आवी क

ल्पतरु म्हाल ॥ क० ॥ ८ ॥ गोल कठिन कंचुक कस्या
रे, कुच युग एम शोन्नाय ॥ काम नृपति जीतवा न
णी रे, इहां तंबू दीधा आय ॥ क० ॥ ए ॥ उदर त
कोमल पातलुं रे, जेहवुं पोयण पान ॥ जलकारें
जाण्यो पडे रे, अति कनक तवकने वान ॥क०॥१०॥
ठाजे सुंदर वाटलो रे, जीणो केडनो लंक ॥ देखतही
वन गिरि गया रे, मृगराज थया साशंक ॥क०॥११॥
जंघ युगल दीपे नलां रे, अचला कदली खंन ॥ म
दन मालियें सिंचिया रे, नरी लावण्य अमृत कुंन ॥
॥ क० ॥ १२ ॥ उंचा मांसल सुंदरू रे, पग काठब
अनुहार ॥ तस तुलना करवा नणी रे, जाणे कमठ
लीयो अवतार ॥ क० ॥ १३ ॥ कोमल कर पग आं
गुली रे, ऊपर नख दीपंत ॥ माणिक मंमित लेखणी रे,
रति पतिनी एहवी नहुंत ॥ क० ॥ १४ ॥ पगें जांज
जम जम करे रे, कटि मेखल खलकार ॥ लक्ष्मी पुं
सोहामणो रे, तस कंठे ठाजे हार ॥ क० ॥ १५
कर कंकण मणिमय जड्या रे, कांने कुंमल जोड
शोहे सवि शिणगारथी रे, गज गामणिआं शिर म
ड ॥ क० ॥ १६ ॥ निपुणपणे दिन निगमी रे, व

लायक ते बाल ॥ नाखी बीजा खंमनी रे, इम कांतें पहेली ढाल ॥ क० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे अछे एह नरतमां, पुरवर पुहवी गाण ॥ सूरपाल नामे तिहां, राज्य करे खिति नाण ॥ १ ॥ पटराणी पदमावती, रूप शील गुण वास ॥ सुत सुंदर तेहने हूउं, नाम महाबल तास ॥ २ ॥ विद्या साधक कोइक नर, सेव्यो कुमरे एण ॥ रूप पलट्टण कारणी, विद्या दीधी तेण ॥ ३ ॥ नाग दमण व्यामोहनी, नूत दमणि वशितंत ॥ मंत्र यंत्र कामेण प्रमुख, शीख्यो कुमर अनंत ॥ ४ ॥ सूरपाल नृप कारजें, खासा आप खवास ॥ मिलणु आपी मोकले, वीरधवल नृप पास ॥ ५ ॥ कुमरें पण नृप वीनवी, कीधुं साथ प्रयाण ॥ केतेक दिन चंद्रावती, पोहोता सुगुण सुजाण ॥ ६ ॥ मूकी मुहगो भेटणो, उचित करी व्यवहार ॥ नृप आगल वेग सहु, नाखे कुशल प्रकार ॥ ॥ ७ ॥ निरखी नृप कहे इस्यो, ए कुंण तरुणो जेह ॥ एक सचिव माहो कहे, मुज लघु बांधव एह ॥ ८ ॥ कही कांम निज स्वामीनां, करयो तेह प्रधान ॥ नृप दत्त मंदिर जई, उतरिआ शुनथान ॥ ए ॥ राज कुः

र मन कौतुको, निरखत पुर आवास ॥ जमतो जम
तो आवीउ, मलया मंदिर पास ॥ १० ॥
॥ ढाल बीजी ॥ पाहारा मोहला कपर मेह जबूके
वीजली होलाल, जबूके वीजली ॥ ए देशी ॥
॥ कुमरी कुमरनुं रूप, निहाली तव तिहां लोला
ल निहाली० ॥ मांके मींट अनूप कुमर कनो जिहां
हो० ॥ कु० ॥ जक नपडे तिल मात्र, के विरहथी
परजली हो० ॥ के० ॥ कामातुर अकुलात के, दु
मन आकली हो० ॥ के० ॥ १ ॥ निरखी सुंदर अं
वखाणे तेहनां हो० ॥ व० ॥ फूल्या जासू रंग चरण
तल एहनां हो० ॥ च० ॥ तेज तणो अंबार रह्यो
रपति जिस्यो हो० ॥ र० ॥ मयगल सुंभाकार सुजं
युग तिस्यो हो० ॥ सु० ॥ २ ॥ सुदर कटीनो लंक
राजे लंकथी हो० ॥ वि० ॥ मावे करतल माग ज
मध्य अंकथी हो० ॥ न० ॥ हृदय महा सुविशाल
ला नागल जिसी हो० ॥ सु० ॥ रेखा त्रण गलना
कहुं उपमा किसी हो० ॥ क० ॥ ३ ॥ सूडा चंचु
मान सुहावे नाशिका हो० ॥ सु० ॥ मणिदर्पण
मान कपोलें नासिका हो० ॥ क० ॥ कामणगारी
नें अछी निहुं आंखडी हो० ॥ अ० ॥ श्याम न

अनुमान शिखा रतिपति वही होे० ॥ त्रि० ॥ ४ ॥ ब
लिहारी लउं तास पहपो जेणे एहवो हो० ॥ ब० ॥
निरख्यो रूप निवास जनम सफलो हवो हो० ॥ज०॥
नृप बाला नरी नयणे पीये रस रूपनो हो०॥ पी० ॥
लागो लइने नयण अमाहो चूपनो हो० ॥ छ० ॥ ५ ॥
नृपसुत पण ते देखी थयो मदनाकुलो हो० ॥ थ० ॥
वाध्यो विरह विशेष अलेख चपापलो हो० ॥ अ० ॥
अहो अहो रूप निहाली चतुर गुण धारिका हो० ॥
च० ॥ परणी अने एह बालके हजीअ कुंआरिका
हो० ॥ के० ॥ ६ ॥ इम चिंतवतां लेख लखीने बा
लिका हो० ॥ ल० ॥ नाखे नीचुं देखत लागी ना
लिका हो० ॥ तला० ॥ कुमरें सकल वदंत चतुर प
णें वाचिया हो० ॥ च० ॥ पदपद अंग अनंतह ह
रख रोमाचिया हो० ॥ ह० ॥ ७ ॥ कवण अछे तुज
जाति रहे तुं किहां वली हो० ॥ र० ॥ नाम कवण कु
ण जाति जायो तुं महाबली हो० ॥जा०॥ वीरधवल
नी जाति अ हुंतुं कुमारिका हो० ॥ अ० ॥ मोही ता
हरु गात निहाली वारिका हो० ॥ नि० ॥ ८ ॥ तुम
विरहें मुज काय रही ए जलवली हो० रही० ॥ भे
ट देइ महाराय करो हवे सीअली हो० ॥ क० ॥

चो इंम विरतंत कुमर मन वेधिउं हो० ॥ कु० ॥ वे
ह निविडने तंत विहुं मन साधिउं हो० ॥ विहुं०
ए ॥ कुमर थई थिरथंन निहाले वली जिहां हो०
नि० ॥ कोइक नर निरदंत कहे आवी तिहां हो० ॥
क० ॥ कुमर संबाहो वेग पियाणो आज छे हो० ॥
पि० ॥ गंमो निरखण नेग उतावलो काज छे
॥ १० ॥ वैरवसाव्यो ध्याय तिणे तिहां आवीने हो०
॥ ति० ॥ हणनाएयो अकुलाय चल्यो विरचाइने हो०
॥ च० ॥ विरहो तास कठोर हियामां आथडे हो० ॥
हि० ॥ मांके आघा जोर चरण पाछा पडे हो० ॥ च०
॥ ११ ॥ चिंते चित्तमां आप जणाव्यो में नही हो० ॥
ज० ॥ रहेसे मुज संताप मिलणनो ए सही हो० ॥
मि० ॥ चालणरी जो वार हसे एका घडी हो० ॥ ए०
॥ रहेसे पण निशिचार आवीश हुं दडबडी हो० ॥
अ० ॥ १२ ॥ धारी इंम मनमांहे गयो निज थानके
हो० ॥ ग० ॥ अवसर देखी त्यांहिं आव्यो उचानके
हो० ॥ आ० ॥ किरणरूप थइ फाल दिये गढ ऊपरे
हो० ॥ दि० ॥ आव्यो पहेले माल विद्याधरनी परें
हो० ॥ वि० १३ ॥ कनकवती नृपनारि निहाले पेस
तो हो० ॥ नि० ॥ कवण पुरुष इंणे ठाम आव्यो कि

म हिंसतो हो० ॥ आ० ॥ अतिदूग दरबान सूता ईं
णे वेचिया हो० ॥ सू० ॥ के कोइ मंत्र निदान तिणे
जन वंचिया ॥ हो० ॥ ति० ॥ १४ ॥ ईम चिं
तवीते तेह मोही रूपें घणुं हो० ॥ मो० ॥
नांखें धरती नेह मनोरथ आपणुं हो० ॥ म० ॥ आ
वो कुमर करार करो इंणे आसणें हो० ॥ क० ॥ ला
हो द्यो मुज सार शरीरने फरसणें हो० ॥ श० ॥ १५ ॥
कुमर सुणी ते वाणी विचारे निज हियें हो० ॥ वि० ॥
पेसी एहवे ठाण विसास न कीजीयें हो० ॥ वि० ॥
कपट करी ए नारि करुं राजी खरी हो० ॥ क० ॥ बो
ले वचन विचार सुगुण तिहां अवसरी हो० ॥ १६ ॥
सुण सुंदरी गुण रेख विदेशी आवीउं हो० ॥ वि० ॥
मलयानो एक लेख विगतसुं लावीउं हो० ॥ वि० ॥
देखाडे तसगाम देई ते तेहने हो० ॥ दे० ॥ तो वली
ताहारो काम करुं हुं थिर मने हो० ॥ क० ॥ १७ ॥
तव नृप दयिता आवी देखाडे वाटडी हो० ॥ दे० ॥
ऊंचो चढिउं धाय नारी नीचें खडी हो० ॥ ना० ॥
दीठी बाला दीन वदन करतल धरी हो० ॥ व० ॥
बेठी करी आकीन कुमर एक उपरें हो० ॥ १८ कु०

कुमरभणे सुण बाल करो चिंता किसी हो० ॥ क० ॥
करवा तुम संभाल आव्यो हुं उल्लसी हो० ॥ आ० ॥
देखो उघोडो आंख हवे कां पांतरो हो० ॥ ह० ॥
नाखो विरहो ताडि करो मत आंतरो हो० ॥ क०
॥१ए॥ उठी बाला रंग मिलि मन मोदसुं हो० ॥ मि० ॥
मायुं अतिहें उमंग धरेतस गोदमां हो० ॥ध०॥ बीजे
खंमे ढाल थई बीजी ईहां हो० ॥ थई० ॥ कांति
कहे वर बाल बिहुं मिलिया तिहां हो० ॥त्रि०॥ २०॥

॥दोहा ॥

॥ करे विविध तिहां गोठडी, बिहुं जण प्रेम धरंत
॥ कुमर कहे सवि आपणो, ते आगल विरतंत ॥१॥
पुहवी गण तणो धणी, सूरपाल मुज तात ॥ पट
देवी पद्मावती, तेहनो हुं तन जात ॥ २ ॥ नाम महा
बल माहरो, देश निरखणनी खंत ॥ नृप कामे परि
वारछुं, इहां आव्यो गुणवंत ॥३॥ निरखत अचरज
पुरतणां, दीठो तें उपकंठ ॥ लेख लख्यो ते वांचतां,
लाग्यो नेह उलंठ ॥ ४ ॥ मलीउ हसि हवे शीख दे,
चालण मुख सहु साथ ॥ वचनसुणी बाला विलपि,
ईम कहे जोडी हाथ ॥ ५ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ श्नी नावलदे राणी अरज करेठे, अबको वरसालो घर कीजें हो ॥ गढबुंदी वाला ॥ ए देशी ॥

॥ मलया कहे विरहानल तापी, अवसर एह र ह्यानो हो ॥ प्रभु धणरा हो लोनी, वाला चलण न देस्यां ॥ चलण तुमारो मोहन मरण हमारो, रहो र हो कह्युं मानो हो ॥ प्र० ॥ १ ॥ करुणा करीने मुज ऊपर विभुजी, पूरो मनोरथ रूडा हो ॥ प्र० ॥ लक्ष्मी पूंज मुक्ताहल मनशुं, एह ल्यो चातुर सूडा हो ॥ प्र० ॥ २ ॥ हार तणे मिसे ए वरमाला, कंठे ठवी इम जाणो हो ॥ प्र० ॥ हवणाही गांधर्व विवाहें, परणी मुज सुख माणो हो ॥ प्र० ॥ ३ ॥ कुमर कहे सुण चंड़ मुखीतें, वचन कह्युं ते वारू हो ॥ प्र० ॥ मात पिता आणा विण कन्या, वरवी नहीं विवहारू हो ॥ प्र० ॥ ४ ॥ डुःख मधरिस रहो दिन केताइक, बुद्धि करुं हुं तेहवी हो ॥ प्र० ॥ मात पिता जन जोतें तुजनें, देसे मुज ततखेवी हो ॥ प्र० ॥ ५ ॥ पण वांध्यो ए में तुज आगें, मन रलीआयत कीजें हो ॥ प्र० ॥ ढील हुवे जावाने तेहथी, सीखडी सी हवे दीजें हो ॥ प्र० ॥ ६ ॥ कनकंवती नीचें नृपराणी, वातसुणे

ही ठानें हो ॥ प्र० ॥ रीसाणी चिंते ए धूरत, जाणी
कन्याने कानें हो ॥ प्र० ॥ ७ ॥ करी संकेत मल्यो
एहनें, मुज कारज नवि सीधुं हो ॥ प्र० ॥ दो
दादरने द्वारें, ठानेंसें ताळुं दीधुं हो ॥प्र०॥८॥ कुमरी
कहे मुज एह विमाता, मुज मातानी शोकि हो ॥प्र०॥
कनकवती इंणे कपट करीनें, राख्यांछे बिहुं रोकी हो
॥ प्र० ॥ ए ॥ व्यतिकर सर्व सुण्यो रीसालो, अनरथ
करसे प्राहिं हो ॥ प्र० ॥ कुमर नणे एहनें हुं कूडे,
वंची आव्यो आहिं हो ॥प्र०॥ १०॥ वात करे जई इम
तेणी वेला, कनकवती नृप पासें हो ॥ प्र० ॥ आवी
प्रकाशे मुख रस वाही, दीठी वात उल्लासें हो ॥प्र०॥
॥ ११ ॥ कोपें लोचन रातां कीधां, हणवाने मन प्रे
र्युं हो ॥ प्र० ॥ सुनट घटा वींटचे नरनायें, कन्या मं
दिर घेर्युं हो ॥ प्र० ॥ १२ ॥ कहे कुमरी हैहै विध
कन्या, हुं सरजोकां नाथें हो ॥ प्र० ॥ सुज कारण अ
नरथ लहेसे, ए आयो परायें हाथें हो ॥प्र०॥१३॥
कुमर नणे सुनगे कां बीहो, एहथी नहीं मुज पी
डा हो ॥ प्र० ॥ परघर पेसे तेतो किहां किणे, रा
ळवळ ठींमा हो ॥ प्र० ॥ १४ ॥ इंम कही आप शि
खायी काढी; गुटिका सुखमां धारी हो ॥ प्र० ॥ त

अनुनाते चंपक माला, थइ बेठी ते नारी हो ॥ प्र०
॥ १५ ॥ रूप निहाली निज जननीनुं, कुमरी अचर
ज भारी हो ॥ प्र० ॥ जांनी तातुं नरवर आव्यो, दे
खे सुताने नारी हो ॥ प्र० ॥ १६ ॥ नृप बोल्यो क
नका मुख देखो, कूडुं इंमकां नांखेहो ॥ प्र० ॥ अज्ञ
वे आल देई पर उपर, को डुरगति फल चाखे हो ॥
॥ प्र० ॥ १७ ॥ आक्रोसी विलखी थई कुमरें, बोला
वी हसी आगें हो ॥ प्र० ॥ कहो वहेंनी पीव को
प्या केणे, इहां आव्या किण वागें हो ॥ प्र० ॥
॥ १८ ॥ पुरनो लोक अनादर वयणे, कनकामें निर
धाडे हो ॥ प्र० ॥ कहे कनका जो हुं जूठी, तो कि
हां हार देखाडे हो ॥ प्र० ॥ १९ ॥ छल जननी निज
कंठथकी ते, ऊंचो हार उछाले हो ॥ प्र० ॥ नृप प्रमु
ख सहुने देखाडे, कनकानो मद गाले हो ॥ प्र० ॥ २० ॥
तिण वेला कुमरीनो जननी, नर निद्रामांहें हूंती हो
॥ प्र० ॥ सुख निद्रायें निज पुत्रीनी, विगत लहे नहीं
सूती हो ॥ प्र० ॥ २१ ॥ फरी आव्या हसंतां निज
थाने, नृपादिक सविलोक हो ॥ प्र० ॥ कनक वती
नी निंदा करतां, लोक वदन कह्यां वोक हो ॥ प्र० ॥
॥ २२ ॥ कूडी पडी कनका महाबलनो, विघन

विसराल हो ॥ प्र० ॥ कांति कहे ईम बीजे खंडे, ए
थइ त्रीजी ढाल हो ॥ प्र० ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कनका चित्त चिंता करे, नयणें नावे नींद ॥
मलया किम दुःख पामसे, मानी जेह महींद ॥ १ ॥
हवे कुमर मुख मांहेथी, काढे गुटिका रयण ॥ प्र
गट हूउं नररूप त्यां, जाणे नवलो मयण ॥ २ ॥ क
हे कुमर अनरथ वडो, हुउं एह विसराल ॥ जो वली
रहियें तो हूवे, अणचिंत्यो को आल ॥ ३ ॥ तेमाटे
तुम सीखथी, चालीश हुं निजदेश ॥ प्रीतलता संभा
लजो, कगी हृदय निवेश ॥ ४ ॥ कह्यो कुलन मेला
वडो, आपण बिहुंनो जेण ॥ चिंता करशे तेह विधि,
मकरें चिंता तेण ॥ ५ ॥ वलि अनोपम तुजने कहुं,
सुंदर एक सलोक ॥ सरवकाल ते चिंतवे, थाशे सघला
थोक ॥ ६ ॥ तद्यथा ॥ विधत्तेय द्विधिस्तत्स्या, (चि
त्कामपामीने) न्नस्यात् हृदयचिंतितं ॥ एवमेवोत्सुकेन
न, सुपायां श्चिंतयेद्हून ॥ १ ॥ दोहा ॥ वरण अकल
डांकणो, ईम लागा तस चित्त ॥ तेह प्रशंसे चित्तचकी
ह श्लोक सकल सुपवित्त ॥ ७ ॥ सुखिया होजो साज
ना, दुःखिया होजो पंथ ॥ वेजो वेग मेलावडो, ग

तो लखमी गंध ॥ ८ ॥ कहे बाला नरी लोयणां, रे कपलां ढोगाल ॥ नेह नवल तुज खटकशे, जिम तन सूतो शाल ॥ ९॥ शुभ मोहोलथी नीसरी, आवी च ढ्यो केकाण ॥ नियत प्रयाणे चालतो, पोहोतो पु हवी राण ॥ १० ॥

॥ ढाल चोथी ॥ करेलणां घडिवे रे ॥ एदेशी ॥

॥ तात चरण आवी नम्यो, आपे अनोपम हार ॥ वीरधवल दीधो मुने, इम कही कूड तिवार ॥ १ ॥ नविक जन सांनलो रे, मलयानो अधिकार ॥ नं० ॥ एतो सु णतां हर्ष अपार ॥ न० ॥ ए आंकणी ॥ राय कहे तुज चातुरी, दीठी अधिक वदीत ॥ थोडा दिनमां जेहथी, वा धी एवडी प्रीत ॥ न० ॥ २ ॥ इंम कहीने कंठे ठव्यो, कुमरें मायनें हार ॥ घणुं सराहे पुत्रने, राणी पण तेणीवार ॥ न० ॥ ३ ॥ राज कुमर इंम चिंतवे, पण बांध्यो में जेह ॥ कन्या किम परणी हवे, साचो करशुं तेह ॥ न० ॥४॥ तिणे अवसर एक आविउ, वीरधवल नो दूत ॥ प्रणमी नृपनें वीनवे, सांनल नर पुरुहूत ॥ न० ॥ ५ ॥ पुत्रि अमचा स्वामीनी, मलया सुंदर। नाम ॥ तास स्वयंवर मांमीउं, करीने प्रतिज्ञा आम ॥ न० ॥ ६ ॥ धनुष पूर्व परिया तणुं, वज्र सार छे

सार ॥ जे नर तेह चढावशे, वरशे तेह कुमार ॥
॥ ७ ॥ देशदेशावर रायनां, नंदन तेडण काज ॥
त मोकल्या राजीये, हुं मूक्यो तुमराज ॥ ज० ॥
देव महाबल मोकलो, कुमर काम अवतार ॥
णजाणे एहथी विधें, योग लिख्यो घानार ॥
ए ॥ ज्येष्ट कृष्ण एकादशी, आज थइ तिथि खास ॥
आगामी चौदशि दिने, होसे स्वयंवर तास ॥ ज० ॥
१० ॥ वाटे हुं मांदो थयो, तेहथी हूउं विलंब ॥
री उतावलो मोकल्यो, लगन अछे अविलंब ॥ ज० ॥ ११ ॥
सनमानी ते दूतनें, शीख करे नूपाल ॥ कुमर सन
मां सांजली, चिंतवे इंम हरखाल, ॥ ज० ॥ १२ ॥
देवें मुज करुणा करी, जोग डुःख संयोग ॥ जुखम
हे जोजन मले, तिम ए दीसे योग ॥ ज० ॥ १३ ॥
काज हतुं सासें पडचुं, सिखायछुं ते आज ॥ विश्व
वीश दया करी, मुज ऊपर महाराज ॥ ज० ॥ १४ ॥
तात दीए मुज आगन्या, तो तिहां जइ तत्काल
राजपुत्र कुल अवगणी, हुं परणुं ते बाल ॥ ज०
॥ १५ ॥ तव नृपनिरखी पुत्रने, कहे वछ तुं जुज
ज ॥ वल वाहनना घाटस्यों, रातें सधावो आज
ज० ॥ १६ ॥ कहे कुमर विनयें जल्यो, तात व

परमाण ॥ वस्त्र सज कीधुं तावली, चोइयो दरखें रा ण ॥ न० ॥ १७ ॥ लखमी पूंज मनोहरू, सुत हवो साथें हार ॥ कुमर कहे ते हारनी, वात सुणो निर धार ॥ न० ॥ १८ ॥ सूतां मुज निशिनें समें, करें उ पद्रव कोइ ॥ वस्त्र शस्त्र नूषण हरे, गुप्त वीहावें सोइ ॥ न० ॥ १९॥ मात कनेथी में ग्रही, हार लव्यो मुज कं ठ ॥ आज रयणमां अपहरी, लीधो तेणें उत्कंठ ॥ न० ॥२०॥ हार गयो जाणी हवे, माता धारे डुःख ॥ करी प्रतिज्ञा में तिहां, माताने अनिमुख ॥ न० ॥२१॥ जो नापुं दिन पांचमां, ते मुक्तावली हार ॥ तो मुज काया आगमां, दहेवी ए निरधार ॥ न० ॥२२॥ हार कदापि नवि लहुं, तो मुज मरण सहाय ॥ करे प्र तिज्ञा आकरी, डुःख धरती ईम माय ॥ न० ॥ २३ ॥ अदृश नडे जे रातिमां, राक्षस के चूडेल ॥ पोहोर एक वे रही ईहां, नाखुं तस पग जेल ॥न०॥२४॥ स्ववश करी तेह डुष्टनें, लेई हार नजिनांति ॥ सुंपी माताने पछें, चालीश पाछली राति ॥ न० ॥ २५ ॥ राय प्रशंसे पुत्रनां, साहस सत्त्व विशाल ॥ बीजे खंडें ए कही, कांतें चोथी ढाल ॥ न० ॥ २६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे कुमर मंदिर गयो, अलवे त्यांथी कवि
बार जडी खांकुं ग्रही, बेठो दीवा पूठ ॥ १ ॥ मध्य
रयणीनें आंतरें, चंचल सबल जस टेक ॥ गोख
गेथी मलपतो, पेसें कर तिहां एक ॥ २ ॥ कुमर वि
चारे पूर्वपरें, करसे कांइ विरुद्ध ॥ तेह थकी पहेलं
जली, आपुं शिक्षा शुद्ध ॥ ३ ॥ सोवन चूडी खलख
लें, उपें कंकण रेह ॥ तेह जणी कर नारिनो, ए
निस्संदेह ॥ ४ ॥ देवी अथवा दानवी, आवी छे इह
कोय ॥ देव सक्तिनां बल थकी, दृष्टें नावे सोय
॥ ५ ॥ जो नांखुं खांकुं खरुं, तो वली जासे जागि
चढशे हाथ न माहरे, नहीं आवे वली लाग ॥
एम विचारी कढल्यो, त्रिवली जालें चाढि, चढि वे
कर ऊपरे, ग्रही वे हाथें गाढि ॥ ७ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ तट यमुनानोरे अतिरलिया
मणो रे ॥ ए देशी ॥

॥ मंदिरमांथी रे ते कर कंपतो रे, गयणें चढि
आंटा खाय ॥ सुर असुरनां रे कुल वीवरातो रे,
लट पलट करी चाल्यो जाय ॥मं०॥ ॥ १ ॥ निरु
लेवो रे कुमर ते ऊपरें रे, तेहनें जारें कर लचकाय

पवने कड्डाढयो रे ध्वज पटनी परें रे, हव चढिउं चिहुं दिशि मोलाय ॥ मं० ॥ २ ॥ जटकि आठाटें रे नीचो नांखवा रे, पण आसण नकरे चलचाल ॥ कुमरें प फाडयो रे अलड केकाण ज्युं रे. तव प्रगटी देवी वि कराल ॥ मं० ॥३॥ एह रोशाली रे मुजनें नांखसे रे, विषम महावन गिरिवर तेह ॥ इंम निरधारी रे मारी आकारी रे, कुमरें करकश मुठी तेह ॥मं०॥४॥ दीन रडंती रे देवी इंम कहे रे, रे करुणा वंत दयाल ॥ मुज अबलानें रे सबला कां नहें रे, मूक हवे नकरुं तुज चाल ॥ मं० ॥ ५ ॥ मूकी कुमरें रे ते नासी गई रे, छेयो कानें कूकर जेंम ॥ आप तिवारें रे पडिउं गयण थी रे, विद्या चूक्यो खेचर एम ॥ मं० ॥ ६ ॥ फलनर नारी रे वन आंबा शिरें रे, आवी रह्यो नृप नंदन वेग ॥ नयण निमेली रे क्षण मूरछा लह्यो रे, पवनें विंज्यो अति तेग ॥ मं० ॥ ७ ॥ कुमर विमासे रे चे त वल्या पछें रे, किण थानक हुं आयो चालि ॥ रयणि अंधारे रे कर फरस्या थकी रे, जाण्यो तरु साही त स मालि ॥ मं० ॥ ८ ॥ क्षण एक मांहें रे तरुथी उ तरी रे, आवी बेठो तरुने खंध ॥ इंम मन सोचे रे कुंण ए आपदा रे, दीधी तिण कुल वैर प्रबंध ॥मं०॥

ए ॥ किहां मुज माता रे किहां तात माहरो रे, किहां
हुं ए किम थासे सूल ॥ हार नपामे रे जननी जो हवे
रे, करशे जीवितनुं प्रतिकूल ॥ मं० ॥ १० ॥ माय
वियोगें रे वली मुज तातजी रे, धरवा प्राण थशे अ
समछ ॥ हैहै दीसे रे कुलक्षय माहरो रे, इम चिंता
नर वेगो तछ ॥ मं० ॥ ११ ॥ खरखर वागो रे तव
रव नूमिनो रे, नूपति सुत निरखे तरुमूल ॥ नारिग
लीने अरथी आवतो रे, नजर पड्यो अजगर एक थू
ल ॥ मं० ॥ १२ ॥ कुमर विचारे रे ए प्राणी गली
रे, आवे तरु आफलवा कोय ॥ ए विगोडावुं रे जो
जोरो करी रे, तो मुज आतम सफलो होय ॥ मं०
॥ १३ ॥ साहस धारी रे तरुथी ऊतर्यो रे, वेगो त
नें आंबा गोढ ॥ अजगर आयो रे देवा विंटली रे
कुमर ग्रहे तस मुख अति प्रौढ ॥ मं० ॥ १४ ॥
दन विदार्युं रे होव बिन्हे थही रे, ते मांहेथी काढ
एक नारि ॥ वचन कहंती रे माहारे इण समे रे,
रण होजो मत्ताचल एक तारि ॥ मं० ॥ १५ ॥
स सुणीने रे पोतानुं तिहां रे, विस्मय विकसित
वन थाय ॥ तुं कडाढी रे अजगर नाखीने रे,
अवला सुलक्षण काय ॥ मं० ॥ १६ ॥ सजया तरुणीने

खी गोरडी रे, चित्त चमक्यो ढोले तिहां चाय ॥ चेतन वाल्युं रे तव बाला नणे रे, पूरवलो ते श्लोक सुणाय ॥ मं० ॥ १७ ॥ कुमर सुणीनें रे तिहां निर्भय करी रे, वीरधवल तनुजा ए होय ॥ कर पद सेवा रे कुमर करे वली रे, जिम पीडा तनुं विरली होय ॥ मं० ॥ १८ ॥ कुमर पयंपे रे कहो सुंदरी रे, तुम विरहें मुज मन शीदाय ॥ नयण कवाडे रे निरखी पदमणी रे, सेवापर नृप सुत चित्तजाय ॥ मं० ॥ १९ ॥ लाज करंती रे नेहल मीठमां रे, कहे जीवन जीवाडी आज ॥ संगम देवें रे किम मेल्यो इंहां रे, नांखोजी नांखो महाराज ॥ मं० ॥ २० ॥ कुमर तिवारे रे कहे सरिता जलें रे, प्रथम पखालो तनुं पंकाज ॥ वीतक वेहु रे कहेशुं वली पछें रे, इंम कही आंणी नदीयें वाज ॥ मं० ॥ २१ ॥ अंग पखाल्युं रे, जल पीधुं गली रे, वली आव्या पाछा तरु तीर ॥ कुमरें सुणावी रे निज वीती कथा रे, सुणतां थरके तास शरीर ॥ मं० ॥ २२ ॥ नृप सुत तेहनेरे धणिने पूछशे रे, वीतक सयल करी चित्त चूप ॥ कांतें प्रकाशी रे खासी पांचमी रे, बीजे खंमे ढाल अनूप ॥ मृ० ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥जणे कुमर क्षीणोदरी, मांझी कहे तुं वात ॥ अ
जगर वदने किम पडी, राखीर्तानटत्रात ॥ १॥ कहे कु
मरी हु नवि लहुं, अजगर वदन प्रवेश ॥ सुणो कवि
णथइ जे कहुं, अवर दात लवलेश ॥ २ ॥ तेहवा
मां पग रव थकी, जाण्यो जन संचार ॥ कुमर विचारे
रातिमां, केहनो एह विहार ॥ ३ ॥ आवे ठे सामो
धस्यो, रसीयो के लूंटाक ॥ व्यसनी मद पीधो अठे,
के कोइ जार लडाक ॥ ४ ॥ के कोइ परिचित नारिनो,
आवे ठे इंणिवाट ॥ मीट न पाडुं गोरडी, ए अवसर
ते माट ॥ ५ ॥ एम विचारी शिर थकी, काढी गुटिका
टाल ॥ आंवानां रसमां वसी, कर्युं तिलक तस भा
॥ ६ ॥ पुरुष थयो नारि टली, कुमर कहे मत शंक
रूप पालटयुं तुजमें, आवत नर आशंक ॥ ७ ॥ ज
नहिं मांझुं थूंकथी, त्यां लगें तुज नर रूप ॥ पुरुष
या मांझ्या पठी, थाशे मूल सरूप ॥ ८ ॥ आपण
र एक ठे, सुखें पधारो आंहिं ॥ इम कही निरख
वाटडी, दीठी नारी त्यांहिं ॥ ९ ॥ तरुणी हरिणी
धती, आवे थिरकित गात ॥ नृप नंदन मधुरे स
पुछे तस अवदात ॥ १० ॥

॥ ढाल ७ठी ॥ नदी यमुनाके तीर, उ
डे दोय पंखीयां ॥ ए देशी ॥

॥ कुमर कहे तुं ओहिं, आवी कुण एकली; किम कं
पे तुज गात, चिंतातुर कां वली ॥ कुण तटनी ए नूप,
कवण नगरी किसी; इहां पाम्या सुखशात अमें मन
मां वसी ॥ १ ॥ नारी नणे ए नीर, नदी गोला वहे;
चंड्रावती उपकंठ पुरि अति गहगहे ॥ दशदिशि पस
री जास, महा कीरति ध्वजा; वीरधवल नूपाल, इहां
पाले प्रजा ॥ २ ॥ कुमर विचारे जेथ, आवण हुं
चाहतो, पडतो पडतो तेथ, आयो नन गाहतो ॥ अ
हो मुज पुण्य प्रमाण, प्रसन्न ठे जगपती; जस मुखें
पेठी नारि, मली जे जीवती ॥ ३ ॥ कहे वली आ
गल वात, नारि अचरिज नरी; पुत्री हुइ ते नूपने,
मलया सुंदरी ॥ मंमप मांमयो तास, सयंवर नूपतें;
मूक्या दूत निमंत्रणें, नृप नंदन प्रतें ॥ ४ ॥ आज
थकी विवाह, होसे त्रीजे दिनें; कीधी सामग्री सर्व,
अगाध मेलीनें ॥ नृपने बीजी नारि, अठे कनकाव
ती; मलया सायें रोश, वहे ते कुमति ॥ ५ ॥ सोमा
माहरुं नाम, हुं तास महोलणी; सवे रहस्यनुं ग
म, पणुं विसवासणी ॥ मलयानो केइ ठिइ, जोवे

ल सामिनी; पण नांव देखे कोइ, किहां अवगुण क
णी ॥ ६ नृप पुत्री नर रूप, रही पूछे इस्युं; ते साथे
इम रोष, तणु कारण किस्युं ॥ कुमर कहेसंतान, हो
वे जो शोकनां; शोकतणे मनशाल, समा हुए सहेज
नां ॥ ७ ॥ नारी जणे ए साच, कह्यो छे जेहवो; जो
तां तेहनां छिद्र, समय केतो हवो ॥ आजूनी अधरा
त, थइ कौतुक कथा; दीठी कहुं तुज आगें, नही ते
अन्यथा ॥ ८ ॥ नामे लखमी पूंज, गले कनका तणे;
हार ठव्यो किण आइ, गगनथी चुंप पणे ॥ कुमर
विचारे हार, ठव्यो तेणे व्यंतरी; निश्चय कोइक
नेह, कारणथी ऊतरी ॥ ए ॥ पामी नहिं में शुद्ध,
किहां हमणा लगें; ते पाम्यो हवे वात, सवे होसे व
गें ॥ सोमा कहे मुज हार, देखाडो श्रीमुखें; वारी हुं
ए लाज, किहां कहेती रखे ॥ १० ॥ हार रयण व
हु मूल, ठुपाडी एकमने; मुजनें साथें लेइ, गइ ज
पति कनें ॥ अवसर देखी दीप, ऊघाडे अतिघणा;
त्रिरस पणे एम आल, लवे मलया तणा ॥ ११ ॥ स्वा
मी सुणो अवदात, कहुं पुत्रीतणा; नयणे दीठा आ
ज, निपट असुहामणा ॥ पुहवी ठाण नगरनो, नृप
वखांणियें; सूरपाल तस पुत्र महाबल जाणियें ॥ १२

॥ तेहनो किंकर एक, गुप्त मलया घरें; आवे ते नित्य रात, निशाचरनी परें ॥ हार रयण ते साथ, कुमरने पाठव्यो; लेखें लिखि संदेश, इस्यो वली सूचव्यो ॥ १३ ॥ मलशे नृपनां नंद, अनेक स्वयंवरें; ते मिस तुंपण वेग, आवे आडंबरें ॥ मुज बुद्धियें राज्य, सकल हाथें करी; परणी मुज फलवंत, करे यौवन सिरि ॥१४॥ राज्य ग्रहणनी चाहि, कुमारी धूरतें; धूतीए तिण वेद्दु, पया एकण मतें ॥ नारी हूए मति हीण, कपटनी कोथली; वाल्हाने ये ठेह, सरें स्वारथ वली ॥ १५ ॥ अतिविरुइ रोशाली, वाघण जिम सुंदरी; साहसनो भंमार, अनृतनी ठे दरी ॥ सुखमी ठी मन धीठ, धरमणी दामणी; नहुवे केहनी नेट, संतोषी कामणी ॥ १६ ॥ एहनें संग विलुद्धा, जेनर बापडा; ते पामे दुःख लाख, यथा रस लोपडा ॥ नहिं करुणानो लेश, हीयामां नारीनें; मलतानें सविशेषें, मूके मारीनें ॥ १७ ॥ अनरथ ए हो नारि, कह्यो में वे जिस्यो; करतां पूर्व उपाय, पछें नही सोचतो ॥ जो मुज वचन विचार, नरोसों नवि करो; मांगो अमूलिक हार, न देसे तो खरो ॥ १८॥ ईम वदनाव्या दाव, अनेक मृषा कही, रोषारुण नृपाल, कस्यो देपें ग्रही

॥ बह्वी ढाल रसाल, ए बीजा खंमनी; कांतें कही, मोगास, नरी मधुखंमनी ॥ १ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ रोष गहिल नरपती तिहां, अमने करी विदाय ॥ चंपकमाला नामिनी, बोलावी विलखाय ॥ १ ॥ अ तिकर सवि सुणावियो, राणीने राजान ॥ निजपुत्री उपर तिको, थई रोष असमान ॥ २ ॥ मांगो हार मनोहरु, जो नवि देसे बाल ॥ तो व्यतिकर सघलो खरो, ईम कहे चंपक माल ॥ ३ ॥ कन्या तेडी मांगीयो, हार रयण ततकाल ॥ नमनूली मौनें रही, मनमां पेगी जाल ॥ ४ ॥ चित्त विकल्पी कूड ईम, उत्तर दीधुं एण ॥ तात हार मुज कंठथी, अपहरि लीधो केण ॥ ५ ॥ अवगुण ईंधण अति सबल, वचन पवन नृप कुंम ॥ रोष अनल कुमरी दहन, वागो जई ब्रह्मंम ॥ ६ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ जीणा मारुजीनी करहलडी, करह लडी केशररो कूपो मने आलाहो राज ॥ एदेशी ॥

॥ नृप कहे निज पुत्री नणी, फिट पापिणी हति यारी, मुखडुं कांई देखाडे होराज ॥ अलगी रहे मुज नयणथी, कुलखंपणी मति हीणी, मुजकां लाज ल गाहे होराज ॥ १ ॥ न्हानी पण दोषें नरी, जिम कि

वहरनी वाढा, अलवें लागी मारे होराज ॥ कन्या
रूपें वैरणी, थइ लागी अपराधी, वैर विरोध वधारे
होराज ॥ १ ॥ एवडुं तुज किणें सीखव्युं, चरित्र
विषम अति वंकुं, सुंकुं सुणतां लागे होराज ॥
आज थकी जो ईम करे, वधती वधती वली शुं कर
शे जातां आगें होराज ॥ २ ॥ दोष नहीं माहरे शि
रें, कीधुं ठे तें जेहवुं, तेहवा फलतुं चाखे होराज ॥ प्र
त्यक्ष विषनी वेलडी, उखेडी हवे नाखी, सारेसुं तुज
पासें होराज ॥ ४ ॥ तात वचन कडुआ सुणी, मा
य रीसाणी जाणी, आई निज आवासें होराज ॥ बे
ठी थामण दूमणी, करीनें मुख नीचुं, मनमां एम वि
मासे होराज ॥ ५ ॥ अणगमतुं में ताततुं, विकल प
णेसुं कीधुं जेहथी, तात रीसाणो होराज ॥ हार रयण
खोया थकी, एवडो कोप किवारें, राजा मनमां नाणे
होराज ॥ ६ ॥ स्यो अवगुण नृप माहरो, देखीने क
लुपाणो बोल्यो, विरुआं वयणा होराज ॥ ईम कुमरी
चिंता नरी, मुखपंकज करमाणी, वरसे आसुं नयणा
होराज ॥ ७ ॥ नृप कहे पटराणी प्रत्यें, तुज तनुजानां
दीठां, चरित्र महाविष तोले होराज ॥ हार रयण तिण
कुमरनें, ईणे दीधो ठे निश्चें, मुज मारणने कोलें

ज ॥८॥ वाल्ही पण वैरणी हूई, जिम विषधरीयें मंकी आंगुली होय डवालही होराज ॥ रिपुकुलने जां न वी मले, ते पहेली ए हणवी, पाप न गणवो काल्ही होराज ॥ ए ॥ डुःख नरी रयणीनें गमी, प्रह कावें नृप तेडी, सेवकनें इंम नासे होराज ॥ मलयाने ह णजो तुमें, हुकम फरी मत पूठो, रखे किहां किण ए नासे होराज ॥ १० ॥ मंत्रि सुबुद्धि सुण्यो सवे, व्यति कर ए कन्यानो, आवी नृपने नेटे होराज ॥ करजोडी इंम वीनवे, असमंजस ए मांम्यो, नूप कहो किण खेटें होराज ॥ ११ ॥ सुं अपराधि कन्यका, नेह गयो स्यां पहेलो, धरता जे एह साथें होराज ॥ विषतरु वर पण कापवो, नघटे जेह वधेखो धुरथी, आपणे हाथें होराज ॥ १२ ॥ देव विचारी कीजीयें, जिम न होवे पठतावो, पठे फल पाकंतां होराज ॥ सकल वि चार सुणावीउं, सचिव नणी नृप धुरथी, सचिव क ह्यो नाखंतां होराज ॥ १३ ॥ मौनधरी मंत्रि रह्यो, सेवक नृप आदेशें, मलया मंदिर आवे होराज ॥ गद गद कंठें इंम कहे, तुज उपर नृप रूठो, आणा वध फुरमावे होराज ॥ १४ ॥ दीन वदन कन्या कहे, वीर नृप किम कोप्यो, ते कहे नलहुं कांइ होराज ॥ क

या ईम विलपे तिहां, हाहा मुज किण नाख्या, अथ गुण वैर वसाई होराज ॥ १५ ॥ मुज मुख निरखी हरखतो, तेपण थइ अतिवांको, नरपति मुजनें मारे होराज ॥ चंपकमाला मावडी, कपरांगी थई वेरी, नृपने ते नवी वारे होराज ॥ १६ ॥ मलयकुमर मुज सुंदरू, तेपण आखुं आमा, कान देईने वेगो होराज ॥ बंधु वरग हुं परिहरी, परिहरियें जिम मीगे पण जे जोजन एगो होराज ॥ १७ ॥ पुण्य गयां किहां माहरां, प्रगट्यां क्यांथी प्रौढा, पाप पूरव जव केरां हो राज ॥ करुं धरणी तुज वीनती, दे मारग जिम पेसी काहुं प्राण आपेरा होराज ॥ १८ ॥ महोल मांहे मलया रही, पूर्व कर्मने निंदे, कहेसे वली कांइ आगें होरा ज ॥ बीजे खंमे सातमी, ढाल सरस ए नाखी, कांतें ईम अति रागें होराज ॥ १ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ तेडावे मलया हवे, वेगवतीने वेग ॥ नृप आदेश सुणावीने, कहे निज कारज नेग ॥ १ ॥ सखी सिधावो नृप कन्हें, कहेजो ईम संदेस ॥ तुम पुत्री ईम मुज मुखें, दीधो छे निर्देश ॥ २ ॥ वेगवती वाला थ

की, आवे नृपनें पास ॥ कुमरीनां संदेसडा, ईम लावे तास ॥ ३ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ कोइलो परवत धूंधलो ॥ होलाल ॥ ए देशी ॥

॥ संदेसो मलया कहे होलाल, सांजल पुरना ॥ नरिंदजी ॥ गुनह करी में रावलो होलाल, पाई रीस ॥ न० ॥ १ ॥ सं० ॥ अवगुण खमजो महारा होलाल, कीधा जे में अजाण ॥ न० ॥ मरण सरण ते सिरें होलाल, दंम कस्यो परमाण ॥ न० ॥ सं० ॥ २ ॥ आवुं प्रभु पद भेटवा होलाल, तुम वचनें मह लाग ॥ न० ॥ अतिथि हूआ परलोकना होलाल, लहेसुं तेवली लाग ॥ न० ॥ सं० ॥ ३ ॥ ईम न मेंतो इहां थकी होलाल, ग्रहेजो प्रणति अनेक ॥ न० ॥ प्रणति वली विहुं मायने होलाल, कहेजो सु ज सुविवेक ॥ न० ॥ सं० ॥ ४ ॥ अनरथ जेनें था स्यो होलाल, ते मांस्यो निरसंक ॥ न० ॥ दोष देस ही मारतां होलाल, लहुने कालकलंक ॥ न० ॥ सं ॥ ५ ॥ तुम विसारें तेलजो होलाल, करी वैगीनां का ॥ कुलांगनी ॥ गुनह पूठवे आपणो होलाल ॥ आ लायो पद ठाम ॥ कुलांगनी ॥ ६ ॥ चंडिक गली म

णा तणो होलाल ॥ ए आंकणी ॥ कपट मंजूस त्रिया
कही होलाल, मुख मीठी धूतारि ॥ सु० मधु लिंपी वि
ष गोलिका होलाल, एवी रची किरतार ॥ सु० ॥ च०
॥ ७ ॥ प्रणति म होजो एहनी होलाल, नहीं सुख दी
ठे काम ॥ सु० ॥ मरण सरण वहेलो करो होलाल,
कन्या अवगुण धाम ॥ सु० ॥ च० ॥ ८ ॥ वेगवती व
लतुं भणे होलाल, नरपतिने कुमणाय ॥ सु० ॥ गो
ला नदी तट दाहिणे होलाल, अंध कूर्छ कहेवाय ॥
सु० ॥ च० ॥ ए ॥ जंप देई कुमरी तिहां होलाल, कर
शे जीवित नास ॥ सु० ॥ इंम करी रोती लूरती होला
ल, आवे मलया पास ॥ सु० ॥ च० ॥ १० ॥ वेगव
ती मलया भणी होलाल, नाख्यो तेह प्रबंध ॥ सु०
॥ तास वचन अविलंबीनें होलाल, कठे तिहांथी मुंध
॥ सु० ॥ च० ॥ ११ ॥ वज्रकठिन हीयडुं करी होला
ल, साहस वस असमान ॥ सु० ॥ पुरवकर्मने निंदती
होलाल, धरती नवपद ध्यान ॥ सु० ॥ च० ॥ १२ ॥
धारी मन निर्भय पणे होलाल, विंटी सुभट अनेक ॥
सु० ॥ पाछें पग पंथे वहे होलाल, साह्ही संयमो टे
क ॥ सु० ॥ च० ॥ १३ ॥ पग पग पंथे आफले हो
लाल, पडि पडि कठे तेम ॥ सु० ॥ दासी दास ०,

[illegible] [illegible], [illegible] पोते एम ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], तें [illegible]
[illegible] [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥ [illegible] ॥ तें [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥ [illegible] [illegible]

कैय ॥ सु० ॥ देता देव अनंनदा होलाल, आश्या लोक वलेय ॥ सु० ॥ च० ॥ २२ ॥ खबर कही जे सेवकें होलाल, संवृगो नरपाल ॥ सु० ॥ बीजे खंमे आगमी होलाल, कांतें कही ए ढाल ॥सु०॥च०॥२३॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे नरपति हरख्यो हीये, चित्तमां चिंते एम ॥ हणतां पुत्री दुष्टनें, थयो वंशने खेम ॥१॥ आमंत्र्या नृप नंद जे, तास जणावुं वात ॥ मुज तनुजा व्याधें मूई, मति आवो किण घात ॥ २ ॥ वली पूछुं कनका प्रत्यें, मुज उपकारक एह ॥ इंम विचारी सचिवशुं, नृप पोहोतो तस गेह ॥ ३ ॥ बार जडयां देखी तिहां, पामे चित्र सरूप ॥ कुंची विवर कमाडनो, तेहमां निरखे भूप ॥ ४ ॥ गर्भ भवन दीपक करी, लेई हार ते नार ॥ दीठी भूपें विवरथी, करति इंम मनोहार ॥५॥

॥ ढाल नवमी ॥ केशर वरणोहो काढ कसुंबो मारा लाल ॥ ए देशी ॥ अथवा नेमि पर्यपेहो प्रीति संभालो म्हारा लाल ॥ एदेशी ॥

॥ हार गविला हो करुणा धरजो ॥ मारा लाल ॥ संकट हरजो हो मंगल करजो ॥ मा० ॥ दुर्जन लाधो हो सुरमणि वीजो ॥ मा० ॥ दीठो ताहारो हो सवज

वाल्युं हो नृपनुं लोकें ॥ मा० ॥ नृपति रोवे हो लां
बी पोकें ॥ मा० ॥ चंपकमाला हो आवी दोडी ॥ मा० ॥
पीउने पूछे हो बेकर जोडी ॥ मा० ॥ ८ ॥ एह अ
मारुं हो प्राण निपातन ॥ मा० ॥ शुं मांमयुं छे हो शो
ग संतापन ॥ मा० ॥ प्रगट प्रकाशे हो रोतां मंत्री ॥
मा० ॥ कनकवतीना हो करणीसूत्री ॥ मा० ॥ ९ ॥
चंपकमाला हो नृप गल वलगी ॥ मा० ॥ दुःख
पावकनी हो जाला सलगी ॥ मा० ॥ गदगद सादें हो
रोवा लागी ॥ मा० ॥ करति दुःखनां हो लोक विनागी
॥ मा० ॥ १० ॥ सचिव बिहुनें हो ईम समजावे
॥ मा० ॥ मूआं जगमांहिं हो पाछा नावे ॥ मा० ॥ तो
पण देखो हो कूप एकंती ॥ मा० ॥ नाग्यें जहीयें
हो लइ जीवंती ॥ मा० ॥ ११ ॥ कूआ कंठे हो नृपति
आव्यो ॥ मा० ॥ जण पेसाडी हो ते शोधाव्यो ॥
॥ मा० ॥ मलया नावी हो मीटे क्यांथी ॥ मा० ॥
आशा त्रुटी हो नृपनी तिहांथी ॥ मा० ॥ १२ ॥ मं
दिर पोहोतो हो मन दुःख करतो ॥ मा० ॥ कनका
धामें हो आवे फिरतो ॥ मा० ॥ बार उघाडी हो रा
णो नांखे ॥ मा० ॥ पापिणी नाठी हो अणियें आ
खें ॥ मा० ॥ १३ ॥ जोवा पगलां हो किहां गइ नाठी

॥ मा० ॥ आणो बांधी हो केडे लागी ॥ मा० ॥ राय
कह्यायी हो तस घर लूंट्यो ॥ मा० ॥ परिजन तेहना
हो पकडी कूट्यो ॥ मा० ॥ १४ ॥ वांक विना जे
पुत्री मारी ॥ मा० ॥ अति पछतावो हो ते चित्त
री ॥ मा० ॥ सूरज उगे हो राणी साथें ॥ मा० ॥
पति वलशे हो चयमां हाथे ॥ मा० ॥ १५ ॥ जि
तिहां नमती हो नृप नट पेखी ॥ मा० ॥ कनका
हिनी हो करणी देखी ॥ मा० ॥ इम मुज
विहुं विछडीयें ॥ मा० ॥ रहेतां नेणां हो हाथे
॥ मा० ॥ १६ ॥ हागदिक मत्रि हो जे निज संगें ॥
सुतने छोडी हो रांडी रंगें ॥ मा० ॥ मगधा वेश्या
[illegible] पहेली ॥ मा० ॥ ते घर पेठी हो [illegible]
[illegible] ॥ मा० ॥ १७ ॥ हुं [illegible]
[illegible]

॥ दोहा ॥

॥ वात सुणी विस्मित हुउ,कहे कुमर गुण गेह ॥
पहेलां इंणे जे संग्रह्युं, नर विशोध्युं तेह ॥ १ ॥ दु
ष्ट हृदय युवती तणो, विषम चरित्र भंमार ॥ करतां
न जुए कामिनी,अनाचरण संचार ॥ २ ॥ कन्या रयण
विणासतां, मरणोन्मुख नृप कीध ॥ प्रजा अनाथ क
री वली, पोतें अपजश लीध ॥ ३ ॥ कनकानी दासी
थकी, सुंदरी सुज विरतंत ॥ लह्युं सकल में मूलथी,
अहो चरित्र बलवंत ॥ ४ ॥ अल्पकालमां अतिघणी,
दीधी तें दुःख राशि ॥ अंधकूप पडतां मही, अजग
र वदन विकाशि ॥ ५ ॥ निकट किहांकिण कूप छे,
तेमांथी ते साप ॥ आफलवा आंबा थडें, इंणी प
ल आव्यो आप ॥ ६ ॥ वदन विदार्युं बल करी, में
तेहनुं कलसाज ॥ तेमांथी तुं नीसरी, मिली इंहां मु
ज आज ॥ ७ ॥ एकांतें अजगर पड्यो,देखी बीहिनी
बाल ॥ कुमर कहे शंका किसी,जो विधि छे रखवाल
॥ ८ ॥ पूरव श्लोक भणे तिहां,विहुं जण धरी बहु
राग ॥ मुख धोवे गोला जलें, भर्यां सबल सोभाग
॥ ९ ॥ तेहज आंबा फल ग्रही, भक्षण करी ससने
ह ॥ देवी जल मंदिर भणी, वेगें आव्यां वेह ॥१०॥

॥ ढाल दशमी ॥ हांरे काइ जोवनीयांनो ल
टको दाहाडा चारजो ॥ एदेशी ॥

॥ हांरे वारी बिहुं तिहां देखे काव तणी वे फाडजो, पहेलां रे जेहमांथी नृप राणी लह्यो रेलो ॥ हांरे वा री कुमर ते देखी तेहमां विवर विचाल जो, धूणी शिर चित्तमां चिंति इम कह्यो रेलो ॥ १ ॥ हांरे वारी तीन कारज हवे करवां माहारे आहिंजो, एकतो रे नृप बलतो चयमांथी राखवो रेलो ॥ हांरे वारी बीजुं ए तुज परणुं नृपनी चाहिजो, त्रीजुं रे जननी गले हार ते नाखवो रेलो ॥ २ ॥ हांरेवारी लखमी पुंज अनोपम नाठो हार जो, ते हुं रे तुज देईश दा हाडा पांचमां रेलो ॥ हांरे वारी इंम पण बांध्यो जन नी आगें सार जो, सफलो रे करवो ते साची वाचमां रेलो ॥ ३ ॥ हांरे वारी तेमाटे तुं पुरमां फरि नर रू पजो, सांजेरे मगधा घरे जाजे हांमच्युं रेलो ॥ हांरेवा री तिहां रहीने कनकानुं निरखीश रूपजो, करतां रे ठल वल मुक्तावली पामच्युं रेलो ॥ ४ ॥ हांरेवारी हुं पण लइ चय बलता नृपने संग जो, वारुंरे नवली बुद्धि कोइ केलवी रेलो ॥ हांरे वारी नामांकित मुज वे तुज मुद्रा नंगजो, ग्रहेशो रे एहथी तुज को चोरी

ठवी रेलो ॥ ५ ॥ हांरे वारी मुझ दीधी ते थापि शि
र आपजो, इंम कहोरे इहां ठानी फरतां फायदो रे
लो, हांरेवारी आजनी रजनी मगधा घरें थिर थापजो,
मलजो रे कालें सांजे ठे वायदो रेलो ॥ ६ ॥ हांरे
वारी साधी कारज सघलां कालें सांजजो, आवीश रे दे
वीजल जवनें हुं वली रेलो ॥ हांरे वारी कुमर वचन
चित्तधारी ते पुरमांहिंजो, आवीरे नर वेशें किणही
न अटकली रेलो ॥ ७ ॥ हांरे वारी आगामी जे कर
वां काम अशेष जो, ते सविरे निरधारी पुर आव्यो
धसी रेलो ॥ हांरे वारी नृपनंदन नैमित्तिकनो लेइ वे
शजो, तरुतलेंरे बांध्यो एक गज देखे रसी रेलो ॥
८ ॥ हांरेवारी ते गजनुं बहुला जण लेइ ठांणजो,
दीठारे जाजनमां जलशुं गालता रेलो ॥ हांरेवारी कु
मरें पूछ्या कहे कारण परमाणजो, गतदिन रे नृप
सुत इहां आव्या मालता रेलो ॥ ९ ॥ हांरे वारी र
मतमां तेणे सोवन सांकल एकजो, विंटीरे सेलडीयें
नांखी गजदिशा रेलो ॥ हांरेवारी पडती लै गज मुख
मां घाली ठेक जो, ताणीरे थाक्या तिहां केइ महा
वत जिस्या रेलो ॥ १० ॥ हांरेवारी नृप आदेशें गालीजें
एह ठाणजो, तेहनारे इहां खंम कदाचित् पामीयेंरे

लो ॥ हांरेवारी काढी महावल केश थकी सुविनाण जो, मुझारे पूजामां ठवी गजने दीये रेलो ॥ ११ ॥ हांरे वारी चावण लागो गयवर पूलो तेहजो, तेहवेंरे नृपति सुत आगें चालीउ रेलो ॥ हांरे वारी गोला कंठें मलिउ लोक अछेह जो, करतो रे कोलाहल कुमरें नालिउ रे लो ॥ १२ ॥ हांरेवारी कुमर विचारे चाल्यो हुं जिण काजजो, पुरवरें रे कारज एह तेहनो मेलव्यो रेलो ॥ हांरे वारी चयमांथी उललते अति वहामजो, दीसेरे प ण धूमें नजतल जेलव्यो रेलो ॥ १३ ॥ हांरे वारी भुज उंचा करी दोडे कुमर तिवारजो, कहेतो रे इंम मधुरवचन गाढे स्वरें रेलो ॥ हांरेवारी जीवे छे तुम पुत्री मलय कुमारिजो, खेले रे साहस कां जोला इणी परें रेलो ॥ १४ ॥ हांरे वारी कर्ण सुधासम सुणीने तेहनां वयणजो, साहामांरे आव्या लख लोक उजायनें रेलो ॥ हांरेवारी जीनें लवण उतारुं तुजने त वयणजो, क्यांछे रे कहो मलया तेह बतायने रेलो ॥ १५ ॥ हांरेवारी इंम सुणी बोले तेह निमित्तनो जाणजो, काढोरे नृप राणी चयथी वेगलां रेलो ॥ हांरेवारी तो जांखुं आगमगति हुं इणें ठाणजो, इंम सुणीरे चयमांथी काढयां करी कला रेलो ॥ १६ ॥

॥ हारेवारी कुंअर कहे वसुधाधिप का अकुलायजो, किहांएक रे मलया छे निश्चे जीवती रेलो ॥ हारेवारी निमित्ततणे बल जाएयुं में महारायजो, मतिवलेंरे कहुं हुं हुं तुमने तेवली रेलो ॥ १७ ॥ हारेवारी हवे नृप पूछे मलया केरी वातजो, करशे रे अति कौतुक महाबल इंहा वली रेलो ॥ हारेवारी बीजे खंमे ए थइ दशमी ढाल जो, नांखी रे इंम कांति विजय रंगे नली रेलो ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नृप कहे सुण निमित्तिया, दुःखियो हुं विण ना र ॥ देखुं मलया जीवती, एवडो किहां मुज नाग्य ॥१॥ काल कूब्ही सम कूपमां, नाखी न मरे केम ॥ अहो दैवनी चित्रता, न सुइ नांखे एम ॥ २ ॥ शो धी पण लाधी नहीं, जिम निर्धन धन कोडि ॥ दुष्ट किणें जल थलचरें, खाधी होशे मरोडि ॥ ३ ॥ तेह तणी सुजनें सुखें, होजो अग्नि सहाय ॥ वचन सुणी इंम नृपनां, बोल्यो कुमर वनाय ॥ ४ ॥

॥ ढाल अगीआरमी ॥ सूवटिआलाइ ॥ ए देशी ॥

॥ नृपतिजी रूडा, सांनल चतुर सुजाण होरेहां ॥ वात न नाखुं कूअडी ॥ नृ० ॥ आजदिवस सुख

ण होरेहां ॥ बारश तिथि थइ रूअडी ॥ नू० ॥१॥
आजथी त्रीजे दिवसें होरेहां, दोय पोहोर वासर च
ढे ॥ नू० ॥ वेगा सहु अवनीश होरेहां, मंडप आ
डंबर मडे ॥ नू० ॥ २ ॥ शोभित तनु शणगार होरे
हां, कुमरी दरिसण आपशे ॥ नू० ॥ देखीस सहसा
कार होरेहां, अचरज सहुने व्यापशे ॥ नू० ॥ ३ ॥
रचि स्वयंवर शुभ एह होरेहां, आवत नृप मत वारजे
॥ नू० ॥ जो जे तुज संदेह होरेहां, तो अहिनाणी ए
धारजे ॥ नू० ॥ ४ ॥ मतजया मुद्रियण होरेहां, का
लें तुम कर आवशे ॥ नू० ॥ तो साचां मुज वयण
होरेहां, वेद वाणी गुण पावशे ॥ नू० ॥ ५ ॥ चौद
शने परभात होरेहां, पूरवदिशि रुच चाढिसे ॥ नू०॥
नृपनां सज्ज मन खांत होरेहां, परणवा रण रुज कुतमुरी
॥नू०॥६॥ पट करणो एक थंभ होरेहां, तास मनोर
थापशे ॥ नू० ॥ जहेना लोक अचंभ होरेहां, देख
त रंग नआपशे ॥ नू० ॥ ७ ॥ ते जेड [illegible] होरे
हां, विस्तारे मंडप तने ॥ नू० ॥ [illegible] ते
[illegible] होरेहां, (धनुष वज्रसार होरेहां. [illegible]
[illegible] ना नते ॥ नू० ॥ ८ ॥ थापे थांना [illegible]
जे नर तेह चडावसे ॥ नू० ॥ तेहने थांना तेह ता

रेहां, होशे वर तुज जाइनें ॥ नृ० ॥ ए ॥ अनोपम छे अतिजाति होरेहां, पूजाविधि ते थंजनी ॥नृ०॥ जांख्या ए अवदात होरेहां, निमित्त कलायें अनुम नी ॥ नृ० ॥ १० ॥ मजसे ए अहिनाण होरेहां, नि मित्त वलें जांख्या अछे ॥ नृ० ॥ न मले जो निरवा ण होरेहां, मन मान्युं करजे पछें ॥ पंमितजी रूडा ॥ ११ ॥ लोक कहे शिरनाम होरेहां, अम जाग्यें तुं आवियो ॥ पं० ॥ ज्ञानी तुं जस धाम होरेहां, उप कार धुर गाविय़ो ॥ पं० ॥ १२ ॥ ताहारा ए उपका र होरेहां, वीसरशे नहीं जीवते ॥ पं० ॥ आप्यो ए अधिकार होरेहां, जगदीसें तुज गुण छते ॥ पं० ॥ १३ ॥ आले हरख निधान होरेहां, कंचन मणि नू पण बहु ॥ पं० ॥ ते कहे जो ल्युं दान होरेहां, तो उपकार किस्यो कहुं ॥ पं० ॥ १४ ॥ करजे तुंहिज ते ह होरेहां, थंज तणी पूजा वडी ॥ पं० ॥ नृप वचन छेहडे एह होरेहां, बांधे शुकननी गांठडी ॥ पं० ॥ १५ ॥ नृप कहे कन्या कंत होरेहां, किण नामें होसे कहो ॥ पं० ॥ आगम निगम अनंत होरेहां, प्रगट पणे शास्त्रें लहो ॥ पं० ॥ १६ ॥ पोहवीपुर सूरपाल होरेहां; महाबल नंदन परवडो ॥ पं० ॥ वरशे ते न

ज बाल होरेहां, कुमर कहे एम परगडो ॥ पं० ॥ १७ ॥ दिवस थयो मध्यान्ह होरेहां, नृप आवे नगरी ज णी ॥ पं० ॥ कुमर घणुं सनमान होरेहां, साथें ले पुरनो धणी ॥ पं० ॥ १८ ॥ साऊंबर महाराय होरे हां, आयो मंदिर ऊजमें ॥ पं० ॥ कुमर नृपति ति णगाय होरेहां,साथें वली जोजन जमे ॥ पं० ॥ १९॥ वीती करतां वात होरेहां, अरध दिवसने ते निशा ॥ पं० ॥ गह मह हुइ परजात होरेहां, रवि ऊगे पूरवदिशा ॥ ज० ॥ २० ॥ बीजे खंमे एह होरेहां, पूरण ढाल इग्यारमी ॥ जू० ॥ कांति कहे ससनेह होरेहां, सुणतां श्रोताने गमी ॥ जू० ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पहेला नृप मूकया जिके,गालण गजनुं डाण ॥ तेह प्रजातें आविया ॥ सेवक जिहां महिराण ॥ १ ॥ करजोडी कौतिक जस्या, बोल्या तिहां एम वयण ॥ लाधुं गजमल गालतां, ए प्रजु मुड्डा रयण ॥ २ ॥ नृप लीधी ते मुद्रिका, रजस पणें ससनूंण ॥ वांचत नाम सुता तणुं, ईम बोल्यो शिर धूंण ॥ ३ ॥ अहो अचंजो मुद्रिका, किम आवी गज पेट ॥ वली निमि त्त ए कारणो, मलतो दीसे नेट ॥ ४ ॥ तव बोल्यो ज्ञा

नी ईस्युं, निमित्त विकल नवि हुंत ॥ कुलदेवी कारण इहां, संनविये खितिकंत ॥ ५ ॥ हरख्यो नृप विशेषथी, करे स्वयंवर काज ॥ लोक कहे कुमरी विना, स्यो मांमे नृप साज ॥ ६ ॥ कथन थकी किम राचियें, होवे जूवके साच ॥ पेटें पडयां पतीजीयें, ईम बोले केई वाच ॥ ७ ॥ कन्या विण लघुता घणी, लहेसे नृप नृप मांहिं, मल्या नृप विलखा थई, धुक ल करसे प्रांहिं ॥ ८ ॥ सांज समय तेरस दिनें, आव्या नृपनां नंद ॥ आप्यां मंदिर जूजूआं, त्यां उतस्या नरिंद ॥ ए ॥

॥ ढाल बारमी ॥ रहो रहो रहो वालहा ॥ ए देशी ॥

॥ ज्ञानी कहे इम रायने, जो आपो अम सीख लाल रे ॥ मंत्र अर्द्ध में साधियो, ते साधुं मन ईव लाल रे ॥ १ ॥ सुगुण सनेहा सांजलो ॥ ए आंकणी ॥ जो नवि साधुं ए समे, तो वलतुं न सधाय लाल रे ॥ कोई विघन शुन काममां, अण जाण्या वहराय लाल रे ॥ सु० ॥ १ ॥ आजुनी एक रातिनो, आपो जो अवकाश लालरे ॥ साधी मंत्र प्रजातमां, आवीश हुं तुम पास लालरे ॥ सु० ॥ २ ॥ शीख देई नृप ईम कहे, मंत्र साधनने काज लाल रे ॥ जोईयें ते आपुं -

लेतां न करशो लाज लाल रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ धन केतुं तिहां, कुमर गयो वन मांहिं लाल रे ॥ गमाडी दोहिलें, राजायें चित्त चाहिं लाल रे ॥ ॥ ५ ॥ प्रहकालें पग लूपनां, नेटे नाणी आय रे ॥ नृप कहे तुज मंत्रनी, सिद्धि थई निरपाय रे ॥सु०॥६॥ कुमर कहे कांईक थई, कांइक रही ने राय लाल रे ॥ अर्चन थंभतणुं करी, जाईश वली तेणे देश लाल रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ खबर करावा थंभनी, ते हेलो मूक्यो जेह लाल रे ॥ सेवक ते तिहां आईने, बोल्यो धरी इंम नेह लाल रे ॥ सु० ॥ ८ ॥ तुज आदेशें हुं गयो, पुरबाहिर परभात लाल रे ॥ पाहाण तणी मावी दिशें, दीठो थंभ सुजात लाल रे ॥सु० ॥ ए ॥ इंम सुणी राजा कौतुकें, ते नर साथें लेय लाल रे ॥ थंभ समीपें आवीउ, निरखें दृष्टि जोय लाल रे ॥ सु० ॥ १० ॥ लोक सहित पुर राजियो, आवे पूजण थंभ लाल रे, तेहवे तेह निमित्तियो, बोल्यो इंम धरी दंभ लाल रे ॥ सु० ॥ ११ ॥ जो जे ए थंभने, समज्या विण नर कोई लाल रे ॥ तो कुलदेवी कोपशे, करशे अनरथ सोई लाल रे ॥ सु० ॥ १२ ॥ राय प्रमुख पाछा वले, मनमां

हीता अछेह लाल रे ॥ नृप नणे पूजो तुमें, पूज प्र नृति लेइ एह लाल रे ॥ सु० ॥ १३ ॥ विधि पूर्वक माणी तिहां, पूजी बेगे ध्यान लाल रे॥ श्रीपद सुख थी ऊचरी, मेले माया तान लाल रे ॥ सु० ॥ १४ ॥ दोढ पहोर वासर चढे, सेवक नृप आदेश लाल रे ॥ थंन उपाडी पुर नणी, पावन थई सविशेष लाल रे ॥ सु० ॥ १५ ॥ मंमपमा आमंवरें, थाप्यो आणी का र लाल रे ॥ पटकरणी पत्थर शिला, कुमरें करावी त्यार लाल रे ॥ सु० ॥ १६ ॥ ऊजी खोसे मंमपें, धरती मांहे वें हाथ लाल रे ॥ थंन निपुण निज सं चथी, लेइ बांध्यो ते साथ लाल रे ॥ सु० ॥ १७ ॥ वे कर सुख ऊंचे रहे, शिला थकी ते थंन लाल रे ॥ बा ण धनुष तेहथी ठवे, पछिमनें आरंन लाल रे ॥ सु० ॥ १७ ॥ सिंहासन नृपनां ठव्यां, दक्षिण उत्तर नाग लाल रे ॥ गंधर्व मांमयो तिहां. गावा मधुरो राग लाल रे ॥ सु० ॥ १९ ॥ थंन धनुष पूजावीने, नृप पासें ततकाल लाल रे ॥ कुमर कहे नृपति प्रतें, ते डाव्या नरपाल लाल रे ॥ सु० ॥२०॥ नाणी नृपनी नीडमां, देखी अवसर खास लाल रे ॥ जई बेगे गांध र्वमां, पलटी वेश प्रकाश लाल रे ॥सु०॥२१॥ बेगा जन

सिंहासने, देव जिस्या सोहंत लाल रे ॥
परिवारसुं, रूपें जग मोहंत लाल रे ॥सु०॥ १२॥
थईए बारमी, बीजे खंडें उदार लाल रे ॥ कांति कहे
इहां परणसे, महाबल मलया नार लालरे ॥सु०॥ १३॥

॥ दोहा ॥

॥ नृप न देखे कुमरने, तव बोल्यो अकुलाय ॥ रे
जोवो नाणी किहां, गयो बखर ल्यो जाय ॥ १ ॥ के
हे सेवक जोई तिहां, आव्यो नहीं भ्रम मीट ॥
करथी छूटो किहां गयो, जिम फल पाके वींट ॥ २ ॥
नृप भणे पहेला इंणे, साध्यो मंत्र सुसाज ॥ साधन
अर्द्ध रह्यो हतो, गयो हशे तस काज ॥३॥ वचन त
वे तेहनां सत्यां, पण न सत्यो एक बोल ॥ कन्या वर
महाबल कह्यो, एतो वचन टकोल ॥ ४ ॥ अवसरें
इहां आव्यो नहीं, नहीं योग होनार ॥ निमित्त वचन
निःफल होसे, है है सरजण हार ॥ ५ ॥ कुअर सुणी
तिहां वस्त्रसुं, ढांकी वदन हसंत ॥ सर्व जणासे नेहहे,
ईम मनमांहें कहंत ॥ ६ ॥ वात लही कन्या तणी,
नृपें सकल यथार्थ ॥ मांहो मांहिं ते कहे, थाव्यां उं
शे अर्थ ॥ ७ ॥ मलया बाला बापडी, मारी विण अप
राध ॥ हवे नृपनें किम बालशे, उत्तर देई अबाध ॥८॥

एहवामां नृप कहेणथी, उंचे स्वर संभळाई ॥ निपुण नकीब कहे ईस्युं, राजसनामां श्राई ॥ ए ॥

ढाल तेरमी ॥ चित्रोडा राजा रे ॥ ए देशी ॥

॥ सुणो नूप ह्गाळा रे, नरपति ठोगाळा रे, थाउ उजमाळा विकथा ठोडीने रे ॥ मंमपतळें श्रावो रे, निजशक्ति जगावो रे, वज्र सार चढावो दावो जो हीनें रे ॥ १ ॥ शर पुंखी जोरें रे, थांना मुख कोरें रे, करे घात कठोरें घे दळ जुजुश्रां रे ॥ ते नृप महा बळने रे, प्रगटी ठळकळिने रे, वरसे श्रटकळीने श्रम नृपनी धूश्रा रे ॥ २ ॥ लाट देशनो राणो रे, उठ्यो संपराणो रे, श्रावे हर्ष भराणो मंमपनें तळें रे ॥ ईह धनुषथी नारी रे, दीसे एह करारी रे, मनमां इम धारी ते पाठो वळे रे ॥ ३ ॥ चौड नृपति नामें रे, कठ्यो तिहां हामें रे, श्राव्यो मंमप ठामें थईने सांसतो रे ॥ निरखी विजकारा रे, जिम तपत श्रंगारा रे, एतो जगत संहारा इम कहे नासतो रे ॥ ४ ॥ गौडाधिप हसतो रे, श्राव्यो धसमसतो रे, ते तो दरिउं खिसतो धनुष उपाडतो रे ॥ हूंतो ए रसिउं रे, पण देवें मुशिउं रे, ईम नृपगण हसियो ताळी पाडतो रे ॥ ५ ॥ करणाटक स्व

रे, आयो गजगामी रे, राखे नहीं खामी वज्र
अडे रे ॥ शर नाखी वंको रे, थयो ते साशंको
जिम हुये सुकुल कलंकोरे तिम जांखो पडे रे॥ ६॥
केता नवी ऊठे रे, केई वेग पूठें रे, केई शरनी
भेदे थंभनें रे ॥ पण थंभ न भेद्यो रे, नृप टोलो
थयो रे, निज दर्प उछेद्यो वज्र आरंभीनें रे ॥ ७ ॥
मरडक मूछाला रे, लाज्या नृपाला रे, करता ठकठ
ला निंदे आप आपनें रे ॥ माटी पण मूक्या रे,
भुजनुं बल चूक्या रे, साहामा वली ढूक्या कोई न
चापनें रे ॥ ८ ॥ वीरधवल विमासे रे, कुमरी मति
लासें रे, प्रगटी नहीं पासें जनमां लाजशुं रे ॥ मह
बल ते तेहवे रे, थंभ पासें एहवे रे, आव्यो धरि के
हवे वीणा साजशुं रे ॥ ए ॥ तिहां वीण वजावी रे,
आकाश गजावी रे, मूक्या रीझावी जण तंती रसें रे॥
वली धनुष चढावी रे, बोल्यो अति ताडी रे, पराणीअ
हुं ताडी सुत वशने वशें रे ॥१०॥ गांधर्व ए थीगो रे,
कुलें निशि लगो रे, नहीं ते ढूंढा मीठो खावो नीलवो
रे ॥ इम कहेतो नृप हसता रे, मल्लयलवुं सुनता रे,
देखो ए धनना कहुं मन डीलनो रे ॥११॥ नाखी
धनुष ते नीचो रे, टंकारव कीधो रे, नाठो मद पीधो रे

प गण छोटव्यो रे ॥ शर चाढी खंचें रे, नाखे परपंचें रे, खोलीनें संचें थांनो छोटव्यो रे ॥ १२ ॥ संपुट ऊ घडिउं रे, माथे जे जडिउं रे, अलगो जई पडिउं बाणे आहण्यो रे ॥ तेहमांथी लारी रे, नरराय कुमारी रे, प्रगटी मनोहारी वेश जलो वन्यो रे ॥ १३ ॥ श्रीखं म कपूरें रे, कस्तूरी पूरें रे, अंबरनें चूरें लेपी देहडी रे ॥ दिव्यालंकारें रे, अति शोना धारें रे, श्रीपुंजने हारें रबी वमणी चढी रे ॥ १४ ॥ वीडी कर मावे रे, जिमणे कर गावे रे, वरमाल सुहावे हावें ते नरी रे ॥ दीपे द्युति नारी रे, जिम रतिपति नारी रे, जाणे ना गकुमारी पंजमां ऊतरी रे ॥ १५ ॥ पेटी किम कार्टे रे, क्यारें किणे गतें रे, पूछे इति पार्वे नृप कन्या प्रत्यें रे ॥ जीवी जस शकें रे, कन्या कहे विगतें रे, जाणे ते जुगतें कुलदेवी मत्तें रे ॥ १६ ॥ नृप कहे में नूंपें रे, नाखी ते कूपें रे, राखी इणे रूपें अम कुलदेवीयें रे ॥ वरशोमां चूंम्नो रे, एहने वर रूडो रे, आलोचीने चम्नो चित्त देवी तियें रे ॥ १७ ॥ नृपतिना बारु रे, बल परखण सारू रे, रचियो ए वारु यंत्रो कावनो रे ॥ कनकाथी लीयो रे, श्रीहार प्रतिक्षो रे, तुजने तेणे दीधो सुंदर गवनो रे ॥ १८ ॥ चर्चित अति रूडे रे, मणि .

न चूडे रे,उपी बाजूडे कोमल बाहडी रे ॥ कुलदेवी
सुधारी रे, वरमाला धारी रे, थंन मांहिं उतारी डुं
श्रमने जडी रे ॥ १ए ॥ डुःखडुं मुज नाठुं रे,कारज
थयुं काठुं रे,पण लागे ए माठुं जे महाबल नहीं रे॥
जेणें थंन उघाडयो रे, नृप गर्व लताडयो रे,गंधर्वे दे
खाडयो ते नारयें वही रे ॥ २० ॥ ईम शोचे तिवा
रें रे, नृपति डुःख नारें रे, महाबल तेणि वारें मुख
ढांकी हसे रे ॥ थांनाथी निकसी रे,कुंमरी कहे विक
सी रे, नाख्यो थंन उकसी ते नर क्यां वसे रे॥ २१ ॥
देखाडे प्रकाशें रे, धाई मात उल्लासें रे, कनो थंन
पासें श्लोक ते गोठवे रे ॥ नृपतिनी बाला रे, सुंदर
वरमाला रे,महबलनें विशाला कंठें लोठवे रे ॥ २२ ॥
महाबल वर वरीउ रे, नारयें अति नरीउ रे,रतिपति
अवतरीउ रूप समाजशुं रे॥ वीजे खंमें दाखी रे,ढाल
तेरमी नांखीरे,लेजो रस चाखी कांतिकहे ईश्युंरे॥ २३॥

॥ दोहा ॥

॥ नृपति कोपें धडहड्या, बोले विषम वचन्न ॥
जूउ परीक्षा एहनी, वरीउ पुरुष रतन्न ॥ १ ॥ नृ
मणि ठामी आदस्यो, मूर्खपणे ए काच ॥ देव कि
सी पात्री हुवे,ए उखाणो साच ॥ २ ॥ सहेज्यं कि

अलपूर परें, प्रगट परानव पात ॥ हणी एह गंधर्वने, जेह बाल कलाल ॥ ३ ॥ ईम कही ते दुई एकठा, हणवा इच्छा रुठ ॥ धवल कटक गंधर्वनें, ततक्षण वींटे कठ ॥ ४ ॥ वज्र सार ते कर ग्रही, वेण करण रोषाल ॥ करे प्रगट शर वर्षणें, पौरुष वर्षाकाल ॥ ५ ॥ अण सहेता प्रति घात तस, नाठा तेह वराक ॥ जेम दंभामें बीहता, जाये दिशोदिश काग ॥ ६ ॥ नष्ट पुत्र परिचित तिहां, कन्नो एक नजीक ॥ महबलनें जाणी ईसी, जणी स्वस्ति निर्भीक ॥ ७ ॥

॥ ढाल-चौदमी ॥ वांवा किसनपुरी ॥ ए देशी ॥

॥ शूर नृपति कुल नासण चंद, पदमावती दे वीना नंद ॥ मोहन स्वस्ति ग्रहो ॥ आया इहां केम कहोजी कहो ॥ घणा दिवसनी हुती चाह, सफल हुई दीठा नरनाह ॥ मो० ॥ आ० ॥ १ ॥ वायनी मारी कोयल जेम, संभवे तुम आगम इहां एम ॥ मो० ॥ अलगा न करया मीटथी लेश, धीखा किम नरपति परदेश ॥ मो० ॥ आ० ॥ २ ॥ परिकर सार्थे नहीं वे कोय, ईम क्यों आया एकाकी होय ॥ मो० ॥ कारज को सोंपो महाराज, मुज लायक करीयें जेम आज ॥ मो० ॥ आ० ॥ ३ ॥ ईम सुणी त्यां रीज्यो नृ

चित्त, पूछे कवण साचुं कहो मित्त ॥ मो० ॥ ते कहे
इहां नहीं छे संदेह, माहावल नामें कुमर होय एह
॥मो० ॥ आ० ॥ ४ ॥ वाघ्यो जेहने हाथां छेह, ते
खीचें नहीं किम ते नेह ॥ मो० ॥ नृप कहे साचुं नि
मित्तनुं वयण, आज हूउ मिल ते नररयण ॥ मो०॥
आ० ॥ ५ ॥ आव्यो हशे एह गयणने माग, के चली
धरणी तलमां लाग ॥ मो० ॥ अकल कलाथी करतो
केलि, अम नाग्यें पायो गजगेल ॥मो०॥आ०॥६॥
पूछीश पाछें सघली वात, पहेलां नृपनी टालुं घात ॥
मो० ॥ एम विमासी नृप आंख्वास, समजावी मो
ल्या आवास ॥ मो० ॥ आ० ॥ ७ ॥ जीमाड्या व
कन्या तेह, नोजन मूके नृपने तेह ॥ मो० ॥ जो
राख्या ते नाणी राय, पण नवि लाधो किणहीं ठा
य ॥ मो० ॥ आ० ॥ ८ ॥ राय विमासे ते नरज्ञान,
पवन परें न लहे किहां थान ॥ मो० ॥ चंपकमाल
साथें नृप, जुंजे नोजन नरत अनूप ॥मो०॥आ०॥९॥
कामननो हलाहो लीधो समीर, करे सजाई अति
गंभीर ॥मो०॥ समराव्या जल नांख्यां नीर, राणगारी
नगरी सोहीर ॥मो० ॥ आ० ॥ १० ॥ नगीआणा नं
ख्या नवी नासें, जाणे वनाव्या सुर आवास ॥मो०॥

कृष्णागरुना धूम धूखंत, आकाशें घण थइ वरखंत ॥ मो० ॥ आ० ॥ १-१ ॥ तोरण माला जाक जमाल, घर घर वर्त्यो धवल धमाल ॥ मो० ॥ बीजे खंभे चौदमी ढाल, कांति कहे सुणो वचन रसाल ॥ मो० ॥ आ० ॥ १-२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ राज नवनमां रसनरें, प्रगटया रंग अपार ॥ अनिनव शोनायें कस्यो, लीलायें संचार ॥ १ ॥ करे विलेपन कुंकुमें, साजन मांहोमांहिं ॥ देह धरी बाहिर रह्यो, जाणे राग उन्नांहिं ॥ २ ॥ कुलदेवी पूजी विधें, वजडाव्यां नीशाण ॥ अशन वसन तांबूलनां, लहे गुरु जन सनमान ॥ ३ ॥ नृत्य करे वारांगना, विधि विधि अंग उवट्ट ॥ सोहे मीन कुटुंबनी, लेती जेम पलट्ट ॥ ४ ॥ बांध्या जलके चंडुआ, जरतारी जर बाफ ॥ जेम अकालें पुगतिनी, संध्या फूली साफ ॥ ५ ॥ शणगारें सारी सबल, सधवा सुंदर तेह ॥ कोकिल कंठे कामिनी, धवल दिये धरी नेह ॥ ६ ॥ मले जम लक्ष जानीया, खमकंते केकाण ॥ सोंधे नीना सा मग, गाहिड नला जुवाण ॥ ७ ॥

॥ ढाल पंदरमी ॥ करडो तिहां कोटवाल ॥ ए देशी ॥

॥ महाबल मलया बाल, चंदन चर्चित सोहा नू

पणेजी ॥ सुरतरु मोहन वेली, सरिखां दीसे बिहुं नि
दूषणेजी ॥ १ ॥ वाजे नूंगल नेरि, ताल कंसाल न
फेरी नादशुंजी ॥ शणगास्या गजराज, आगल चाले
अति उनमादशुंजी ॥ २ ॥ चामर छत्र ढलंत, फरह
रते केसरीये वाघे सज्योजी ॥ निरुपम थाप्यो मोड,
श्रीफल करमां सुंदर राजतोजी ॥ ३ ॥ कुंकुम तिल
क बनाय, तंडुल नालें चोढया उजलाजी ॥ परवरिया
घमसाण, तोरण आव्यो वर वधती कलाजी ॥ ४ ॥
मोती थाल वधाव, पधराव्या वर कन्या चोरीयेंजी॥
नट्ट नणे जयमाल, सोहला गाया सरलें गोरीयें
जी ॥ ५ ॥ ब्राह्मण नणते वेद, पंचामृतना होम ति
हां कीयाजी ॥ चारे चोरी अंग, दीपे जिम पुरुषारथ
वींटीयाजी ॥ ६ ॥ बिहुंना छेहडा बांध, चारे फेरे मं
गल वरतीयांजी ॥ प्रीति जिस्या सुसवाद, सार कंस
र तिहां आरोगीयांजी ॥ ७ ॥ विधिपूर्वक कमनीय,
पाणी ग्रहण महोत्सव तिहां कियोजी ॥ नृप रा
णी आशीष, वचन इस्यो अति हेजें उच्चस्योजी ॥ ८ ॥
चंद्रिका चंद समान, अविचल होजो तुमची जो
लीजी ॥ हयगयरथ धन कोडी, करमोचन वेलायें
नलीजी ॥ ९ ॥ वरकन्या मन रंग, मोहलामांहे तिह

पधरावियांजी ॥ संतोष्यो परिवार,मान महोत दे राङ्क
राजी कियांजी ॥१०॥ लोक कहे लख कोडि, मलती
जोडी विधाता मेलवीजी ॥ मुद्रा नंग समान,रतिपतिना
यकनी जोडी हवीजी ॥ ११ ॥ अवसर लही अवनी
श, पूछे त्यां माहावलने खांतशुंजी ॥ एकाकी ईणे गा
म, लगन समय आव्या किण नातशुंजी ॥ १२ ॥
कुमर नणे महाराय, जाणुं नहिं किण देवी आणी
तेडीजी ॥ नृप कहे सघलुं साच, कुलदेवी निपजावे जा
णीतेजी ॥ १३ ॥ वली माहावल कहे एम, शीख क
रो तो चालुं घर नणीजी ॥ मुज विरहें मा तात, कर
तां होशे चिंता मन घणीजी ॥ १४ ॥ वार पहोरमां
जाइ, न मलुं तो ते मरशे नेहथीजी ॥ करि करुणा क
रुणाल, शीख दीयो हवे मुजने तेहथीजी ॥ १५ ॥
पडवेने दिन सूर, कन्या पहेलो जो जाई मलुंजी ॥
जीवंता मा बाप, तो देखुं हवे कहुं वली केटलुंजी
॥१६॥ राय कहे सुण धीर, धैर्य धरो मत थाओ आ
कलाजी ॥ सघलानी मुज चिंत, करची में जाणो गु
ण आगलाजी ॥ १७ ॥ बाशठ योजन दूर, पोहवी
गण नगर इहांथी अछेजी ॥ आज रयणी एक याम,
पहखोजी बोलावीश हुं पछेजी ॥ १८ ॥ कश्हांक

करी साज, करवतियां धर काटण कोरडीजी ॥
श तत्काल, असवारी मनधारी ए गडीजी ॥
कोप्या जे नरपाल, सतकारी बोलावुं तेहनेजी ॥
लगें धीर धराय, रहो रहो इम द्विज करतां ए
॥२०॥ इम कही कग्यो नृप, बीजे खंडें सरस
मणीजी ॥ ए पन्नरमी ढाल, कांतिविजय
पयो नणीजी ॥ २१ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमर कहे कन्या प्रत्यें, रहस्य पणें तजी
॥ करी प्रतिज्ञा तुज मुखें, ते में पूरी आज ॥
ात दिवसें देवी गृहें, मिल्या रत्नसमां जेह ॥
तव्या निज निज कथा, हवे कहीजें तेह ॥
एहवे वेगवती तिहां, मलयानी धामाड ॥
कर जोडी विन्हें, पूछे एम कुमाड ॥ ३ ॥
देवी तणां, अथवा अवर उपाय ॥ अम मन
आकडे, कहो कुमण समजाय ॥ ४ ॥ कहे
र माहरे, वीरधवलनी ने स्वामी ॥ सुखें कहो
तनी, एह सुत जामनि गाम ॥ ५ ॥ गजमुत
सुर्लक्ष, तेह नमुत्त सुचरित्र ॥ नांखीने दिन
हुं, संध्यानुं कहे मित्र ॥ ६ ॥

॥ ढाल सोळमी ॥ सखीरी आयो उन्हाळो अआरडो ॥ ए देशी ॥

॥ पियारी सांज समय वीजे दीने, वीजे दीने, नृपयी मांमी प्रपंच ॥ मृगाक्षी सांजलो ॥ पियारी मंत्र साधन मिश नीकल्यो, नीकल्यो नूप कर्ने लेई लंच ॥ मृ० ॥ १ ॥ पि० ॥ ते इर्व्यं सूतारना ॥ सू० ॥ उपकरण लेई मूल ॥ मृ० ॥ पि० ॥ रंग अनेक लीया वली ॥ ली० ॥ मृगमद प्रमुख अतूल ॥ मृ० ॥ २ ॥ पि० ॥ सामग्री इम संग्रही ॥ सं० ॥ आव्यो देवी धाम ॥ मृ० ॥ पि० ॥ विवर सहित ते फालिका ॥ फा० ॥ कीधी घडी अभिराम ॥ मृ० ॥ ३ ॥ पि० ॥ खीली ठानी तेहमां, ते० ॥ वेलारी करी संच ॥ मृ० ॥ पि० ॥ साले संचें सुख ढांकणो ॥ सु० ॥ नीपायो परपंच ॥ मृ० ॥ ४ ॥ पि० ॥ एहवे त्यां केइ तस्करा ॥ के० ॥ मूकी नीत मंजूष ॥ मृ० ॥ पि० ॥ तस्कर एक ठवी गया ॥ ठ० ॥ ते पुर चोरी हुंश ॥ मृ० ॥ ५ ॥ पि० ॥ पूर्व सामग्री गोपवी ॥ गो० ॥ हुं थयो चोर समान ॥ मृ० ॥ पि० ॥ जाणी एकाकी ते कनें ॥ ते० ॥ ऊनो रह्यो करी शान ॥ मृ० ॥ ६ ॥ पि० ॥ मुजने निरखी इम कहे ॥ इ० ॥ ते अति लोभने व्याप ॥ मृ० ॥ पि० ॥ तालुं भांजी

नवि शकुं ॥न०॥ तुं मुज खोळी आप ॥ मृ०॥ ७
पि० ॥ तुरत उघाडी में दीयो ॥में० ॥ लीधो तिणे
वि माल ॥मृ० ॥ पि० ॥ ताणी बांधे पोटली ॥पो
द्रव्यतणी लोनाल ॥ मृ० ॥ ८ ॥ पि० ॥ बीहीतो
जने इंम कहे ॥इं०॥ शूकी सतनी मूंठ ॥ मृ०॥पि
जाउंतो हवे चोर ते ॥चो०॥ के नृप जन करे पूंठ ॥
मृ० ॥ ए ॥ पि० ॥ मारे मुजने मूलथी ॥मू०॥
तेहथी चित्त ॥ मृ० ॥ पि० ॥ थानक मुज जीव्या त
णुं ॥जी०॥ देखाडो कोई मित्त ॥ मृ० ॥ १० ॥ पि०॥
पद्मशिला ते नवननी ॥ ते० ॥ में उघाडी खांच ॥
मृ० ॥ पि० ॥ माल सहित ते चोरने ॥ते०॥ घाल्यो
उंचे खांच ॥ मृ० ॥ ११ ॥ पि० ॥ तिमहीज ऊपर
ते ठवी ॥ते०॥ विवर अंतर राख ॥ मृ० ॥ पि० ॥ ऊ
तरतां अंगण तले ॥अं०॥ दीठो वडतरु जांख ॥ मृ०
॥ १२ ॥ पि० ॥ दोडी वड ऊपर चढ्यो ॥ऊ०॥ रहुं
जोतो तुज वाट ॥ मृ० ॥ पि०॥ दीठो वडनी कूखमां
॥कू०॥ नूषण वसननो थाट ॥मृ०॥ १३ ॥पि०॥ अपह
रि लीधा देवीयें ॥दे०॥ पहेलो मुज समुदाय ॥मृ०॥
॥पि०॥ ते तिण ठांनां गोपव्यां ॥गो०॥ दीसे ठे ए प्राय
॥ मृ० ॥ १४ ॥ पि० ॥ में लीधो ते ओलखी ॥ ओ०॥

निरखुं बेठो गुज्ज ॥ मृ० ॥ पि० ॥ कपट नाटें श्रा वर्तो ॥ श्रा० ॥ नजरें पडी तुं मुज्ज ॥ मृ० ॥ १५ ॥ पि० ॥ वडतरुथी हुं कतरघो ॥ हुं० ॥ साइामो श्रा व्यो दोड ॥मृ०॥ पियारि वेहुं मल्यां ए माहरी ॥मा०॥ वात कही तज्ज गोड ॥ मृ० ॥ १६ ॥ पि० ॥ बीजें खंमें शोलमी ॥ शो० ॥ ए थई निरुपम ढाल ॥ मृ० ॥ पि०॥ कांति कहे मलया हवे ॥ म० ॥ कहेशे वात रसाल ॥ मृ० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

कुमर नणे में जुगतिशुं, नांख्यो मुज विरतंत ॥ तुं पण कहे ताहरो हवे, मूलथकी जिम हुंत ॥ १ ॥ ते कहे तुम शिक्षा ग्रही, पेठि हुं पुरमांहिं ॥ पुरुष वेष मगधासदन, पुंछुं पग पग गांहिं ॥ २ ॥ घर न मली पुरमां नमी, किहांई न दीठी स्वाम ॥ बेठी देव ल एकमां, दीठी मगधा नाम ॥ ३ ॥ नाखी वांके फांकडे, धूरत एकें धूत ॥ जावा लाग लहे नहीं, रो की सबल कुसूत ॥ ४ ॥ कारण में पूछ्या थकी, बो ली करती रींग ॥ श्रहो सुगुण मुज पाठले, वलगो बे एक विंग ॥ ५ ॥ धूरत एह पूठें पडघो, लंघावे बे मुज्ज ॥ क्षण क्षण थइ विरुई नडे, गूमड जेम श्ररु

क्त ॥६॥ निःकारण मुजनें इंणे, नोडी संकट मांहि
वात कहुं ते आदिथी, सुणजो चित्तनी चाहिं
॥ ढाल सत्तरमी ॥ दक्षिण दोहिलो हो राज ॥ ए देशी

गतदिन वेगी हो राज, मंदिर बारें राज, धूरत
रें रे, एतो आव्यो माल्हतो ॥ १ ॥ हास करीने
राज, में बोलाव्यो राज, इंमतो न जाण्यो रे धूतारो
जन एह छे ॥ २ ॥ मुज तनु मरदे हो राज, खांते क
रीने राज, कांइक आपुं रे हुं तुमने रूअडुं ॥ ३ ॥ व
चन सुणीने हो राज, आव्यो समीपें राज, मर्दी मा
हारी रें इंणे देह चोलीने ॥ ४ ॥ हुं पण तूठी हो राज
मनमां वारु राज, जिमवा सारु रे मेंतो एहनें नोतर्यो
॥ ५ ॥ एह कहे माहरे हो राज, काम नहीं छे राज,
नोजन न करुं रे कांइक मुनें दे हवे ॥ ६ ॥ पीत प
टोली हो राज, ले नहीं देतां राज, सोगमे देतां रे दामें
राजी ना थयो ॥ ७ ॥ नाम न नांखे हो राज, कांइक
मागे राज, आज ए आवी रे लागो पूठें माहरें ॥ ८ ॥
देहरे वेसारी हो राज, मुंजनें लंघावें राज, जावा न
दीये रे क्यांहिं फीटयो बाहिरें ॥ ए ॥ तव में विचा
रुं हो राज, जो हुं डुःखमां राज, जगडो निवेडी रें
वेश्याने छोडवुं ॥ १० ॥ तो मुज घावे हो राज, कारज

एहथी राज, इम निरधारी रे बेगी त्यां हुं ते कन्हें ॥ ११ ॥ मगधानें काने हो राज, कहिं कांइ ठानें राज, में कह्युं बिहुंने रे जाउं जमवा जोखमां ॥ १२ ॥ त्रीजे ते पहोरें हो राज, जगडो हुं नांजीश राज, वेहेला आविं रे बेहु पाछां आवजो ॥ १३ ॥ माहाबल पूछे हो राज, वाद ए मोटो राज, किम करी नांज्यो रे गोरी कहेने ते हवे ॥ १४ ॥ पंथनी थाकी होराज, देहरें हुं सूती राज, त्रीजे पोहोरें रे फरी बेहु आवीयां ॥ १५ ॥ मुजने झगडी हो राज, मगधानी दासी राज, घट एक ढांकी रे मांहे ठानो त्यां ठवे ॥ १६ ॥ में कह्युं तेहने हो राज, जण करीं साखी राज, कांइक अपावी रे तुजनें राजी हुं करुं ॥ १७ ॥ ते कहे बाळ हो राज, कांइक अपावो राज, तो नहीं दावो रे एहथी माहारे आजथी ॥ १८ ॥ मगधाने कीधी होराज, शानमें ज्यारें राज, मगधा त्यारें रे नांखे एहवुं भूतनें ॥ १९ ॥ हुंतो हारी हो राज, तुं हवे जींत्यो राज, कांइक मूक्युं रे मेंतो मांहे कुंनमां ॥ २० ॥ ते तुं लेइनें हो राज, ठेहडो छोडे राज, इम सुणी आव्यो रे रंगें देवलमां वही ॥ २१ ॥ कुंन निहाळी हो राज, ढांकणी उपाडी राज, कांइक लेवारे पाछे मारे

हाय ते ॥ २२ ॥ फणिधर महोटो हो राज, वलगो राज, न रहे अलगो रे वांको कर ॥ २३ ॥ ते कहे इंहां तो हो राज, कांइक राज, मगधा हसतीरे नांखे एह छे ताहरो ॥ [illegible] में मुज बोल्यो हो राज, ते एह दीधो राज, तुज णाथी रे कीधो माहारे बूटको ॥ २५ ॥ लोक हो राज, कहे तिहां वहुलां राज, एहने दीधुं एणे कांइक रूअडुं ॥ २६ ॥ विषधर फंक्यो हो राज, ते नर मूक्यो राज, तोतिल नामें रे देवी केरे ॥ २७ ॥ मुजने तेडी हो राज, मगधा साथे राज, निजघर आवी रे पाड माहारो मानती ॥ २८ ॥ बीजे खंडे हो राज, ढाल सत्तरमी राज, कांति [illegible] रे नांखी रूडी नेहशुं ॥ २९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हार रही में तेहने, आप्यो इंम उचार ॥ तुज घर नृपछेदी वसे, पेसुं नहीं ते माट ॥ १ ॥ इंम सुणी ने विलखी थइ, चिंते एहवुं चित्त ॥ ए नाणो कोइक नर, जाणो रहस्य चरित्त ॥ २ ॥ बोलती नरमां आपडी, मुजने इंम कहे वाण ॥ रखे [illegible] ता किहां, कहुं तुं जोडी पाण ॥ ३ ॥ किहां [illegible]

हुम चकी, न रहे छानी नेट ॥ कह्यो छिपायो किहां छिपे, राई आगल पेट ॥ ४ ॥ बने कपट करवो तिहां, जिहां कपटनो लाग ॥ कोईक दिन तेहवो मले, काढे सघलो ताग ॥ ५ ॥ सुईछिद्र करे तिता, पूरण धागा साख ॥ सज्जन सहेजे गुण करे, ढांके अवगुण लाख ॥ ६ ॥ एहथी मुज पानुं पड्युं, तेतो पूरव जोग ॥ गले ग्रहीनें काढवा, हवे बन्यो छे जोग ॥ ७ ॥

॥ ढाल अढारमी ॥ चंदनरी कटकी भली ॥ ए देशी ॥

॥ वीरधवलनी गोरडी, कनकवती नामेण ॥ नाणिडा हो राज, चरित्र सुणो एहवी नारीना ॥ कपट करीने नृपनंदनी, कूपें नखावी एण ॥ ना० ॥ १ ॥ कूड कपट जाणी नृपें, रोकीती निज गेह ॥ ना० ॥ नासी निशि आवी रही, मुज घर पूरव नेह ॥ ना० ॥ च० ॥ २ ॥ बलती जेहवी गागरी, पेठी घरने खूण ॥ ना० ॥ मुज घरथी काढो परी, करीनें कांईक टूण ॥ ना० ॥ च० ॥ ३ ॥ मानीश हुं उपगारडो, बीजो ए गुण जोई ॥ ना० ॥ पारथीयां होये स्वारथी, स्वारथ विण जग कोय ॥ ना० ॥ च० ॥ ४ ॥ तव में मगधानें कह्युं, काढुं जो करी ख्याल ॥ ना० ॥ वैर वधे तो बेहुमां, जाण्यो पण जंजाल ॥ ना० ॥ च० ॥ ५

नरणादिक काई ॥ ना० ॥ च० ॥ १८ ॥ तव मुजनें देखाडीयां,आनूषण तेणें काढि ॥ना०॥ हसतां में कह्युं थोडलां,ते कहे इम रस गाढ ॥ ना० ॥ च० ॥ १५॥ हार अछे माहारे वली, नामें लखमीपुंज ॥ ना० ॥ गुप्त धखो ते काढतां, आवे छे मुज धूज ॥ ना० ॥ च० ॥ १६ ॥ में पुछयुं ते क्यां धखो, ते कहे चहुटा मांहिं ॥ ना० ॥ शूना घर पासें वडो, कीर्त्ति थंन छे त्यांहिं ॥ ना० ॥ च० ॥ १७ ॥ ते नीचें नंमारीयो, ते हमां मूक्यो माट ॥ ना० ॥ न शकुं जावा वासरें, मर ती हुं तिण वाट ॥ ना० ॥ च० ॥ १८ ॥ रातें आज जई तिहां, आणीश तेह छिपाय ॥ ना० ॥ जाई शके जो तुं तिहां, तो लेई आव तकाई ॥ ना० ॥ च० ॥ १९ ॥ नहीं तो सांजे मुझनें, कहेजे जेहवुं होय ॥ ना० ॥ इम आलोच कखो घणो, मांहोमांहें रस ढो य ॥ ना० ॥ च० ॥ २० ॥ मालथकी हुं उतरी, आ वी मगधा नाल ॥ ना० ॥ बीजे खंमें अढारमी, कांतें नणी इम ढाल ॥ ना० ॥ च० ॥ २१ ॥

॥दोहा॥

॥ मगधा कहे सुजने हसी,कह्यो केती छे ढील ॥ में कह्युं ए तुज घर थकी, काढी छे अडखील ॥ १ ॥ सं

तोपण तुज उपरोधथी, करशुं हुं ए काज ॥ ना० ॥ ते मुज रातें मेलवे, जिम करुं काढण साज ॥ ना० ॥ च० ॥ ६ ॥ गणिकायें अति आदरें, भोजन मुजनें दीध ॥ ना० ॥ रातें एकांतें मुने, कनका मेलवी सीध ॥ ना० ॥ च० ॥ ७ ॥ मुज साथें रागें भरी, वदती मीठा बोल ॥ ना० ॥ भोग भणी मुज प्रारथे, करती नयण कल्लोल ॥ ना० ॥ च० ॥ ८ ॥ में भांख्युं तेहने ईस्युं, मुज वालो छे एक ॥ ना० ॥ ते अति अरथी नारिनो, मनमथ रूपें छेक ॥ ना० ॥ च० ॥ ए ॥ प ण कामें गामें गयो, आज करी संकेत ॥ ना० ॥ मुज मलशे देवी घरें, रातें काले सहेत ॥ ना० ॥ च० ॥ १० ॥ मुज साथें तुं आवजे, देशुं जोग बनाय ॥ ना० ॥ नहींतो पण ए आपणी, प्रीति किहां नहीं जाय ॥ ना० ॥ च० ॥ ११ ॥ कहे कनका क्यांथी तुमें, आव्यां कुंण तुम जात ॥ ना० ॥ में कह्युं बिहु क्षत्री अमें, चाल्या विदेश सखात ॥ ना० ॥ च० ॥ ॥ १२ ॥ मुज वचनें ते वीशमी, भांखे निज अवदात ॥ ना० ॥ गोष्टि करंतां रातडी, वीती थयो परभात ॥ ना० ॥ च० ॥ १३ ॥ पूछ्युं प्रपंचें में वली, तेह ने प्रभातें तांई ॥ ना० ॥ छे तुज पासें के नहीं, आ

नरणादिक काई ॥ ना० ॥ च० ॥ १४ ॥ तव सुजनें देखाडीयो,आनूषण तेणें काढि ॥ना०॥ दसतो में कयुं थोडलो,ते कहे इम रस-फाड ॥ ना० ॥ च० ॥ १५॥ हार अछे माहारे वली, नामें लखमीपुंज ॥ ना० ॥ गुप्त धस्यो ते काढतां, आवे छे मुज ध्रुज ॥ ना० ॥ च० ॥ १६ ॥ में पूछयुं ते क्यां धस्यो, ते कहे चहुटा मांहिं ॥ ना० ॥ शूना घर पासें वडो, कीर्त्ति थंन छे त्यांहिं ॥ ना० ॥ च० ॥ १७ ॥ ते नीचें नंमारीयो, ते हमां मूक्यो फाट ॥ ना० ॥ न शकुं जावा वासरें, मर ती हुं तिण वाट ॥ ना० ॥ च० ॥ १८ ॥ रातें आज जई तिहां, आणीश तेह छिपाय ॥ ना० ॥ जाई शके जो तुं तिहां, तो लेई आव तकाई ॥ ना० ॥ च० ॥ १९ ॥ नहीं तो सांजे मुजनें, कहेजे जेहवुं होय ॥ ना० ॥ इम आलोच कस्यो घणो, मांहोमांहें रस होय ॥ ना० ॥ च० ॥ २० ॥ मालवकी हुं उतरी, आवी मगधा नाम ॥ ना० ॥ बीजे खंडें अढारमी, कांतें नणी इम ढाल ॥ ना० ॥ च० ॥ २१ ॥

॥दोहा॥

॥ मगधा कहे सुजने हसी,कह्यो केती छे ढील ॥ में कयुं ए तुज घर थकी, काढी छे अडखील ॥ १ ॥

च कह्यो छे एहवो, पूरी पूरण पूठ ॥ वारंतां पण रा
तमां, जाशे कनका कठ ॥ २ ॥ सामग्री जोजन तणी,
करे मगधा अति नेह ॥ जमी रमी तिहांथी वली, ग
ई दिवसने छेह ॥ ३ ॥ छाना थानक थंजनो, जोतां
न लह्यो हार ॥ रातें कनकाने वली, जई नांख्यो सु
विचार ॥ ४ ॥ हार लेई तुं आवजे, देवी जवन मजा
र ॥ पूछीने मगधा प्रत्यें, हुं चाली निशिचार ॥ ५ ॥

॥ ढाल छंगणीशमी ॥ आछे लालनी देशी ॥

॥ रयणी अंधारी मांहे, वहेती हुं चित्त चाहे, आछे
लाल ॥ अध मारगें जूली पडी ॥ आफलती पुर सेर,
खाती धारण फेर, आ० ॥ जिम तिम पामी वाटडी
॥ १ ॥ आवी हुं तुम पास, नांखी वात प्रकाश,
आ० ॥ कनकवती जोइ आवती ॥ हार लेइने एह,
आवे छे अतिनेह, आ० ॥ कनका तुमने चाहती ॥ २॥
वात सुणी ईम नाह, आणी टेक अथाह, आ० ॥
प्रीति वचन ते उडव्यां ॥ बोलवुं नही घटमान, एह
थी होय नुकशान, आ० ॥ इम कही थंछाना थिप्या
॥ ३ ॥ कनका मन उत्कंठ, आवी मुज उपकंठ ॥
आ० ॥ तव में इम कह्युं तेहनें ॥ आवी म कर कां
सोर, वेठा छे इहां चोर, आ० ॥ ते सुण जे होय इ

ज कर्नें ॥ ४ ॥ राखुं त्रिराडी क्यांहि, तव ते आवे त्यां हिं, आ० ॥ वगको हाथें ठवकी, में तेहमांथी टा लि, काढी वस्तु निहालि, आ० ॥ हार अने वली कं चूकी ॥ ५ ॥ बाकी सवि समुदाय, बांध्यो एक निला य, आ० ॥ चोर मंजूषें ते धर्यो ॥ में कर्युं तेहने ए म, परके ले तुं केम, आ० ॥ पानक में ताहरें कह्यो ॥ ६ ॥ ज्यां लगें चोर न जाय, त्यां लगें ते न खमाय, आ० ॥ पेश मंजूषें ते नणी ॥ पेटी ते निर्लीक, में धारी मन ठीक, आ० ॥ तालुं दीधुं आहणी ॥ ७ ॥ आपण वे अति हुंस, कपाडीने मंजूस, आ० ॥ गोला मां वहेती करी ॥ वेर प्रथमनुं वालि, वाह्यो नीर वि चाल, आ० ॥ करतारों करीयें खरी ॥ ८ ॥ मांज्युं पि उ ततकाल, थूंकें माहारुं नाल, आ० ॥ रूप सहज हुं हुं लही ॥ तुम आणाथी अंग, दीधुं विलेपण चंग, आ० ॥ पहेरी पटोली में वही ॥ ए ॥ पहेरयां कुंम ल खास, रविशशी मंमल नास, आ० ॥ लाधां जे तडने थहें ॥ पहेरयो कंचुक सार, कंठें ठव्यो ते हार, आ० ॥ वरमाला धारी नलें ॥ १० ॥ पेटी संपुट मां हि, गुहिर विवर अवगाहि, आ० ॥ त्यारें मुज सवि शीखवी ॥ निसुणे वीणा घोर, तव ए खीली चो

आ० ॥ काढे इहांथी नीरवी ॥ ११ ॥ इम कही वी
जुं खंभ, थाप्युं शीश अखंभ, आ० ॥ तेहमां वसी खी
ली जडी ॥ राख्या पवननां माग, नीचें ढानें लाग,
आ०॥ चतुराईशुं ते घडी ॥ १२ ॥ जाणुं एती वात,
कहो आगें अवदात, आ०॥ में न लह्या तिहां संक्र
मी ॥ बीजे खंभें एह, कांति कहे धरी नेह, आ० ॥
ढाल नणी ठगणीशमी ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कहे माहाबल मानिनी सुणो, आगें जे हुई वा
त ॥ थंन तिस्यो में चीतस्यो, जिम जाण्यो नवि जा
त ॥ १ ॥ रंग प्रमुख जे ऊगस्या, ते वाह्या जलपूर ॥
एहवामां फरी चोर ते, आव्या नवन हजूर ॥ २ ॥
चोर सहित पेटी तिकें, जिहां तिहां जोतां दीठ ॥ तस
शानें बोलावतां, कीधा आदर इठ ॥३॥ मुज पूछे मंजू
शशुं, दीठो एक किहां चोर ॥ बीडुं में देई आदरें, कह्युं
एम तिण ठोर ॥४॥ थंन एहजो पूर्वनी, पोलें मूको
आज ॥ तो देखाडुं चोर ते, व्यवहारें नहीं लाज ॥५॥
॥ ढाल वीशमी ॥ थें तोनें आया ठलगुं,ठलगाणाजी ॥
जिरमट खाज्यो गाल नण्या ॥ ए देशी ॥
॥ चोर कहे इम ठमही ॥ गुणवंताजी ॥ राज नजें

मल्या नाग्ययकी ॥ काम करे शुं ए वही ॥ उजमंता जी; अरथें अवसर एह तकी ॥ १ ॥ गुण करतां गुण कीजीयें ॥ गु० ॥ एहमां पाड न कोइ इहां ॥ कहोतो काढी दीजीयें ॥ उ० ॥ जीव सरखो काज जिहां ॥ २ ॥ जीवजीवातन सारिखो ॥ गु० ॥ ते जातां होय दुःख घणो ॥ पोतावटीनुं पारिखुं ॥ उ० ॥ लहीयें अर्थ सरे बमणो ॥ ३ ॥ इम कही तें थया एकठां ॥गु०॥ धन दाटी तेह सिंधु तटें ॥ वपाडे मली सामटा ॥ उ० ॥ थेन तिहांथी एक धटें ॥ ४ ॥ ते पूरें हुं चालियो ॥ गु० ॥ पूरव पोल समीप गया ॥ वंछित धन देखाडियो ॥ उ०॥ ते तिहां मूकी निचिंत थया ॥ ५ ॥ में जाण्यो जो गोपव्यो ॥ गु० ॥ देखाडुं ते चोर हवे ॥ तो ए टोलो कोपव्यो ॥उ०॥ धन लोजें तस लोही पीवे ॥ ६ ॥ इम धारी अंतर वटें ॥ गु० ॥ उत्तर कूडुं एम कयुं ॥ लोन वशें तेणें चोरटे ॥उ०॥ तालुं कपाडी इव्य ग्रह्युं ॥ ७ ॥ गोला सिंधु प्रवाहमां ॥ गु० ॥ तरती मूकी मंजूष सुखें ॥ तेह उपर चढी राहमां ॥ उ० ॥ नदीयें थई ए जाय मुखें ॥ ८ ॥ दी ठा में सघली परें ॥ गु० ॥ पासें कने चरित्त घणां ॥ चोर सहु इम उच्चरे ॥ उ० ॥ साच चरित्त ए चोर =

णां ॥ ए ॥ रातिसूधी ते नीरमां ॥ गु० ॥ जाशे तरतो नूमि कीती ॥ देशुं वड जंजीरमां ॥ ७० ॥ ग्रहिशुं करशे जेय थिती ॥ १० ॥ जाशे ए किहां वेगलो ॥ गु० ॥ चोटी एहनी हाथ अछे ॥ हमणां मूक्यो मोकलो ॥ ७० ॥ लेशे फल रस पाक पछें ॥ ११ ॥ इम कहेतां मन आमले ॥ गु० ॥ चोर गया निज काज वगें ॥ यत न करी में एकले ॥ ७० ॥ राख्यो थंन प्रनात लगें ॥ १२ ॥ प्रहकालें जण नूपनो ॥ गु० ॥ आव्यो निरख ण थंन तिहां ॥ हुं थई अलख स्वरूपनो ॥ ७० ॥ वेगें आवी छे नूप जिहां ॥ १३ ॥ इत्यादिक वीती कथा ॥ गु० ॥ कहीने वली महावल नणें ॥ काढुं चोर ते स वेथा ॥ ७० ॥ शिखर ठव्यो जे नुवन तणे ॥ १४ ॥ चालीश जो हुं निजपुरें ॥ गु० ॥ तो मरशे तिणें नीड पड्यो ॥ चढशे पाप खराखरे ॥ ७० ॥ इणे फिकरें मुज चित्त नड्यो ॥ १५ ॥ तुं इहां रहेजे हुं वही ॥ गु० ॥ आवी शं तेहनो सल करी ॥ कहे मलया रहेशुं नहीं ॥ ७० ॥ साथें आवीश रंग धरी ॥ १६ ॥ तव कुमर विचारी चि त्तमां ॥ गु० ॥ वेगवतीने एम नणे ॥ जो नृप आवे तुर तमां ॥ ७० ॥ तो कहेजो इम निपुण पणे ॥ १७ ॥ गोलातटें देवी नमी ॥ गु० ॥ आवशे कुमर इहां ह

मणां ॥ मानस किम चकोरें गमी ॥ध०॥ मान्या होय जे देव तणा ॥ १७ ॥ इंम कही आव्यो तिहां वली ॥ध०॥ रात्रि समय देखी भुवनें ॥ वारी पण नवि रही शके ॥ध०॥ मलया राखें हुई सुमनें ॥१८॥ बीजे खंडें वीशमी ॥ध०॥ ढाल भली अति सरस रसें ॥ सुणतां श्रोताने गमी ॥ध०॥ कांति कहे मनने हरसें॥१९॥

॥ दोहा ॥

॥ साम दाम दंडें करी, वीरधवल नूपाल ॥ समजा व्या नरपति घणुं, पण समजे नहीं बाल ॥ १ ॥ तेह कहे परजातमां, मारी तुज जामात ॥ कन्या लेइ चालशुं, तुं न करे श्रम तात ॥ २ ॥ वचन सुणि नपति चक्यो, आवे भुवन विचाल ॥ लाज करावे करहलि, संप्रेडण वर बाल ॥ ३ ॥ चुंप करावण आ विउ, वर कन्या नवणेह ॥ दीठा नहीं पूछ्युं तदा, वेगवती कहे तेह ॥ ४ ॥ वेगे जोवे वाटडी, नूपति करतो चिंत ॥ रात पडी तव जिहां तिहां, शोध्यां पण न मिलंत ॥ ५ ॥ खवर लही नृप नंदनां, कटक गयां परजात ॥ आव्या तिम निज निज पुरें, विलख वदन विरचात ॥६॥ जामाता कन्या तणी, किहां न लही नृप सूज ॥ दुःखियो नूपति चित्तमां, चिंते एम अमूंज ॥७॥

॥ढाल एकवीशमी॥ धिग धिग धणनी प्रीतडी ॥ए देशी॥
॥ नरराज अति चिंता करे, मनमां पोषी दाह रे ॥ वर कन्या बिहु किहां गयां, ए तो अचरिज रे दीसे जगनाह ॥ १ ॥ नृपति त्रटकीने कहे रे, कुंण जाणे रे एह अकल सरूप ॥ जोयां पण लाधां नहीं रे, थयुं होशे रे कांइ विपरिय रूप ॥ नृ० ॥ २ ॥ किहां नगरी चंद्रावती, किहां नगर पोहवीठाण ॥ किहां कन्या महाबल किहां, एतो विभ्रम रे रचना अहिनाण ॥ नृ० ॥ ३ ॥ अथवा देवें बेहुनो, संयोग इंम किम कीध ॥ इंद्रजाल परें कारिमो, देखाडी रे किम जडपी लीध ॥ नृ० ॥ ४ ॥ तुज चित्तमां एहवुं हतुं, करवुं दैव अनिष्ट ॥ तो मूलथकी परगट करी, क्यां पाडयो रे एह माहारी दृष्ट ॥ नृ० ॥ ५ ॥ नवि दीधुं नोजन नलुं, नहीं दीधुं लीध न दालि ॥ मणि हीणुं नूषण नलुं,पण पडिठे रे जश मणि ते टालि ॥ नृ० ॥ ६ ॥ हण्या डुष्ट किण वैरीयें, अथवा निरुध्यां केण ॥ के किण देवें अपहस्यां, दंपती दोइ रे आव्यां नहीं तेण ॥ नृ० ॥ ७ ॥ रूप करी महाबल तणुं, आव्यो हतो कोइ चोर ॥ परणी निज देशें गयो, मुज कन्या रे काज

जानी फोर ॥ नृ० ॥ ८ ॥ कुमर कुमरी रूपें करी, भ्रांति मुज मन घालि ॥ मरण थकी वारी गयां, करु णालां रे केइ अथवा विचालि ॥ नृ० ॥ ए ॥ शुं करुं केहने कहुं, कुण लहे मुज मन पीड ॥ इम कहेतो गलहथ करी, नृप वेगो रे पडयो चिंता नीड ॥ नृ०॥ ॥ १० ॥ वेगवती वेगें कहे, प्रभु धरो मनमां धीर ॥ तेहिज मलया ए हती, तेह हुतो रे एह महबल वीर ॥ नृ० ॥ ११ ॥ पण रातमां जातां वनें, छल छेतर्या ततखेव ॥ कोइक वैरी विरोधयी, संनवियें रे हरि या किणें देव ॥ नृ० ॥ १२ ॥ देशाउर पुर पर्वतें, वननूमि विषम प्रदेश ॥ मूकी नर विशवासिया, जो वरावो रे तजी अपर किलेश ॥ नृ० ॥ १३ ॥ प्रथम पुहवीगण पुर दिशि, तुरत करवी शोध ॥ किणहीक कारणथी कहे, नारी लेई रे गयो होय तिहां योध ॥ नृ० ॥ १४ ॥ सूरपाल नरिंदनें, एह सयल जणावो वात ॥ तेपण खबर करे वली, करतां इम रें सांव आ वशे धात ॥ नृ० ॥ १५ ॥ नलुं नलुं नूपति कहे, तें कह्यो साहु उपाय ॥ वेगवतीने सराहतो, तिम कर वा रें नरपति सज थाय ॥ नृ० ॥ १६ ॥ मलयकेतु निजपुत्रनें, देई शीख नृप ससनेह ॥ सूरपाल दि

मोकल्यो, कहेवानें रे व्यतिकर सवि तेह ॥ नृ० ॥
॥ १७ ॥ हयगय सुनट रथ साजशुं, ते कुमर निय
त प्रयाण ॥ कुशलें मलशे नृपनें, होशे रूडा रे इह
कोडी कल्याण ॥ नृ० ॥ १८ ॥ ढाल एह एकवीश
मी, इम कही कांति रसाल ॥ सुणतें बीजा खंमनी,
जणतां होये रे घर घर मंगल माल ॥ नृ० ॥ १९ ॥

॥ चोपाई ॥ खंम खंम रस ठे नवनवा, सुणतां मीठा
साकर लवा ॥ निर्मल मलय चरित्र जग जयो, बी
जो खंम संपूरण थयो ॥ २० ॥

॥ इति श्री ज्ञानरत्नोपाख्यान द्वितीयनाम्नि मलय
सुंदरिचरित्रे पंमितकांतिविजयगणिविरचिते प्राकृत
प्रबंधे मलयसुंदरीपाणीग्रहणप्रकाशको नाम द्वितीय
खंमः संपूर्णः ॥ २ ॥ सर्व गाथा ॥ ५७५ ॥

॥ अथ तृतीय खंम प्रारंनः ॥

॥ दोहा ॥

॥ बीजो खंम समर्थनुं, पूरण कीध प्रमाद ॥ हवे
त्रीजो कहेवा नणी, मनमां रंग गमाद ॥ १ ॥ नवि
प्रणमी सारदा, कहेशुं शेष चरित्र ॥ कवि रसना
श्रोता सुणी, करजो कर्ण पवित्र ॥ २ ॥ हवे कुमार

बनमां लई, मलयानें धनपंत ॥ फिरतुं निशि सम शानमां, नारीनें न घटंत ॥ ३ ॥ ते माटे नर रूप तुज, करुं कही ईम जाण ॥ तिलक कयुं आंबारसें, घोली घसी ततकाल ॥४॥ नारी रूपें नर हुउ, थयो बेहु संबंध ॥ बेवी गृहनां शिखरथी,काढे चोर निरुद्ध ॥ ५ ॥ कहे इस्युं रे गत दिनें,गया चोर तुज देख ॥ जा कुशलें जिहां रुचि होवे,तिहुनो पंथ उवेख ॥६॥ प्राण लाभ धनलाभ में,तुम पसायें लद्ध ॥ ईम कह ते नमते घणुं, तेणे पयाणुं कीध ॥ ७ ॥ बिहुं सुव नथी कतरी, आवे वडतलें आप ॥ तव तिहां गयणे गेवनो, सुण्यो भूत आलाप ॥ ८ ॥ कुमर मरंतो जू तथी, करवा यतन प्रकार ॥ ततक्षण कामिणी कंठ थी, लीए उतारी हार ॥ ए ॥ रहे रहे ठानी सत्त क मां, सांभल देइ कान ॥ वडमां भूत वदे किस्युं, कुमर करे ईम शान ॥ १० ॥ ठानां वड पोलाशमां, बिहुं बेठां घिरगात ॥ सावधान थइ सांभले, भूत तणी ईम वात ॥ ११ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ सहेर भलो पण सांकडो रे, नगर भलो पण दूर रे ॥ हठीला वयरी ॥ ए देशी ॥

॥ वड शिखरें ईम बोलीउं रे, भूताने एक

रे ॥ मोहन रंगीला ॥ वात कहुं नवली नली होला
ल ॥ सांजलजो अदनूत रे ॥ मो० ॥ १ ॥ नूत वडो
कहे वातडी हो लाल ॥ ए आंकणी ॥ कुमर सुणे
रह्यो हेवरे ॥ मो० ॥ रहस्य मरम जोतां वली हो
लाल ॥ वेधक पामे नेव रे ॥ मो० ॥ नू० ॥ २ ॥ पु
हवी गण नरिंदनो रे,माहावल नामे कुमार रे॥मो०॥
वे मतिवंत गुणायरु होलाल, रतिपतिने अणुहार
रे ॥ मो० ॥ नू० ॥ ३ ॥ तस जननी पदमावती रे,
तेहना गलानो हार रे ॥ मो० ॥ किणहीक अलख
पणें लीयो हो लाल, माय करे दुःख नार रे ॥मो०॥
॥ नू० ॥ ४ ॥ इंम पण बांध्यो आकरो रे, वालण
हार कुमार रे ॥ मो० ॥ हार न दौं दिन पांचमे हो
लाल, तो मुज अगनि आधार रे ॥ मो० ॥ नू० ॥
॥ ५ ॥ मातायें पण आदस्यो रे, पण तेहवो निर
धार रे ॥ मो० ॥ पांच दिवसमां ते लहुं हो लाल,
तो रहुं जीवित धार रे ॥ मो० ॥ नू० ॥ ६ ॥ ख
बर नहीं वे कुमरनी रे, हार केडें गयो कव रे ॥मो०॥
पंचम दिन कालें हुशे हो लाल, सूरज ऊग्या पूर्व रे
॥ मो० ॥ नू० ॥ ७ ॥ नृपनंदन मुगतावली रे,
मलवा डुर्लन्न वेह रे ॥ मो० ॥ ते दुःख मरतुं आ

गमो हो लाल, वेगो राणी तेह रे ॥ मो० ॥ नृ० ॥
॥ ७ ॥ विषथी के गिरि पातथी रे, के पेशी जल
देश रे ॥ मो० ॥ मरशे के वली शस्त्रथी हो लाल, के
करी अगनिप्रवेश रे ॥ मो० ॥ नृ० ॥ ए ॥ लोक
बहुलशुं राणीपो रे, मरशे पूठें तास रे ॥ मो० ॥
खबर लेइनें आवीयो हो लाल,हुं तिहांथी तुम पास
रे ॥ मो० ॥ नृ० ॥ १० ॥ नृपनंदन वट कोटरें
रे, सांभले वेगो एम रे ॥ मो० ॥ फाटे हीयडुं डुः
खथी हो लाल, काचो घट जल जेम रे ॥ मो० ॥
॥ नृ० ॥ ११ ॥ चिंता नर मन चिंतवे रे, देव कथ
न नहीं फोक रे ॥ मो० ॥ थाशे जो एहवुं कहे हो
लाल, तो करशुं श्यो शोक रे ॥ मो० ॥ नृ० ॥ १२ ॥
नत कहे जइयें तिहां रे, वहेलां गांमि प्रमाद रे
॥ मो० ॥ कौतिक जोशुं खंतशुं हो लाल, लेशुं रुधिर
सवाद रे ॥ मो० ॥ नृ० ॥ १३ ॥ इंम कही सम
कालें कस्यो रे, नूतकुलें हुंकार रे ॥ मो० ॥ आका
शें वड कपड्यो हो लाल, लेता साथ कुमार रे ॥
॥ मो० ॥ नृ० ॥ १४ ॥ वेगें वड नभें चालतो रे,
आव्यो पुहवीठाण रे ॥ मो० ॥ आलंबन गिरिनीचें
जई हो लाल, तुरत कस्यो मेलाण रे ॥ मो० ॥ नृ०

॥ १५ ॥ पुर पासें गोला तटें रे, नामे धनंजय यक्ष रे ॥ मो० ॥ जूत गयां तस देहरे हो लाल, करवा कौतुक लक्ष रें ॥ मो० ॥ नू० ॥ १६ ॥ निजपुर उपवन जूमिनां रे, परिचित तरुनां वृंद रे ॥ मो० ॥ कुमरें निहालो उलखी हो लाल, पाम्यो परमानंद रे ॥ मो० ॥ नू० ॥ १७ ॥ कुमर जणे मलया जणी रे, दीसे पुण्य प्रमाण रे ॥ मो० ॥ जेहथी ए वड उपडी हो लाल, आव्यो पुहवीगाण रे ॥ मो० ॥ नू० ॥ १८ ॥ वड कोटरथी नीसरी रे, जइयें उपवन कूल रे ॥ मो० ॥ सुर शक्तें वली उडशे हो लाल, तो कर स्यां श्यो सूल रे ॥ मो० ॥ नू० ॥ १९ ॥ एम विचारी नीसस्यां रे, वड कंदरथी दोय रे ॥ मो० ॥ कदली वन वे ढूकडूं हो लाल, तिहां जइ बेठा सोय रे ॥ मो० ॥ नू० ॥ २० ॥ उपडतो गयणांगणें रे, देखे वड वली तेम रे ॥ मो० ॥ मांहो मांहे कहे इंहां थको हो लाल, जाशे आव्यो जेम रे ॥ मो० ॥ नू० ॥ २१ ॥ जो रहेतां ए हमां वसी रे, तो जातां किण थान रे ॥ मो० ॥ पडतां व ी जोलमां हो लाल, जिम पवनें तरु पान रे ॥ मो० ॥ नू० ॥ २२ ॥ त्रीजे खंडें ए कही रे, सुंदर प

हेली ढाल रे ॥ मो० ॥ कांतिविजय कहे पुण्यथी हो लाल, वाधे सुजश विशाल रे ॥ मो० ॥ नू० ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे कुमर निसुणे तदा, विनताना आक्रंद ॥ दया पणे नयणें नरे, करुणा जल निस्पंद ॥ १ ॥ आवीश हु वहेलो प्रिये, चिंता मुज न करेश ॥ इंम कही नर रूपें त्रिया, तिहां ठवि चल्यो नरेश ॥ २ ॥ निरखत पिउ नी वाटडी, शूने रंनाकुंज ॥ रयणि गमावे नारि ते, दाधी दुःखने पुंज ॥ ३ ॥ पीत वरण प्राची हुवे, पास्यो कमल विबोध ॥ बंधनपरथी बन्द जिम, छूटा अलिकुल योध ॥ ४ ॥ गुंजा पुंज समान तनु, उदयो वालो सूर ॥ आलें किरणजालें हणी, कर्या तिमिररिपु दूर ॥ ५ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ वृषभान सुवनें गई दूती ॥ ए देशी ॥

॥ मलया मन एम विचारे, जाउं हुं पुरमां करारें ॥ माय बापने मलवा कामें, मुज नाह गयो हुशे धामें ॥ १ ॥ चाली इंम चाली चुंपें, आवी वही पुरनी खुंपें ॥ पेसे जव पुरनें डुवारें, रोकी तव नगर तलारें ॥ २ ॥ दिव्य वेश निहाली चमक्यो, कहे कुण तुं आयो धमक्यो ॥ बोलाव्यो तिहां उत्तर नापे, दश दिशिमां लोचन थापे ॥ ३ ॥ मलिया केई नगर निवासी, निरखे ...

रूप प्रकाशी ॥ कुंमलने डकूलनी फाली, ठेलख्यां म हबलनां जाली ॥ ४ ॥ तलवर कहे किहांथी लाधां, आजूषण कुमरनां वाधां ॥ इंम कही नृप पासें लाव्यो, देखी नृप चित्त चमकाव्यो ॥ ५ ॥ कहे कोण पुरुष ए नवलो, सोहे नूषणें करी जांतीलो ॥ मुज सुतनां पहिख्यां दीसे, आजूषण विश्वावीसें ॥ ६ ॥ तलवर क हे ए हिसंतो, पकड्यो पुरमां पेसंतो ॥ पूछ्यो पण उत्तर नापे, पूछो वली जो हवे आपे ॥ ७ ॥ नूपति कहे कुण तुं किहांथी, आव्यो कहे साच जिहांथी ॥ मलया मनमांहि विमासे, साचुं इहां जूठुं नासे ॥ ॥ ८ ॥ कहिशुं आम चरित्र वखाणी, कोइ सद्दहशे नहीं प्राणी ॥ कहेवुं नहीं पीउडा पाखें, जावी मटशे नहीं लाखें ॥ ए ॥ इंम धारीने मलया बोले, महबल मु ज मित्रने तोलें ॥ ते माटे ए वेश प्रसिद्धो, मुजने ते णे पेहेरण दीधो ॥ १० ॥ शूरपाल कहे तेह क्यां छे, सा कहे इंहांहिज जिहां त्यां छे ॥ नृप कहे होये जो इहां आवे, मुज मलवा तो किम नावे ॥ ११ ॥ जूठीसवि वात प्रकाशी, चोकस न पडी त्रिण राशी ॥ महबल थी प्रीति वखाणे, तो सेवक कोइ तुज जाणे ॥ १२ ॥ इत्यादिक वचन सुणीनें, रही मौन धरी मन हीनें ॥ वो

त्यो नरपति हुंकारी, एह वात हवे अवधारी ॥१३॥ अणदीवां मुज नंदननां, वसनादिक लीधां तननां ॥ लोनसार नामें जेणे चोरें, रहे ते गिरिकंदर छोरें ॥ ॥ १४ ॥ चोस्यो पुरनो जेणें माल, पकडयो ते माटे स्वाल ॥ काले तस निग्रह कीधो, तस बांधव दीसे ए सीधो ॥ १५ ॥ निजबंधु वियोगें बलतो, सूधि लेवा आव्यो चलतो ॥ पहेरी मुज सुतनो वेश, इंणे पुरमां कीध प्रवेश ॥ १६ ॥ मुज सुत हणीउ इणें मलीनें, मुज वैरी ए अटकलीनें ॥ लोनसार कन्हें जई हणजो, इहां पाप किस्युं मत गणजो ॥१७॥ मलया मनमां इं म ध्यावे, असमंजस कर्मनें दावे ॥ प्राणांतिक आपद मोटी, दीसे छे इहां वली खोटी ॥१८॥ चिंतवती पूर्व सलोक, रही मौन धरी अतिशोक ॥ तव बोल्यो सचिव विचारी, महाराज सुवो अवधारी ॥ १९ ॥ जिम साह नहीं ए साचो, तिम चोर करी मत खांचो ॥ आचरणा दीसे रूडी, शिर आवी तो मति कूडी॥ २० ॥ इहां उचित करावो धीज, होये शुद्ध अशुद्ध पतीज ॥ इम करी हणशो तो आछे, कोई दोष न देशे पाछें ॥ २१ ॥ नृप कहे शी धीज वतावो, तव ते कहे सर्प मंगावो ॥ साचो घट सर्पनी धीजें, होशे तो चरण

मीजें ॥ २१ ॥ नृप गारुडविद अविलंबें, मूके तव शैल अलंबें ॥ डुद्धर विषधर आणेवा, गया हसता ते ततखेवा ॥ २३ ॥ वस्त्र कुंभल नृपें लेई, तलवरने सोंप्यो तेई ॥ वंध आवी मलया राणी, पण ढालें व हेशे पाणी ॥ २४ ॥ त्रीजे खंडें बीजी ढाल, इम कांति कहे सुरसाल ॥ केई कौतुक होशे आगें, सांभलजो श्रोता रागें ॥ २५ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ एहवे पटराणी तणी, महुलणी आवी दोड ॥ गलगलती नृप आगलें, कहे एम कर जोड ॥१॥ देव खबर नहीं कुमरनी, पंचम दिन छे आज ॥ नेट थ निष्ट इंहां किस्युं, दीसे छे नर राज ॥ २ ॥ पुत्र रतन डुर्लभ हुवे,हार तणी शी वात ॥ शैल अलंबाथी पडी, करशुं ते डुःख घात ॥ ३ ॥ अविनय जे कीधा हुवे, ते खमजो नरनाथ ॥ संदेशा तुम राणीयें, इंम दीधा मुज हाथ ॥ ४ ॥ समयोचित चित्तमां धरी, करो आ प हित जाणी ॥ इंम सुणी नरपति तेहने, पभणे उ त्तर वाणी ॥ ५ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ झुंबखडानी देशी ॥

सुत वचनें इंम नांखजो रे, राणी समीपें जाय ॥ स

लूणी गोरडी ॥ मुजने पण ताहरी परें रे, ए दुःख ख मीउं न जाय ॥ स० ॥ १ ॥ खबर करेवा मोकल्या रे, दिशिदिशि सेवक साथ ॥ स० ॥ ते आव्याथी जाणशुं रे, वात तणो परमार्थ ॥ स० ॥ २ ॥ पामीशुं नहीं सर्वथा रे, कुमर तणी जो सुद्धि ॥ स० ॥ तो तुज गति मुजने हजो रे, धारीमें एहवी बुद्धि ॥ स० ॥ ३ ॥ उंट कम्मण किण वेसशे रे, तेल जूउं तेल धार ॥ स० ॥ कुंमल वसन कुमारनां रे, आव्यां सहसाकार ॥ स० ॥ ४ ॥ किम रहेशे ठानो हवे रे, लाधो पग संचार ॥ स० ॥ पुरुष अपूर्वक दाखशे रे, तेहने ए निरधार ॥ स० ॥ ५ ॥ सहि नाणी राणी नणी रे, आपीने कहे जो एम ॥ स० ॥ जिम ए अजाण्यां आवियां रे, सुत पण आवशे तेम ॥ स० ॥ ६ ॥ पुरुषने धीज करावशुं रे, जेहथी लाधां साज ॥ स० ॥ मलशे नंदन जीवतो रे, करशे जो महाराज ॥ स० ॥ ७ ॥ मद्दुलणी आवी महोलमां रे, सकल सुणी अवदात ॥ स० ॥ कुंमल वसन समर्पिनें रे, सुपरें सुणावी वात ॥ स० ॥ ८ ॥ विस्मित मन राणी हुई रे, पूछे वस्तु निदान ॥ स० ॥ मद्दुलणी आगम पुरुषथी रे, नांखे तस प टमान ॥ स० ॥ ९ ॥ हर्ष शोकाकुल कामिनी रे,

कुलणी आगें वदंत ॥ स० ॥ मुज सुत वल्लन आवि
यो रे, कहेवा सुधि कुण खंत ॥ स० ॥ १० ॥ अथवा
कोईक वैरीयें रे, कुमर हण्यो छल खेल ॥ स० ॥ कुंन
ल वसन लीयां तिकें रे, ते आव्यां इणि वेल ॥ स०
॥ ११ ॥ ते माटे निरखुं हवे रे, करतो धीज विशु
ऽ ॥ स० ॥ इम कही यक्षगृहें गई रे, परिकर सार्थे
सुऽ ॥ स० ॥ १२ ॥ नृप पहेलो तिहां आवियो
रे, वींटयो जणने घाट ॥ स० ॥ आव्या तव विषध
र ग्रही रे, गारुडी जोतां वाट ॥ स० ॥ १३ ॥ नृप
तिनें कहे गारुडी रे, देव अलंवा हेव ॥ स० ॥ वि
वर अनेक निहालतां रे, लाधो फणिधर नेव ॥ स०
॥ १४ ॥ फूंकारे तरु बालतो रे, कालो काजल वान
॥ स० ॥ मंत्रप्रयोगें कुंनमां रे, घाल्यो आणी निदा
न ॥ स० ॥ १५ ॥ यक्ष धनंजय आगलें रे, मूकावे
नर कुंन ॥ स० ॥ नर न्हवरावी आणीयो रे, सुनटें
करी संरंन ॥ स० ॥ १६ ॥ रूप निहालो तेहनुं रे,
कहे राणी सुरलोक ॥ स० ॥ एहवा गुण इम रूपवी
रे, विधि रचना हुई फोक ॥ स० ॥ १७ ॥ चंद अंगारा
जो खरे रे, पावक जल विश्राम ॥ स० ॥ दाह अमृ
तथी जो हुवे रे, तो एहथी ए काम ॥ स० ॥ १८ ॥

दिव्य कठिन ए एहनें रे, वेतो मन न वहंत ॥ स० ॥ दोष नहिं नृपति जणे रे, गुणही एम जहंत ॥स०॥ ॥१९॥ समसूधो वानी ग्रहे रे, वाधे सुजश अताग ॥स०॥ जात्य सुवर्ण हुताशनें रे, ताप्यो ले गुण नाग ॥ स० ॥ २० ॥ नररूपा विनता तिहां रे, जपती मन नव कार ॥ स० ॥ श्लोकारथ निरधारती रे, कपाडे घट वार ॥ स० ॥ २१ ॥ निर्जय करकमलें ग्रह्यो रे, विषधर अति रोषाल ॥ स० ॥ लोक लह्यो अचरिज नवो रे, निरखी निरुपम ख्याल ॥ स० ॥ २२ ॥ नाग हूउ निर्विष मुखो रे, रह्यो तस वदन निहाल ॥स०॥ नेह निबिड रस पूरीयो रे, संबंधें ततकाल ॥स०॥ २३॥ साचो साचो ईम कहे रे, पाडे नर करताल ॥ स० ॥ त्रीजे खंडें ए कही रे, कांतें त्रीजी ढाल ॥ स० ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ केलि करंतो करतलें, काढें मुखथी हार ॥ ते मलया कंठें ठवे, मुखें ग्रही फणिधार ॥ १ ॥ ते निरखी विस्मित हुउ, नृप प्रमुख पुर लोक ॥ हार पिछाणी ईम कहे, करता नयणें टोक ॥ २ ॥ लखमी पुंज किहांथकी, आव्यो एह अचिंत ॥ विण वादल वरसात ज्युं, करे अचंज अनंत ॥ ३ ॥ नाल तिल

क नरनो चढी, चाटे जव अहिराव ॥ दिव्यरूप तरु
णी हुई, तव ते मूल स्वनाव ॥ ४ ॥ विस्तारी फणि
मंमली, रह्यो उपर धरी छत्र ॥ जोतां जण अद्वैत र
स, लहे चित्र सुपवित्र ॥ ५ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ माली केरे बागमां,
दो नारंग पके रे लो ॥ ए देशी ॥

॥ घर घरतो नरराजीयो, नणो एहवी वाचा लो ॥अहो न०॥ देखी तिहां अचरिज मोटोरे लो ॥ विण विगतें में मूरखें, काम कीधां काचां लो ॥अ०॥देखी० ॥१॥ पुरजण देवी वारता, अनरथ उगाडयो लो॥अ०॥ नरनिंदे सूतो इहां, मृगराज जगाडयो लो ॥अ०॥दे० ॥ २ ॥ नहिं सामान्य भुजंग ए, कोइ देव सरूपी लो ॥अ०॥ निरखत रचना एहनी, रही मनडे खूंपी लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ ३ ॥ शक्ति सहित ए बे जणां, ढां की निज वाना लो ॥ अ० ॥ पुरमां कार्य उद्देशथी, आव्यां कोई छानां लो ॥अ०॥दे०॥४॥ परमारथ लहे तो नथी, आराधी बेहुनें लो ॥ अ० ॥ जगतें सूधां रीजवी, पूछु गति एहुनें लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ ५ ॥ इम कहेतो भूप उखेवतो, कुंकुमांजल छांटे लो ॥ अ० ॥ फणीधर मूको सुंदरी, कही इम मुख जोवे

लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ ६ ॥ अविनय मुज पन्नग प्रभु, कीधो ते खमजो लो ॥ अ० ॥ नक्त वश होय देवता, इंम जाणी समजो लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ ७ ॥ निसुणी नृपति वीनति, मलया अहि मूक्यो लो ॥अ०॥ नृप पयपात्र धर्युं तिहां, पीवा जइ ढूक्यो लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ ८ ॥ संतोष्यो पयपानथी, नरपति आदेशें लो ॥ अ० ॥ गारुडीयें पाछो ग्रही, मूक्यो गिरि देशें लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ ए ॥ नृपति पूछे नारीनें, जोतां जण पासें लो ॥अ०॥ नरथी नारी किम हूई, एह कौतुक नासे लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ १० ॥ कुंण छे किम आवी इहां, केहनी तुं बेटी लो ॥ अ० ॥ रहस्य कहो सवि वित्तथी, अंतर पट मेटी लो ॥अ० ॥ दे० ॥ ११ ॥ मलया एहवुं चिंतवे, मूल रूप ए उलटयुं लो ॥ अ० ॥ नाल अमृतथी मांजतां, पहेलुं पण पलटयुं लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ १२ ॥ रूप ए विष हर चाटतां, कहो किम बदलाणुं लो ॥ अ० ॥ हार लह्यो पीयु करतणो, अचरिज इहां जाणुं लो ॥अ०॥ ॥दे०॥१३॥ कारण ए मुज पीउनां, विण कारण सीधां लो ॥ अ० ॥ कारणें नाग थई तिणें, कारज शुं कीधां लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ १४ ॥ समजण मुज पडती नथी

स्यो उत्तर आपुं लो ॥ अ० ॥ जेतुं इहां कहेवुं घटे,
तेतुं थिर थापुं लो ॥ अ० ॥ के० ॥ १५ ॥ लाजें मुख
नीचुं करी, कहे मलया बाली लो ॥ अ० ॥ दक्षिण
दिशि चंद्रावती, वीरधवलें पाली लो ॥ अ० ॥ के० ॥ १६ ॥
हुं ते नृपनी नंदनी, जीवितथी प्यारी लो ॥ अ० ॥ नामें
मलया सुंदरी, चंपक उरधारी लो ॥ अ० ॥ के० ॥
॥ १७ ॥ नृप कहे जुगतुं नहीं, ए वचन विरोधें लो
॥ अ० ॥ प्रथम कह्युं तुं तेहथी, मलतुं नहीं लेखे लो
॥ अ० ॥ के० ॥ १८ ॥ कारण वली ते पूछने, पुत्री
जो काई लो ॥ अ० ॥ केताइक जण आवशे, तो पुठें
थाई लो ॥ अ० ॥ के० ॥ १९ ॥ हार सहित एहने
हवे, देवी कुल पासें लो ॥ अ० ॥ कुलगानानुं राख
जो, देव आवासें लो ॥ अ० ॥ के० ॥ २० ॥ राणी
मनमाने तिहां, राखे मन खांते लो ॥ अ० ॥ चोथी
ढाल खंडनी, ज्ञान कांती भांते लो ॥ अ० ॥ के० ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नृपति कहे सुण कामिनी, देव दियमें चैन ॥
हार रयण कुलनायिकें, जाणी आणि नहेन ॥ १ ॥
कीधो मलयत संगमें, आनंदित घन नेन ॥ सुत
हरख करे मात्रुत्री, पूछे कीधे तेन ॥ २ ॥ मलया सु

णी राणी हूई, दुःख नारें दिलगीर ॥ प्रीतमने इंम वि नवे, नयण जरंती नीर ॥ ६ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ सासू कागा वे गढुं पी साय, आंपण जास्यां हे मालवे, सोइ नारी जणे ॥ ए देशी ॥

॥ पीया सेग हे कांइ निचिंत, कान ढालीनें हे इं णिपरें ॥ सुत नायो घरें ॥ पीया विरहो हे अति खट कंत, सुतनो हे हीयडा नीतरें ॥ सु० ॥ १ ॥ पीया तुजथी हे रह्युं न जाय, लेवा दीहा किम नीगमुं ॥ सु० ॥ पीया रयणि हे वैरणी थाय, नींद गई थूनी नमुं ॥ सु० ॥ २ ॥ पीया वालुं हे नवलख हार, पु त्र रतन जेहयी गम्यो ॥ सु० ॥ पीया लेई हे रतन उदार, पाहाण कारज आगम्यो ॥ सु०॥ ३ ॥ पीया ढोल्युं हे सरस पीयूष, क्षार उदकने कारणें ॥सु०॥ पीया कापी हे सुरतरु रुंख, वाव्यो धंतुरो वारणे ॥ सु० ॥ ४ ॥ पीया जीवुं हे हुं हवे केम, पुत्र रहित दोजागिणी ॥ सु० ॥ पीया गिरि हे फणावीश जेम, निरूत होइ जीवित जणी ॥ सु० ॥ ५ ॥ प्रीया वारी हे में समजाय, पहेलां पण तुजनें घणुं ॥ सु० ॥ प्री या लेहेशुं हे पुण्य पसाय, हार घरें सुत आपणुं

सु० ॥ ६ ॥ प्रीया वचनें हे ईम आसास, पुत्र विगो
ही हे गोरीने ॥ सु० ॥ प्रीया आव्यो हे निज आवा
स, मन वींध्युं दुःख कोरीनें ॥ सु० ॥ ७ ॥ प्रीया पो
होता हे निज निज थान, लोक लस्यां अचरिज चिंते
॥ सु० ॥ प्रीया साले हे साल समान, नृपराणीने वि
रह ते ॥ सु० ॥ ८ ॥ प्रीया वोल्यो हे तपतां दीस, रा
ति विहाणी दोहिले ॥ सु० ॥ प्रीया जाणे हे दुःख
जगदीश, के जस वीते ते कले ॥ सु० ॥ ए ॥ प्रीया
आया हे जन परभात, कुमर खबर पाम्या नहीं ॥
सु० ॥ प्रीया चित्तमां हे अति अकुलाय, दंपती चा
ल्यां गिरि वही ॥ सु० ॥ १० ॥ प्रीया पडवा हे घाली
हांम, नृप राणी ऊंचां थसे ॥ सु० ॥ प्रीया सासें हे
नरीयां ताम, पुरुष केइक आव्या तिसें ॥ सु० ॥
॥ ११ ॥ प्रीया नृपनें हे ते कहे एम, गोला तट वड
मालियें ॥ सुत पायो वडें ॥ प्रीया टांग्यो हे वागु
ली जेम, महवल दीगे गोवालीये ॥ (कनालिये)
सु० ॥ १२ ॥ प्रीया वांध्यो हे जे लोनसार, चोर अ
धो मुख जिए वडे ॥ सु० ॥ प्रीया नीठ्यो हे माल
मजार, तुम नंदन तिहां तडफडे ॥ सु० ॥ १३ ॥ प्री
या जाण्यो हे नहीं परमार्थ, दीठुं तेहवुं भांखीयुं ॥

सु० ॥ प्रीया सुणीने हे इंम नरनाथ, वचन अमृत करी चाखीउं ॥ सु० ॥ १४ ॥ प्रीया पाम्यो हे विस्मय हर्षे, समकालें ते राजवी ॥ सु० ॥ प्रीया वाध्यो हे मन उत्कर्ष, मरवा इछा नाजवी ॥ सु० ॥ १५ ॥ प्रीया सुतनी हे दरिसण चाहि, चाल्यो नृप वड सन्मुखें ॥ सु० ॥ प्रीया साथें हे मलया उमाह, चाली प्रीतमनी रुखें ॥ सु० ॥ १६ ॥ प्रीया आया हे वडतरु पास, नृपराणी मलया मली ॥ सु० ॥ प्रीया दीठो हे चंचो आकाश, टांग्यो न शके सलसली ॥ सु० ॥ १७ ॥ प्रीया करशे हे सुत संभाल, नवली विधि नृप आगमी ॥ सु० ॥ प्रीया त्रीजा हे खंमनी ढाल, कांतें कही ए पांचमी ॥ सु० ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नयणें आंसुं नाखतो, पूछे सुतनें नृप ॥ सेवन निपट कृतांतनो, ए तुज कवण सरूप ॥ १ ॥ लोन सार टांग्यो वडे, तुं पण तिम तस कूल ॥ देखीने तुज दुर्दशा, गयो सुद्धि हुं भूल ॥ २ ॥ धिग् मुज बल जीवित कला, प्रभुता थई अकाज ॥ जेह छते तें अनुनवी, दोहिलिम दुःख समाज ॥३॥ इंम कही तेड्यो वर्द्धकी, छेदावी वड माल ॥ यतनें सुतने जीवतो,

जी ॥ नं० ॥ एकाकी किम होवेजी ॥ नं० ॥ एह सा
हमुं शुं जोवेजी ॥ नं० ॥ घन नीषम वननें शमशानें,
वेगी तुं किण काम ॥मैं०॥१०॥ तव ते वदन उघाडी
जी ॥ नं० ॥ जोती अवली आडीजी ॥ नं० ॥ मूकी
लाज कमाडीजी ॥ नं० ॥ बोली इंम पट काडीजी ॥
नं० ॥ शुं दुःख नाखुं हुं तुज आगें, नाग्य रहितमां
लीह ॥ त० ॥ ११ ॥ बांध्यो जे वड मालेंजी ॥नं०॥
शैल अलंब विचालेंजी ॥ नं० ॥ रहेतो कंदर नालेंजी
॥ नं० ॥ हरतो पुरधन आलेंजी ॥नं०॥ चोर पुरातन
पाप दशाथी, ए आव्यो नृप हाथ ॥बां०॥१२॥ लोन
सार इंणे नासेंजी ॥नं०॥ वीतक त्रीजे यासेंजी ॥नं०॥
संध्यायें विण मासेंजी ॥ नं० ॥ बांधी हणीउ तामेंजी
॥ नं० ॥ मुज प्रीतम ठे हुं धण एहनी, रोवुं हुं दुःख
तेण ॥ लो०॥ १३ ॥ नेह नवल मुज खटकेजी ॥नं०॥
चिंता चित्तमां चटकेजी ॥नं०॥ विरह अगनि जिम लट
केजी ॥ नं० ॥ प्राण कंठमां अटकेजी ॥ नं०॥ आज
प्रनातें कर मेलावो, हुउ हतो एह साथ ॥ ने० ॥
॥१४॥ करवा चोरी निकस्योजी ॥ नं० ॥ गयो नेहनो
तरश्योजी ॥नं०॥ मुज संगें नवि विलस्योजी ॥नं०॥
हवे विरहो मुज विकस्योजी ॥ नं० ॥ चंदन लिंपी

आलिंगन शुं छे, जो आपे तुज शुद्धि ॥ क०॥ १५॥
में नितुणो तसु वाणीजी ॥ नं० ॥ मनमां करुणा आ
णीजी ॥ नं० ॥ कहुं आवो गुण खाणीजी ॥
नं० ॥ भुज खांधे चढी प्राणीजी ॥ नं० ॥ जिम जा
णे तिम कर तुं एहनें, मेल्यो में ए योग ॥ मे०॥१६॥
रणीथी ते कूदीजी ॥ नं० ॥ चरण देई मुख गूं
…जो ॥ नं० ॥ लेपे शवनी बूंदीजी ॥ नं० ॥ आलि
गे दृग मूंदीजी ॥ नं० ॥ कंठालिंगन करतां मृतकें, ली
धी नासा तोहि ॥ ध० ॥ १७ ॥ घणुं हुती अनुरागी
जी ॥ नं० ॥ पण नाकें कर दागीजी ॥ नं० ॥ मरती
पाठी लागीजी ॥ नं० ॥ गाढी रोवा लागीजी ॥ नं०
॥ ताणे त्रूटी रह्यो शवमुखमां, नाक तणा अग्रभाग
॥ ध० ॥ १८ ॥ जोते रामत खासीजी ॥ नं० ॥ आ
ली मुखें हांसीजी ॥ नं० ॥ तव नव कोप प्रकाशीजी
नं० ॥ बोल्यो मृतक वकाशीजी ॥ नं० ॥ कांइ ह
तुं इणे वड भुज ज्यौं, बंधाइश निशि काल ॥जो०
१९ ॥ वचन सुणी छुं नडक्योजी ॥ नं० ॥ शोक
हा नर खडक्योजी ॥ नं० ॥ चिंताथी चित्त तडक्यो
॥ नं० ॥ हृदयथकी नय धडक्योजी ॥ नं० ॥ दै
योगें शव ईम बोल्यो, दैदै करशुं केम ॥व०॥२०

११

नंकटो फरती तितरेंजी ॥ नं० ॥ मुज खांधाथी उत
रेंजी ॥ नं० ॥ कहेवा लागी ईतरेंजी ॥नं०॥ किण न
गरें तुं विचरेजी ॥ नं० ॥ नाम थानादिक में ते आ
गें, नांख्युं सघलुं साच ॥ न० ॥ २१ ॥ मुज ऊपर
विश्वासीजी ॥ नं० ॥ बोली ते उल्लासीजी ॥ नं० ॥
सुणो कुमर सुविलासीजी ॥ नं० ॥ मुज नासा रूज
सीजी ॥ नं० ॥ तव हुं पीउनुं द्रव्य गुफामां, देख
डीश तुम आय ॥ सु० ॥ २२ ॥ ईम कही ते घर
चालीजी ॥ नं० ॥ हुं चढीउ वड मालीजी ॥ नं० ॥
छोडयो चोर संभालीजी ॥ नं० ॥ नाख्यो नीचो ज
लीजी ॥ नं० ॥ उतरि जोउं तो तिण साखें, बांध्यो
तिमहीज वीर ॥ ई० ॥ २३ ॥ में जाण्यो ततकाल
जी ॥ नं० ॥ साधक देवी चालाजी ॥ नं० ॥ छोडे
मन ढकचालाजी ॥ नं० ॥ फिरि चढीयो वड माल
जी ॥ नं० ॥ बंधन छोडी केश ग्रहीनें, उतरियो व
ली देव ॥ में० ॥ २४ ॥ खंध चढावी लीधुंजी ॥ नं
॥ अद्भुत शब परसीधुंजी ॥ नं० ॥ जई योगीनें दी
जी ॥ नं० ॥ ईम पर कारज कीधुंजी ॥ नं०॥ त्रीजे
खंडें ढाल ए छठी, कांतें कही रस रेल ॥खं०॥२५

॥ दोहा ॥

॥ चरित्र सुणी चित्तमां चम्क्या, नृपादिक जन नूर ॥ अद्भुत नय आनंद दुःख, हास्य सोग आपूर ॥ १ ॥ वली विगत मह्बल कहे, मृतक तेह नवराइ ॥ चंदन रस चर्चित करी, थाप्युं मंम्रल वाइ ॥ २ ॥ अग्निकुंन्द दीवा चिहुं, राख्यो साधक पाल ॥ पञ्चालन वेसी जप्यो, मंत्र तिणें ततकाल ॥ ३ ॥ मृतक तुरत न ऊबल्ले, पडे न पावक कुंन्द ॥ खिन्न थयो जप ध्यानथी, साधक चिंता मंद ॥ ४ ॥ तेहवे शब गय णांगणें, उडयो करतो हास ॥ अवलंब्यो तिमहिज जई, वडशाखा अवकाश ॥ ५ ॥ चूको कां एक ध्यानमां, तेणें न सीधो मंत्र ॥ साधेशुं फिरि आवती, रातें करीशुं तंत्र ॥ ६ ॥ तुज्झ वशें साधन तणी, थाशें वहेली सिद्ध ॥ रहो सुनग योगी कहे, उपगरवानी बुद्ध ॥ ७ ॥ वचन प्रमाणी हुं रह्यो, थई उपसाधक पाल ॥ योगी मरतो मुजनें, बोल्यो एम प्रकाश ॥ ८ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ न्हानो नाह्लो रे ॥ ए देशी ॥

॥ उपसाधक जो तुं थयो रे, तो सवि थाशे काम ॥ नंदन रायना रे ॥ पण चोल्रो मुज चित्तमां रे, ए हवो एक इंण ठाम ॥ नं० ॥ १ ॥ मुज संगें जो

शे रे, तुजने नृप जण वृंद ॥ नं० ॥ तो जई कहे शे नोलव्यो रे, अवधूतें तुम नंद ॥ नं० ॥ २ ॥ प्राण पियाणुं माहरे रे, होशे अचिंत्युं आय ॥ नं० ॥ तेमाटे तुम फेरवुं रे, कहोतो रूप बनाय ॥ नं०॥३॥ जाशो मां मुज पासथी रे, लखमीपुंज अनेथ ॥ नं० ॥ इंम धारी मुखमां ठवी रे,कथन ग्रह्युं में तेथ ॥ नं० ॥ ४ ॥ ताममूली घसी योगीयें रे, मंत्री तिलक मुज कीध ॥ नं० ॥ तास प्रनावें हुं थयो रे,पन्नग विष आवीध ॥ नं० ॥ ५ ॥ मूकी मुज गिरि कंदरें रे, आप गयो कोइ काम ॥नं०॥ पवन नखी सुखमां रहुं रे, ठानो बिलने ठाम ॥ नं० ॥ ६ ॥ गिरिथल जोतां गारुडी रे, आव्या मुजनें हेर ॥ नं० ॥ मंत्र प्रयोगें वश करी रे, घटमां घाल्यो घेर ॥ नं० ॥ ७ ॥ यक्ष तुं वनमां मूकीयो रे, कुंन करावी धीज ॥ नं० ॥ तुम आदेशों जे नरें रे, काढयो हुं विण खीज ॥ नं० ॥ ८ ॥ तेहने तुरतज उलखी रे, काढी मुखथी हार ॥ नं० ॥ कंठें धस्यो तेहथी हुवो रे, ते नारी अवतार ॥ नं०॥ ॥ ए ॥ आराधी गिरि कंदरें रे, मूक्यो पाठो नाग ॥ ॥ नं० ॥ इत्यादिक वीती कथा रे, थइ तुम प्रत्यक्ष माग ॥ नं० ॥ १० ॥ नूप कहे ते किम हूठ रे, जो

तो नारी साग ॥ नं० ॥ मदवन चाखे तातनें रे, शेष कथा एकांग ॥ नं० ॥ ११ ॥ जातो नारी पालनें रे, गुटिका तिलक रचेय ॥ नं० ॥ नारी नर रूपें करी रे, सुन वस्त्रादिक देय ॥ नं० ॥ १२ ॥ ते फणिधर हुं कर ग्रह्यो रे, बीज समय इंणे वाल ॥ नं० ॥ नाल तिलक चाटयुं चढी रे, में एहवुं ततकाल ॥ नं० ॥ १३॥ नर फिटी नारी हुइ रे, ए परमारथ वात ॥ नं० ॥ नृप प्रमुख सहु रोजीया रे, सुणि अद्भुत अवदात ॥ ॥ नं० ॥ १४ ॥ नृप कहे में आचर्युं रे, अणघटतुं प्रतिकूल ॥ नं० ॥ लोक कहे न मिटे लिख्युं रे, जे सरजित विधि मूल ॥ नं० ॥ १५ ॥ राणी मलयानें कहे रे, वेसारी उत्संग ॥नं०॥ कां न प्रकाश्यो आतमा रे, वत्से तें दुःख संग ॥ नं० ॥ १६ ॥ अथवा तें जा एयुं कर्युं रे, वात न खाती पाड ॥ नं०॥ विण अवसर जे नांखियें रे, न चढे तेह सिराड ॥ नं०॥ १७ ॥ दुःखमां मौन धरी रही रे,नांखि न एका टोक ॥नं०॥ ए विरतंत कही जतो रे, मानत नहिं को लोक ॥ ॥ नं० ॥१८ ॥ रूडुं देवें कर्युं हशे रे, पाम्यां दुःखनो पार ॥ नं० ॥ अम गुनहो खमजो हवे रे, सतियां कुल शणगार ॥ नं० ॥ १९ ॥ इंम कहेती नृपनी ि

रे, जे जीवितनी आश ॥ नं० ॥ आनूषण मणि ते हसी रे, आपे मलया हाथ ॥ नं० ॥ २० ॥ त्रीजे खं में सातमी रे, ए थई अनुपम ढाल ॥नं०॥ कांति कहे सुणतां सदा रे, लहियें मंगल माल ॥ नं० ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तात कहे विषधर पणे, रहेतां शैल अलंब ॥ कारण शुं शुं अनुनव्यां, कहीयें ते अविलंब ॥ १ ॥ पवन नखत गिरि कंदरें, निर्गत हुउ दिनेश ॥ रजनी समय साधक धसी, आव्यो मुज उद्देश ॥ २ ॥ दिनकर तरुना डुग्धथी, घस्युं नाल मुज तेण ॥ देखी मूल सरूप हग, बोलाव्यो नेहेण ॥ ३ ॥ आवो कुमर कला निला, करीयें मंत्र विधान ॥ इम कही पावक कुंम तट, लाव्यो दे सनमान ॥ ४ ॥ साधक वचनें व डथकी, आणी दीउं शब फेरि ॥ बेगो जपवा तेह तव, हुं पण बेगो घेरि ॥ ५ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ हरिहां सुज्ञानी साहेब मेरा वे ॥ ए देशी ॥

॥ जिम जिम जाप जपे ते योगी, आहूति दे अवसान॥ तिम तिम शब ऊपडी पडे, तडफडतुं रोष निदान ॥ ह वीली योगिणी आई वे, अरिहां रीस नराई वे ॥१॥

॥ ह० ॥ आधी रातिमां गगन विचालें, वागां मम्मरू
म्हाक ॥ वीर बावन आगें चलें, पाडंता पोठी ह्लाक
॥ ह० ॥ २ ॥ अम्बरकी बहुनट वतरती, शक्ति क
हे रे धीठ ॥ मृतक अशुद्ध आणी किहां तूं, तेडी कां
नृपीठ ॥ ह०॥ ३ ॥ ईम कहेती योगीनें साही,नाखे
अगनिनें कुंम ॥ नागपाशने बंधने भुज, बे कर बांध्या
प्रचंम ॥ ह० ॥ ४ ॥ सुंदर रूप कुमर तेमाटें, मारी
ले कुण पाप ॥ ईम कहेती नन मारगें, बिहुं पग
ग्रही कढो आप ॥ ह० ॥ ५ ॥ वे शाखा विच हुं प
गं नीडी, वंचा पग शिर हेव ॥ टांगी भुजनें ए वडें,
उडी गई सेती कुत्तेव ॥ ह० ॥ ६ ॥ शव ते तिमहिज
वडी तिहांथी, वलगुं गुंमाले आय ॥ पुरलोकें जोयुं
वली, तिहां पाछी कोट फिराय ॥ ह० ॥ ७ ॥ लोक
कहे दीसे छे वाधुं तो, किम अशुचि ए कीध॥ नृप कहे
सुखमां एहनें, नासा पल होशे शुद्ध ॥ ह० ॥ ८ ॥
लोक कहे ईम कहिजतां राजा, जोवरावे जण पास ॥
दीठो वलगी दांतमां, नासा तिण आयो विसास
॥ ह० ॥ ए॥ एमें साधकनें न जणाव्युं, कुमर करे ईं
म खेद ॥ नृप कहे नवितव्यनां, मेटीजें केम नमेद
॥ ह०॥ १०॥ नृप कहे केम करथी छूटया, बांध्या वि-

षधर पाश ॥ सुत कहे तेहनुं पुंछडुं, मुज मुखमां आ
व्युं उकास ॥ ह० ॥ ११ ॥ क्रोध जरी चाव्युं में तेहथी,
पीडयो पन्नग जोर ॥ नर्म थई हेठो पडयो, न चढयुं विष
मंत्रथी घोर ॥ ह० ॥ १२ ॥ दोय पहोर रयणीना काढया,
दुःखमां में विललात ॥ संकट सहु टलियां हवे, मलतां
क्रम योगें तात ॥ ह० ॥ १३ ॥ वचन कह्युं सुरशक्ति
मृतकें, ते मलियुं प्रत्यक्ष ॥ मुज विरतंत कह्यो सवे, तु
म आगल पूरी पक्ष ॥ ह० ॥ १४ ॥ लोक प्रशंसे शिर
धुणंतां, अहो हो अतुल बल वीर ॥ थोडा काल मांहें
घणी, जल सांसयो पीड शरीर ॥ ह० ॥ १५ ॥ नावे वचन
पथ मन नवि मावे, कहेतां पण जे वात ॥ ते संकट
जलराशिनो, तारु एक तुंहिज तात ॥ ह० ॥ १६ ॥ अ
हो साहस निर्जय पण माया, बुद्धि महोद्यम खास ॥
उपगारक करुणापणुं, दृढता मति पुण्य प्रकाश ॥ ह०
॥ १७ ॥ नारि लही लक्षण लाखीणी, मलियो अ
मनें वेग ॥ लोक अनेक करे तिहां, इम वर्णन गुणमति
नेग ॥ ह० ॥ १८ ॥ नृप कहे नंदन मंमल ते, देखाडो
ठे क्यांहिं ॥ कुमर नृपतिं जण विंटीउ, देखाडे जईने
त्यांहिं ॥ ह० ॥ १९ ॥ हरखें लोक मल्या उत्कर्षे, नि
रखे पावक कुंम ॥ सोवन पुरिसो तिहां तिणें, दीठो

जलहलतो देह ॥ ह० ॥ २० ॥ जेयां पण निशिमां हैं वाघे,शीश विना जस अंग ॥ पुरसो तेह कढावीने, नंभार घस्यो नृप चंग ॥ ह० ॥ २१ ॥ सकुटुंबो निज मंदिर आव्यो, रंग नस्यो नर नेत ॥ दस दिन रंग व धामणां, वरताव्यां मंगल हेत ॥ ह० ॥ २२ ॥ त्रीजा खंमनी आठमी ढालें, नांग्या विरह वियोग ॥ कांति विजय कहे पुण्यथी,लहियें मनवंछित नोग॥ह०॥२३॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे नगर वन शोधतो, मलयकेतु मतिवंत ॥ पुहवी गण नरिंदनें, वेगें आवी मिलंत ॥ १ ॥ वात प्रका शी विगतथी, वर कन्यानी एण ॥ नगिनीपति नगिनी बिहुं,मेलवियां नृपतेण ॥ २ ॥ कुशल प्रश्न पूर्वक सहु, हरखित वेठां गण ॥ वरकन्यायें आपणुं, दाख्युं चरि त्र वखाण ॥ ३ ॥ मलयकेतु शिर धूणतो, पामे मन अचरिक ॥ नवली वातें केहनुं, चित्त न चित्र नरिक ॥ ४ ॥ गोष्टि महारस सागरें, करता दर्पण केलि ॥ नूख तृषा निद्रा प्रमुख, न गिणे रसनें खेलि ॥ ५ ॥ मऊण नोजन वस्त्रथी, सत्कार्यो नृपनंद ॥ वांध्यो वेहेंनी नेहनो, रहे तिहां सछंद ॥ ६ ॥ केताईक दि

न त्यां रही, मागी नृप आदेश ॥ जननी जनक वधाव
वा, करे प्रयाणुं देश ॥ ७ ॥
॥ढाल नवमी॥ घरे आवोजी आंबो मोरीउ ॥ए देशी॥
॥ मलय कुमरने नृप कहे, संप्रेडण मन न वहंत॥
गुणवंताजी कुमर कलानिला ॥ तोपण कहेवा व
धामणी, पल धारो पुरि मंतिवंत ॥ गु०॥ १ ॥ प्रीति
लता सिंची रसें, पहेलांथी वधारी जेह ॥ सफल हूई
तुम आवतां, पोता वट राखी अछेह ॥ गु० ॥ २ ॥
वीरधवलनें मुज वीनति, कहेजो करी कोडि प्रणाम
॥ मुज ऊपर हित आदरी, गणजो लघु दास समान
॥ गु० ॥ ३ ॥ महबलनें मलया प्रत्यें, पोहोतो आ
बण कांज ॥ देखी दंपती ऊरियां, बोलावे वचनें स
लाज ॥ गु० ॥ ४ ॥ महबल कहे मुज ससुरनें, कहे
जो जई कोडि सलाम ॥ चोर थयो हुं रावलो, खम
जो ते गुनह प्रकाम ॥ गु० ॥ ५ ॥ विण शीखें तुम
नंदनी, लेई आव्यो परनो अधीन ॥ उपजाव्युं दुःख
आकरुं,ते करज्यो मां ई वात विलीन ॥गु०॥ ६ ॥ मल
य लणी मलया कहे, बांधव मुज वात नितार ॥ वी
नवशो माय तातनें, मुज आगमनादि प्रकार ॥ गु०॥
॥ ७ ॥ चिंता न करशो चित्तमां, मुज सुख शाता

आदि ॥ चतुर तुमें पण जाणतां, सावधान रहेजो रा
दि ॥ गु० ॥ ७ ॥ वचन सहुना चित धरी, गजगज
तो थाय विदाय ॥ रुपपुर लगें आडंबरें, महीपति
पोहोंचावा जाय ॥ गु० ॥ ८ ॥ केटले दिन चंद्रावती, पो
होंच्यो कहे सकल वृतांत ॥ खबर लही माता पिता,
पामे तिहां हर्ष अनंत ॥ गु० ॥ १० ॥ महबल मलया
संगमें, विलसंते निवहे काल ॥ एक समय वेगा वि
न्हे, उंचा मंदिरनें जाल ॥ गु० ॥ ११ ॥ नाक विहु
णी नायिका, आवी एक मंदिर बार ॥ महबल देखी
ने कहे, एक पश्यतहरनी नारि ॥ गु० ॥ १२ ॥ थिर
मीटें तव उलखी, प्रमदायें ते उपमात ॥ प्रीतम क
नकवती इहां, दीसे छे आवी कुजात ॥ गु० ॥ १३ ॥
गुह्य न कहेशो लाजती, जो उलखशे मुज देख ॥ तें
हथी हुं पडदें रहुं, पूछो अवदात विशेष ॥ गु० ॥ १४ ॥
ईम कहेती जुवणंतरें, वेगी जई सुणवा विगत्त ॥ क
नकवती आवी करे, नृप नंदनने प्रणिपत्त ॥ गु० ॥ १५ ॥
आदर दे पूछया थकी, कहेशे इहां आप चरित्त ॥ नवमी
त्रीजा खंमनी, कांतें कही ढाल पवित्त ॥ गु० ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पभणे सा चंद्रावती, नगरीपति उद्दाम ॥ १ ॥

वल तस हुं प्रिया,कनकावती इति नाम ॥ १ ॥ मोप
रि कोप्यो महीपति, एक दिवस विण काज ॥ तव हुं
रूठी नीकली, मूकी सकल समाज ॥ २ ॥ मल्यो वि
देशी मुजने, तरुणो एक ठयल्ल ॥ तस संकेत सुरि
गृहें, मली राति हुं हल्ल ॥ ३ ॥ देखाडी नय चोरनो,
वस्त्रादिक मुज लीध ॥ मुक्तावलीनें कंचुकी,आप हथु
तिणें कीध ॥ ४ ॥ शेष जणस साथें मुने, घाली पेटी
मांहिं ॥ कपट करी ते धूरतें, दीठ यंत्र लटकांहिं ॥
॥ ५ ॥ संकेती बीजो तिहां, आव्यो धूरत दोडी ॥
बिहुं उपाडी मंजूषडी, नाखी नदीयें रोडी ॥ ६ ॥ अ
वलंबन विण पवनथी, खाती जोल अछेह ॥ गुहिर
नदी गोला जलें, तरी तरी जेम तेह ॥ ७ ॥ कुमर क
हे किणे कारणें, नाखी तुजनें नीर ॥ अथवा तेहनें
ओलखे, जो उन्ना होय तीर ॥ ८ ॥ तेह कहे कारण
किश्युं, हता अजाण्या धूत ॥ निकारण वैरी श्स्या, गया
करी करतूत ॥९॥ कुमर कहे हो धूरतें,कीधो अनुचित
खेल ॥ शीश धूणंतो आगलें, पूछे कथा उकेल ॥१०॥
॥ ढाल दशमी ॥ वेडले भार घणो छे
राज, वातां केम करो छो ॥ ए देशी ॥
॥ जलपूरें ते तरती पेटी,प्रात समय इहां आवी॥

यक्ष धनंजय नवन समीपें, गोला केरें गवी ॥ १ ॥
साची वात कहो वो राज,जे वीती बे श्रममां ॥ तिहने
र जुठ कहुं नहिं मोहन, मलताना संगममां ॥ सा
चो० ॥ ए आंकणी ॥ लोनसार चोरें जलमांथी, काढी
नार गरिढी ॥ तासुं नाली जोतां मांहे, वस्त्र सहित
हुं दीठी ॥ सा० ॥ २ ॥ शैल अलंघ विषम कंदरमां,
लेई गयो मुज ठाने ॥ इव्य सहित मंदिर पोतानुं, दे
खाड्युं बहुमानें ॥ सा० ॥ ३ ॥ नेहरसें मीजी मुज
नीजी, तस संगें मन मोदें ॥ पोहोर दोय रही तिहां
थी इणे पुर, आव्यो काज विनोदें ॥ सा० ॥ ४ ॥ पा
प दिशाथी नृपें साही, सांजे वडले बांध्यो ॥ पर्वत शि
खर रही में जोतां, मोहन विडंबन सांध्यो ॥ सा० ॥
॥ ५ ॥ राति समय गई पासें रडती, तिहां मली हुं
तुमने ॥ आगल वात सकल जाणो बो, ए वीत्युं बे
अमने ॥ सा० ॥ ६ ॥ आवो इव्य घणुं देखाडुं, ईम
सुणी महाबल कहे ॥ कह्युं तातने तात कुमरस्युं, आ
व्यो त्यां तस पूठें ॥ सा० ॥ ७ ॥ वस्तु हती जे जि
हनी तेहनें, दीधी सर्व संनाली ॥ शेष इव्य लेइ नर
पति नगरें, आव्यो पाछो चाली ॥ सा० ॥ ८ ॥ धन
आपी सत्कारी कनका, आवे कुमर निवासें ॥ लख नि

पुज सहित मलया त्यां, देखी वेंगी पासें ॥सा०॥
चमकी चित्त विचारे ए किम, इहां आवी जीवंती॥
पापकी निकशी किम परणी, ए मुज वैरणी हुंती
॥ सा० ॥ १० ॥ फरके अधर शके नहिं पूठी,
वदन निरखंती ॥ रखे चरित्र मुज चावां पाडे, म
मां ईम बीहंती ॥ सा० ॥ ११ ॥ लखमीपुंज मन
हर म्हारो, लीधो तो जिण धूतें ॥ ए पापणीने
णी दीधो, दीसे तेण कुपूतें ॥ सा० ॥ १२ ॥ जाणु
हीं के लीधो इहुंणे, खेडी नवलो फंदो ॥ हवणां तो
हिज मुज वैरी, कीधो ईम दिल मंदो ॥ सा० ॥१३
कहे मलया माता ठो रूडां,एकाकी किम आव्यां॥ कु
ल न दीसे नाक नणीकां, के किणे कर्मे संताव्यां
॥ सा० ॥ १४ ॥ कुमर नणे पदमिणी मत पूठो,
हेशुं हुं तुम आगें ॥ दिन न खमे कारज ठे बहुलां,
हेतां वेला लागे ॥ सा० ॥ १५ ॥ शीख करी नकटी
आप्यो, शूने मंदिर पासें ॥ मुख मीठी हियडामां
ठी, वासी तिण आवासें ॥ सा० ॥ १६ ॥ प्रति दि
सें मलया उपकंठें, आवे कनका रंगें ॥ थई विश
सिणी विखवासिणी ते, नव नव कथा प्रसंगें ॥सा०
॥ १७ ॥ ठिद्र निहाले मलया केरां, शोक समी नि

दीस ॥ सुख जोगवतां मलया एहवे, धरे गर्भ सुजगीश ॥ सा० ॥१८॥ ऊपजतां मोहोला पीउ देर्जे, पूरे नव नव जातें ॥ प्रसव समय आसन्न हूई तव, दीपे राणी गातें ॥ सा० ॥ १९ ॥ त्रीजे खंमें चावी दशमी, ढाल मल्हारस पूरी ॥ नांखी कांतिविजय बुध नेहें, निरुपम राग सनूरी ॥ सा० ॥ २० ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ इण अवसर महबल प्रत्यें, दीये तात आदेश ॥ वत्स विकट नट साजसुं, करो चढाई वेश ॥ १ ॥ नामें क्रूर सच्यो गढें, पल्लीनायक क्रूर ॥ करे उपद्रव देश मां, ते निर्धाटो दूर ॥ २ ॥ सजा समर्के दक्ष ते, तात वचन परमाण ॥ मलयानें पूछण जणी, गयो भुवन गुणखाण ॥ ३ ॥ चिंताकुल प्रमदा कहे, हुं आवीश पियु साथ ॥ दूर रहीने किम चढुं, विपमविरहनें हाथ ॥ ४ ॥ कुमर कहे अवसर नहिं, रहो करी दृढ चित्त ॥ लानचित्त गुटिका कन्हे, राखो गुण संजुत्त ॥ ५ ॥ जाणे तुं गुण एहना, करजे खरां यतन्न ॥ ते आपी पनणे वली, महबल विरह विखिन्न ॥ ६ ॥ पदमिणी तो पांखे हिये, आवे विरह जरेय ॥ गण्या दिवसमां ते जणी, आवीश कार्य करेय ॥ ७ ॥ तात वचन ~

अवगणुं, तो लागे कुललाज ॥ दीठ अनुज्ञा सुंदरी, जिम साधुं जइ काज ॥ ८ ॥ नयणें आंसू सींचती, नाखे मुख नीसास ॥ प्रीतम वहेला आवजो, बोली एम उदास ॥ए॥ लेइ अनुमति कणे मनें, बांधी तरकस वेग ॥ पाछी मींटें निरखतो, चल्यो जवनथी वेग॥१०॥

॥ ढाल अगीआरमी ॥ अब घर आवो रे रंगसार ढोलणा ॥ ए देशी ॥

॥ कनकवती मुखें सोठी रे धीठी, कपट महा विषवेलि ॥ अहनिशि जोवे रे ठल मलया तणुं ॥ अनुयायी वेसे रमे रे धीठी, वात करे मन मेल ॥ अह नि० ॥ १ ॥ एकलडी जवनें रही रे धीठी, मुज नाग्यें ए नारि ॥ अ० ॥ चिंती इंम ठल केलवी रे धीठी, आवी सदन मजारि ॥ अ० ॥ २ ॥ वेठी मुख करमाठवी रे गोरी, करती मन उदवेग ॥ प्रमदा निहाली रे झरते लोयणां ॥ वेसे पासें आवीनें रे धीठी, पूछे कारण धरी नेग ॥ प्रम० ॥ ३ ॥ अकथकथा कहे मेलवी रे धीठी, रीजावे रति आणि ॥ प्रम० ॥ दिवस गमावे रंगमां रे गोरी, कनकाढुं रसमाणि ॥ नवनव वातें रे करती खेलणां ॥४॥ कहे मलया माता इहां रे गोरी, रातें करो विश्राम ॥ जिम मुज नावे रे मनमां यो

जणां ॥ पयमां लाकर मेलवी रे धीठी, चिंतवती म
न ताम ॥ वचन प्रमाणी रे करे निशि गालणां ॥ ५॥
दिन जिम रजनी नीगमे रे गोरी, आव्यो दिनकर प्रा
त ॥ तव ईम बोली रे करती चालणां ॥ तुज पूठें
एक राक्षसी रे गोरी, लागी रे कम जात ॥ नव नव
नातें रे करती खेलणां ॥ ६ ॥ में दीठी नर रातमां
रे गोरी, काढी दूरें खेधि ॥ नव० ॥ जो तुं मुजनें
आदिशे रें गोरी, तो नाखुं एहने वेधि ॥ जिम तुज
नावे रे मनमां चोलणां ॥ ७॥ हुं पण ते सरखी
थई रे गोरी, टालुं एहनुं ताम ॥ जिम तुज नावे०॥
मलया मन भोलापणे रे गोरी, माने साचुं ताम ॥
तव ईम बोले रे करती चोलणां ॥ ८ ॥ जीहा दंत
नलाववी रे गोरी, जे शीखववुं तुज्झ ॥ तव० ॥
मया करी मुज ऊपरें रे भोली, करो उचित जे
गुज्झ ॥ जिम मुज नावे रे मनमां चोलणां ॥ ए ॥
नगरीमां तेहवे समे रे धीठी, देखी मरगी ईति॥नव०॥
नूप कन्हे कनका गई रे धीठी, तेहने देइ प्रतीति ॥
रहस्य लहीनें रे कहे ईम बोलणां ॥ १० ॥ तुम आ
गें एक वारता रे सामी, कहेवी छे धरो कान ॥ रह० ॥
तुज हितनी तेतो कहुं रे सामी, जो द्यो जीवित -

॥ रह० ॥ ११ ॥ अन्नय हजो कहे राणीयो रे गोली, कहेतां न कर संकोच ॥ जिम मुज नावे रे मनमां चो लणां ॥ जगमांहे तेहिज वालहा रे गोली, देखाडे जो चोच ॥ जिम० ॥ १२ ॥ तेह कहे ए राक्षसी रे सामी, तुम वहूअर दीसंत ॥ नव० ॥ मुज वचनें नवि वीससो रे सामी, तो देखाडुं तंत ॥ रह० ॥ ॥ १३ ॥ रयणीमां रही वेगला रे सामी, जो जो आ ज चरित्र ॥ नव० ॥ रातें थई ए राक्षसी रे सामी, साधे राक्षस मंत्र ॥ नव० ॥ १४ ॥ अंगणमां नाचे हसे रे सामी, रमे नमे वलगंत ॥ नव० ॥ दिसिदि सि नयणां फेरवे रे सामी, फेंकारी ज्युं रटंत ॥नव०॥ ॥ १५ ॥ फेंकारीथी जहले रे सामी, पुरमां मरगी क ष्ट ॥ ग्रहशो जो जाई निशें रे सामी, करशे कांई अ निष्ट ॥ नव०॥ १६ ॥ प्रातसमय सुनटो कन्हें रे सा मी, करजो एहनें बंध ॥ जिम तुक नावे रे मनमां चोलणां ॥ पहेलां पण नृपनें हतो रे सामी, पूरवो क्ष्ट निवंध ॥ रह० ॥ १७ ॥ एहवामां एहथी सुण्युं रे सामी, कारण ए असराल ॥नव०॥ तेहथी मन मेलुं थयुं रे सामी, चित्त चक्यो नूपाल ॥ नृपति विचारे रे करतो चोलणा ॥ १८ ॥ निर्मल मुज कुल लोकमां रे

सामी, थाशो हे सकलंक ॥ नृपति० ॥ लोक कलंक न लागशो रे जोजी, लागजो विपद्दर फंक ॥ नृप० ॥ ॥ १९ ॥ रातें सर्व जणायशे रे जोजी, बाहिर न जां खे बात ॥ तव इंम बोली रे करती चालणां ॥ एब कथाडुं पारकी रे सामी, एहवी नहीं मुज धात ॥ ॥ रत्न० ॥ २० ॥ सतकारी नृपें तिका रे धीठी, पोहोती हुंवन विचाल ॥ अहोनिशि जोती रे० ॥ त्री जे खंमें इग्यारमी रे मीठी, कातें कही ए ढाल ॥ नव नव नातें रे करती खेलणा ॥ २१ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ राक्षसनी विनता तणो, रजनीमां सजी साज ॥ आवी मलयानें कहे, कनका कपट जिहाज ॥ १ ॥ पुत्री तुं घरमां रहे, हुंतो बाहिर जाय ॥ हणी निशा घर नारिनें, आवीश वहेली धाय ॥ २ ॥ शिक्षा देई बाहिर गई, कूड चरितनी कूप ॥ वस्त्र उतारे अंगथी, करवा रूप विरूप ॥ ३ ॥ विविध रंग वरणें करी, रंगे आप शरीर ॥ अहे वमाडी वदनमां, वलवलती बे पीर ॥ ४ ॥ रूंमनाल कंठें धरे, कर साहे करवाल ॥ प्रत्यक्ष रूपें राक्षसी, थई खेले रोशाल ॥ ५ ॥

ठाने रातिमां, आव्यो जोवा नृप ॥ अपर समीप ग
हें चढयो, निरखे डुष्ट सरूप ॥ ६ ॥

॥ ढाल बारमी ॥ होजी कुंबे कुंबे वर
सालो मेह, लशकर आयो दरिया
पाररो हो लाल ॥ ए देशी ॥

॥ होजी कामिणि करती नाच, देखे नृप ठाने रही
होलाल ॥ होजी दीसे ले ते साच, जे सुजनें कनका
यें कही होलाल ॥ १ ॥ होजी नृप चिंते चित्त एम,
कुलने डुर्यश ए किस्युं होलाल ॥ होजी एहथी नहीं
जण खेम, मुजने पण विरुउं किस्युं होलाल ॥ २ ॥
होजी करवी न पडे कचाट, पहेली जो समजावीयें
होलाल ॥ होजी तेह जणी वनमांहिं, एहने हवणां
हणावीयें होलाल ॥३॥ होजी ईम कहेतो नरनाथ
सोपानलचुं परजल्यो होलाल ॥ होजी तेडी सेवक
साथ, गुप्त पणें जणे जांजल्यो होलाल ॥ ४ ॥ होजी
मुज सुतरमणी एह, पापिणी मलया सुंदरी होला
ल ॥ होजी रथ चाली वन लेह, गुपत पणे हणज
परी होलाल ॥ ५ ॥ होजी करतां रातें काम, जो
न जाणे वातडी होलाल ॥ होजी ईम सुणी सुनट
ताम, तव्यां नीडी गातडी होलाल ॥६॥ होजी क

लीधें करवाल, आवत सुभट निहालीनें होलाल ॥ होजी जिहां छे मलया बाल, कनका त्यां गई चालीनें होलाल ॥ ७ ॥ होजी थरथरती विण सूज, जल फलती बोले इस्युं होलाल ॥ होजी नृप भट हणवा मुंज, आवे छे करबुं किस्युं होलाल ॥८॥ होजी तुज पासें हुं आज, नृप आदेश विना रही होलाल ॥ होजी तेमाटे महाराज,मुज ऊपर रुगा सही होलाल ॥९॥ होजी क्यांहिक मुजने छिपाड, जणनी मीट न ज्यां पडे होलाल ॥ होजी मन माने तिहां गाड, हाथ रखे कोइनो अभे होलाल ॥ १० ॥ होजी मलयाने निर्देश, पेठी तेह मंजूषमां होलाल ॥ होजी रोती नागे वेश, वेसे मांहे एकंगमां होलाल ॥ ११ ॥ होजी तुरतज तालुं दीध, अनय करी राखी तिका होलाल ॥ होजी आव्या सुभट प्रसिद्ध, करता रगत कनीनिका होलाल ॥ १२ ॥ होजी दीठी मलया तेण, वेठी रूप स्वभावनें होलाल ॥ होजी ते कहे मरथी एण, बदल्यो सांग फंटाकिनें होलाल ॥ १३ ॥ होजी फिटरे पापणी दुष्ट, जाणी तुं किम मारशे होलाल ॥ होजी लागी जो कां पुंठ, केटली सृष्टि संहारशे होलाल ॥१४॥ होजी ईम कहीनें ग्रही बांहिं, काढी रथ चाढी तिसें होला

ल ॥ होजी चाल्या अटवी राह, श्वापद जिहां वांका
वसे होलाल ॥ १५ ॥ होजी करता अनादर इह, दे
खी मलया चिंतवे होलाल ॥ होजी दीसे कांइक अ
निठ, इंण सूलें माहारे हवे होलाल ॥ १६ ॥ होजी
हणवुं के वनवास, सुसरें निश्चय आदिस्यो होलाल॥
होजी मुज अपराध प्रकाश, अणजाण्यो देख्यो किस्यो
होलाल ॥ १७ ॥ होजी के मुज पूरव कर्म, उदित हु
आं फल आपवा होलाल ॥ होजी नहींतो माग म
र्मे, बनी आवे किम एहवा होलाल ॥ १८ ॥ होजी
कठिन थइ रे जीव, खमजे कीधां आपणां होलाल॥
होजी दारुण कर्म अतीव, बूटे नहीं चाख्या विनां हो
लाल ॥ १९ ॥ होजी पूरव श्लोक संभारि, नणती
नियति निहालिनें होलाल ॥ होजी मूकी वन संचार,
आघुं पाछुं भालीनें होलाल ॥ २० ॥ होजी गनी
ऊनड पाहाड, विषम थलीमांहे धरी होलाल ॥ होजी
प्रहसमे भीम निराड, आव्या जण नगरें फरी होलाल
॥ २१ ॥ होजी प्रणमी नृपना पाय,वात सयल तिहां
कही होलाल ॥ होजी मलया मंदिर आय, नृपति
महीर करे वली होलाल ॥ २२ ॥ होजी नाक रहित
ते नारि, नृप जोवरावी मंदिरें होलाल ॥ होजी दीठी

नहि किण वार, नृप जणे नारी खरी होलाल ॥२३॥ होजी त्रीजे खंर्मे रसाल, ढाल कही ए बारमी होलाल ॥ होजी कांति विजय सुविलास, सुणजो श्रोता उजमी होलाल ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमर हवे दिन केटले,जींती तेह किरात ॥ तात चरण आवी नम्यो, प्रिया विरह अकुलात ॥ १ ॥ मलया नवने संचरे, त्यां नृप साही पाण ॥ वीतक चरित्र त्रिया तणा, कहे सकल सुविनाण ॥ २ ॥ कुमर निसासो नाखतो, वे कर घसतो आप ॥ गदगद कंठें कुंव मन, करे एम उल्लाप ॥ ३ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥ नटीयाणीनी देशी ॥

॥ नृपतिजी काई कीधुं हो डुःख दीधुं मलया वालनें, हाहा चूको कांहीं ॥ चित्तमां कां न विचार्यो हो नवि धार्यो अवसर आपणुं, प्रकृति पलटी प्रांहीं ॥ नृ० ॥ १ ॥ मुज आगम लगें नारी हो नवि धारी कामिनी धारीनें, कीधुं अनुचित कर्म ॥ नाला ज्युं चित्त खटके हो अति नटके अग्रिसमा थइ, काम करयां विण मर्म ॥ नृ० ॥ २ ॥ निर्नासा ते नारी हो वज नारी दाव रमी गई, जाणुं एहनां मूल ॥ जो

रावो किहां दीसे हो पूठीरें कारण मूलथी, एहनां एह कुसूल ॥ नृ० ॥ ३ ॥ कुमर तणे कटु वयणें हो नृप वयणें श्याम पणुं धरी, मंद वचन कहे एम ॥ जोवरावी नवि लाधी हो गई आधी रातें ते किहां कहो हवे कीजें केम ॥ नृ० ॥ ४ ॥ कुमर सुणी नृप वयणां हो जल नयणां पूरण नाखतो, इंम कहे हाहा नाथ ॥ धूतारी गई नासी हो विशवासी मुज प्रमदा प्रत्यें, साचुं सहि नरनाथ ॥ नृ० ॥ ५ ॥ धूतारीनें वचणे हो कुल रयणें लंछन चाढीउं, गोत्र उमूल्युं एण ॥ उलंजा इंम देतो हो नृपनंदन पोहोतो मंदिरें, अति पीडयो विरहेण ॥ नृ० ॥ ६ ॥ वह्नल सुतनें पूठें हो नृप उठी आवे दूंमणो, उघाडे घर ताल ॥ इंम कहे सुत में दीठी हो तुज ईठी दयिता रा क्सी, रूपें करती चाल ॥ नृ०॥ ७ ॥ दोष नहिं को माहरो हो अवधारो नंदनजी इहां, हुई अपराधें दंम ॥ वाहाली पण जे विणठी हो ते परठी दीजें छेदीनें, वांहडली करी खंम ॥ नृ० ॥ ८ ॥ कुमजाणा कां मनमां हो मंदिरमां आवी आपणो, संभालो घर सा ॥ अधमथकी जणहासो हो घर आश्र विणासो जाणीयें, उंग न सहे नार ॥ नृ० ॥ ए ॥ कुमर वि

मासे नृपति हो शुं कहे मलया राक्षसी, पीडे जणनें केम ॥ सुपरें तेह जणाशे हो जो पाशे दरिशण जीव तो, चिंते विरही एम ॥ नृ० ॥ १० ॥ पय पाणीनो वहेरो हो पाशे मत चहेरो राजिया, धाउं कांइ अधीर ॥ इम कहि जोवा लागो हो जइ वागो जिहां मं जूषडी, वधाडे बल वीर ॥ नृ० ॥ ११ ॥ दीठी तिहां विण नासा हो उसासा लेती राक्षसी, रूपें कामिनी एक ॥ शुकमणी दुःख जूरें हो तन लूखे दीन दया मणी, वस्त्र विहूणी छेक ॥ नृ० ॥ १२ ॥ विस्मय कारी नारी हो ते नारी चरित्र निहालीनें, लोक रह्या थिरथंन ॥ कुमर पयंपे नृपनें हो जे दीठी रीठी राक्षसी, तेहिज एह सदंन ॥ नृ० ॥ १३ ॥ खांची बाहेर काढी हो तिहां ताडी आमी मारथी, आप चरित कहे तेह ॥ नृपें कोपें निर्भंछी हो जणह थीकारें दूहवी, काढी देशा छेह ॥ नृ० ॥ १४ ॥ शोकाकुल विरहाथी हो सुत हाथीनेंहि पासीउ, वेगो मौन धरंत ॥ मरवा नें अनिलाखें हो नवि चाखे अशन सुहामणां, दैहै मोह करंत ॥ नृ० ॥ १५ ॥ राजा परिजन राणी हो दुःख आणी जूरे सामटां, सचिव घणा अकुलाय ॥ चिंता नागिणि नडीया हो पुरवासी पडीया संभ्रमें,

सु० ॥जो०॥ सुखिणी दुःखिणीप्रायें रे हो सु० ॥ वींटी
परिवारके किहां एकली हो सु० ॥ ६ ॥ जो० ॥ नरप
ति तेडया तेह रेहो ॥ सु० ॥ वनमां जाणी सुनटें
मूकी सुंदरी हो ॥ सु० ॥ जो० ॥ अनय बीडो सस
नेह रेहो सु० ॥ आपीने पूछे मलया आशरी हो
सु० ॥ ७ ॥ जो० ॥ कहो सेवक किणी रीत रेहो
सु० ॥ माहरी आणाथी मलया क्यां ठवी हो सु० ॥
॥ जो० ॥ ते कहे सा नय नीतरे हो सु० ॥ रोतीने मू
की विकटाटवी हो सु० ॥ ८ ॥ जो० ॥ निरखी एहवा
चिन्ह रे हो सु० ॥ अम मन नास्युं एहनें राक्षसी हो
सु० ॥ जो० ॥ नृपतिमन निर्विन्न रे हो सु० ॥ कुणहें
व्यामोह्यो खेलें साहसी हो सु० ॥ ए ॥ जो० ॥ स्त्री
हत्या महापाप रे हो सु० ॥ तिमही कुंण लेशें हत्य
गाननी हो सु० ॥ जो० ॥ नहीं हणीयें इहां आप
हो सु० ॥ करणी ए नहीं छे रूडा लाननी हो सु०
॥ १० ॥ जो० ॥ खांतिगिरितटें छेव रेहो सु० ॥ पडती
आखडती जिम नावे वली हो सु० ॥ जो०॥ एकलडी
स्वयमेव रेहो सु० ॥ मरशे रडवडती रखडती आफल
हो सु० ॥ ११ ॥ जो०॥ ईम मन धारी वाल रे हो सु०
रोती वनमांहें मूकी जीवती हो सु० ॥ जो० ॥ आव

नांख्युं आल रेहो सु० ॥ नयथी तुम आगें कही अ
ठती ठती हो सु० ॥ १२ ॥ जो० ॥ नारी मुजथी जे
ह रेहो सु० ॥ सुहहे ते करुणा रुहें संग्रही हो सु०॥
॥जो०॥ विणठी मुज मति ठेह रे हो सु० ॥ नारी ते
पैठी नह हीयडे वही हो सु० ॥ १३ ॥ जो० ॥ नृ
प निंदे ईम आप रेहो सु० ॥ जणनें परशंसे पुरजन
देखतां हो सु० ॥ जो० ॥ परिखल चित्त समाप रेहो
सु० ॥ उत्तम जोशीने प्रणमे पेखतां हो सु० ॥ १४॥
॥ जो० ॥ कुमर कहे तुज वयण रेहो सु० ॥ मलियुं ते
साचुं अनुसारें तकी हो सु० ॥ जो० ॥ शोधो बाला र
यण रे हो सु० ॥ एहेलें खोयुं ते निज हाथांथकी
हो सु० ॥ १५ ॥ जो० ॥ त्रीजे खंडें ढाल रेहो सु० ॥
सुपरें ए नांखी रूडी चौदमी होसु० ॥ जो० ॥ कांति
वचन सुरसाल रे हो सु० ॥ सुणतानें लागे सरस सुधा
समी होसु० ॥ १६ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमर नणे मलया तणा,जनक नणी अवदात ॥ क
हेवा चर चंडावती, पूरियें प्रेषो तात ॥१॥ वीरधवल
पण आगमी, करजो पुत्री शोध ॥ तिहां कदापि जो
पामीयें, तो मुज पुण्य प्रवोध ॥ २ ॥ करी

नूपें पुरुष, मूकया चिहुंदिशि नूर ॥ निरखण
तेह पण, देश देशांतर दूर ॥३॥ समजावी
जनें, नूप जमाडे जाम ॥ कंठें उतरतां कवल,
ल्ये विश्राम ॥ ४ ॥ केते दिन निरखी धरा,
पास ॥ आव्या नर कर जोडीनें, पभणे एम प्रकाश
॥ढाल पंदरमी॥ मदनेसर मुख बोल्यो त्रटकी ॥ए
॥ सुण महीपति शुद्धि न पामी, फरि आव्या
वि वामी हे ॥ ससनेही रे गोरी, दीठी नहीं मलय
किहां ॥ देश नगर गढ डुंगर मोह्या, जलथल वट
वरोह्या हे ॥ ससलूणी रे गोरी, दीठी० ॥ १ ॥ पु
पाटण संबाहण पाटें, दुर्घट विषमी वाटें हे ॥स०
फरिया उद्भट अटवी घाटें, मलया जोवा मा
हे ॥ स० ॥ २ ॥ कुमर सुणी इंम चिंता जुत्तो, चिं
मन दुःख खुत्तो हे ॥ स० ॥ पूर्व महापातक मु
विकस्यां, सुचरित संचय निकस्यां हे ॥ स० ॥ ३
निर्गमशुं किम दिन अतिलंबा, जोल्यो दुःखनी डुं
हे ॥ स० ॥ हूउ वियोग प्रियाशुं माहरे, वात न दी
आरें हे ॥ स० ॥ ४ ॥ हैहै शून्य महावन मांहें,
खादर अवगाही हे ॥ स० ॥ मुई हशे हईडुं आप
ली, दयिता मुज सुगुणाली हे ॥ स० ॥ ५ ॥ वन

हीर फिरती आवडती, किण कर चडशे रडती हे ॥
॥ स० ॥ के कोइ निर्दय श्वापदसाथें, कीधी हशे नि
ज हाथें हे ॥ स० ॥ ६ ॥ मुज विरहें नय पंगुर म
हिला, सहेती संकट डुहिला हे ॥ स० ॥ यूथ टली
वनहरणी सरखी, मरशे नूखी तरसी हे ॥ स० ॥
॥ ७ ॥ मुज साथें आवंती प्यारी, पापीयडे में वारी
हे ॥ स० ॥ सुखमांहेथी डुःखमांहि नाखी, दीन वद
न हरिणाखी हे ॥ स० ॥ ८ ॥ गोरी तणो विरहो ज
ब्वाटें, करवत थईनें काटे हे ॥स०॥ मुज हीअडुं पड
रथी कालुं, इंणी वेला नवि फाटुं हे ॥स०॥ए॥ सुकु
लिणी तुं चतुर चकोरी, थे दरिसण गुण गोरी हे ॥स०॥
देई विगोहो अलवें जोरी, न करो प्रीत ठगोरी हे॥स०॥
॥ १० ॥ संसारी इंम गुण संदोहो, विलवे कुमर स
मोहो हे ॥स०॥ अणीआलां नालां ज्यौं खटके, हि
यडे विरहो नटके हे ॥ स० ॥ ११ ॥ मात पिता स
मजावे लेखें, सुतने वचन विशेषें हे ॥ स० ॥ पण
सुत अरति पड्यो नवि समजे, विषम विरहमां अलजें
हे ॥स०॥१२॥ वचन निमित्त तणुं चित्त धारी, कुंमर
निरखण नारी हे॥स०॥ग्रही खडग ढांनो नली नांतें,
निकस्यो माजिम रातें हे ॥स०॥१३॥ हूठ प्रनात त

नुज नवि दीसे, शुं कीधुं जगदीशें हे ॥स०॥ कुमर • जोवा दयिताने, इंम कहे पीउ प्रमदानें हे ॥ स० ॥ ॥१४॥ लेहेशे आपद दुःख किम सहेशे, पग पाळो कि म वहेशे हे ॥ स० ॥ जूमि शयन करशे किम वाळो, नंदन अति सुकुमाळो हे ॥ स० ॥ १५ ॥ वधू सहि त सुत मुखडुं जोस्यां, तहीयें कृतारथ होस्यां हे ॥ स० ॥ मात पिता इंम चिंता दाहें, दोहिले दिवस निवाहे हे ॥ स० ॥ १६ ॥ जूख गई सुख निश या की, नृप नंदन एकाकी हे ॥ स० ॥ गामागर पुर क रत प्रवेशा, निरखे देश विदेशा हे ॥ स० ॥१७॥ श्री पंचासर पास प्रसादें, ज्ञान कथा संवादें हे ॥ स० ॥ पन्नरमी मीठी रसनाळा, पूरण कीधी ढाळा हे॥स०॥ ॥ १८ ॥ पूरण त्रीजो खंम वखाण्यो, मलय चरि थी आण्यो हे ॥ स० ॥ मलया सरस कथा इंम ज खी, कांति वचन श्रुत साखी हे ॥ स० ॥ १९ ॥

इतिश्री ज्ञानरत्नोपाख्यानापरनामनि श्रीमलयसुं रीचरित्रे पंमित श्री कांतिविजयगणिविरचिते प्राकृ प्रबंधे मलयसुंदरी श्वशुरकुलसमागमनामा तृतीय खंमः संपूर्णः ॥ ३ ॥

॥ अथ श्रीचतुर्थखंम प्रारंजः ॥

॥ दोहा ॥

॥ स्वस्तिश्री मोहनलता, वान वधारण मेह ॥ जिन सद्गुरु शारद तणा, नमुं चरण ससनेह ॥ १ ॥ सुणतां मलयानी कथा, टले व्यथानी कोडि ॥ कहेतां जस मन अन्यथा, वृथा तेह पण जोडि ॥ २ ॥ मलय कथा उचितारथा, करे व्यथानो छेह ॥ कथे विचें विकथान्यथा, वृथा यथा स स तेह ॥३॥ त्रीजो खंम कह्यो इहां, सरस वचन रस कुंम ॥ चहादें आदर करी, कहेशुं चोथो खंम ॥ ४ ॥ हवे महाबल वालही, मूकी निशि वन घोर ॥ कण कठिन श्वापद तणा, सुणे शब्द अतिघोर ॥ ५ ॥ थरथरती फरती हिये, फरती आंसू नयण ॥ आरडती पडती कहे, विरहाली इम वयण ॥ ६ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ अम्मां मोरी अम्मां हे, अम्मां मोरी पाणीडां गईती तलाव हे; हे मारुडे मेहेवासी मेरा ताणीया ॥ ए देशी ॥

॥ अम्मां मोरी अम्मां हे, ससरे न पुरुयो मुज को वंक हे, हे कोपेंनें कलकलियो राणो मोपरें हे

॥ अम्मां० ॥ वचीनें कूडुं कांइ कलंक हे, हे अनेयु अपमानें काढी बाहिरें हे ॥ १ ॥ अ०॥ अटवी ए वि षमी दंभाकार हे, हे हियडलुं थरकावे नयणें देख तां हे ॥ अ० ॥ सिंहना इहां बहुला संचार हे, हे शू रानें नडकावे विरुआ पेखतां हे ॥ २ ॥ अ० ॥ गुद री गूजे गोहा ढली हे, हे चित्तानें वनकुत्ता चोटे दो टयुं हे ॥ अ० ॥ हलके गेवरिया टोला टोलि हे, हे खेलंता आफलता नाखर कोटशुं हे ॥३॥अ०॥ सक लके सूअरनां मातां यूथ हे,हे तांतां हवें ढजातां था ता आकुलां हे ॥ अ० ॥ वढता ढल्लता मांहे युद्ध हे, हे रोषाला दाढाला वाघ महाबला हे ॥ ४ ॥ ॥ अ० ॥ धमके सींगाला नरता फाल हे,हे शंबरिया अंबरिया लगें अति कूदणा हे ॥ अ० ॥ रखडे कूकंता पोढा श्याल हे, हे रोमालां हववालां रीछ फरे घणां हे ॥ ५ ॥ अ० ॥ खडतां दडबडता दोडे रोझ हे, हे हींझे ते विण ढींझे पीडे मारका हे ॥अ०॥ दीपड करता नकुनी सोक्ष हे,हे टीबरीया गुंबरीया मारकपार का हे ॥६॥ अ० ॥ वलगे घुररंताके स्याहघोष हे, हे पेंझामें मद बेंझा गेंझा आघडे हे ॥अ०॥ चमके चीतल कलिया रोष हे, हे जाडा वन पाझा आझा आरडे हे

॥७॥अ०॥ उछले ढुंकलती नाहरकोडि हे, हे छुंकडियां वांकडियां दडवडियां दीये हे ॥ अ० ॥ चुंपती खेले गेलें जरखां जोडि हे, हे उथडता चलचलता मृतलपा लीये हे ॥ ८ ॥ अ० ॥ फितकें फेंकारी मुख फाडी हे, हे ससला ते सलसलता तरु मूलें लुकें हे ॥ अ० ॥ मह्के सुरहा मशक बिलाड हे, हे विंजूता अति खीजू मदमाता फुके हे ॥ ए ॥ अ० ॥ खमके खोनालो खांतें नील हे, हे हूके ठल नवि चूके मांकड वानरा हे ॥ अ० ॥ पंथें विषधरनी अडखील हे, हे फुंकीनें परजाले जाला जीगरां हे ॥ १० ॥ अ० ॥ अडके चमरी वांसांजाल हे, हे वेकु ने वली सावज फूके रोषमां हे ॥ अ० ॥ खडके नडके विहगा माल हे, हे खचरिया ठल नरिया दोडे सूसमां हे ॥ ११ ॥ अ० ॥ अरडे अबाला आरण उंट हे, हे दाढाला सुंढाला शरन घणा वमे हे ॥ अ० ॥ रडवडे रोहि वोहिड ठूट हे, हे गोकरुणा कंदलियां मिलि वेसें खूडे हे ॥ १२ ॥ ॥ अ० ॥ घुरले घूघडा मांमी घोर हे, हे नड दडतां दडदडतां नृत्त घणां नमे हे ॥ अ० ॥ चरडा चोरा करतां जोर हे, हे धाडानें लेई आवे आडा मागमें हे ॥ १३ ॥ ॥ अ० ॥ एहवा जीरण वनमां मुक्त हे, हे निर्दय नृ

ना सेवक मेली ते गया हे ॥ अ० ॥ कहियें को आग ल डुःख गुज्ज हे, हे विण अपराधें नृप धीग थया हे ॥ १४ ॥ अ० ॥ जाउं इहांथी क्यां हवे नाथ हे, हे पीयरडुंनें अलगुं वैरी सासरो हे ॥ अ० ॥ पडियां डुःखथी साही हाथ हे, हे राखे ते नवि दीसे कोई इ हां आशरो हे ॥ १५ ॥ अ० ॥ सुसरानीशुं पलटी बु द्धि हे, हे पछतावो हवे थाशे अेहथी आगली हे ॥ ॥ अ० ॥ पीउडे लीधी नहिं कोई सुद्धि हे, हे निगमे किम दाहाडा मो पाखें वली हे ॥ १६ ॥ अ० ॥ जनमी कां हुं न मुई कांइ हे, हे डुःखडामां नवि पडती इणवेला इहां हे ॥ अ० ॥ विलवे मलवुं गोरी त्यांहिं हे, हे सं भारे चित्त धारे श्लोक भणी तिहां हे ॥ १७ ॥ अ० ॥ अटवीमें प्रगटी पीडा पेट हे, हे बालायें त्यां सुत प्रस व्यो भलो हे ॥ अ० ॥ रविनो ताजो तेज समेट हे, हे अवतरीयो सुरवरीयो पुण्यें कजलो हे ॥ १८ ॥ अ० ॥ सु तनें खोले ठविनें माई हे, हे आपणपें तिहां आप सूति क्रिया करे हे ॥ अ० ॥ पभणे पुत्र वधावुं कांई हे, पापिणी हुं इण वेला तुजनें आदरें हे ॥ १९ ॥ अ० ॥ सुतनुं मुखडुं जोती मात हे, हे हरखें ने तिम थरके वन देखी करी हे ॥ अ० ॥ रजनी वीती थयो परभा

त हे, हे कहीने नावाने नदीयें उतरी हे ॥ २० ॥ ॥ अ० ॥ निर्मल जलमां न्हाई ताम हे, हे पावन थईने बेठी बाला कांठडे हे ॥ अ० ॥ समरी गुरुनें अरिहंत नाम हे, हे संतोपे निज आतम वनफल मीठडे हे ॥ २१ ॥ अ० ॥ ठानी वन कुंजें पाले बाल हे, हे हीयडलें हेजाले लालें गह गही हे ॥ अ० ॥ चोथा खंमनी पहेली ढाल हे, हे कांतें इंम जिनि जांतें पजणी ऊमही हे ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पंथें वहेतो ते समे,सारथपति बलसार ॥ आवी नदीयें ऊतर्यो, वींटयो बहु परिवार ॥ १ ॥ अवल बनातां पाथरी, नवल किनातां तांणि ॥ मेरा दीधा महकता, कारुजणें जलगण ॥ २ ॥ जल तृण इंधण कारणें, पसर्या जन वनमांहीं ॥ सारथपति पण संचरे, तनु चिंतायें त्यांहीं ॥ ३ ॥ संचरतो वन कुंजमां, पोढोतो मलया ठाम ॥ रुदन सुणी बालक तणुं, निरखे विस्मय पाम ॥ ४ ॥ बाल सहित बाला तिहां, देखी चिंते एम ॥ रूप अपूरव लवणिमा, व सती तरुण इहां केम ॥ ५ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ आबू मन लागुं ॥ ए देशी ॥

॥ सारथपति पूछे हसी, एकलडी कुंण आंहीं रे ॥
गोरी कहे साचुं ॥ उत्तम कुल संभव प्रत्यें, कहे आकृति
तुज प्राहीं रे ॥ गो० ॥ १ ॥ मूकी इहां किणे अपह
री, के रीशाणी तुं आप रे ॥ गो० ॥ के कोइ इष्ट
वियोगथी, कीधो तें वन व्याप रे ॥ गो० ॥ २ ॥ पु
त्र प्रसव ताहरे इहां, दीसे थयो गुणगेह रे ॥ गो० ॥
वनमांहिं बीहती नथी, कहे सुंदरी ससनेह रे ॥ गो० ॥
॥ ३ ॥ धनवंतो व्यवहारीयो, नामें हुं वलसार रे
॥ गो० ॥ सागरतिलक पुरें वसुं, पर द्वीपें व्यापार रे
॥ गो० ॥ ४ ॥ लज्जुं कसुं जगदीश्वरें, मेलवतां तुं
आज रे ॥ गो० ॥ मुज घेरे आवो वही, मूकी मननी
लाज रे ॥ गो० ॥ ५ ॥ वचन सुणी सा चिंतवे, ए न
र चपल पतंग रे ॥ गो० ॥ मातो धन यौवन मदें,
करशे शील विभंग रे ॥ गो० ॥ ६ ॥ कूडो उत्तर वा
लतां, रहेशे शील अखंड रे ॥ गो० ॥ इंम धारी बो
ली त्रिया, सुण गुणरयण करंड रे ॥ गो० ॥ ७ ॥
बहुला हुं बंभालनी, कन्हें कोपी आप रे ॥ गो० ॥
आवी रही वनमां इहां, मूकी निज माय बाप रे ॥
॥ गो० ॥ ८ ॥ मेल मले जिन ते बडे, जिम जिन

रजनी योग रे ॥ गो० ॥ देखी जोवा सारिखो, चहेरे सघला लोग रे ॥ गो० ॥ ए ॥ आवासें पोहोंचो तुमें, नहीं आवुं निरधार रे ॥ गो० ॥ दुःखियां मुज मा बापनें, मलशुं जई इंण वार रे ॥ गो० ॥ १० ॥ आ कारें इंगित गतें, ए नहीं नीची जात रे ॥ गो० ॥ कपट पणें उत्तर करे, कारण इहां न जणात रे ॥ ॥ गो० ॥ ११ ॥ सार्थपति इंम चिंतवी, बोल्यो वचन विचार रे ॥ गो० ॥ तुज चंमालपणुं कहे, नहीं नांखुं सुण तार रे ॥ गो० ॥ १२ ॥ मुज आवासें मानिनी, स्वेच्छायें रहो आय रे ॥ गो० ॥ तुज वचनें बांध्यो सदा, रहेशुं हुं मन लाय रे ॥ गो० ॥ १३ ॥ इम कहेतो जडपी लीये, अंकथकी तस बाल रे ॥ ॥ गो० ॥ तस्कर जिम चाल्यो धसी, आवासें ततका ल रे ॥ गो० ॥ १४ ॥ शील विखंमन नयथकी, ते थई कार्यविमूढ रे ॥ गो० ॥ तोपण ते पूंठे चली, नंद न नेहारूढ रे ॥ गो० ॥ १५ ॥ दरख वचन बोलावतो, बालाने वत्सलार रे ॥ गो० ॥ सुत निज वसनें गोप वी, पेठो जई आगार रे ॥ गो० ॥ १६ ॥ दुःख कर ती गानें रवी, आवासें देई बाल रे ॥ गो० ॥ दासी एक प्रियंवदा, थापी करण संनाल रे ॥ गो० ॥ १७

अंबर नूषण नोजनां, आपें दाखी प्रीति रे ॥ गो०॥
नांखे नहिं कडवुं मुखें, उपावण प्रतीति रे ॥गो०॥
॥ १७ ॥ नाम पूढ्युं अन्यदा,बलसारें करी शान रे
॥ गो० ॥ हलुयें सा कहे माहरूं, मलयसुंदरी अनि
धान रे ॥गो०॥१९॥ व्यवहारी ईम चिंतवे, मम कहे
ए स्व चरित्र रे ॥ गो० ॥ पण नामें करी जाणीउं,
कुल एहनुं सुपवित्र रे ॥ गो०॥ २० ॥ चाल्यो तिहां
थी वाणीयो, करतो पंथें मुकाम रे ॥ गो० ॥ उदधि
तिलक पुर आपणें,पोहोतो कुशलें ताम रे॥गो०॥२१॥
पुत्र सहित ढानी गृहें, राखी महिला तेम रे॥गो०॥
दासी एक विना कहे, जाणी न पडे जेम रे ॥गो०॥
॥ २२ ॥ एक समय मलया प्रत्यें, निठुर ईम पन्नणं
त रे ॥ गो० ॥ नाथ पणे मुजनें हवे, आदर तुं गुण
वंत रे ॥ गो० ॥ २३ ॥ मुज संपदनी सामिनी, था
तां न कर विचार रे ॥ गो० ॥ सपरिवार हुं ताहरो,
रहेशुं आणाकार रे ॥ गो०॥ २४॥ पुत्र नहिं को मा
हरे, ते ढामें तुज पुत्र रे ॥ गो० ॥ थाशे जय जय
मालिका, वधशे ईम घरसूत्र रे ॥ गो० ॥ २५ ॥ व
चन सुणी कामांधनां, बोली मलया मुद्ध रे ॥ गो०॥
कुलवंतानें नवि घटे, करवुं लोक विरुद्ध रे ॥ गो०॥

॥ २६ ॥ जाजो सर्वस आपथी, पडजो पण ए पि म रे ॥ गो० ॥ चंद्रकिरण सम ऊजलुं, रहेजो शील अखंम रे ॥ गो० ॥ २७ ॥ वाख्यो वहुल प्रकार थी, नाख्यो वचन निन्नेह रे ॥ गो० ॥ रह्यो अबोलो वापडो, न करे वलती जेह रे ॥ गो०॥ २८ ॥ रोपा रुण घर बारणें, थे तालक सुत लेय रे ॥ गो०॥ प्रि यसुंदरी निज नारिनें, पुत्र पणे ते देय रे ॥ गो० ॥ ॥ २९ ॥ कहे सुंदरी ए पामीई, बालक वनिका मां हि रे ॥ गो० ॥ गुण रूपें तेजें नयो, रह्यो लक्षण अ वगाहि रे ॥ गो० ॥ ३० ॥ व्यभिचारिणी को मारीयें, नाख्यो एह प्रछन्न रे ॥ गो० ॥ पुत्र रहित आपण घरे, होजो पुत्र रतन्न रे ॥ गो० ॥ ३१ ॥ ते वालकनें आपणा, नाम तणे एक देश रे ॥ गो० ॥ नामें वल इति थापना, कीधी निज उद्देश रे ॥ गो० ॥ ३२ ॥ राखी धाइ अनेकधा, करवा पोढो बाल रे ॥ गो० ॥ बीजी चोथा खंमनी, कांतें पनरमी ढाल रे॥गो०॥३३॥

॥ दोहा ॥

॥ व्यवहारी हवे एकदा, पूरे प्रबल जिहाज ॥ परद्वीपें चालण तणा, करे सजाइ काज ॥१॥ देइ शीखामण नारिनें, पूछी सज्जन कुटुंब ॥ ठानी मलया जोरनी

लेइ चाल्यो अविलंब ॥ २ ॥ साजित पूर्व जहाजमां, जई वेगे शुन्न संच ॥ सप्रपंच कारुक जनें, लीधां नां गर खंच ॥ ३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ ईडर आंबा आंबली रे ॥ ए देशी ॥

॥ प्रवहण पूर्यो पाधरो रे, वारु पवननें टेग ॥ जल निधिमां जल मारगें रे, वहेतो तीरनें वेग ॥ १ ॥ धमकीने चाले वावर कूल ॥ हवे करशुं केहो सूल ॥ ध० ॥ इम किं ते सा सुधि नूल ॥ ध० ॥ ए आंकणी ॥ परदेशें मुज के चशे रे, के देशे बूमाडी ॥ के कुमरणथी मारशे रे, के किहां देशे गाडि ॥ ध० ॥ २ ॥ हूणी इहां होजो हवे रे, मुज तनुज वियोग ॥ संतापें कापे हीयुं रे, जिम रोग क्षय रोग ॥ ध० ॥ ३ ॥ जीवन सृत सम ते त्रिया रे, ग गलती गलनाल ॥ पूर्वे प्रवहण नायनें रे, वहेती सु प्रणाल ॥ ध० ॥ ४ ॥ शुं कीधो मुज नंदनो रे, क सत पुरुष यथार्थ ॥ ते कहे तो सुत मेलवुं रे, जो क मुज चरितार्थ ॥ ध० ॥ ५ ॥ पडियो निरखी आपद रे, न्याय नदीनो न्याय ॥ रास्त्रण शील सोहामणुं ते रही मौन अगाध ॥ ध० ॥ ६ ॥ अनुगुण पवनें प्रेरि रे, वहेतुं प्रवहण यत्न ॥ कूवालें केते वासरें रे, आवी वासकूल ॥ ध० ॥ ७ ॥ बंधारा उतरावियें रे, आवी

तने दाण ॥ व्यवसायी व्यवहारीउ रे, वेचे विविध क्रियाण ॥ ध० ॥ ८ ॥ रंगारा हीरा तणा रे, निर्दय कारू लोक ॥ ते कुलें मलया वेचिनें रे, कीधा शेठें दोकड रोक ॥ ध० ॥ ९ ॥ त्यां पण बहु कामी नरें रे, अद्भुत रूप निहालि ॥ काम महारस प्रारथी रे, तेपण न शक्या चालि ॥ ध० ॥ १० ॥ निज स्वारथ अण पूगतें रे, रूठा डुष्ट जुवाण ॥ निर्म्मदेरा ओले नसा रे, प्रगटे रुधिर उधाण ॥ ध० ॥ ११ ॥ तास रुधिर नामें करी रे, कृमिज चढावे रंग ॥ मूर्छागत वा ला हुवे रे, नस नस पीड प्रसंग ॥ ध० ॥ १२ ॥ वि च विच अंतर गालीनें रे, पोपे अशनें अंग ॥ वलती महीरगतारथी रे, मांमे रुधिरें रंग ॥ ध० ॥ १३ ॥ बाला चिंते में कीयुं रे, गत नव पाप अथाग ॥ तेह थकी आवी पडयुं रे, मोटुं डुःख दोनाग ॥ ध० ॥ ॥ १४ ॥ विफलाशा नूनारणी रे, कां सरजी किरता र ॥ देतो डुःख न हुवे दया रे, हे तुज सरजण हार ॥ ध० ॥ १५ ॥ नजरें आवी किहांथकी रे, एकज हुं जगमांहिं ॥ ठाम न हुंतुं डुःखनें रे, तो आव्यो मो पाहिं ॥ ध० ॥ १६ ॥ जनमी क्यां परणी किहां रे, आवी वली किण देश ॥ नाल लख्युं बनी आवशे

सुपरें तेह सहेस ॥ ध० ॥ १७ ॥ दुःख पूरें अबला
नरी रे, नाणे मनमां रोष ॥ एकांतें चिंते तिहां रे, स्व
चरित कम्मेना दोष ॥ ध० ॥ १८ ॥ परहाकें गर्के
चढ्यो रे, ताके अनुचित दाव ॥ रस पाके थाके वही
रे, अहो नव विषम बनाव ॥ ध०॥ १९ ॥ घरडी तन
जोही जीयुं रे,मूर्छाणी नृपीठ ॥ खरडी रुधिरें एकदा
रे, पडी भारंम शूनि दीठ ॥ ध० ॥ २० ॥ पंखी नम
थी ऊतरी रे, आशंकी पलपिंम ॥ चंच पुटें लेई ऊ
डियो रे, सहसा ते भारंम ॥ ध० ॥ २१ ॥ नभ मार्गे
ज्यां संचरे रे, जलनिधि मांहि विहंग ॥ तेहवे बीजो
सामुहो रे, आव्यो भारंम तुंग ॥ ध० ॥ २२ ॥ आ
मिष लोनें तेहशुं रे, मंमे जूफ तिकोई ॥ लडतां चंच
थकी पडे रे, बटके बाला सोई ॥ ध० ॥ २३ ॥ आ
रिका के खेचरी रे, के सुरकुमरी काय ॥ लखमी के
कोई जोगिणी रे, जलमां रमवा जाय ॥ ध० ॥ २४
के धारा हरिवल्लनी रे, के दामिणी द्ये दोट ॥ ई
क्षण सुरें दीठी तिहां रे, करी करी ऊंची कोट॥ध०
॥ २५ ॥ बाला गुणमाला मुखें रे, गणती श्रीनवक
र ॥ तरता गज मत्स्य ऊपरें रे, पडी सुकृत आधा
॥ ध० ॥ २६ ॥ चोथे खंमें ए थई रे, निरुपम त्री

ाल ॥ पुण्यथकी लहियें सदा रे, कांति सुजश जय
गाल ॥ ध० ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पंखी मुखथी हुं पडी, जलपूंठें निरनाथ ॥ पण
जो ए जल बूडशे, तो ग्रहेशे कुंण हाथ ॥ १ ॥ मर
ण समय इंम चिंतवी, कारण अंत अनिष्ट ॥ आरा
धन हेतुक नणे, महापंच परमेष्ट ॥ २ ॥ नमस्कार
पद सांजले, जल चंको करी खंध ॥ तस मुख निरखी
छुचवे, पूर्वगत संबंध ॥३॥ रहि क्षणिक थिर चित्त
ते, दिशा एक निरधार ॥ तुरत तरंतो चालियो, जुज
जंघो विस्तार ॥ ४ ॥ अहो महोदधनी दिशा, हजी
अठे केतीक ॥ हाले नहीं जल उदरनुं, चाले इंम म
रस ठीक ॥ ५ ॥ जल रमले कमला चढी, गजखंधें दी
संत ॥ के सुरपादप वेलडी, चलगिरि शिर विलसंत
॥ ६ ॥ संशय एम पमाडती, खगकुलने गजगेल ॥ चा
ले ठांटी जल कणें, जोती जलनिधि खेल ॥७॥ सुखें सुखें
प्रवहण परें, वहतो पंथ सपिछ ॥ उदधितिलक वेला
वलें, कुशलें पोहोतो मछ ॥ ८ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ चंद्रावलानी देशीमां ॥

॥ उदधितिलक पूरनो धणी रे, कंदर्प नामें नृपा

लो, तेह समय रयवाडीयें रे, चढिउ अरिनो सालो॥ चढीयो नृपकुल शाल निशंको, दिगिडि डुमामें देवा डी मंको ॥ रंगें रमतो सायर कंठें, आव्यो वींट्यो सु भट उल्लंठे ॥ जीराजेंद्र जीरे ॥ निरखे जलनिधि खेल, पनोतो राजवी रे ॥ मूक्या जेपो डुर्दंत,सीमाडा गांज वी रे ॥ ए आंकणी ॥ १॥ पुर साहमो जब आवतो रे, जलमां नृपें दीठो ॥ निरख्यो जण सरिखो वली रे, बेठो तेहनी पीठो ॥ बेठो तेहनी करी असवारी, लोक कहे ए नर के नारी ॥ कौतुक वाध्युं जोवा सारू, मलया माणस खांते वारू ॥ जी० ॥ २ ॥ ए क जणे गरुडें चड्यो रे, दीसे जिम गोविंदो ॥ एह कवण जल मारगें रे, आवे बे स्वछंदो ॥ आवे बे नृप नांखे माठो, कोलाहलथी जाशे पाठो ॥ मौन धरी नि रखो रही घाटें, जोवे जण ठाना रही थाटें ॥जी० ॥ ३ ॥ जणथी कांइक वेगलो रे, आवे सायर तीर। अंधादर्में सुंदरी रे, उतारे ग्रही धीर ॥ उतारि ग्रह वाहिर मोडें, सुंदर थल भूमि जई ठेडे ॥ प्रणमी जियो पाठो ठानो, वली वली जोतो मुख प्रमदानो जी० ॥ ४ ॥ थयो अदृश्य महा जलें रे, रयणायरम मीनो ॥ नृपति त्यां मलया कन्हे रे,आवे विस्मय ज

ो ॥ आवे विस्मय देखी बाला, करपद आदें सकल
ाला ॥ लावण्य निधि ए कुण केम मीनें, मूकी ईंम
ह्युं राय नगीनें ॥ जी० ॥ ५ ॥ जोतो फिरि फिरि
ह्यी रे, मच्छ गयो कुंण हेतो ॥ एहज महिला पूछतां
, कहेशे सवि संकेतो ॥ कहेशे सवि निज वीतक वातें,
क्र चक्रनां व्रण जुउ गातें ॥ ए अहिनाणें सिंधुवगाही,
मीय पणुं दीसे जलमांही ॥ जी० ॥ ६ ॥ कोपवशें को
यरीयें रे, नाखी सायर पूरें ॥ के प्रवहण भांगे पडी
, मच्छवासे किहां दूरें ॥ मच्छवासें वेगी इहां आवी,
ंम कहेतो नृप पूछे मनावी ॥ सागर तिलक पुरीनो
ायक, कंदप नामें अछुं खल घायक ॥ जी० ॥ ७ ॥
नेज वीतक कहेतां हवे रे, सुंदरी कांई म बीहे ॥ कुं
ग तु किम मीनें धरी रे, आफलती दुःख दीहें ॥ आ
फलती आवी पुर एणें, हर्ष लही रमणी नृप वयणें ॥
चिंते मुज सुत रहस्यें छिपावी, राख्यो छे ते पुरी हुं
आवी ॥ जी० ॥ ८ ॥ सुकृत महाफल पाकियुं रे, मु
ज दीहा धनधन्नो ॥ पुण्य लता जागे हजी रे, जो ल
हुं पुत्र रतन्नो ॥ जो लहुं पुत्र तणी शुद्धि इहांथी,
तो चरित्रार्थ होवे दुःखमांथी ॥ पण कहीयें कांई
एरी गेरी, ए नृप मुज विहुं पखनो वैरी ॥ जी० ॥

॥ ए ॥ ए नृपनें हुं उलखुं रे, तात श्वसुर कुल देषी
॥ शीलविखंमी माहरुं रे, लेशे सुत संपेखी ॥ लेशे
सुत इंम चिंती निःशासी, बोली बाला डुःख चकासी,
मुज चिंता तुमनें छे केही, पुण्य विना रजलुं हुं एह
॥ जी० ॥ १० ॥ सेवक पजणे नृपनें रे, नारी ए डु
ख न्नारें ॥ न शके इष्ट वियोगथी रे, कहेवुं कांई कर
रें ॥ कहेवुं कांई शंके मत पूछो, डुःखमां वली वल
लागशे उंछो ॥ मीठें वयण हवे आसासी, उपचरण
कीजें कांइ खासी ॥ जी० ॥ ११ ॥ वली नृप पूछे भ
निनी रे, तो पण कहे तुज नाम ॥ मंदस्वरें क
माहरुं रे, मलया नाम निकाम ॥ मलया नाम निका
नछारो, तेहथकी न लह्यो डुःख आरो ॥ सन्मान
नृप मंदिर आंणी, सुख माजें राखी जिहां राणी
जी० ॥ १२ ॥ व्रण संरोहण उषधि रे, हळवियां व्र
तासो ॥ दासी दास समीपनें रे, थापी पृथग आ
सो ॥ आपी पृथग वसन शणगारें, संतोषी नृपें ते
वारें ॥ मुजने इंम नृपनि मनकारें, चारु नहीं आ
इंम धारे ॥ जी० ॥ १३ ॥ ते दिनथी ततपर
रे, करवा धर्म विशेष ॥ ध्यान धरे अरिहंतनुं
छांमि भ्रम विक्षेप ॥ छांमि भ्रम निक्षेप विवेकें, अ

राखे जिनधर्म सुटेकें ॥ चोथे खंमें चोथी ढाला, कांति कहे रहे सुखमां वाला ॥ जी० ॥ १४ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ एक दिवस नृपति जणे, मलयानें धरी राग ॥ ज डे मुजनें आदरी, कीजें सफल सोहाग ॥ १ ॥ पट्ट बंध तुजनें घटे, नहीं अवर त्रिय लाग ॥ उचित हेम मय मुड्रिका, अहेवा मणि पर नाग ॥ २ ॥ तुज वच नामृत चंड्रिका, चाहुं जेम चकोर ॥ बीजी दयिता मोजडी, तुं शिरशेखर गोर ॥ ३ ॥ नेह कदे रस दे नहीं, कीधो एक पखेण ॥ बे पख निवहे रस दिये, जिम रथ चक्र युगेण ॥ ४ ॥ मुज मन लागुं तुज्ज शुं, वाखुंदी न रहंत ॥ कोडि विकल्प कदर्थना, लत्ता पात सहंत ॥ ५ ॥ जो मन जाणे आदरे, तो रस व धतो होय ॥ नहीतो पण ले मुज वसू, हीये विचारी जोय ॥ ६ ॥ जाइश किहां पाने पडी, नहीं चूकुं हवे दाव ॥ हसतां रोतां प्राहुणो, एहवो बन्यो बनाव ॥ ॥ ७ ॥ सा चिंते धुर जे हवी, ठानी हीये निवट्ट ॥ वचन गर्में ते डुट्टता, नृपें करी प्रगट्ट ॥ ८ ॥ धिग मुज यौवन रूपनें, लवणिम पडो पयाल ॥ पग पग जास पसायथी, लहुं लाख जंजाल ॥ ९ ॥ बूडी कां नहीं जलधिमां,

खें उतारी कांइं ॥ नरकोपम दुःखमां पडी, हे हे पाप प
साइं ॥ १० ॥ चाहे शील विखंमवा, कामंधल
व ॥ मरण शरण जीवित थकी, अद्भुत व्रतनें इ६ ॥
॥ ११ ॥ काम कुचेष्टित मत्त नृप, कन्नो निरखी बा
ल ॥ वधिशुं तन मन संवरी,बोली इंम ततकाल ॥
॥ ढाल पांचमी ॥ ठेडो नांजी ॥ ए देशी ॥
॥ ठेडो नांजी, नांजी नांजी नांजी, ठेडो नांजी ॥
नारी नरकनी कूंमी ॥ठे०॥ आपे दुर्गति कंमी॥ठे०
अनुचित करतां मीठडा बोलां,लोक कहे हा हाजी
केई विरला हित मारग दाखे, तेहिज बाजी साज
॥ ठे०॥ १ ॥ परनारीथी संपद निकसे, विकसे अपय
माला ॥ पुरुष पतंगा कंपण एतो, विषम अगनि
जाला ॥ ठे० ॥ २ ॥ जोतां अनुपम चित्र विणा
लागो जिम मशि बिंदु ॥ तिम परदारा संगति राडु,
लिन करे गुणइंदु ॥ठे०॥ ३ ॥ धवल महाजस पट
णसाडे, परनारी रस ठांटो ॥ उत्तम कुल कीरतिप
वींधे, व्यसन महाविष कांटो ॥ ठे० ॥ ४ ॥ दंपत
र विषधरनां मुखमां, जिम जीवितनां सांसो ॥ ति
सुख शील तणी शी आशा, सेवे परत्रिय पासो ॥ठे०
॥ ५ ॥ निज नारीथी तृप्ति न लांगी, शुं विलखे मु

माटे ॥ घृत नाखे जो तृप्ति नहिं तो, शुं एतुं कर चाटे ॥ हे०॥६॥ काननना तृणमहि तुं सूतो, आग ठशीसें सलगे ॥ शीखडली साची हित जाणी, रहेनें मुजथी अलगें ॥हे०॥७॥ हीये विचारी निरख रे पेला, महिलामां शुं राचे ॥ दीसे चटुक कटुक परिणामें, इंड्रायण फल साचे ॥ हे० ॥ ८ ॥ अनृत वचनगृह कंद कलहनुं, मोक्षपथिक पग वेडी ॥ अति आसंगें अवला विलगी, नाखे कुगति चपेडी ॥ हे० ॥ ए ॥ शठ जननें पण वलगी खटके, जिम खर पूठें ढांची ॥ परदारा कारागर सरखी, निरखी रहो मत राची ॥ हे० ॥ ॥ १० ॥ कामदेवनें आहूति देवा, नारी हुताशन कुंमी ॥ कामी धन यौवन त्यां होमे, देता निजतनु पिंमी ॥ हे० ॥ ११ ॥ न्यायी नृप जिम जनक प्रजानें, पाले तिम अति रागें ॥ तुं नय ठंमी अनय मग हींमे, तो कहीयें को आगें ॥ हे० ॥ १२ ॥ चूकवतां दुष्कर जगमांहिं, साचो शील सतीनो ॥ ग्रहतां हुये दुलहो जीवंते, दग विष नाग नगीनो ॥ हे० ॥ १३ ॥ सत्यवती कोपे जे माथे, जस्म करे तस देहा ॥ तेह जणी अलगो रहे समजी, नाखे कां कुल खेहा ॥ हे०॥ ॥१४॥ वंश विशाल विमल कुल ताहारुं, जरियो ज

संदोहें ॥ तो का कुमति प्रसंगें नोला, पररमणीशुं मो
हे ॥ ढे० ॥ १५ ॥ समजाव्यो बहु नय देखाडी, श
मायें रस नरियो ॥ महा कलुष परिणतिथी धीठो, तो
पण नवि उसरियो ॥ ढे० ॥ १६ ॥ ए नारीनुं जो
पण हुं, मूकीश शील विखंभी ॥ सुखें करजो नस्म
वपुष ए, ईम चिंति थिति थंभी ॥ ढे० ॥ १७ ॥ वि
ख वदन कंदर्प नरेसर, राज काजमां वलग्यो ॥
सदा मिलन महोत्सव वन्हि, हृदय सदनमां सलग्य
॥ ढे०॥ १८ ॥ निर्जल देश पड्यो जिम माछो, ति
नृप विरही तलपे ॥ दृष्टि प्रसंगादिक मन्मथनी, द
दिशा वशि विलपे ॥ ढे० ॥ १९ ॥ आवर्जन कर
नृप तेहनें, वस्तु नवल नव मूके ॥ सती शिरोमणि
वस्तु विशेषें, सुपनंतर नवि चूके ॥ढे०॥२०॥ वदन थ
जांखुं मन पसखा, चिंता जलधि तरंगा ॥ मरणो
ख मलया थई वेगी, राखण शील सुरंगा ॥ ढे०
॥ २१ ॥ धन्य धन्य शील धरे संकटमां,जे निज म
थिर राखी ॥ ढाल पांचमी चोथे खंडें, कांतिविज
बुध नाखी ॥ ढे० ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अन्य दिवस एक सूडलो, तरुवर कोइ त

य ॥ सुख रवि फल सहकारनुं, गयणें कडयो जाय ॥ १ ॥ चंचथकी नारें खिस्युं, जिहां आगासें राय ॥ नजथी नृपना अंकमां, ते फल पडियुं आय ॥ २ ॥ चकित चित्त करतल ग्रही, चिंते एम नरपाल ॥ अवसर विण किहांथी पडयुं, ए सहकार अकाल ॥ ३ ॥ अछे एक पुरपरिसरें, छिन्नटंक गिरितुंग ॥ तास विषम शिखरें सदा, वनना अंब अनंग ॥४॥ आण्युं तिहांथी सूडले, ए फल मधुर मलूक ॥ लची पडयुं तस वदनथी, नारें एह अचूक ॥ ५ ॥ आपुं को व छन प्रत्यें, के आरोगुं आप ॥ क्षण एक एम विमासतो, नृपति थापे थाप ॥ ६ ॥ कहे सुनटने फल ग्रही, पोहोचो मलया पास ॥ अंतेउरमां आणजो, आपी अति विशवास ॥ ७ ॥ नृपति वचन तथा करी, सुनट विटल प्रसिद्ध ॥ आदरशुं तेणें जई, मलयानें फल दीध ॥८॥ विणकालें किम संजवे, ए फल अनुपम आज ॥ विस्मित ईंम नृपजणथकी, लीये अंब तजी लाज ॥ ए ॥ सत्यापी फल आपीनें, पापी नृपति धाम ॥ उल्लापी कहे रायनें, पापी निजरुत काम ॥ १० ॥ महाडुःखें दिन नीगमे,

नृपति निशि दाव ॥ एहवे समय विपाकथी, अस
हूउं दिन राव ॥ ११ ॥

॥ ढाल बठी ॥ बींदलीनी देशी ॥

॥ मलया एम विमासे, एतो नूंमो मुज मन नासे
हो ॥ नूपति मतिहीणो ॥ आणी हुं निज आवासें, का
न चढें मन विशवासें हो ॥ नू० ॥१॥ सुंदर शील
गोशे, आडुं नें अवलुं न जोशे हो ॥ नू० ॥ शा
लाखीणी खोशे, तो सूल किश्यो हवे होशे हो ॥नू
॥ २ ॥ कामी होये निर्लज्जा, तस शी लगिनी शी
ज्जा हो ॥ नू० ॥ बांधे चावी धज्जा, नवि नाणे
ज्ज अखज्जा हो ॥ नू० ॥ ३ ॥ इंम धारी वेणी ढं
ली, काढी कचमांथी गोली हो ॥ नू० ॥ आंबा र
मां चोली, बींदी करी सूधी घोली हो ॥ नू० ॥ ४
नर हूउं फीटी नारी, दिव्य रूप कला संचारी हो
॥ नू० ॥ सुंदर यौवन धारी, जाणे मन्मथनो अव
री हो ॥ नू० ॥ ५ ॥ वेगो मंदिर जालें, अंतेउर ख
ल निहाले हो ॥ नू० ॥ सूडो जिम रह्यो आलें, स
तरुनी लाल विचालें हो ॥ नू० ॥ ६ ॥ अनुत स
निहाली, थई राणी सवि कोलाली हो ॥ नू० ॥
णे संचे टाली, इंम थंली रही विरहाली हो ॥ नू

॥ ७ ॥ चिंते ए कुंण वारु, सुंदर नर अति दीदारु हो ॥ नू० ॥ ए सुरपति अवतारु, कहुं अवर पुरुष ते कारु हो ॥ नू० ॥ ८ ॥ वसुधाथी नीसरियो, कोइ प्रत्यक्ष ए सुरवरियो हो ॥ नू० ॥ विद्याधर गुणें भरियो, के सिद्ध पुरुष अवतरियो हो ॥ नू० ॥ ए ॥ पी डी काम विकारें, निहणे त्यां नयण प्रहारें हो ॥नू०॥ वेधी आरें पारें, तस रूप महारस धारें हो ॥ नू० ॥ ॥ १० ॥ चामिक संशय मेगे,जोखें कुंण गोंखे ए बेगे हो ॥ नू० ॥ अंतेउर वशि एणें, कीधुं समजावी नेणें हो ॥ नू० ॥ ११ ॥ नृपतिनें वीनवियो, आव्यो नृप त्यां धसमसियो हो ॥ नू० ॥ नीरुपम तरुणो दीगें, अति शांत सुखासन वेगे हो ॥ नू० ॥ १२ ॥ कुंण ए पेगे सौधें, चिंते नृप चढिउ क्रोधें हो ॥ नू० ॥ मलया वदले योद्धें, कुण मूक्यो मुंज अवरोधें हो ॥ नू० ॥ ॥ १३ ॥ नृपतें तेह दवावी,पूछया नड नृकुटी चढावी हो ॥ नू० ॥ ते कहे मलया आणी, न गई क्यां वाहिर जाणी हो ॥नू०॥१४॥ वेगा ठां घर बारें, राजेसरजी निरधारें हो ॥ नू० ॥ कहे नृपति चित्त धारी, नर ए थयो तेहीज नारी हो ॥ नू० ॥ १५ ॥ नृप पूछे जई पासें, तुम रूप किश्युं ए नासे हो ॥ नू० ॥ ते कहे

जेहवुं देखो, तेहवो हुं इहां शुं लेखो हो ॥ नृ० ॥
॥ १६ ॥ नहिं खेचर अणुहारो, सिद्ध साधकथी पण
न्यारो हो ॥ नृ० ॥ मलयानां इणें उमही, पहेर्या
वे पट ते तिमही हो ॥ नृ० ॥ १७ ॥ में रति रस
सागंतें, नर रूप धर्युं कोई तंतें हो ॥ नृ० ॥ जाणुं म
लया एही, वेगी बलवानें सनेही हो ॥ नृ० ॥ १८ ॥
महीपति कहे सेवकनें, इंम अंतेउरमां न बने हो
॥ नृ० ॥ करशे अनरथ गाढो, कर साही बाहिर का
ढो हो ॥ नृ० ॥ १९ ॥ मलय सुंदरी इति नामें, का
ढ्यो बहि भुज ग्रही तामें हो ॥ नृ० ॥ बाह्य गृ
नृप राखे, एक दिन बली एहवुं भाखे हो ॥नृ०॥ २०॥
रूप कर्युं शे योगें,नरनुं कुण तंत्र प्रयोगें हो ॥ नृ० ॥
हतुं स्वाभाविक जेहवुं, थाशे किम क्यारें तेहवुं
॥ नृ० ॥ २१ ॥ तव चिंते सा हियडामें, विलखे
जोगनें कामें हो ॥ नृ०॥ मौन कर्यानी वेला, रहेशे
की एहनी मेला हो ॥ नृ० ॥ २२ ॥ मलया बाली
ती, नृपतिनी मति गति बीती हो ॥ नृ० ॥ रही
ये रंगें, कांतें कही ढाल थमंगें हो ॥ नृ० ॥ २३

॥ दोहा ॥

॥ कली कली नृप पूछीडं, हली न मेले मौट

तीखो लागो ते तदा, जिम बावलनो नीट ॥ १ ॥ मलयकुमरी ऊपर हूउं, रोषारुण नूपाल ॥ मंमावे तन तर्जना, दिन दिन बूरे हवाल ॥ २ ॥ ताडे ताते ताजणे,मारे लाठी लात ॥ मुक्की थली चूकी दीये,पाडे नाडी घात ॥ ३ ॥ घरसे कर्कश नूतलें, आकर्षे पग बंध ॥ हर्षे पर्षद निरखतें, धर्षे दे पग खंध ॥ ४ ॥ सिंचे नीचें कूपमां, निहणे पुंगि निबंध ॥ मोटे सोटें चोटीनें, नमें करे तन संधि ॥५॥ नृपसुत ईम ताडी जतो, चिंते हे फिरतार ॥ कहीयें इहांथी नीसरी, ल हीशुं छःखनो पार ॥६॥ एक दिवस निड्रावशें,पडयो निरखी पुहरात ॥ रहस्यपणे पुर बाहिरें, वहे कुमर मधरात ॥ ७ ॥ पथिशालायें वीशम्यो,धरी मरण मन आश ॥ दीठो जमत इहां तिहां, अंध कूप तस पा स ॥ ८ ॥ तस कंठें ऊनो रही, चित्त चिंते दिलगीर ॥ पडशुं जो कर नूपनें, तो दहेशे वे पीर ॥ ए ॥ शरण नहिं महारे इहां,मरण विना कोइ ठेर ॥ इष्ट संनारी आपणो, ईम वोली तिण गेरे ॥ १० ॥

॥ ढाल सातमी ॥ उधवजी कहेशो बहु न कहि ॥ ए देशी ॥

॥ प्रजुजी छःखणी कांई हुं सरजी ॥ ए आंकणी

पीयु विरहो तींखी कातरणी,काटी करे हिय पूर जी॥ प्रीतम विण न शके कोइ सांधी, लाख मले जो स जी ॥प्रञ्ज०॥१॥ वाहालानो मुज देई वीगो, दुःख क कटमां नाखी ॥ जाग्य रहित ज्यां त्यां हुं जटकुं, मधु जूलि जिम माखी ॥ प्र० ॥ २ ॥ दैव अटारा महाबल सार्थे, ए जव दीधो वियोगो ॥ परजव कंत पणे मुज तेहनो, मेलवजे संयोगो ॥ प्र० ॥ ३ ॥ कूआ शिर अ जी नररूपें, देती इम उलंजा॥ सज्ज हूइ कूपें ऊंपावा, प्रेम जरी निरदंजा ॥ प्र०॥ ४ ॥ एहवे त्यां दयिताने जोतो, महबल ते दिन शेषें ॥ पहियशालमां रातें सूतो, निंद जली नवि लेशें ॥ प्र० ॥ ५ ॥ हवे जाउं जोवा दिशि केही, इंम चिंतवतो जागे॥ मलयायें जे दीया उलंजा, ते कानें जई वागे ॥ प्र० ॥ ६ ॥ एह अ पूरव वचन प्रियानां, सरखा सुणतां लागे ॥ प्राण त्यागनां सूचक प्राहें, पडछंदे नन मागें ॥ प्र० ॥ ७ ॥ तंत्रमयी कवचो त्यां जडकी,कहेतो इंम मुख वाणी॥ निफल महा साहस रस खेलें, मरण लीये कां ता णी ॥ प्र० ॥ ८ ॥ शरण हजो मुज महबल पीयुनुं, इंम कही ऊंपा दीधी ॥ कुमरें पण तस पूवें तिमहि ज, ते अनुजरणा कीधी ॥ प्र० ॥ ९ ॥ स्फुट चेतन

नर मूर्छा जाखो, लघु सादें ईम नांखे ॥ मुज अब लानें ए दुःखमांथी, मदबल विण कुण राखे ॥ प्र० ॥१०॥ कुमर जोवे विस्मित ते वचनें, कर पद तास उलासें ॥ सजग थयो नर मूर्छा नाठी, वेगे काढी पासें ॥ प्र०॥ ११ ॥ कुमर विमासे किणे संबंधें, ईणे मुज नाम संजाख्यो ॥ के मुज नामें कोइ सनेही, दुःखमां हियडे धाख्यो ॥ प्र० ॥ १२ ॥ पूछ्युं कहे सालुं कुण तुं छे, कां पडियो ईम कूपें ॥ उलखीनें स्वरनें अनुसारें, पुरुष कहे अति चूंपे ॥ प्र० ॥ १३ ॥ कुण तूं छे किम आयो कूपें, पडियो कां मुज केडें ॥ इत्यादिक पूछी सहु पाछें, काम करो एक नेडें ॥ प्र० ॥ १४ ॥ निजथूंके मांजो मुज विंदी, नांखुं जिम सखरूप ॥ तिम कीधुं तेणें तव मलयानुं, प्रगट हूउं धुर रूप ॥ प्र० ॥ १५ ॥ कूप नीतिथी एहवे नागें, बाहिर वदन विकास्युं ॥ अंधकूपमां तस मणि तेजें, दूरें तिमिर विणास्युं ॥ प्र० ॥ १६ ॥ डलेज दयिता दर्शन देखी, उत्कंठयो सरवंगें ॥ सहसा आगल आवी क्यांथी, चिंते ईम उमंगें ॥ प्र० ॥ १७ ॥ विण आनें चूग पर मेहा, थातां संगम नीको ॥ अण चिंतित साजन मेलाथी, बीजो सुख सवि फीको ॥ प्र० ॥ १८ ॥

कहीनें नयणें जल जरतो, पूछे तस विरतंत ॥
कहे हियडे डुःख पूरी, धुरथी व्यतिकर तंत ॥
॥ १ए ॥ कहे पिउ तें संकट सायरमां, पेसी डुःख
नुखंगें ॥ जोग्य योग्य सुकुमाल शरीरें, कष्ट
किम अंगें ॥ प्र० ॥ २० ॥ तुज पासेंथी जे
ऊडपीनें सुत लीधो ॥ अछे किहां ते सा कहे शेठें,
क्यो इहां घरे सीधो ॥ प्र० ॥ २१ ॥ लहेस्यो किम
दन शुद्ध सूधी, कुमर कहे थिर थापी ॥ थाशे स
होशे जो इहांथी, बूटक वार कदापि ॥ प्र० ॥ २२ ॥
मुज विरहें वासर किम विरम्या, पूछ्युं वली दयितायें ॥
आप चरित्र सघलां ते जांखे, कुमर यथा इछायें ॥
॥ प्र० ॥ २३ ॥ सुख संजापण करतां बेहु, रजनी त्य
निरवाहे ॥ ढाल सातमी चोथे खंडें, जलणी कांतें
माहें ॥ प्र० ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रयणी गई प्रगडो हूउं, ऊग्यो रवि अनुरूप ॥ यनु
जोतो राजिउ, आवे जिहां छे कूप ॥ १ ॥ निरखी वं ज
कूपमां, बोल्यो धरणी नाथ ॥ जुउं सहजरूपें त्रिया
विलसे छे किण साथ ॥ २ ॥ अहो रूप रति सुन
ता, यौवन गुण विज्ञान ॥ जुगती जोडी जोडतां,

ह्यो नहिं जगवान ॥ ३ ॥ इंद्राणी सुरपति परें, रति रतिपति उपमान ॥ शोजे अनुपम जोडलुं, अनुगुण रूप समान ॥ ४ ॥ अनय हुंजो तुमनें त्रिन्हें, आवो कूपक कंठ ॥ दर्पाधल कंदर्प नृप, कहे राग रस बंठ ॥ ५ ॥ नृपें विद्दुनें काढवा, कीधो मांची संच ॥ तव पीवनें नृपति तणो, मलया जणे प्रपंच ॥ ६ ॥ रस राच्यो आव्यो इहां, मुज पासें कम जात ॥ कीधी कोडि कदर्थना, कामांधें दिन रात ॥७॥ मुज रूपें मोह्यो निलज, न गणे कुलनी कार ॥ आकर्षी निरखी निखर, हणशे तुज निरधार ॥ ८ ॥ कुमर कहे जो कूपथी, नीसरशुं कुशलेण ॥ शिरें सवाई वालशुं, यथा योग्य करणेण ॥ ९ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ थारे माथे पचरंगी पाग,
सोनारो छोगलो मारुजी ॥ ए देशी ॥

॥ प्रीतम कहे हरखी मांची निरखी आवती रूडी जी ॥ श्यामा चढि बेसो आणो अंदेसो श्यावती रू० ॥ कुशलें उतरीयें विपत्ति उद्धरीयें रंगमां रू० ॥ वेगें इंम कहेतो दोरी ग्रहेतो मंचमां रू० ॥ १ ॥ प्रमदा सपति जी बेठी बीजी मांचीयें रू० ॥ नृपति कहे जणनें पहेली धणनें खांचीयें रू० ॥ क्रम उचें नीचें

जोरशुं रू० ॥ गयणंगण गहेरो कीधो बहेरो सोरशुं रू० ॥ २ ॥ आतम उत्खंभक जाणे करंभक सापना रू० ॥ निरखंत नराणा कलश पूराणा पापना रू० ॥ अंध कूपक आरें आवे करारें ज्यां त्रिया रू० ॥ नूपे लहि ताघा वे कर आघा ताकिया रू० ॥ ३ ॥ सुख मांहिं उतारी बाहेर नारी राजिये रू० ॥ वेगी पिउ विहुणुं ऊणुं डुणुं मन किये रू० ॥ महबल तस केडे आव्यो नेडें कांठडे रू० ॥ कोपें कलुषाणो नरनो रा णो दीठडे रू० ॥ ४ ॥ चिंते एह रूपें अधिको मोंघे उपीयो रू० ॥ लावण्य पयोधि नारियें शोधि वर कीयो रू० ॥ मुज मीटथी रमणी भावी जमणी ए जुवे रू० ॥ मीठो गोल पामी खोलनो कामी को हुवे रू० ॥ ५ ॥ मादलिउ मारयो स परिवारयो गोठिनो रू० ॥ नाखुं अं ध कोठीमां, जिम पोठी पोटिनो रू० ॥ थापी इंम की कापी मूकी दोरडी रू० ॥ बंधनथी तूटी मांचे त्रूटी उचडी रू० ॥ ६ ॥ पडिउ ततखेवा खातो ठेब कोरनां रू० ॥ नीचें ढल नाठा लागा कांठा जोरन रू० ॥ नारी तस पूत्रें पडवा कठे साहसें रू० ॥ दें कर ताली रखी वालीनें तिसें रू० ॥ ७ ॥ आणे आवासें राय प्रकासे तेहनें रू० ॥ कुंण ए रस नी

थो तें आवरियो जेहनें रू० ॥ पूठो नवि छोले आंसू
ढोले दुःखनां रू० ॥ निःश्वास विछूटे आहार न खोटे
दुरूमना रू० ॥ ८ ॥ मूर्छा लही जागी कहेवा लागी
एहवो रू० ॥ नोजन पिउ पाखें न करुं जाखें जेहवो
रू० ॥ मूकी एक महेलें थाप्या गयलें पाहरु रू० ॥
वेगो जइ काजें राज समाजें पाधरु रू० ॥ ए ॥ था
शे किम कूपें नाख्यो नूपें नाहलो रू०॥ नीतरशे क्यां
थी किम करी त्यांथी वाहलो रू० ॥ चिंता चित्त धर
ती हइडुं नरती शोगमें रू० ॥ आसंगल गाढो कर
ती दाहाडो नीगमे रू० ॥ १० ॥ रति त्यां थण न
हेती, विरहें दहती देहडी रू० ॥ निशिमां एक मा
र्गें नूतल नागें ते पडी रू० ॥ फंकी विपधरियें रोषें
नरियें क्यांहिंथी रू० ॥ वोली थहि विलगो न रहे
अलगो आहिंथी रू० ॥ ११ ॥ नोकार संनारे जिन
मन धारे थिर मनें रू० ॥ पोहरायत आया हणवा
धाया नागनें रू० ॥ जीवितथी टाल्यो नाग उछाल्यो
वेगलो रू० ॥ विरतंत सुणायो नूपति आयो व्याकुलो
रू०॥१२॥ उपचार घणेरा कीधा नलेरा जे घटया रू०॥
साहमा विप जोला लहेर हिलोला कमटया रू० ॥
इंडी थयां शूनां चेतन ऊना घारणें रू० ॥ एक सा

उसासो मंकित मासो क्षण क्षणें रू० ॥ १२ ॥ ते
डुःख निशि ग्रहेती न लहे वहेती विश्रमो रू० ॥ क
रवा तन ताजी प्रगट्यो गाजी प्रहसमो रू० ॥ था
को उपचारें नृप तिवारें अति डुःखें रू० ॥ पडहो
वजडावे साद पडावे जन मुखें रू० ॥ १४ ॥ देस
कंन्या बंधुर रणरंग सिंधुर तेहनें रू० ॥ आपे नृप रा
जी जे करे साजी एहनें रू० ॥ करता पुर फेरी शेरी
शेरीयें फस्या रू० ॥ त्रिक चाचर चोकें नृप पथ थोकें
संचस्या रू० ॥१५॥ थानक सवि नटकी पाछा वटकी
नें वल्या रू० ॥ नृप नवननी वाटें आवे उच्चाटें खल
नल्या रू० ॥ चोथे खंडें चावी ढाल सोहावी आठमी
रू० ॥ कहे कांति उमंगें रसने रंगें ए गमी रू० ॥१६॥

॥ दोहा ॥

॥ एहवे नर एक अभिनवो, पडह छबे त्यां आय ॥ नृप
सुभटें नृपति कन्हें, आण्यो तेह बुलाय ॥ १ ॥ नि
रखत मुख नृप उलखे, अहो पुरुषनें सांहिं ॥ कूप
थकी किम नीसरी, आव्यो दीसे आंहिं ॥ २ ॥ दैव
हल्यो मुज वैरीयें, कीधो केण कुकज्ञ ॥ मुजनें अज
गो जाणीनें, काढ्यो ए निर्लज्ज ॥ ३ ॥ ईम चिंति

अण ऊलखू, थयो गोपिताकार ॥ करवा स्वारथ सा
धना, बोल्यो वचन उदार ॥ ४ ॥

॥ ढाल नवमी ॥ गाढा मारूजी, जमर पीवे जाती
वगें ॥ अमली पीवे कलाल रे ॥ गाढा मारु अति
उनमादी माहारो साहेबो ॥ ए देशी ॥

॥ मोरा नेहीजी, अम वखतें आव्या नजें, उपकार
क सत्ववंत हे ॥ मो० ॥ करुणा ते कीधी साहिबे,
मोहनजी मतिमंत रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ तुम
सरिखे आजूपणें, पुहवी तल शोभंत रे ॥ मो० ॥
॥ क० ॥ १ ॥ मो० ॥ मलया विप वालण तणुं, काम
करो लेई हाथ रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ रणरंग आपुं
हाथियो, जनपद तनुजा साथ रे ॥ मो० ॥ क० ॥
॥ २ ॥ मो० ॥ जाखिणुं लोकां विचें, ए ठे यशनुं
काम रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ वली हुं मुख बो
ल्यायकी, आपीश अधिक इनाम रे ॥ मो० ॥ क० ॥
॥ ३ ॥ मो० ॥ महाबल कहे मुजनें इहां, आपीश
मां तुं कांई रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ मागुं एहिज
सुंदरी, जो पण निर्विप थाई रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ४ ॥
॥ मो० ॥ आवी देशांतरथकी, नहीं केहने संबंध रे
॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ एहवी मुजनें आपतां,

ज्ञो कुण प्रतिबंध रे ॥मो०॥क०॥५॥मो०॥
यो महीपति, कहे तुज देईश तेह रे ॥
॥ मो० ॥ बीजां पण मुज केटलां,काम
ह रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ६ ॥ मो० ॥ जे
म ते, करिनें तुरत सर्व रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो०
जाईश निज नारजा, चिंते एम सगर्व रे ॥
॥ क० ॥ ७ ॥ मो० ॥ नृप वचन अंगी
मलया समीप रे ॥मो०॥क०॥मो०॥ मूर्छागत
त्रिया, मूकी गरल उद्दीप रे ॥ मो० ॥ क०
॥मो०॥ विषम अवस्था नारीनी, जोतां जलजर
ण रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो०॥ रोषें मन कातुं करी,
से इंम वली वयण रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ए ॥ मो०
त चेतन ए सर्वथा, न लिये श्वास लगार रे ॥
॥ क० ॥ मो० ॥ तोपण अंगें आगमी, करशुं
प्रतिकार रे ॥ मो० ॥ क० ॥ १० ॥ मो० ॥
सर निषेधी लोकनो, धरणी करी जल सिक्त रे
॥ क० ॥ मो० ॥ तिमद्विज नृपने सेवकें,
थया सुप्तिक्त रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ११ ॥ मो०
नृपति बाहें जन सवे, बेठा बाहिर आय रे ॥मो०
॥ क० ॥ मो० ॥ कुमरें मंडल मांडियुं, विष

नो उपाय रे ॥ मो० ॥ क० ॥ १२ ॥ मो० ॥ मंमन
मां पूजी विधे, ध्यान धरी महा मंत रे ॥ मो० ॥ क० ॥
॥ मो० ॥ कटिपटमांथी काढीउं, विष वारक मणिरत
त रे ॥ मो० ॥ क० ॥ १३ ॥ मो० ॥ झाली मणि
जल सिंचीयुं, विकस्यो लोयण लेश रे ॥ मो० ॥ क० ॥
मो० ॥ ढांक्या ज्यों रवि तेजथी,कमल हशे एक दे
श रे ॥ मो० ॥ क० ॥ १४ ॥ मो० ॥ मुखमां जल
सिंच्युं तदा, वलिया सास उसास रे ॥ मो० ॥ क० ॥
॥ मो० ॥ लोचन पूरां उघड्यां, कमल ज्यों पूर्ण प्रका
श रे ॥ मो० ॥ क० ॥ १५ ॥ मो० ॥ सर्वंगे जल सिं
चीयुं, पायुं उदक अशेष रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥
करी आलस मोडती, करती हाव विशेष रे ॥ मो० ॥
॥ क० ॥ १६ ॥ मो० ॥ पउधारया प्रभुजी इहां, कू
पथकी किण रीत रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ साजी
मुजनें किम करी, पूछे सा धरी प्रीत रे ॥ मो० ॥ क० ॥
॥ १७ ॥ मो० ॥ कुमर कहे मांची थकी, पडीयो हुं
जई हेठ रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ त्यां मणि तेजें
एक शिला, दीठी मणिधर हेठ रे ॥ मो० ॥ क० ॥ १८ ॥
॥ मो० ॥ ठाने जइ मूठी हणी, उघडियुं तदा बार रे
॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ मणिधर सलक्यो पर हु

पेठो हुं तिण गार रे ॥ मो० ॥ क० ॥ १९ ॥ मो० ॥
साहस धरि हुं चालीयो, विवरें धरणी मांहिं रे ॥
मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ विषधर दीवीधर थयो, आ
वे पूठें उवांहिं रे ॥ मो० ॥ क० ॥ २० ॥ मो० ॥ ए
ह सुरंगा चोरनी, तिण वली बीजुं बार रे ॥ मो० ॥
॥ क० ॥ मो० ॥ होशे एहवुं चिंतवी, आयो कीधो
प्रचार रे ॥ मो० ॥ क० ॥ २१ ॥ मो० ॥ तेहवे मु
ख आगें थई, मणिधर नागो तेत रे ॥ मो० ॥ क० ॥
॥ मो० ॥ श्याम तिमिरकुल उहलस्युं, जिम जडता
जड चेत रे ॥ मो० ॥ क० ॥ २२ ॥ मो० ॥ अनुसा
रें हुं चालतो, आयडीयो जई ठार रे ॥ मो० ॥ क० ॥
॥ मो० ॥ चरणें हणी वीजी शिला, नाखी उलटी ति
वार रे ॥ मो० ॥ क० ॥ २३ ॥ मो० ॥ बार विवर
उघड्युं, नीसर्यो बहि आव रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो०
जन्म्यो गर्भावासथी, चिंत्युं ईम अकुलाय रे ॥ मो०
॥ क० ॥ २४ ॥ मो० ॥ आवेगें चाल्यो वही, जो
अलिगनि लीक रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ त्रिजा
दीठो अली, वेगो थई निर्भीक रे ॥ मो० ॥ क० ॥ २५
॥ मो० ॥ मंत्र जपी ते वश कीयो, लीधो तस म
ग रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ गिरि नदीयें

शानमां, दीसे तेह सुरंग रे ॥ मो० ॥ क० ॥ २६ ॥
॥ मो० ॥ पश्यतहर दीसे मूढ,चिंती इम शिल तेय रे
॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ ढांकी बार सुरंगनें, नीसरियो
उमहेय रे ॥मो०॥क०॥२७॥मो०॥ठाने पुरमां पेसतां,
निसुण्यो पडह निनाद रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ पू
रवुं जाण्युं ताहरें, व्याप्यो विष उन्माद रे ॥ मो० ॥
॥ क० ॥ २८ ॥ मो० ॥ तुज विरहो अण सासही, प
डह उस्यो पण वंध रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ मणि
योगें साजो करी, गाल्यो विषनो गंध रे ॥ मो० ॥
॥ क० ॥ २९ ॥ मो० ॥ वांध्यो वचनें सांकडो, धीगे
पण नरनाह रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो०॥ देशे तुजनें सु
ज नणी, हवे न करे मन दाह रे ॥ मो० ॥ क० ॥
॥ ३० ॥ मो० ॥ पीयु वचनें रंजी त्रिया, चोथा खं
ड विचाल रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ कांतिविजय
नांखी रसें, निरुपम नवमी ढाल रे ॥मो०॥क०॥३१॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमरें नृपति तेडीउ, आव्यो अधिक प्रमोद ॥
निरखे बाला हरखथी, करती वात विनोद ॥ १ ॥ शिर
धूणी नृपति जणे, अहो शकिनो खेल ॥ अम डुःख
साथें जेणपें, फेस्यो गरल ववेल (प्रवाह) ॥ २

अति विस्मित वसुधाधवें, पूछ्युं नाम निवेश ॥ ति
पुरुष इति तेहनी, निज कहे नाम निर्देश ॥ ३ ॥ जि
मी नहीं गत वासरें, विरची बाला एह ॥ उचित जमा
डो तेह जणी, कहे नृप ससनेह ॥ ४ ॥ पय पाकुं सा
कर रसें, पावे कुमर सहाय ॥ स्वस्थ हुई वातो करे,
ते नृप सुतनी साथ ॥ ५ ॥

॥ ढाल दशमी ॥ पंखीडा रे संदेशडो ॥ ए देशी ॥

॥ कुमर जणे नृपति प्रत्यें, करो शीख सुजाण ॥ द्यो
मलया मुजनें हवे, पालो वचन प्रमाण ॥ १ ॥ हुं रे
विदेशी पंखियो ॥ न सहुं ढील लगार, मुज मन क
ह्युं इहांथकी, चालण निरधार ॥ हुं० ॥ २ ॥ कांई
विचारो राजिया, करो कोडि विषाद ॥ रुसवा थाशो
लोकमां, मूक्यां मरयाद ॥ हुं० ॥ ३ ॥ रवि जलधर
जलनिधि शशी, मूके नहिं स्थिति आप ॥ तिम नृप
पण नवि उथपे, कुलवट स्थिति थाप ॥ हुं० ॥ ४ ॥
आपो मलया एहनें, थाउ राजि प्रसन्न ॥ दंपती इ
खियां मेलवी, करो सत्य वचन्न ॥ हुं० ॥ ५ ॥ सम
जावे इम नृपनें, पुरनां लोक समस्त ॥ आपूछ्यो ते
सांभली, कोपें मदमस्त ॥ हुं० ॥ ६ ॥ क्षण एक अ
ण बोल्यो रही, मांडे नीली वात ॥ है है निठुर पण

तणी, जूठं नूमी घात ॥ हुं० ॥ ७ ॥ पूछे नरपति सिद्धनें, लोयण कलुषाय ॥ कहे रे ताहरे एहवुं, श्यो सगपण थाय ॥ हुं० ॥ ८ ॥ सिद्ध कहे धण माहरी, पामी मुक्त विजोग ॥ देवदयाथी माहरो, लह्यो आज संयोग ॥ हुं० ॥ ९ ॥ अवनीपति आखे वली, कर एक मुज काम ॥ ढील नहीं देतां पछें, तुजनें एह वाम ॥ हुं० ॥ १० ॥ दुःखे शिर नित्य माहरुं, तेहनो एह उपाय ॥ लक्षणधर तुज सारिखो, नर आवे च जाय ॥ हुं० ॥ ११ ॥ चयमां वाली तेहनुं, कीजें भस्म शरीर ॥ लेपें शिर पीडा हरे, तेह भस्म सनीर ॥ ॥ हुं० ॥ १२ ॥ ऊंषध ए तुजने जलें, करवुं माहरे काज ॥ सोंप्युं दुष्कर काम ए, मारण नरराज ॥ हुं० ॥ ॥ १३ ॥ लुब्ध्यो मलया देखीनें, निर्लज ए नरराज ॥ मुजनें हणवा कारणें, सोंपे एहवुं काज ॥ हुं० ॥ ॥ १४ ॥ अवमें मुजनें सूचव्युं, पहेलुं पण एह ॥ करशुं जो मृत्यु आगमी, तो पण देशे छेह ॥ हुं० ॥ १५ ॥ मरण विना कुंण करी शके, दुःख संभव काज ॥ अंगीकर्युं में धुरथकी, न कर्यां मुज लाज ॥ हुं० ॥ १६ ॥ एम धारी साहस ग्रही, बोल्यो त्यां नर सिद्ध ॥ चिंता न करो राजिया, कारज एमें लीध ॥ हुं० ॥ १७

डुर्जन उंबध ताहरुं, करवुं में निरधार ॥ तुं पण प्रम दा आपतां, मत करजे विचार ॥ हुं० ॥ १८ ॥ फो गट गाल फुलाविनें, कहे नूप हसंत ॥ उपकारकनें आपतां, कहो शुं खटकंत ॥ हुं०॥ १९ ॥ कठिन हृदय नरराजियो, हरख्यो मन पापिष्ट ॥ राखे दंपती जूजू आं, जण आपी निःकृष्ट ॥ हुं० ॥ २० ॥ मंदिर आवे मलपतो, करतो रस चाल ॥ दशमी चोथा खंमनी, कांतें कही ढाल ॥ हुं० ॥ २१ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमर हवे नृपनें कहे, करवा उचित विधान ॥ काठ शकटऊपरि जोतरी, मूके ज्यां समशान ॥ १ ॥ निरखी विषम कर्त्तव्यता, डुःखियां पुरलां लोक ॥ हाहा नरमणि विणसशे, इंम कहे थोकें थोक ॥ २ ॥ ठे हलां आनूषण धरी, वींटयो राज सुनट्ट ॥ पश्चिम पो होरें पितृवनें, पोहोचे कुमर प्रगट्ट ॥ ३ ॥ व्यतिकर लोकथकी लहे, मलया पियुनो आप ॥ संतापी विर हानलें, विधविध करे विलाप ॥ ४ ॥

॥ ढाल अगीआरमी ॥ कठ कलालणी नर घ डो हे, दारुडारो मूल सुणाय ॥ ए देशी ॥

॥ धिग मुज यौवन रूपनें हे, धिग मुज जनम अ

काथ ॥ आपद पडियो जेहथी हे, मोहें लोनाणो ना
थ ॥ प्राण प्यारो वलवा हे कांई जाय०॥ १ ॥ पहेलो
दुःख सागरथकी हे, तरियो तुं समरछ ॥ ए वेलामां
साहेवा हे,कुंण ग्रहशे तुज हथ ॥प्रा०॥२॥ काठ कुठी
मां नीडियो हे, पंजरमां जिम कीर ॥ नीसरशे क्यां
थी तदा हे, मुज नणदीरो वीर ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ कर सा
ही नृपतिनहें हे, खेप्यो तुं चयमांहि ॥ सहेशे कि
म पीडा घणी हे, कीधी पावक दाहि ॥ प्रा० ॥ ४ ॥
क्यां आव्यो इहां मोहना हे, मलियो कां मुज आय ॥
कांई जीवाडी पापिणी हे, हुं हुइ जे दुःखदाय ॥
॥ प्रा० ॥ ५ ॥ विरहो ताहरो प्रीतमा हे, हियडे ये
घसि घाव ॥ नेह निठुर नाहर थयो हे, खेले कठिन
कुदाव ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ आशाथी तें त्रोडीयां हे, ए वेला
जगदीश ॥ तरछोडी अधमारगें हे, काढी पूरी रीश
॥प्रा० ॥ ७॥ प्रीतडली होयडे वसी हे, लागे मीठी गा
ढ ॥ साले त्रूटी अधरसें हे, जिम तीखी यमदाढ ॥
॥ प्रा० ॥ ८ ॥ पडजो शिल शिर तेहनें हे, पाड्यो
जेणे वियोग ॥ परिजन तेहनां रखडजो हे, जिम का
प्यां पल फोग ॥ प्रा० ॥ ए ॥ विलपत प्रमदा खीज
ती हे, दुःख पूरी महे मूर ॥ पीयुनें लोयण आंसुयें—

हे, द्ये जल अंजली पूर ॥ प्रा० ॥ १० ॥ निरखुं नय
णें नाहलो हे, तो मुज नोजन वात ॥ बेगी एहवुं
आदरी हे, करवा आतम घात ॥ प्रा० ॥ ११ ॥ नृप
नंदन समशानमां हे, इहां तिहां निरखी गोर ॥ खडके
इच्छित थानकें हे, मोहोटी चय एक कोर ॥प्रा०॥१
साहस देखी तेहवुं हे, पुर जण मलिया धाय ॥ दिल
गिरी धरता हिये हे, नूपतिनें कहे आय ॥ प्रा० ॥
॥ १२ ॥ देव विचास्या विण ईस्यो हे, मांड्यो कवण
अन्याय ॥ राखमिशें पङ्गुनी परें हे, हणियें नहीं
छराय ॥ प्रा० ॥ १४ ॥ मलया नापो तो जलें हे
पण मारो कां एह ॥ अम वचनें मूको हवे हे, करी
रुणा गुणगेह ॥ प्रा० ॥ १५ ॥ नूप नणे ए नाि
नी हे, मुजने नवि निरखंत ॥ उपरांठी कागी हुवे हे
जो नर ए जीवंत ॥ प्रा०॥ १६ ॥ ए बाला विण म
हरे हे, न पडे जक पल मात ॥ मत पडजो ए वा
सां हे, सो वातें एक वात ॥ प्रा० ॥ १७ ॥ निर्द
तव तिहां बोलीयो हे, जीवो नामें प्रधान ॥ शी एहन
तुमनें पडी हे, मेलो गो इहां तान ॥ प्रा० ॥ १८
पोतानें पापें पची हे, मरशे जो डःख आणि ॥ त
नगरीमां केहनें हे, ए होशे घर हाणी ॥ प्रा० ॥ १९

राजानें मंत्री इहां हे, मलिया पापी दोय ॥ तो ते हवा नररत्ननें हे, कुशल किहांथी होय ॥ प्रा० ॥ २० ॥ गरमिशें आरंभियो हे, अनरथ विश्वा वीश ॥ सहि डुर्मति ए बेहुनें हे, ठारज पडशे शीश ॥ प्रा० ॥ २१ ॥ गलतां माखी जीवती हे, को करे एहवुं काम ॥ अन्योन्य कहेतां जण तिके हे, पोहोता निज निज ठाम ॥ प्रा० ॥ २२ ॥ अकल कला कोई केलवी हे, पिसु लेहेशे जयमाल ॥ चोथे खंमें अग्यारमी हे, कांतें पनणी ढाल ॥ प्रा० ॥ २३ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ इए संसारी आपणो, परवरियो नडवृंद ॥ दक्षिण करें प्रदक्षिणा, चय पाखलि नृपनंद ॥ १ ॥ पुरजन मुख हाहा रवें, आपूखो आकाश ॥ लोक हृदय कसणें करे, शोक परीक्षा न्यास ॥ २ ॥ सहसा नृपसुत चतपति, पडे चितामां जाम ॥ ततक्षण पुरजन नेत्रथी, पसरयां आंसू ताम ॥ ३ ॥

॥ ढाल बारमी ॥ तडाके तोडी ठे डुःख माला ॥ ए देशी ॥

॥ निरखे सुनट विकट चयमांहि, पेठो कुमर जि वारें ॥ चिहुं दिशि प्रबल अनल सलगाडयो, पसरी झाल तिवारें ॥ १ ॥ फबाकें जलकी ठे दिगमाला,

तापें कटकण लागा कार ॥ चमाकें चमकी छे
बाला ॥ ए आंकणी ॥ धोरणी धूम तणी त्यां प्रसरी,
दिशिदिशि अंबर छायो ॥ श्यामघटा करी पावक रूप,
जाणे पावस आयो ॥ क० ॥ २ ॥ वन्हि पतंग उडे
तगतगता, खजुआ जिम चिहुं ओरें ॥ जाल वीज
ज्युं चिलकण लागा, अनल जलदनें जोरें ॥ क० ॥
॥ ३ ॥ सात जीन शतजीन थईनें, नलतल चाट
लागो ॥ तस उद्दीपक पवनसहायी, विशमो थई त्य
वागो ॥ क० ॥ ४ ॥ धीरपणुं पुर लोक प्रशंसे, ता
हा रव अण सुणतां ॥ ज्वलत रह्यो विश्वानर देखी
सुभट वत्या गुण थुणता ॥ क० ॥ ५ ॥ जिम को
तेणें तिम नृप आगें, नांख्युं सकल वनावी ॥ नृ
प्रधान विना पुरजननें, ते निशि निंद न आवी ॥क०
॥ ६ ॥ हुउं प्रभात विना तनु तारा, ढांक्या सूर प्रभ
वें ॥ तव शिर रह्या पोटि धरीनें, आवे सिध सल
वें ॥ क० ॥ ७ ॥ देखी विस्मित लोक उमंगें, पग
म एहवुं पूछे ॥ अहो सुगुण तुं आव्यो किहांथी,
गुं एह कीन्धुं छे ॥ क० ॥ ८ ॥ ते वयनी रह्या
हुं, आव्यो हुं नृप काजें ॥ इम कहेतो पोतातो
नयनें, सिध पुरुष गुन साजें ॥ क० ॥९॥ रास

टली आपे नृपनें, कहेतो एहवुं रंगें ॥ ए नाखो निज
माथे एहथी, रहेजो निरुआ अंगें ॥ क० ॥ १० ॥
नृप जाणे शुं न बल्या चयमां, आव्या दीसो साजा ॥
आग लगी नहीं जगमां केहनें,न गणे सतियां आजा
॥ क० ॥ ११ ॥ कुमर विमासे कूडा आगें, बनशें कू
डुं बोल्युं ॥ कहे नृपनें हुं दाधो चयमां, मन साहस
नवि मोल्युं ॥ क० ॥ १२ ॥ मुज साहसथी सुरगण
रीज्या, अमृत रसें चय ठारे ॥ थयो सजी चित्त फरी
हुं तेहथी, आवी रह्यो चय आरें ॥ क० ॥ १३ ॥ ठा
र पोटलो तिहांथी लेइ, आव्यो राज समीपें ॥ वाचा
तेह पले तो रूडी, बोली जेह महीपें ॥ क० ॥ १४ ॥
नृप विचारे धूरत एणें, मीट सकलनी वंची ॥ इहां र
ह्यो गली चय वाली, सुनटें करी दृग ऊंची ॥ क० ॥
॥ १५ ॥ कांत समागम जाणी मलया, मलवानें धसी
आवी ॥ आरक्षक परिवारें वींटी, निरखत हरख
न मावी ॥ क० ॥ १६ ॥ एकांतें जइ पूछे पतिनें, पा
वक पेठा स्वामी ॥ कुशलें केम मल्या ते नांखो, पी
यु कहे अवसर पामी ॥ क० ॥ १७ ॥ अंध कूप गत
जेह सुरंगा, ते मुख में चय खडकी ॥ पृथुल गर्त्त घ
रनें आकारें, द्वार शिलायें अडकी ॥ क० ॥ १८ ॥

पेठो हुं चयमां थइ ठानें, द्वार सुरंग उघाडी ॥ ..
सुरंग शिला तस द्वारें, दीधी पाठी आडी ॥क०॥
सुनटें चय सनगाडी मूकी, वली बली थइ टाढी
द्वार उघाडी कुशलें आव्यो, ठार नृपति शिर .
॥ क० ॥ २० ॥ सुंदरी गुह्य कथा ए माहरी, को
आगें मत नांखे ॥ डुष्ट नृपति मुज ठिइ विलोके
तुज लेवा अनिलाखे ॥ क०॥ २१ ॥ चोथे खंमें
द्वादशमी, ढाल सुधारस मीठी ॥ कांति कहे
पिउ संगें, विरह व्यथा सवि नीठी ॥ क० ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ आव्यो नरपति तेहवे, कहे सिद्धने जंत ॥ नोजन
द्यो सलया नणी, अम हाथें न करंत ॥१॥ तरुणी तुरत
जमाडीनें, कहे सिद्ध सुण राय ॥ कीधुं कारज ताहरुं
हवे अम दीयो विदाय ॥२॥ आपो मुज धण आदरें
आपो बोल प्रमाण ॥ निरखे जीवा सामुहो, वचन
णी महेराण ॥ ३ ॥ संकल्पी जगव्यो वली, मंत्री ठ
नुं धाम ॥ अहो सिद्ध साध्युं सबल, नृपतिनुं ए काम
॥ ४ ॥ उपकारी शिर सेहरो, महा सत्त्ववर सिंधु
बीजुं पण महीपति तणुं, कर एक कारज बंधु ॥ ५

॥ ढाल तेरमी ॥ विंजाजी हो रतन कूउ मुख सांकडो रे विंजा, किम करी करुं रे फकोल ॥ रायविंजा, सयण मारू ॥ ए देशी ॥

॥ साधकजी हो एह पुरनें अति ढूकडो रे मित्ता, नामें गिरिछिन्न टंक ॥ सिद्ध रूडा, सयण म्हारा ॥ ॥ सा० ॥ विषम करथ शिखरें तिहां रे मित्ता, अंब अछे निरमंक ॥ सिद्ध० ॥ १ ॥ सा० ॥ फल तेहनां अति सीयलां रे मित्ता, लहीयें बारही मास ॥ सि० ॥ सा० ॥ ते शिखरें ऊंचा चढी रे मित्ता, तलपी हवें आकाश ॥ सि० ॥ २ ॥ सा० ॥ विषम थलें आंबा शिरें रे मित्ता, पोहोचीनें फल लेय ॥ सि० ॥ ॥ सा० ॥ कंपावो वली अंबथी रे मित्ता, नूतन ना ग तकेय ॥ सि० ॥ ३ ॥ सा० ॥ आवो इहां कुशलें वही रे मित्ता, मूको फल नृप भेट ॥ सि० ॥ सा०॥ पित्तविकार नरिंदनो रे मित्ता, टलशे तेहथी नेट ॥ ॥ सि० ॥ ४ ॥ सा० ॥ कुमर विमासे दोहिलो रे मि त्ता, ए पण नृप आदेश ॥ सि० ॥ सा० ॥ पातक मरण तणुं सही रे मित्ता, न फुरे जिहां मति लेश ॥ सि० ॥ ५ ॥ सा० ॥ जो न करुं तो कामिनी रे मित्ता, नापे ए नरनाथ ॥ सि० ॥ सा० ॥ विहुं

मृत्यु माहरुं रे मित्ता, पडिया नूमि बे हाथ ॥सि०॥
॥ ६ ॥ सा० ॥ जो पण देवप्रनावथी रे मित्ता, क
रचुं फुष्कर काज ॥ सि० ॥ सा० ॥ जीवितनें मुज
सुंदरी रे मित्ता, ठे दोय वात सुसाज ॥ सि० ॥ ७ ॥
॥ सा० ॥ धारी एहवुं आदरें रे मित्ता, मंत्री वचन
तिम तेह ॥ सि० ॥ सा० ॥ आसनथी ऊठ्यो धर्म
रे मित्ता, साहसनुं कुलगेह ॥ सि० ॥ ८ ॥ सा० ॥
मलया जल नयणें नरे रे मित्ता, फुःख पूरें विलगी
॥ सि० ॥ सा० ॥ महबल जण वींटचो घणे रे मित्ता
आवे गिरिवर तीर ॥ सि० ॥ ए ॥ सा०॥ जिम जिम
गिरि ऊंचो चढे रे मित्ता, तिम तिम जणने शोक
॥ सि० ॥ सा० ॥ नूपतिनें मंत्री हश्ये रे मित्ता, वा
हर्षना थोक ॥ सि० ॥ १० ॥ सा० ॥ शोने गि
टूंके चढचो रे मित्ता, उदय गिरि जिम सूर ॥ सि०
॥ सा० ॥ नृप सुनटें नीचो रह्यो रे मित्ता, अंग
खाडचो दूर ॥ सि० ॥ ११ ॥ सा० ॥ हुं जे में
पाल्युं रे मित्ता, न्याय धर्मनें मेल ॥ सि० ॥ सा०
सफल हजो माहरुं इहां रे मित्ता, तेहथी माह
खेल ॥ सि० ॥ १२ ॥ सा० ॥ ईम कहेतां थ
थकी रे मित्ता, आपे ऊंपापात ॥ सि० ॥ सा०

हाहारव लोकां तणो रे मित्ता, गिरि कूदे नवि मात
॥ सि० ॥ १३ ॥ सा० ॥ पडतंयो गिरिकंदरें रे, मि
त्ता, हाहारव ततखेव ॥ सि० ॥ सा० ॥ जाणुं साह
स देखीनें रे मित्ता, बोल्यो तिम गिरिदेव ॥ सि० ॥
॥ १४ ॥ सा० ॥ पडतो वेगें शृंगथी रे मित्ता, थे खे
चरनी भ्रांति ॥ सि० ॥ सा० ॥ अदृश्य हुर्च जन
देखतां रे मित्ता, जिम थाशें नृप खांति ॥ सि० ॥
॥ १५ ॥ सा० ॥ अहह अनय ए आकरो रे मित्ता,
हाहा पाप प्रचंम ॥ सि० ॥ सा० ॥ पडतां एहना
हाडनो रे मित्ता, जडशें कहो किहां खंम ॥ सि० ॥
॥ १६ ॥ सा० ॥ पुरजन एहवुं नांखतां रे मित्ता,
नृपपुर अशिव कहंत ॥ सि० ॥ सा० ॥ निज निज
घर आव्या वही रे मित्ता, तस साहस स लहंत ॥
॥ सि० ॥ १७ ॥ सा० ॥ सुहर्डे सकल सुणावियुं रे
मित्ता, नृप मंत्री विरतंत ॥ सि० ॥ सा० ॥ आप
रुतारथ मानता रे मित्ता, निवहे रात निरंत ॥सि०॥
॥ १८ ॥ सा० ॥ सिद्ध प्रजातें आवियो रे मित्ता, लै
सहकार करंम ॥ सि० ॥ सा० ॥ पग पग जन देखी
कहे रे मित्ता, आव्या केम अखंम ॥ सि० ॥ १९ ॥
॥ सा० ॥ सिद्ध कहे कहेशुं पछें रे मित्ता, हवणां

पूछ्यो कांइ ॥ सि० ॥ सा० ॥ कहेतो इम जन [illegible]
टीयो रे मित्ता, नृप भवनें गयो धाई ॥ सि० ॥ [illegible]
॥ सा० ॥ श्यामवदन राजा हूउ रे मित्ता, बीहीनो
निरखी चित्त ॥ सि० ॥ सा० ॥ बोल्यो तेहवे मंत्री
रे मित्ता, कुमल्यो किम तुं मित्त ॥ सि० ॥ २१ ॥
॥ सा० ॥ इमहीज इति मुख बोलतो रे मित्ता, [illegible]
खंच करंक ॥ सि० ॥ सा० ॥ कहे ए ल्यो खांडे म[illegible]
रे मित्ता, पिण समावो उदंक ॥ सि० ॥ २२॥सा०॥
बीहीना हाके बापडा रे मित्ता, नृप प्रमुख करे मुन
॥ सि० ॥ सा० ॥ वे त्रण तेह करंमथी रे मित्ता,
निकल्या मुंह [illegible] ॥ सि० ॥ २३ ॥ सा० ॥ नृपने
पूछी मंत्री रे मित्ता, मन्नथी [illegible] ॥ सि० ॥
॥ सा० ॥ [illegible] जिन [illegible] रे मित्ता, [illegible]
[illegible] ॥ सि० ॥ २४ ॥ सा० ॥ [illegible] [illegible]
[illegible] रे मित्ता, [illegible] ॥ सि० ॥
॥ सा० ॥ [illegible] रे [illegible] रे मित्ता, [illegible]
[illegible] ॥ सि० ॥ २५ ॥ सा० ॥ इति ॥

॥ दुहा ॥

॥ [illegible]
[illegible]

॥ १ ॥ सुंदरी पहेलो मुज मल्यो, योगी वनमां जेह ॥ प्रजल्यो पावक कुंममां, थयो व्यंतरो तेह ॥ २ ॥ ते व्यंतर इहां अंबमां, वलिउं मुज नाग्येण ॥ गिरिथी पडियो वचन वदे, उगारियो हुं तेण ॥ ३ ॥ आप करें मुजनें ग्रही, वोल्यो ते गुण लीह ॥ रे उपगारी मित्र तुं, मनमां कांइ म वीह ॥ ४ ॥ आप स्वरूप कह्युं तिणें, में पण मुज विरतंत ॥ करतां मैत्री संकथा, वीती राति तदंत ॥ ५ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥ मन मधुकर मोही रह्यो ॥ ए देशी ॥

॥ मुज मनडुं तुमथी हल्युं, रहो रहो मित्र सुजाण रे ॥ थावो अम घर प्राहुणा, पालो प्रेम पुराण रे ॥ मु० ॥ १ ॥ पूरवला संबंधथी, मलीयो जो मुज आई रे ॥ तो तुं एम वतावजो, उगीनें कांई जाई रे ॥ मु० ॥ ॥२॥ प्राहुण गति शी साचवुं,कहे तुं मुखथी आप रे ॥ तुम आणा माथे धरुं,जिम जग नृपनी छाप रे ॥मु०॥ ॥३॥ तव हुं वोल्यो ते प्रतें, सुण वांधव गुणवंत रे ॥ नृप कामें हुं आवियो, ढील इहां न खमंत रे ॥ मु० ॥ ॥४॥ पण वांध्यो में जेहवो,तेहवो हुये सुकयह रे ॥ तो जाणुं मैत्री तणुं, सही सफल परमह रे ॥ मु० ॥ ५ ॥ वोल्यो सुर सुण मित्रजी,ए नृप शत्रु सरीख रे ॥ ६

चाहे तुजनें,कहे तो द्युं हवे शीख रे॥मु०॥६॥में तोष्यु
एह एटले, नहिं विरमे जई आप रे ॥ तो एहनें सम
जावशुं, करी कूडो उपजाप रे ॥ मु० ॥ ७ ॥ विषम
प्रयोजन ताहरें,आवी पडे कोई जेथ रे॥ संभार्यो हुं
ततक्षणें, करशुं सान्निध्य तेथ रे ॥ मु०॥ ८ ॥ इम क
हेतो सुर किहांथकी, लाव्यो एक करंड रे ॥ सरस
रसाल तणे फलें, भरीयो तेह अखंड रे ॥मु०॥९॥ सु
जनें तेह करंडशुं,सुरवर आप उपाडी रे॥ मूक्यो पुरनें
उपवनें, जिहां जिन मंदिर आडी रे ॥मु०॥१०॥ सुर
बोल्यो ए फल जई, देजे तुं नृप हाथें रे ॥ अदृश्य
मनिक रूपें तिहां,आवीश हुं तुज साथें रे ॥मु०॥११॥
जे जे पडशे काम त्यां, करशुं ठाने हुं तेह रे ॥ [illegible]
[illegible] इम सुजनें, देवें आपी सनेह रे ॥ मु० ॥
॥ १२ ॥ चाल्यो तेह करंडीउं, नृपति आगलें जा[illegible]
रे ॥ तेई अनुक्रमें तेहनी, बेठो हुं ज्यां आई रे ॥मु०॥
॥ १३ ॥ [illegible] तेह करंडथी,[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥ मु० ॥
॥ १४ ॥ [illegible] [illegible] हुं [illegible], के [illegible] [illegible]
[illegible] रे ॥ [illegible] [illegible] [illegible], नहिं [illegible]
[illegible] रे ॥ मु० ॥ १५ ॥ [illegible] [illegible] [illegible]

यो चितानी लाल रे ॥ अम्बरनो कहे सचिवनें, कर माहारी संभाल रे ॥ सु० ॥ १६ ॥ सिद्ध पुरुष कोई सिद्ध ए, गुणातम विपरीत रे ॥ दुष्कर काम करे दु री, अण चिंतुं केणी रीत रे ॥ सु० ॥ १७ ॥ फल मिशें एह करंमनो, आणी कांइ बलाय रे ॥ आपणनें दुपकारिणी, चलगाही छपलाय रे ॥सु०॥ १८॥ सचिव कहे नृपनें प्रभु,एहनें मुल दियो धूल रे ॥ इंम कहीनें वारी जतो, आवे करंमनें मूल रे ॥ सु० ॥ १९ ॥ क्रूर सुणे रव तेहनो, जिम यमडुंडुनिनाद रे ॥ फणि विवर विष सारिखो, करत अशनि धुनि वाद रे ॥ सु०॥२०॥ फल अदेवा तस ढांकणुं, कयाडे ततकाल रे ॥ वज्रा नल सरखो तदा, प्रगट हुई माहाजाल रे॥सु०॥२१॥ जड जड शब्दें गाजती, प्रत्यक्ष जेम जड पाडि रे ॥ तेह करंमथी नीसरी, करध नाग धूमादि रे ॥ सु० ॥ ॥ २२ ॥ दुष्ट प्रधाननें तेणीयें, जाल्यो जेम पतंग रे ॥ क्षणमां जीवो त्यां हुउं, निर्जीवित दहि अंग रे ॥ सु० ॥ २३ ॥ मंदिर कांठें सलगिउं, अगनि म हा डरवार रे ॥ वीहितो नृप तव सिद्धनें, तेडावे ति णि वार रे ॥ सु० ॥ २४ ॥ मुज आधीन सुरें तिहां, दीसे छे कांइं कीध रे ॥ इंम धारी नृपति कनें, अ

आस्पद छे अविवेक ॥ संपद होय सर्वेवरा, निरखो नृप नय छेक ॥ ४ ॥ तेह नणी नय गोचरें, निगम विचारी शुद्ध ॥ आतम वचन प्रमाणवा, आपो मह्नि ला सुद्ध ॥ ५ ॥ सामंतादिक बोलिया, करो देव ए वयण ॥ अनय रसें कोपावचो, न घटे ए नर रयण ॥ ६ ॥

॥ ढाल पंदरमी ॥ योगीसर चेला ॥ ए देशी ॥

॥ वचन सुणी नरराजियो रे, पडीयो विमासण मांहिं रे ॥ नारि रस रातो पेगो उपांपल गोचरें होलाल ॥ हियडे चढी मुज नायिका रे, प्यारी जीवन प्रांहिं रे ॥ करशुं विधि केही, मुज मनथी नवी उतरे होलाल ॥ १ ॥ मंत्र तंत्रादिकयोगनारे, लहेतो विविध प्रकार रे ॥ साधे बाहिरनां, कारज ए सहेजें इहां होलाल ॥ तेह नणी निज देहनो रे, सोंपुं काम सफार रे ॥ अन्यंतर कोई, डुष्कर ते करशे किहां होलाल ॥ २ ॥ कारज विण कीधे सही रे, जोतां पुरनां लोक रे ॥ होशे उ शीयाला, नोंगे पडशे बापडो होलाल ॥ फरि नहीं मागे सुंदरी रे, थाशे मसागति फोक रे ॥ पहेली जे कीधी, मलशे नहि वली ताकडो होलाल ॥ ३ ॥ ईम करे फावशे प्रिया रे, अपयश लोक विचाल रे ॥ न हीं होशे महारे, एहवुं विचारी बोलियो होलाल ॥

सिद्ध प्रसिद्ध रे ॥ मु० ॥ २५ ॥ कहे सकल परें रा
जियो,बोल्यो एम मरंत रे ॥ सिद्ध कृपा करी टालियें,
विज्वर एह डुरंत रे ॥ मु० ॥ २६ ॥ सिद्धें तव जल
छांटीयुं, अनल हुउ उपशांत रे ॥ ढांक्यो अंब करंमी
उ, तव रहियो विश्रांत रे ॥ मु० ॥ २७ ॥ कानें ते
ह करंमनें, बेसे नहीं कोई आय रे ॥ सापें खाधो शिं
दरी, देखी कुण न मराय रे ॥ मु० ॥ २८ ॥ कुशलें
सिद्ध करंमीयो, उघाडी फल लेय रे॥ विस्मित नृपा
दिक जणी, आपहथु जव देय रे ॥ मु० ॥२७ ॥ त
व महीपति मरतो हीये, खंचे कर मुख फेरी रे ॥
आपी बीजानें करें, लेवरावे सिद्ध प्रेरी रे॥मु०॥३०॥
जीवानो नंदन वडो, सचिव कर्यो गुण खाणी रे ॥
चोथा खंमनी चौदमी, कांतें ढाल वखाणी रे ॥मु०॥

॥ दोहा ॥

॥ नृप पूछे किम उगल्यो, एह महाजय सिद्ध ॥
मंत्रीनें जेणें इहां, मरण अवस्था दीध ॥ १ ॥ कहे
सिद्ध ए पल्लव्यो, तुज अन्याय कुवृक्ष ॥ हवे फूल फ
ल एहनां, लहेशे तुं प्रत्यक्ष ॥ २ ॥ महीयल मांहिं
महीपति, जेह करे नय पोष ॥ नासे आपद तेहथी,
वाधे संपद कोष ॥ ३ ॥ नीतिमांहि आपद तणो,

नास्तर ते अविवेक ॥ मंत्र होय सर्वंग, निरखी नृप नव नेक ॥ ४ ॥ तेह नणी नग गोचरें, निगम विशारी शुक्र ॥ आतम वचन प्रमाणता, आवो मझिला मुक्त ॥ ५ ॥ सामंतादिक बोलिया, करी देव ए वयण ॥ अनय रसें कोपानवो, न घटे ए नर रयण ॥ ६ ॥

॥ ढाल पंदरमी ॥ योगीसर चेला ॥ ए देशी ॥

॥ वचन सुणी नरराजियो रे, पडीयो निमासण माहिं रे ॥ नारि रस रातो पेठो उपावन गोचरें होलाल ॥ हियडे चढी मुज नायिका रे, प्यारी जीवन प्राहिं रे ॥ करशुं विधि केही, मुज मनथी नवी उतरे होलाल ॥ १ ॥ मंत्र तंत्रादिकयोगनारे, लहेतो विविध प्रकार रे ॥ सांधे बाहिरनां, कारज ए सहेजें इहां होलाल ॥ तेह नणी निज देहनो रे, सोंपुं काम सफार रे ॥ अभ्यंतर कोई, डुष्कर ते करशे किहां होलाल ॥ २ ॥ कारज विण कीधे सही रे, जोतां पुरनां लोक रे ॥ होशे उशीयाला, नोंगे पडशे बापडो होलाल ॥ फरि नहीं मागे सुंदरी रे, थाशे मसागति फोक रे ॥ पहेली जे कीधी, मलशे नाहिं वली ताकडो होलाल ॥ ३ ॥ [illegible] करे फावशे प्रिया रे, अपयश लोक विचाल रे ॥ नहीं होशे महारे, एहवुं विचारी बोलियो होलाल

शों, तो थई छे एटले घणी होलाल ॥ सिद्ध विमासी
हवुं रे, बोल्यो एह जो दोट रे ॥ पाये अणु
वनमां जिन प्रणमे शुणी होलाल ॥ १४ ॥ श्री
अजित जुहारीनें रे, पायें आवे आंहिं रे ॥ तो थाशे
साजो, बीजो उपाय नहीं तिश्यो होलाल ॥ असमरथ
पण राजियो रे,कहे हवे चालो त्यांहिं रे ॥ साजो जो
थाउं, तो मुज अजर अछे किश्यो होलाल ॥ १५ ॥
लोक कहे निज पापथी रे, वलगो आवी वींग रे ॥ नृ
पतिनें पूछें, करशो नहिं हवे खोजणी होलाल ॥ रूप
बन्युं जोवा जिश्युं रे, प्रत्यक्ष जिम जोटींग रे ॥ दीसे
छे कोई, खेधें लत पाम्यो घणी होलाल ॥ १६ ॥ पुर
जन जोवा पेखणुं रे, चढिया गोखें धाय रे ॥ तिहां
होडा होडें, गामें गामें टोलें मल्या होलाल ॥ चाल
ण मांफे नृपति रे, पण न पडे वग कांइं रे ॥ जोतां
डुःखदायी, कारण बे वांकां मल्यां होलाल ॥ १७ ॥
जो मांफे पग पाधरो रे, तो दीसे नहिं माग रे ॥ लो
चन उपरांठे, लड थडतो पगें आपडे होलाल ॥ थ
वले पग ज्यां संचरे रे,लेतो मारग लाग रे ॥ पेरणि त्य
वाधे, प्रेरण शक्ति विना पडे होलाल ॥ १८ ॥ त्रिहुं
वातें पुर लोकनें रे, करतो कौतुक डुःख रे ॥ जई थ

थो पाछो, साले मार कुचोटनी होलाल ॥ लोक स मक्ष समजावित रे, थाशे हवे अनिमुक्त रे ॥ चिंते ईम बीजी, खांचे नशा तिहां कोटनी होलाल ॥१९॥ वदन वलीनें पाधरुं रे, वेहुं पाछुं गाम रे ॥ लागी न हिं वेला, हूउं अंतेउर त्यां खुशी होलाल ॥ कर जो डी कहे तिहनें रे, वेचाणा तुम नाम रे ॥ सुगुणा ससनेही, जोईयें ते मागो हसी होलाल ॥ २० ॥ तिह हवे मागशे इहां रे,चोंपे मलया बाल रे॥ नृपति पासेंथी, अरज करावी तेहथुं होलाल ॥ चोखी चो था खंमनी रे, एह पन्नरमी ढाल रे ॥ नांखी रस जे ली, कांतिविजय बुध नेहथुं होलाल ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमर कहे राणी प्रत्यें, वंछित आप विचार ॥ जो होय चारो तुम तणो, तो देवरावो नार ॥ १ ॥ गोरडीयां गुणवंतियां,जो देवरावो वाम ॥ तो थोडामां मीलजो, सरियां मुज लख काम ॥ २ ॥ वचन सुणी राणी सवे, आवी नृपनी पास ॥ मलया मूकावण न णी, करे कोडि अरदास ॥ ३ ॥ उत्तर न दीये महीप ति, पाछो कांइ प्रगट ॥ थाने कानें काढतो,चिंते ए

निपट्ट ॥ ४ ॥ जाती मलया सुंदरी, राखुं किम
दीश ॥ बुद्धि नको मुज ऊपजे,जेहथी फवे सदीस।
॥ ढाल शोलमी ॥ प्रणमी सद्गुरु पाय,
गायशुं राजीमती सतीजी ॥ ए देशी ॥
॥ एहवे अनल उदंम, वाजीशालामांहि लागी
जी ॥ ऊंचो जाल अखंम, दारुण गयणें लागीऊजी
॥ १ ॥ निरखीनें नरराज, सिद्धप्रत्यें पत्नणे इसु
जी ॥ चोथुं वली मुज काज, एक अछे करवा जिसु
जी ॥ २ ॥ वारू पाट केकाण, एह बले हयशालमां
जी ॥ काढो खेंची सुजाण, काम करो एक तालमां
जी ॥ ३ ॥ रीज्यो हुं तुज नारि, आजज सोंपुं ए
डीजी ॥ जोतां जण दरबार, वलीयो मणिमय पा
डी जी ॥ ४ ॥ निसुणी पुरजन लोक, लांखे ए नृ
चातस्योजी ॥ पाम्यो शीक्षा रोक, तो वली ईम कां प
तस्योजी ॥ ५॥ अति डुष्टाध्यवसाय, छोडे नहीं ए
मैतिजी ॥ करी कोइ व्यवसाय,योग्य दीयुं शीक्षा र
जी ॥ ६ ॥ ध्यातो एहवुं त्यांहिं, उछाहें बमणो थ
जी ॥ पेसण हुतभुज मांहिं, वाजी शालें उलो ज
जी ॥ ७ ॥ मनमां नृपनें आप, निंदे आक्रोशें घण
जी ॥ वांध्यो कोपनें व्याप, इष्ट संनारे आपणोजी

॥ ९ ॥ सनारे तेह देव, करता सफल मनोरथाजी॥ झंपावे ततखेव, दीसें पतंग पडे यथाजी ॥९॥ हाहा कार करंत, शोक नया पुरजन तदाजी ॥ श्रांसूडे व रसंत, जोवन जिम जल वारिदाजी ॥ १० ॥ पाम्यो नृप प्रमोद,कुमर झंपाणो देखीनेंजी ॥ माणे हास्य वि नोद, सचिवनें साथ विशेषिनेंजी ॥ ११ ॥ चढियो ह य सिद्धराज, अगनिथी नीसरिउं तवेंजी ॥ दीसे जि म सुरराज,आरोह्यो उच्चैःश्रवेंजी ॥ १२ ॥ दीपे तेज अपार, दीव्य वसन नूषण धर्याजी ॥ जलहल ज्यो ति तुखार ॥ अंगें साज नला नयाजी ॥ १३ ॥ धौ रादिक गतिपंच, १ धौरितं २ वल्गितं ३ प्लुतकं ४ उत्तरकं ५ उत्तेजितं ॥ खेडें तुरंग रमाडतोजी ॥ तन विलसित रोमांच, जननें चित्र पमाडतोजी ॥ १४ ॥ देतो हर्षविषाद, लोक नृपतिने पालटीजी ॥ मनमां अति आल्हाद, धरतो इम कहे उलटीजी ॥ १५ ॥ अहो अहो तीर्थनी नूमि, एह छे वंछित दायिनी जी ॥ ज्वलित हुताशन धूम, फरसें जे अघ घायि नीजी ॥ १६ ॥ पडियो हुं इहां आज, बीजो तुरं गम ए वलीजी ॥ वलतां सिद्धतां काज, एहवा थया मागा टलीजी ॥ १७ ॥ आजथकी मम अंग, ो

ह्वो जगत प्रकाश म० ॥ द० ॥ १४ ॥ म पडीश
माता मोह्सां रे, लंकेश्वर जिम मूज म० ॥द०॥ व
चित हितारथ धारियें रे,आणी मननी सूज म०॥१५॥
दूत वचन सुणी लहें रे, आव्या सुसरो तात म० ॥
॥ द० ॥ मनमांहे हरख्यो घणुं रे, बोल्यो फेरवी धा
त म० ॥ द० ॥ १६ ॥ सैन्य घणुं जो नृपनें रे, तो शुं
नहीं भुज दोय म०॥द०॥ एक एक देह नहीं किश्युं रे,
केवल नर नहीं होय म० ॥द०॥ १७॥ एकलडो पण
दिणयरु रे, तेज तणो अंबार ॥ म० ॥ द० ॥ कोडिग
से तारातणुं रे, हरे महातम सार ॥ म० ॥ द० ॥
॥ १८ ॥ आफलतो आला लगें रे, मानीमां शिरदार
म० ॥ द० ॥ एकाकी पण केशरी रे, गाले गजमद
भार म० ॥ द० ॥ १९ ॥ तिम हुं जो पण एकलो
रे, ते नृप ते बल साज म०॥ द० ॥ वाणे रणमां ते
होनी रे, फेडीश हुजनी खाज म० ॥द०॥ २०॥ वा
हलो पण अन्याईयो रे, शीखवीयें सुत बाप म० ॥
द० ॥ अन्यायें बाता परखू रे, लाज्या नही अयाय
म० ॥ द० ॥ २१ ॥ जो नेही छे नृपनो रे, तो अम
फलो लाल म० ॥ द० ॥ अमसायें तो वेडतां रे, न
रहो बाचां चाल म० ॥ द० ॥२२ ॥ न दीये गिरा

उछर्ने रे, न गणे साजन शर्म्म म० ॥ द० ॥ तो अ म सरिखानें रहे रे,केहो नृपनो धर्म म०॥द०॥२३॥ अन्यायी तुज राजिया रे, आव्या जेह उमंग म० ॥ ॥ द० ॥ तेहने पण समजावशुं रे, खग साखें रण जंग म० ॥ द० ॥ २४ ॥ सर्व मनोरथ एहुना रे, रीश हुं इणवार म० ॥द०॥ जा कहेजे तुज पूवर्जे रे, आव्यो हुं निरधार म० ॥ द०॥ २५ ॥ दूत गयो पाछो वही रे,चोथे खंर्मे अनूंप म० ॥ द० ॥ ढाल कही ए अढारमी रे,कीतिविजय करी चूंप म० ॥ द०॥ २६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सिंहासनथी ऊठियो, वहि मंमपमां आय ॥ ढक्का तिहां संग्रामनी, वजडावे सिद्धराय ॥ १ ॥ रणरातो मातो मदें, तातो क्षत्रीय तेज ॥ आव्यो नृप मलया कन्हे, कहेवा रहस्य सहेज ॥ २ ॥ महुलामां मलया नणी, दे रहेवा निर्देश ॥ चतुरंगी सेना सजी, धरे थाप रणवेश ॥ ३ ॥ असवारी कीधी गर्जे, रण रंगें शणगार ॥ नीसरियो पुरथी महा, धिंग कटक विस्तार ॥ ४ ॥ नवल दमामां गडगड्या, वागां वड रणतूर ॥ रतिया नाद नंजेरिया, ऊमिग ऊजटयो शूर ॥ ५ ॥ उंपा दे करवालने, टोपां कें पहेरंत ॥ ६

केता सज्ज करे,धोपां केई धरंत ॥६॥ गज गाजे हय हेषणें, रथ चितकार अखंड ॥ सिंहनाद शूरा तणे, बधिर हूउ ब्रह्मंड ॥७॥ कवच हरा आयुधधरा, पूरा रण खेलाड ॥ रणथंभे जई वागियां,फोजां तणां कमा ड ॥ ८ ॥ बे दल आमा साह्मां, अडियां आई सवा हिं ॥ नामजिअणपेठा वही.नारु नड रण मांहिं ॥९॥

॥ ढाल ओगणीशमी ॥ कडखानी देशी ॥

॥ सजे फोज अति जोर नृप बे नडे मिळ्युं, रण तणा दाव रमता न चूके ॥ [illegible] वनना महा मद [illegible] हाथिया. [illegible] गिरिवर [illegible] आई हूके ॥ सजे० ॥ १ ॥ गज [illegible] ने [illegible] नहयाथी अडे, रथ चढतो रथचढ्याथी न [illegible] ॥ तुरगचर तुरं गचर साथ झगडतां [illegible], पायचर पायचर [illegible] झूजे ॥सजे०॥२॥ [illegible] [illegible] राग सिंधु [illegible]. गुहिर निशाण [illegible] ॥ [illegible] [illegible] [illegible] सु णी. [illegible] [illegible] जई प्रगुं [illegible] ॥ स० ॥ ३ ॥ [illegible] [illegible] ननसाइ [illegible] पु[illegible]. [illegible] [illegible] द्विगुण हुवे ॥ [illegible] [illegible] पडे कवच [illegible] [illegible] भेदीयां [illegible] [illegible] झूझे ॥ स० ॥ ४ ॥ [illegible] चिनकार ज्वकार [illegible] [illegible], [illegible] [illegible]

पुंडरीकै ॥ सदृश कल्लोल नृपहंस मेले तिहां, फेर न हीं जलधि रणमां रतीकै ॥ स० ॥ ५ ॥ सुभट नर नोपरि वचन प्रतिहृत करे, सिंहनादें महा सिंहनादें ॥ भुजयुगा फालणे भुज युगा फालता, करत रण नयें लीला विवादें ॥स०॥६॥ वीर निरनाल रण चालमां वल्लुक्या, कश्मेमुख तास रुचि तेम शोभी ॥ ज्वलित मन रोप पावकथकी नीसरे, धुम धोरणी जिसी गग न थोभी ॥स०॥७॥ करत ललकार हलकार चड को पिया, चलत धमकारशुं शेष मोले ॥ कर ग्रही ढाल धुंताल धुंकल रसें, तपल ठंगाल करवाल तोले ॥स०॥ ॥८॥ जाति भुज वीर्य गुण वंश वदनावता, वंदिजन प्रबल शूरां जगाडे ॥ उमगिया योध बल बोध करि आपणा, रण तणी सबल वाजी फवाडे ॥ स० ॥ ॥ ए ॥ अश्व खुरताल पडतालथी कपडी, खेह अं बर चढी सूर ढायो ॥ दिशि हुई धूंधली अरुण रंगें धरा, जाणे विण काल वरसाल आयो ॥ स० ॥ १० ॥ सगग शर धार वरपण लगी चिहुं दिशें, बगग बरछी चले अगग गेडी ॥ रणण रणकार नल्ली (फरसी) तणा वागिया, लिल्ल सुहडाण नाखे उथेडी ॥ स० ॥ ॥ ११ ॥ खडग खटकार गजदंत ऊपर पडे, जरर

जरहर झरे अगनि बुंदा ॥ तप तप्या शुंढ
जल वर्षेयों, तुरत शीतल करे ते गयंदा ॥ स० ॥
॥ १२ ॥ सबल हाथाल जूजाल मोगर ग्रही, जोरवु
वैरी सनमुख उछालें ॥ वहत नल शस्त्र देखी सुर
खेचरा, वज्रशंकायें नासे विचालें ॥ स० ॥ १३ ॥
मोड्या सुनट केर गांजडे गगनमां, ऊरध कीधा जि
स्या नट्ट वंशें ॥ उछत आकाश आयास विण गृध्र
नें, बलि महोत्सव हुउ तास मंसें ॥ स० ॥ १४ ॥
अडड अडडाट करि छूटीयां शतघनी, धुमल धूआं
धुखें धुम्मरोला ॥ अगनि कण खिरत तग तगत ताता
घणा, दश दिशें चालीया लोह गोला ॥स०॥ १५ ॥
दडड परनाल ज्यों खाल रुहिरा वहे, कडड नर को
परी खंभ फूटें ॥ गडड गेवरि गडें नालि मुख आह
एया, खडड खग खाटकें फलक तूटें ॥ स० ॥ १६॥
कलह खय काल सरिखो हुउ आकरो, सिद्ध नृप सै
न्य नाग्नुं दिगंतें ॥ थिर करी वल हवे आप समरंग
एों, आवियो राय रोषाल खंतें ॥ स०॥ १७ ॥ हाक
तो सुनटनें युद्ध मंभें तिहां, सिद्ध रणरंग गज वेस
ताजें ॥ विश्व नूपण गजें शूर चढि धाईयो, वी
संग्राम तिलकें विराजें ॥ स० ॥ १८ ॥ देखि प

बल महापूर्ण परिचित निद्रा, अमर संचारियो सिद्ध रायें ॥ आवियो करण साहाय्य वेगें वही, नृप हिन हेत लागो अपार्थे ॥ स० ॥ १९ ॥ आवता वेरी हथियार अध मारगें, छेद सिद्धरायनें देव आपे ॥ सिद्ध शर धार वरसी घणा नृपनें, मोरचाथी परा दूर थापे ॥ स० ॥ २० ॥ कौतुकी थई पंडाज वाणें करी, शूरनां वीरनां छत्र छेदें ॥ घम घम नेजा धजा मांहिं सूरत घडा, तोडियां चिन्ह नृपनां अमेदें ॥ ॥ स० ॥ २१ ॥ कर ग्रहे नृप विहुं शस्त्र जे नांखवा, तेह पण सिद्ध शस्त्रें विखंमे ॥ करत यतना घणी वेहुंना देहनी, समरनो खेल इंम वारु मंमे ॥ स० ॥ ॥ २२ ॥ नृप जांखा पडया चित्त संकल्पता, समर ऊभा रह्या शस्त्र नाखी ॥ खंम चोथे भली ढाल छंग णीशमी, जाति कडखा तणी कांतें नांखी ॥स०॥२३॥

॥दोहा॥

॥ दीन वदन शोकातुरा, जोतां नीची देह ॥ निरख्या सिद्धें महीपति, नाख्या जाणें वेह ॥ १ ॥ इंम इंम कारज साधना,करवी ते सुरराय ॥ इंम सम जावीनें लिखे, लेख एक तिणठाय ॥२॥ बाण मुखें ठवी लेख ते, मूक्यो गुण संधेय ॥ नरपति कुल २५

जावतो, चल्यो गगन ततखेव ॥३॥ पोहवी हेगे
तरी, करे प्रदक्षिण तीन ॥ शूरनृपतिने पाखती, ते
थई आधीन ॥ ४ ॥ पय प्रणमी लोटेंगयो,मूके
तुरंत॥ सिद्ध नरींद कन्हे वही, फरी आव्यो उमगंत
॥ ५ ॥ चरित निहाली बाणनां, विस्मित हूआ नरिं
द ॥ देव सगति विण किम हुवे, अचरिज एह अमंद
॥ ६ ॥ निश्चेतन चेतन तणा,खेले खेल कदापि ॥ प
॥ ७ ॥ एम
रमारथ एहनो इहां, किम जाणीशुं आप
कही निज कर ग्रही, तुरत उखेडे लेख ॥ जोतो अद
र मालिका, लहे परम उल्लेख ॥ ८ ॥ लोक सकल
मलिया तिहां,सुणवा पत्र उदंत ॥ हरख वशंवद पत्र
त्यां, वांचे वसुधा कंत ॥ ए ॥

॥ ढाल वीशमी ॥ थारानें माहारा करहला,
वरता नदीने तीर हमीरा ॥ ए देशी ॥

॥ स्वस्तिश्री जिनपद नमी, नकल्या श्रीमती तंत्र ॥
सनेही शूरप नृप चरणांबुजें, सुत महबल लिखि पत्र॥
सनेही॥१॥ कुशल संदेशो पाठवे, ठे अमने सुखशात
॥स०॥ तात शरीर नीरोगता,चाहुं हुं दिनरात ॥स०॥
कु० ॥ २ ॥वीरधवल सुसरा जणी, प्रणति करुं कर
जोडि ॥ स०॥ तात श्वसुर सुपसायथी, पाम्यो यशनी

कोडि ॥ स० ॥ कु० ॥ ३ ॥ निज दयिता पामी ति
हां, साधु वली नृपराज्य ॥ स० ॥ पूज्य चरण शुन
चिंतने, कीधुं सबल साम्राज्य ॥ स० ॥ कु० ॥ ४ ॥
में शुन वीरल दाखीउं, करवा वाल विलास ॥स०॥
खमजो अविनय माहरो, करजो कोप विनाश ॥स०॥
॥ कु० ॥ ५ ॥ तात चरण जेटया तणी, चाह हती
निज नित्य ॥ स० ॥ ते शुनदैवें माहरी, पूरी आ
ज अचिंत्य ॥ स० ॥ कु० ॥ ६ ॥ कांई विषाद करो
हवे, पधारो पुरमांहिं ॥ स० ॥ वांचत लेख ईस्यो
सुणो, पूग्या हर्ष वधाहिं ॥ स० ॥ कु० ॥ ७ ॥ पर
मानंद महारसें, सिंच्या नृप सरवंग ॥ स० ॥ सैनिक
समक्ष कहे अहो, अहो अहो ए दिन चंग ॥ स०॥
॥ कु० ॥ ८ ॥ कुमरीशुं सुतरत्नजी, मलियो महव
ल थाई ॥ स० ॥ जीवित सफल थयुं हवे, जीवा
दया महाराई ॥ स० ॥ कु० ॥ ९ ॥ उद्धरिया दुःख
खाणथी, उद्दिलममां लहि आथ ॥ स० ॥ काढ्या
नरक निवासथी, पडतां साह्या हाथ ॥ स० ॥ कु०॥
॥ १० ॥ शूरपाल नृप ईम कही, वीरधवल लेई सं
ग ॥ स० ॥ महवल साहमो चालियो, धरतो बहुल
उमंग ॥ स० ॥ कु० ॥ ११ ॥ पूज्य विने साहमा

पगें, दीवा आवत तेण ॥ स० ॥ सहसा हर्षे सामो
हो, आवे आप रसेण ॥ स० ॥ कु० ॥ १२ ॥ मलि
या हेजें हरखता, टाली वैर विरोध ॥ स० ॥ मांहो
मांहि प्रकाशीउं, पूरण प्रेम निबोध ॥ स० ॥ कु० ॥
॥ १३ ॥ हर्ष तणे आंसू जलें, गल्यो विरह हुताश
॥ स० ॥ नेह नवांकुर पल्लव्या, वाध्या रंग विलास
॥ स० ॥ कु० ॥ १४ ॥ जगमां चंदन सीयलुं, तेथी
शशिकर योग ॥ स० ॥ शशिकरथी पण शीयलो, वा
हालानो संयोग ॥ स० ॥ कु० ॥ १५ ॥ हण एक १
छ कथारसें, निरवाहे सुख शील ॥ स० ॥ वैतालिक
(भाटचारणादिक) बोल्या तिसें,न सहे वासर ढील
॥ स० ॥ कु० ॥ १६ ॥ सिद्धनृपें निजपुर प्रत्यें, पध
राव्या नृप दोय ॥ स० ॥ विंटया निज निज परिक
रें, आव्या भवनें सोय ॥ स० ॥ कु० ॥ १७ ॥ रोती
डुःख संभारीनें, राणी मलया ताम ॥ स० ॥ बोला
वी सुसरादिकें, आदर देय प्रकाम ॥स०॥कु०॥१८॥
तुरत करावी महावलें, अशनादिकनी भक्ति ॥ स० ॥
सैनिक सर्व संतोषियां, नृपालें भली युक्ति ॥ स० ॥
॥ कु० ॥ १९ ॥ तात श्वसुर आदें सहु, बेठां सुखमां
त्यांहिं ॥ स० ॥ ऋद्धि निहाली कुमरनी, चित्र लहे

विषमांहि ॥ स० ॥ कु० ॥ २० ॥ सुत आगें जनका विकें, लखि निज निज वात ॥ स० ॥ मलयायें कुम र वली, नांख्या तिम अवदात ॥ स० ॥ कु० ॥ २१ ॥ खंडे वीशमी, नांखी अनुपम ढाल ॥ स० ॥ कीर्तिविजय कहे सांभलो, आगल वात रसाल ॥ ॥ स० ॥ कु० ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वीरधवल पुत्री तणां, निसुणी दुःख विरतंत ॥ विषम कर्मगति भावतो, तनुजानें पभणंत ॥ १ ॥ हे हे नृपकुल कपनी, पोषी लाभ विलास ॥ रखडी दिशि दिशि रंक ज्यों, पडी कर्मनें पास ॥ २ ॥ सह्यां विविध दुःख आकरां, कोमल अंगें एम ॥ व्यसन म होदधि दुस्तरें, तरी तरी परें केम ॥ ३ ॥

॥ ढाल एकवीशमी ॥ नगर रतनपुर जाणीयें ॥ ए देशी ॥ अथवा, रुडी भावना मन धरो ॥ ए देशी ॥

॥ शूरपति महीपति बोले ए, पडिया मामा मोलें ए, खोले ए, निज मन दुःखनो गांठडी ए ॥ १ ॥ हा पुत्री हा पापीयो, कुमति दशायें व्यापीयो, थापीयो, कूडो कलंक ताहरे शिरें ए ॥ २ ॥ काज कर्युं में अण जा णुं, जल पीधुं ते विण छाण्युं, अतिताण्युं, तुज साथें

में डुर्मति ए ॥ ३ ॥ गुनहो ते सवि माहरो, सम
जो गुणवंती खरो, आफरो, मननो हवे दूरें करो ए
॥ ४ ॥ जित कोपा तुं सुंदरी, या रलियायत गुणजरी,
दिलवरी, करीयें ते हियडे धरो ए ॥ ५ ॥ परमारथ
नी ज्ञापिका, निर्मलकुलनी दीपिका, वापिका, तुं सत्य
शील कमल तणी ए ॥ ६ ॥ वचन सुणी सुसरा त
णां, मलया ते धरी धारणा, कारणां, डुःखनां तुरत
विसारीयां ए ॥ ७ ॥ धन्य धरामां तुज मती, साहस
करुणा रति ठती, धृतिगति, सूरिम शुजकृत तुज न
लां ए ॥ ८ ॥ इंम महाबल गुण जांखता, नृपादिक
यश दाखता, जण किता, सजहें महबलने तिहां ए
॥ ए ॥ जनकादिक पूठे तिहां, वत्स कहो सुत ठे कि
हां, लीधो इहां, पापीडे जे वाणीयें ए ॥ १० ॥ पुत्र
कहे वाणिज घरें, ठानो किहां किण ठठरे, पण खरें
खबर नहीं ठे ते तणी ए ॥ ११ ॥ तेडीनें पूठां खरो
जतरशे नहीं पाधरो, आकरो, करतां ते देखाडशे
॥ १२ ॥ ततक्षण सुजटें आणियो, पग बांधीनें त
णीयो, वाणीयो, डुःख पीडयो रोवे घणुं ए ॥ १३
कहे रे डुर्मति शुं कस्यो, पुत्र लेइनें किहां धस्यो, जा
ल्यो, किम तुजथी अम नंदनो ए ॥ १४ ॥ करवुं

टो तुज गिरें, देतो करसंद्विज सरें, पण अवसरें,सु त जाया देशुं नहीं ए ॥१५॥ शीहीनो ते कहे तो आ पुं, पुत्र तुमारो करी थापुं, दुःख टापुं, माहरो जो दूरें करो ए ॥ १६ ॥ ढोडो सुत सकुटुंबनें, जो नवि पाडो विटंबनें, तो सुनें, देतां वेला ते नहीं ए ॥ १७ ॥ हाल्या तस वचनें सवे, मान्युं वचन तथा तवें, तिण लवें, पुत्र आणीनें सोंपियो ए ॥ १८ ॥ निरख्यो बालक सुंदरु, रूपें जाणे पुरंदरु, मंदिरु, सौम्य कला नो फलकतो ए ॥१९॥ नृपादिक सवि हरखीया, पुत्र रतन गुण परखीया, निरखीया, अंग सकल लक्षण नयां ए ॥ २० ॥ राय कहे बलसारनें, कहेरंसी निरधारिनें, कुमारनें, कीधी नामनी थापना ए ॥२१॥ ते कहे वल इति थापना, कीधी ते करी कल्पना, उच्छापना, चित्त माने ते कीजीयें ए ॥२२॥ एहवे नंदन रस ग्रह्यो, तात तणे खोले रह्यो, गह गह्यो, लेवा धननी गांठडी ए ॥ २३ ॥ दादाने कर गांठडी, सो दीनारनी दीठडी, कथडी, बालक ते खांची लीये ए ॥ २४ ॥ जोराथी गाढी ग्रही, मूकाव्यो मूके नही, दादे वही, शतवल नाम त्यां थापीयुं ए ॥ २५ ॥ सारथपतिनें ठोडीयो, घरबाखर लूंटी लीयो, जीवित दीयो, निज...

परिपालवा ए ॥ २६ ॥ शूर कहे वरषांतरें, मलया प्रीतमछुं खरे, इंगिपुरें,निश्चयछुं दीसे मली ए ॥२० ज्ञानी वचन साचुं मल्युं, वरषांतें दुःख निर्दल्युं, टल्युं, संकट सघळुं आजथी ए ॥२७॥ राज्य ग्रह्युं को तूहलें, सिद्ध नृपें सुजनें बळें, ते तिण वेळें, तातन णी आप्युं वही ए ॥ २ए ॥ सकुटुंबा बे महीपति, व हेता स्नेह रसोन्नति. शुभमति, राज काज करता वह ए ॥ ३० ॥ चोथे खंडें मीठडी, एकवीशमी रस पूर वी, रुडी, ढाल कही कांतें भली ए ॥ ३१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ ते काळें तेणे समे, करता उग्रविहार ॥ पारस जिनना शिष्य मुनि, चंद्रयशा अणगार ॥ १ ॥ ते पु रवरने उपवनें, समवसर्या गुरु राज ॥ केवलधर गुर नर नम्या, वांदवा साधु समाज ॥ २ ॥ उपगारी त्रि हु लोकने, पूज्य कृपारस सिंधु ॥ नव अनंत नाले ...या, नृपें श्रीजगबंधु ॥ ३ ॥ वनपालक जई वीनव्या, ...ठिडुं नृपतिने वेग ॥ पुरजन वृंद परिवर्या, आवे नृप ...उलेग ॥ ४ ॥ पंचाभिगमन साचवी, प्रणमी जिनने ...॥ धर्मकथा सुणवा वहे, बेठा विनयी तेम ॥ ५ ॥

काल वावीशमो ॥ मनमोहनानी देशी ॥

॥ चित बुजो रे काइ गांमो मोहनी निंद, जागो नि
यधारिणीयकी; नवि बुजो रे ॥ चि० ॥ एतो निदमी
आलु पुलिंद, तज जोवे वानो तकी ॥ ज० ॥ १ ॥ चि०
॥ पतो सांकड उरामांही, सूता काल अनादिना
ज० ॥ चि० ॥ बोध न पाम्यो त्यांहि, खोया फोकट के
दिना ॥ ज० ॥ २ ॥ चि० ॥ वरजो विषय कषाय, ए
हमां स्वाद न को अछे ॥ ज० ॥ चि० ॥ रहेशो जो ल
टाय, पछतावो होशे पछें ॥ ज० ॥ ३ ॥ चि० ॥ वर्जो
हिंसा दूर, सत्य वदो परधन तजो ॥ ज० ॥ चि० ॥ छां
डी मथुन नूर, परिग्रह मूर्छा मति भजो ॥ ज० ॥ ४ ॥
चि० ॥ क्रोधादिक रिपु चार, संगति एहनी छांमजो
ज० ॥ चि० ॥ प्रेम नाव संचार, तजजो द्वेष नमा
जो ॥ ज० ॥ ५ ॥ चि० ॥ कलहनें अन्याख्यान, चा
डी रति अरति तजो ॥ ज० ॥ चि० ॥ पर परिवादावा
, न करो माया मृषा रजो ॥ ज० ॥ ६ ॥ चि० ॥ मि
यामति मय साल, काढी नाखो चित्तथी ॥ ज० ॥
चि० ॥ कुगति तणा ए जाल, गण अढारह नित्य
थी ॥ ज० ॥ ७ ॥ चि० ॥ जीतो इंद्रिय गाम, मन मां
कडखुं वश करो ॥ ज० ॥ चि० ॥ चावो चित्त ७

शील सुरंगो आदरो ॥ ज० ॥ ७॥ चि० ॥ परचो योगा
ज्यास, अहनिशि जावो जावना ॥ ज०॥ चि०॥ मुगति
दीये विलास, कारण एतां पावनां ॥ज०॥ ए॥ चि०॥ क
त्रिम ए संसार, तन धन यौवन कारिमां ॥ज०॥ चि०॥
जात न लागे वार, जिम कायरनो शूरमां ॥ ज०॥ १०॥
॥ चि०॥ कुण केहनो जगमांहि, स्वारथनां सहुको सगां
॥ ज० ॥ चि०॥ स्वारथ विण नर प्रांहि, वालानें आपे
दगां ॥ ज० ॥ ११॥ चि० ॥ पुण्य अने वली पाप, एहि
ज साथें आवशे ॥ ज० ॥ चि० ॥ जोगवशो दुःख आ
प, तिहां नहिं को वेहेंचावशे ॥ ज० ॥ १२ ॥ चि० ॥
तुंफ तणुं जिम बाण, नरजव धर्म विना तिस्यो ॥ज०॥
॥ चि० ॥ सुलहा जवजव प्राणि, धर्म नहीं मलशे इ
स्यो ॥ ज० ॥ १३ ॥ चि० ॥ दश दृष्टांत डुलंन, मा
नव जव पुण्यें लही ॥ ज० ॥ चि० ॥ पाम्या योग सु
लंन, सफल करो हवे ते वही ॥ ज० ॥ १४ ॥ चि० ॥
घावो अति उजमाल, अवसर फिरि नहीं आव
शे ॥ ज० ॥ चि० ॥ लाख गमे जंजाल, धर्म मारग वि
च धावशे ॥ ज० ॥ १५ ॥ चि० ॥ चेतो चित्तमां आ
प, कहेशो पठी जाण्युं नहिं ॥ ज० ॥ चि० ॥ टालो
व संताप, शिव कारण संयम ग्रही ॥ ज० ॥ १६॥

॥ चि० ॥ धर्म तणो उपदेश, चंद्रयशायें इम दीयो ॥ भ० ॥ चि० ॥ रीज्या दोय नरेश, पुरजन सघलो हरखियो ॥ भ० ॥ १७ ॥ चि० ॥ चोथा खंमनी ढाल, एह कही बावीशमी ॥ भ० ॥ चि० ॥ कांतिविजय जयमाल, वरियें सुणतां मनगमी ॥ भ० ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ शूरनरेशर अवसरें, पूछे गुरुनें एम ॥ भगवन् मलया जलथकी, कहो उतारी केम ॥ १ ॥ सुख शातायें जलधिथी, आणी उतारी कंठ ॥ कारण ते सुणवा तणो, छे अमने उतकंठ ॥ २ ॥ केवलनाण दिवायरू, महिमावंत महंत ॥ चंद्रयशा सूरीश्वरू, इम कारण पभणंत ॥ ३ ॥

॥ ढाल त्रेवीशमी ॥ तीरथ ते नमुं रे ॥ ए देशी ॥

॥ सुण राजेसर चित्त धरी, जलनिधि तरी रे, मलया मीन सहाय, कारण ते कहूं रे ॥ वेगवती नामें हती, जेह पालती रे, बालानें धाय माय ॥ का० ॥ ॥ १ ॥ दुर्ध्यानें कालें मरी, ते अवतरी रे ॥ जलनिधिमां गजमीन ॥ का० ॥ पडतां आरंभ दुखथकी, अति दुःखथकी रे, श्रीनवकारमां लीन ॥ का० ॥ २ ॥ गज मत्स्यनें वांसे पडी, जाणे चढी रे, कमला गजनें

॥ का० ॥ गाढें नवपद त्यां नण्यां, श्रवणें सुण्या रे, मीनें
मनमां तूव ॥ का० ॥ ३ ॥ ईहापोह कस्या थकी, मीनें
चकी रे, दीठो गत नव आप ॥ का० ॥ ग्रीवा वाली नि
रखतां, मन हरखतां रे, वाध्यो प्रेमनो व्याप ॥ का० ॥
॥ ४ ॥ जोतां मलया ठलखी, पुत्री डुःखी रे, लागो
विचारण मीन ॥ का० ॥ हैहै डुःखें अवघडी, एहसां
पडी रे, डुर्विधिनें आधीन ॥ का० ॥ ५ ॥ मुजथी कां
ई न नीपजे, नवि संपजे रे, उपकारकनां काम ॥ का० ॥
तोपण मूकुं ईहां थकी, रूडुं तकी रे, जिहां होवे वस
तीनुं गाम ॥ का० ॥ ६ ॥ यद्यपि कदाचित् ए वली,
डुःखथी टली रे, पामे वह्लन योग ॥ का० ॥ ईम चिं
ति तेणे साबलें, धरी पाबलें रे, मूकी थल संयोग ॥
॥ का० ॥ ७ ॥ कंधर वाली निरखतो, एहनें कितो रे,
डुःख धरतो ऊख राय ॥ का० ॥ नेहें हियडे झूरतो,
जलपूरतो रे, पाठो जलमां जाय ॥ का० ॥ ८ ॥
गतजव देखी जागीयो, सोनागीयो रे, माह्रो पामी
विवेक ॥ का० ॥ फासु आहार आहारतो, मन
धारतो रे, श्रीनवपदनी टेक ॥ का० ॥ ए ॥ पूरी
आयुष तिहां, सुगति इहां रे, ऊपजशे लघु
मैं ॥ का० ॥ कालें परिणति पाकशे, नव थाक

शे रे, आराधि जिनधर्म ॥ का० ॥ १० ॥ सद्गुरु वचनें सहे, सानुं कहे रे, नृपादिक नविन्नाग ॥ ॥ का० ॥ वेगवती नर सांजली, कहे एम वली रे, अहो अहो नावी जोग ॥ का० ॥ ११ ॥ लोक कहे एक एक प्रत्यें, जुर्ड मद्य वर्तें रे, पाल्यो जननी प्रेम ॥ का० ॥ दाख्यो पण लोहारिकें, अधिकाधिकें रे, वानी धारे हेम ॥ का० ॥ १२ ॥ मलया चरित्त सुहामणुं, रलियामणुं रे, कहेतां वाधे प्रीति ॥ का० ॥ ढाल त्रेवीशमी ए सही, मन गद्द गही रे, कांतिविजय शुन रीति ॥ का० ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पूछे वली नर राजिर्ड, नगवन् करुणावंत ॥ मलया महबल पूर्वनव, नांखो स्वामी सुतंत ॥ १ ॥ बालायें वली महबलें, स्यां स्यां कीधां कर्म ॥ जेहथकी यौवन समे, लाधां दुःख विण मर्म ॥ २ ॥ सूरि नणे महीपति सुणो, थिरकरी चित्त बनाव ॥ मलयाने महबल तणा, नांखुं गत नवनाव ॥ ३ ॥

॥ ढाल चोवीशमी ॥ हस्तिनागपुर वर नलुं, जिहां पांडु राजा सार रे ॥ ए देशी ॥

॥ पुहवी ठाण नुज पुरवरें, एक गृहपति हुंतो

सूद्ध रे ॥ प्रियमित्र नामें अपुत्रिउ, धनवंतो पूर्वें प्रसिद्ध रे ॥ धनवंतो पूर्वें प्रसिद्ध,पूरवन्नव केवली, इंम नांखे रे ॥१॥ ए आंकणी ॥ त्रण दयिता तेहने हूती,स्त्रवली नद्रा नाम रे॥ त्रीजी तिम प्रियसुंदरी, नामें तस प्रीतिनुं गम रे ॥ ना० ॥२॥ वहेंन सगी धुरनी बिन्हे, मांहो मांहें धारे नेह रे ॥ बिहुं उपर प्रिय मित्रनें, नवि वेगो प्रेमनो नेह रे ॥ नवि० ॥ ३ ॥ प्रियसुंदरी साथें पिउ, अनुकूल रहे निश दीश रे ॥ निरखी ते बेहु अंगना, पोपे मनमां अति दोप रे ॥ पो० ॥ ४ ॥ प्रियसुंदरी प्रियमित्रथी, बिहुं कलह करे नित्यमेव रे ॥ प्राहिं सोकलडी तणी, दीसे जग एहवी टेव रे ॥ दी० ॥ ५ ॥ मदनप्रिय नामें तिहां, प्रियमित्रनें हुंतो मित्र रे ॥ प्रियसुंदरी साथें तेणें, मांमी रतिप्रीति विचित्र रे ॥ मां० ॥ ६ ॥ काम महारस याचना, अवजाने करतो तेह रे ॥ प्रियमित्रें दीगे तिहां, तव जाग्यो कोप अछेह रे ॥ त० ॥ ७ ॥ निज बांधव आगें कही, तस चरित्र रहस्यनुं तेण रे ॥ पुरबाहिर काढ्यो पगे, निवंगी कोप वशेण रे ॥ नि० ॥ ८ ॥ बोल्या तिहां केइ वाणिया, जाणे तेह गुह्यनी वात रे ॥ नहीं ए अजाणी अमथकी, पण न करुं कोइ परतां

त रे ॥ श० ॥ ९ ॥ निज मोटा गुण लघु करे, परगुण अणु मेरु करंत रे ॥ धन्य धरामां ते नरा, विरला कोइ जननी जणंत रे ॥ वि० ॥ १० ॥ मदनवदन जोखुं करी, नाठो दिशि धारी एक रे ॥ दुर्वह अटवी मां पडयो, भूख्यो वली तरस्यो छेक रे ॥ भू० ॥ ११ ॥ पार लह्यो अटवी तणो, त्रीजे दिन तेणे नेव रे ॥ आव्यो वही एक गोकुलें, दीठा पशुपालक देव रे ॥ दी० ॥ १२ ॥ महिषी कुल वन चारता, वेगा तरु ठा या गम रे ॥ जोजननो अरथी थसी, आव्यो तेह पा सें ताम रे ॥ आ० ॥ १३ ॥ पय याच्यां गोवालीया, आपे पय महिषी दोहि रे ॥ पामर जन पण आचरे, करुणा रस अवसर मोहि रे ॥ क० ॥ १४ ॥ खीर त णुं जोजन ग्रही, पशुपालक अनुमति लेय रे ॥ आ वे समीप सरोवरें, शीतल जल पानक केय रे ॥ शी० ॥ ॥ १५ ॥ पंथें वहेतो अनुक्रमें, चिंते चित्त एम सुदक्ष रे ॥ कोइकनें आपी जमुं, होय तो मुज जनम कयछ रे ॥ हो० ॥ १६ ॥ चिंतवतां इंम सामुहो, मलीयो मुनि पुंण्य पसाय रे ॥ मास तणो उपवासियो, पारण दिन टाणे आय रे ॥ पा० ॥ १७ ॥ मुनि निरखी मन हर खियो, अहो सफल दिवस मुज आज रे ॥ अ०

प्रिय निज्ञनें.निज लज्जनो छेह जाए ॥ यक्ष धनंजय जे हवा, भाखो नरनीवार ॥२॥ पेंहें कहेनो अपमर्ष,आ व्यो ल्यो पड छेड ॥ इक मुनि नाहनो आवतो, देखे त्यो निज देड ॥ ३ ॥ आपणनें लाहमो मज्ञो, अशु न शुकन ए सुंन ॥ गाथा थाशे निःफला, एहथी अ शुभ असंम ॥ ४ ॥ इंम कहेती प्रियसुंदरी, जन ना वेन घोलाड ॥ करे परिसह साधुनें, पापिणी रोम कुहाड ॥ ५ ॥

॥ ढाल पचीशमी ॥ नेसांडाने गोरीमें ढोला, पढोरे नगारारी ठोर ढोला, जाग मज्ञा जे रे रणसिंघ नागोरा ॥ ए देशी ॥

॥ उदय आव्यो मुजने इंहां हांजी, परिसह मोटो एह हांजी, चिंति एहवुं रे, मुनि काउस्सग ठावे ॥ त्रिविधें धारी रे, आतम वोसिरावे ॥ आ० ॥ अन्नउ वसतिपादिकें हांजी, आगारें निरवेह ॥चि०॥१॥ पद थंगुष्ट नखें ठवी हांजी, लोचन तारा धार हांजी, ध्यान महोदधि लहेरमां हांजी, फीले मुनि अविकार हांजी ॥ चि० ॥ २ ॥ बांधी अमशुं वाकरी हांजी, कनो ए इह मांहि हांजी,कहेती एहवुं रे,कोपी मउराली ॥ कुमतें व्यापी रे,आचरणें काली ॥ आ० ॥ कहे सुंदरी

सेवक प्रत्यें हांजी, मर्यादा वट गांमि हांजी ॥ क० ॥ ३ ॥
साह्मां ए इंटवाहथी हांजी, जारे लाव हुताश हां
जी, ए पापीनें मांजियें हांजी, जिम होये अघुन वि
नाश हांजी ॥ क० ॥ ४ ॥ अशुकन फल एहनें हुवे
हांजी, फीटे वली अहंकार हांजी, सुंदरी सेवक ए
वां हांजी, निसुणी वचन विचार हांजी ॥ क० ॥ ५ ॥
कहे में चरणे पादुका हांजी, पहेरी छे नहीं आज
हांजी, इहांमां कुण जायशो हांजी, विषम थशे वि
काज हांजी ॥ क० ॥ ६ ॥ मूकी कदाग्रह एहवो हां
जी, चालो आगें सदीस हांजी, वचन सुणी पी
हासनां हांजी, बोल्यो चढावी रीश हांजी ॥ क० ॥ ७ ॥
कहेनां एहवुं रे, कोप्यो मलराजो ॥ कुमतें व्याप्यो रे,
आचरणं काजो ॥ अहो सेवक सुंदरी तणा हांजी,
सांभलो वडशुं पाप हांजी, नृमी जिहां लागें नहीं हां
जी, वली कंटक नव जाय हांजी ॥ क० ॥ ८ ॥ आ
हननी प्रियसुंदरी हांजी, ऊतरे हेठी तुरंत हांजी ॥
मुनिवर पानें आहनें हांजी, निठुर हंस पनोतो हां
जी ॥ क० ॥ ९ ॥ इंण अपशुकनें अनतो हांजी,
कहिमत होनो नियोग हांजी ॥ निक कलो तानो ना
हांजी, वाहालानो वली लोग हांजी ॥ क० ॥ १० ॥

स्वंनी तुं पापीठ हांजी,राक्षसनो अवतार हांजी॥
त्र जयंकर सलनें हांजी, डुर्नग तुज आकार हांजी
॥क०॥ ११ ॥ निठुर ईम आक्रोशथी हांजी, तप
तीनें त्रणवार हांजी, पाषाणे करी आहणे हांजी,
करती कोप अपार हांजी॥क०॥१२॥ठंघो मुनिना हाथ
थी हांजी, फडपी लीये निरलज्ज हांजी ॥ निज वाह
नमां पापीनें हांजी,टाले कुशुकन कज्ज हांजी॥क०॥
॥ १३ ॥ कुशुकन फल एहनें हुठं हांजी, चालो
वे निहचिंत हांजी॥ ईम कहेतां परिवारनें हांजी,सु
दंपती पंथें वहंत हांजी ॥ क० ॥ १४ ॥ यक्ष नव
पोहोतां वही हांजी, पूज्यो धनंजय देव हां
वेग करजोडी विन्हें हांजी, सारे विधिशुं सेव हां
॥ क० ॥ १५ ॥ रागिणी श्रीजिनधर्मनी हांजी, त
घर दासी एक हांजी॥ एहवुं बोली रे, सुंदरी सुगु
लो॥ सुमतें व्यापी रे,आचरणा वाली॰॥कर जो
दंपती प्रतें हांजी,समजावे ईम ठेक हांजी॥ए०॥१
पापकरम बांध्युं महा हांजी, आज तुमें विण क
हांजी, उपशम धर तेहवो घणुं हांजी, संताप्यं
पिराज हांजी ॥ ए० ॥ १७ ॥ हासें पण जो क
रे हांजी, एहवा कर्मनी जेह हांजी॥ इहनव पर

मां लहे हांजी, दारिद्र दुःख अछेह हांजी ॥ [illegible] ॥
॥ १८ ॥ श्रीअरिहंतें सूत्रमां हांजी, वेष कह्यो [illegible]
नीक हांजी, आदर करतो वेषनें हांजी, आणे सुगति
नजीक हांजी ॥ सु० ॥ १९ ॥ वाली वचनें तेहनी
हांजी,पाम्यां ते प्रतिबोध हांजी ॥ दुर्गति दुःखथी बीह
नां हांजी, थरक्या थई गतक्रोध हांजी ॥सु०॥२०॥ श्री
पछतावो करता हीये हांजी, झरतां लोचन नीर श्री
जी, हीन मना थइ आपनें हांजी, नींदे वली वली
वीर हांजी ॥ सु० ॥ २१ ॥ निजदासीनें [illegible]
जी, पातां आवे पास हांजी, तेहिज मुनिपानें [illegible]
हांजी, वंदे पग शिर नाम हांजी ॥ सु० ॥ २२ ॥ [illegible]
या वंदन नही हुई हांजी, [illegible]
कांति [illegible] हांजी, मन [illegible]
हांजी ॥ सु० ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

करता स्तुति अभ्यास ॥ ३ ॥ निजकृत कुचरित
एना, संभारी सवि राग ॥ गदगद कंठें वीनवे, ध
तो दुःख अताग ॥ ४ ॥

॥ ढाल छवीशमी ॥ मारुजी केणे थांने चा
ल्योजी चालयो, किणे थांने दीधी शीख
मारा लोजी ॥ वारीहो वक्षिणरी हो
राजन चाकरी ॥ ए देशी ॥

॥ साधुजी मेंतो थांने चालोजी चालव्यो, म्हेंतो
थांशुं कीधी जेड महारा साधु, वारी हो सुगुण रे हो
जाउं भामणें साधुजी ॥ राज रूडी नीति हो आदरी
कोप नाख्यो दूरें फेडी ॥ मा० ॥ १ ॥ मेंतो थारी कीध
हो अवगना, पडीयां मोहें वेढु आप ॥ मा० ॥ नव उप
माही इहां आकरुं, अलवें बांध्युं तुंडुं पाप ॥ मा०
॥ २ ॥ खमजो महोटी एह विराधना, करुणामें रूडे
खालि ॥ मा० ॥ ताता कूता पूवें हो जो नसे, पण ग
न पडे तेहने ख्याल ॥ मा० ॥ ३ ॥ जंबुक उन्नो कूके
रोशमां, जोरे सोरें मुखडानें पास ॥ मा० ॥ तोही उ
ही मातो हो केसरी, मांके नहीं हणवानो ध्यास
मा० ॥ ४ ॥ दोषें पोष्यो नारी हो आतमा, थाशे के
अमचा हवाल ॥ मा० ॥ जो कोई हेतु हो दाखीयें

पुर न वसाय ॥८॥ दुष्ट चरित्र एहवुं,धारी मन मां पाप ॥ कारज अवसर पडखती,जई वेठी घर आप ॥ढाल तेत्रीशमी॥ वीर वखाणीराणी चेलणा ॥एदेशी॥ ॥ सांज विहाणी पडी रातडीजी, व्यापिउ घोर अंधार ॥ तग तग्या गगनमां तारकाजी, लाग्या फिरण निशिचार ॥ सां० ॥१॥ एकरूपें थया विश्वनाजी, लूछ्या वस्तु समुदाय ॥ आक्रम्या श्याम अलिकुलसमेजी, तमगुणें आप ठल पाय ॥ सां० ॥ २ ॥ खेलता सुररमणी रसेंजी, जेह मधुपान रसलीन ॥ व्यसनथी तेह अलि वांधियाजी, कमल कारागरें दीन ॥ सां० ॥ ॥ ३ ॥ लोक निजनिज घर विश्रमेजी, वली मट्या मार्ग संचार ॥ तेह समे निसरी गेहथीजी, रहस्य पणे तेह जिम जार ॥ सां० ॥४॥ अगनी धुखती महोहाथमांजी, आवी जिहां मुनिवर तेह ॥ मृगांधर धर्म ज्यों थिर रह्योजी. काउस्सग्गें कलकंते देह ॥सां०॥ ॥ ५ ॥ पोलिये द्वार पुरनां जड्यांजी, संत व्यवहार विधिमाण ॥ जाणे निज नेत्र मल्यां पुरेंजी, नाखि मुनि कष्ट मन जाण ॥ सां० ॥ ६ ॥ लोकसंचार नहीं वाहिरें. निरखीयो सून्य वन नाग ॥ दुष्ट कनकाल [illegible] जी, साधवा कार्यनो लाग ॥ सां०॥७॥

हवे रे, पावन ए पुर लोक रे वारू ॥ दीधो रे जे [illegible]
एवुं जनकें आइने दीदारु ॥ १३ ॥ एम कही पद प[illegible]
डुका रे,मूकीनें नरनाथ रे वंदे ॥ त्यांहि रे अति नमें
रातो पापनें निकंदे ॥ १४ ॥ तात चरण युग चेटिनो
रे, लोजी ते निशि डुःखथी रे काढे ॥ प्रगडो रे हवे
प्रगटयो दिणयर दीपियो प्रगाढें ॥ १५ ॥ ढाल हुई
बत्रीशमी रे, चोथे खंडें एह रे चोखी ॥ कांतें रे मुन
शांतें नांखी रंगमां रस पोखी ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कनकवती हवे ते समे, जनपद पुर [illegible] ॥
दैवयोगथी डुःकणी, तिण पुर आवी रडंत ॥ १ ॥ [illegible]
तेहिज दिन संध्या समे, काननमां गई काम ॥ [illegible]
पडयो मदनव्रम मुनि, रह्यो काउस्सग्ग नाम ॥ २ ॥ नि
रखी रहें उनखी, हुई मदा जय जीनी ॥ तेहिज ए
मुन सुरन्नो, मदनभ्रम मुनि ध्यनलीन ॥ ३ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ४ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ५ ॥ [illegible]
[illegible]

न बताय ॥६॥ दुष्ट चरित्रा एहवुं,धारी मन
॥ कारण अवसर पडखती,जई बेठी घर आप
त्रीशमी॥ वीर वखाणीराणी चेलणा ॥एदेशी॥
सांज विहाणी पडी रातडीजी, व्यापिउ घोर अं
तग तग्या गगनमां तारकाजी, लाग्या फिर
शिचार ॥ सां० ॥१॥ एकरूपें थया विश्वनाजी,
प्रा वस्तु समुदाय ॥ आक्रम्या श्याम अलिकुलस
, तमगुणें आप ठल पाय ॥ सां० ॥ २ ॥ खेलता
मणी रसेंजी, जेह मधुपान रसलीन ॥ व्यसनथी
अलि बांधियाजी, कमल कारागरें दीन ॥ सां० ॥
३ ॥ लोक निजनिज घर विश्रमेजी, वली मट्या
र्गे संचार ॥ तेह समे निसरी गेहथीजी, रहस्य प
तेह जिम जार ॥ सां० ॥४॥ अगनी धुखती अहो
ाथमांजी, आवी जिहां मुनिवर तेह ॥ मूर्त्तिधर धर्म
ज्यों थिर रह्योजी, काउस्सग्गें झलकंते देह ॥सां०॥
॥ ५ ॥ पोलिये द्वार पुरनां जडयांजी, संत व्यवहार
विधिमाण ॥ जाणे निज नेत्र मल्यां पुरेंजी, नावि मु
नि कष्ट मन जाण ॥ सां० ॥ ६ ॥ लोकसंचार नहीं
वाहिरेंजी, निरखीयो शून्य वन नाग ॥ दुष्ट कनका
लही णोजी, साधवा कार्यनो लाग ॥ सां०॥७

काष्ठ अंगारनें कारणेंजी, किणहीकें था
गतदिनें सीममां सहजथीजी, सामटा ते
ण ॥ सां० ॥ ८ ॥ तेह काठें करी पापिणीजी,
साधुनें तेम ॥ चिहुंदिसें निरखतां साधुनुंजी, अंग
नहीं जेम ॥ सां० ॥ ९ ॥ विटंतां साधुने
प्राणी हत्या महा व्याप ॥ चउगइ दुख संसारनुंजी,
विंटीयो तेणीयें आप ॥ सां० ॥ १० ॥ पूर्व भव
तेणीयेंजी, निर्दयायें महाघोर ॥ अगनि
चिहुं दिसेंजी, पवनथी जागीयो जोर ॥ सां० ॥ ११ ॥
मुनिवरें काउस्सग्ग ध्यानमांजी, देखी उपसर्ग मरणां
त ॥ कीधी आराधना चित्तथीजी, तेम रह्यो योग स
शांत ॥ सां० ॥ १२ ॥ खंभ चोथे खरी खांतथुंजी,
एह तेत्रीसमी ढाल ॥ कांतिविजय कहे हवे स्वामी,
सावद्रो साधु जयमाल ॥ सां० ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वहीम्यो वनदव समो, [illegible] चउफेर ॥ मुनि
वरनें तन पासतें, खातो धूमविषेर ॥ १ ॥ कोमल तनु [illegible]
[illegible], बाळे वन्हि [illegible] ॥ पुन्यवती [illegible] तणां, [illegible]
[illegible] ॥ २ ॥ [illegible], [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]

॥अथचोत्रीशमी॥ रागबंगाल ॥राजा नहीं नमे ॥ए देशी ॥ रे जीव क्रोधकूं दूरें मारि, शांतिदशासौं आप कौं तार ॥ ज्ञानी आतमा ॥ हांरे तेरे घरका रूप सं जार ॥ मेरे आतमा ॥ हांरे रागादिककी संग निवार ॥ तेरे नातमा ॥ ए आंकणी ॥ आय मिल्या हे तर न उपाव, मत चूके तुं अबको दाव ॥ ज्ञा० ॥ १ ॥ काल अनादिका नटक्या अनंत, अजुअ न पाया न वजल अंत ॥ ज्ञा० ॥ चूकेगा जो आजका खेल,तो फिरि न मिले अैसा मेल ॥ ज्ञा० ॥ २ ॥ चढिके आ वे नाव जिहाज, तर ले नवसागर बिनु पाज ॥ज्ञा०॥ नावमहा प्रवहनकौं फेर, ध्यान पवनसौं,तैसें प्रेर ॥ ज्ञा० ॥ ३ ॥ कुशल स्वनावें करिकें करार, जैसें पा वें नवतटपार ॥ ज्ञा० ॥ डुःख पाय तैं नरक निगोद, करत वसेरा कर्मकी गोद ॥ ज्ञा० ॥४॥ ता डुःख आ गें या डुःख कौंन, घटमें विचारिकें देखत कौंन ॥ ॥ ज्ञा० ॥ या महिलाको कडुअ न दोष, मत कर इं न उपर तुं रोष ॥ ज्ञा० ॥ ५ ॥ कर्म महावन काट न आयु, आइ नई हे साची सहायु ॥ ज्ञा० ॥ बाहि र तनकुं जारेंगी आगि, अन्यंतर तन नहीं इन लागि ॥ ज्ञा० ॥ ६ ॥ कहा दहेगी अगनि सरीर,

काष्ठ अंगारनें कारणेंजी, किणहीकें पाविया आण ॥ गतदिनें सीममां सहजथीजी, सामटा ते मस्या ठा ण ॥ सां० ॥ ८ ॥ तेह काठें करी पापिणीजी, आवरे साधुनें तेम ॥ चिहुंदिसें निरखतां साधुनेंजी, अंग दीसे नहीं छेम ॥ सां० ॥ ९ ॥ विंटतां साधुने काठगुंजी, आणी हृदया महा व्याप ॥ चउगइ दुख संसारनेंजी, विंटीओ तेणीयें आप ॥ सां० ॥ १० ॥ पूर्व जन्म वेरणी तेणीयेंजी, निर्दयायें महाघोर ॥ अगनि सलगावीयो चिहुं दिसेंजी, पवनथी लागीयो जोर ॥ सां० ॥ ११ ॥ मुनिवरें काउस्सग्ग ध्यानमांजी, देखी उपसर्ग मरणां त ॥ कीधी आराधना चित्तथीजी, तेम रह्या योग मन शांत ॥ सां० ॥ १२ ॥ खंद कोये खरो ज्ञानगुंजी, सुहे तेवीसनी ढाल ॥ कांतिविजय कहे हवे सुणोजी, साधको सधु जयमाल ॥ सां० ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ [illegible] ॥ १ ॥ [illegible]

...श्री ॥ रागबंगाल ॥राजा नहीं नमे ॥ए देशी
॥ रे जीव क्रोधकूं दूरें मारि, शांतिदशासों आप
को तार ॥ ज्ञानी आतमा ॥ द्वारे तेरे घरका रूप सं
भार ॥ मेरे आतमा ॥ द्वारे रागादिककी संग निवार
॥ तेरे आतमा ॥ ए आंकणी ॥ आय मिल्या हे तर
न उपाव, मत चूके तुं अबको दाव ॥ ज्ञा० ॥ १ ॥
काल अनादिका जटक्या अनंत, अजुअ न पाया न
वजल अंत ॥ ज्ञा० ॥ चूकेगा जो आजका खेल,तो
फिरि न मिले अैसा मेल ॥ ज्ञा० ॥ २ ॥ चढिके आ
वे नाव जिहाज, तर ले नवसागर विनु पाज ॥ज्ञा०॥
नावमहा प्रवहनकों फेर, ध्यान पवनसों तैसें प्रेर
॥ ज्ञा० ॥ ३ ॥ कुशल खलावें करिकें करार, जैसें पा
वें नवतटपार ॥ ज्ञा० ॥ डुःख पाय तैं नरक निगोद,
करत वसेरा कर्मकी गोद ॥ ज्ञा० ॥४॥ ता डुःख आ
गें या डुःख कौंन, घटमें विचारिकें देखत कौंन ॥
॥ ज्ञा० ॥ या महिलाको कबुअ न दोष, मत कर इं
न उपर तुं रोष ॥ ज्ञा० ॥ ५ ॥ कर्म महावन काट
न आयु, आइ नई हे साची सहायु ॥ ज्ञा० ॥ बाहि
र तनकुं जारेंगी आगि, अभ्यंतर तन नहीं इन
गि ॥ ज्ञा० ॥ ॰ कहा दहेगी अगनि सगोल

धुं अकाजो रे ॥ निर्नय निःकारण वैरीयें, उपसर्ग्यो मुनिराजो रे ॥ आ० ॥ ७ ॥ नवभ्रमणथी रे डुर्मति, बीहीनो नहीं लवलेशो रे ॥ हाहा हियडुं रे तेहनुं, वज्र कठिन सुविशेषो रें ॥ आ० ॥ ८ ॥ चरण तुमा रां रे तातजी, पामीनें पण डुह्लिां रे ॥ प्रणमी न शक्यो रे पापथी, आवीनें हुं पहिलां रे ॥ आ० ॥ ए ॥ मीट तुमारी रे रस जरी, न पडी माहरे अंगें रे ॥ वचन तुमारां रे नवि सुण्यां, बेशी दण एक रंगें रे ॥ आ० ॥ १० ॥ सकल मनोरथ माहरा, विलय गया मनमांहिं रे ॥ कामें नाव्या रे कारिमा, जिम कूआनी ग्रांहिं रें ॥ आ० ॥ ११ ॥ तात तणो आ गम सुणी, हरख हुउ मुज जेतो रे ॥ इंण वेला मुज पापथी, थयो डुःखरूपी तेतो रे ॥ आ० ॥ १२ ॥ अशरण कीधो रे साहिबा, आजथकी हुं अनाथो रें ॥ सुतवत्सल जातां मुन्हें, लीधो कांइं न साथो रे ॥ आ० ॥ १३ ॥ निरखी न शकुं रे तेहवी, एह अवस्था रे दीसे रे ॥ पुण्य किहांथी माहरे, दर्शन न लहुं दी सें रे ॥ आ० ॥ १४ ॥ शोकें पूस्यो रे जनकनें, विलपे इम नूपालो रे ॥ कांतें चोथा रे खंमनी, कही पणती समी ढालो रे ॥ आ० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इति लोचन आंसुयें, खेदाकुंल नृपाल ॥ निजज
दर्ने इंम आदिशे, करि नृकुटीनो चाल ॥१॥ पग अनु
सारें निरखता, करो शीघ्र परगट्ट ॥ जिम पापीनें पाप
फल, आवे उदय विकट्ट ॥२॥ आप हृदय गणे ठव्यो,
बीजो डुष्ट परिणाम ॥ डुःप्रपंचे रस सींचतां, कर्युं क
टक विराम ॥३॥ मुनि हिंसा शाखाशतें,पाम्यो अति
विस्तार ॥ आशंकादिक कुसुमशुं, वाध्यो विहुं परच
नार ॥ ४ ॥ प्राणनाश फल तेहनुं, अनिमुख हूउं स
मद्र ॥ हिंसकनें फलशे हवे,पोष्यो पातक वृद्ध ॥५॥
॥ ढाल बत्रीशमी ॥ लाछलदे मात मल्हार ॥ ए देशी ॥
॥ वचन सुणी ततकाल,कठवा चड मठराल,आज
हो डुष्ट रे जण रूग जाणे कालनाजी ॥ १ ॥ जोतां
श्त उत नूम, मांमे सघली धूम,आज हो धारे रे अ
नुसारे पगनें तेहनेंजी ॥२॥ पुर बाहिर एक देश,पेखत
कुंज निवेश, आज हो दीठी रे त्रिय धीठी पेठी खाड
ांजी ॥ ३ ॥ नीचे मुख नयनोत, श्याम वसन
अविनीत, आज हो वेठी रे उपरांठी काया गोपवीजी
॥ ४ ॥ सुहडें साही केश,काढी बाहिर देश, आज हो
ाणी रे । सोंपी रायनेंजी ॥ ५ ॥ नृपें त

धुं अकाजो रे ॥ निर्जय निःकारण वैर
मुनिराजो रे ॥ आ० ॥ ७ ॥ जवभ्रमण
वीहीनो नहीं जवलेशो रे ॥ हाहा हि
वज्र कविन सुविशेषो रे ॥ आ० ॥ ८
रां रे तातजी, पामीनें पण डुहिलां रे
शक्यो रे पापथी, आवीनें हुं पहिलां रे ॥
मीठ तुमारी रे रस जरी, न पडी मा
वचन तुमारां रे नवि सुण्यां, वेशी
रे ॥ आ० ॥ १० ॥ सकल मनोरथ मा
गया मनमांहिं रे ॥ कामें नाव्या रे का
कूआनी गांहिं रे ॥ आ० ॥ ११ ॥ तात
गम सुणी, हरख हुवे मुज जेतो रे ॥ इ
पापथी, थयो डुःखरूपी तेतो रे ॥ आ
अशरण कीधो रे साहिबा, आजथकी हुं
काई
सुतवत्सल

नाव बनाया रे ॥ न० ॥ ए ॥ संवतसर मुनि मुनि वि
धु १७७५ वर्षे, रही पाटण चोमास ॥ श्रीविजयद
मा सूरीश्वर राज्यें, गाई मलया उल्लास रे ॥न०॥१०॥
अखा त्रीज तणे शुन्न दिवसें, रास हुउ सुप्रमाण ॥
बालकक्रीडानी परें माहरी, हांसी न करशो सुजाण रे
॥ न० ॥ ११ ॥ श्रीजयतिलक वचनथी जे में, न्यूना
धिक कांई नांख्युं ॥ संघ सकलनी साखें तेहनुं, मि
छाडक्कड दाख्युं रे ॥ न० ॥ १२ ॥ उत्तमना गुण
परिचय करतां, होय समकितनो शोध ॥ उत्तर लाभ
अधिक वली पामे, श्रोता जे प्रतिबोध रे ॥न०॥१३॥
पाटण नगरनो संघ विवेकी, तस आग्रहथी सीधी ॥
चिहुं खंडें थई सर्व संख्यायें, ढाल एकाणुं कीधी रे
॥न०॥१४॥ जे नवि नावें नणशे गुणशे लेहेशे ते
जयमाल ॥ उगुणचालीशमी कही कांतें, चोथा खंड
नी ढाल रे ॥न०॥१५ सर्व श्लोक संख्या ॥२४८८॥

॥ इति श्रीज्ञानरत्नोपाख्यानापरनाम्नि श्रीमलयसुं
दरीचरित्रे पंमितकांतिविजयगणिविरचिते प्राकृ
शीलावदातपूर्वनववर्णनोनामाचतु[illegible]:परि